श्री हर्षपुष्पामृत जैन ग्रंथमाला-ग्रन्थांक-७६

श्री आगम-सुधा-सिन्धुः

नवमो विभागः

(आ सूत्रना गुरुकुलवासी योगवाही मुनिवरो गुरु आज्ञा मुजब अधिकारी छे)

• सम्पादक, संशोधकश्च •

पूज्याचार्य श्री विजयजिनेन्द्रसूरिश्वर;

:: प्रकाशिका ::

श्री हर्षपुष्पामृत जैन ग्रन्थमाला

लाखाबावल - शांतिपुरी (सौराष्ट्र).

श्री हर्षपुष्पामृत जैन ग्रंथमाला-ग्रन्थांक-१६

श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः।
तपोमूर्ति पूज्याचार्यदेव श्री विजयकर्पूरसूरिगुरुभ्यो नमः।
हालारदेशोद्धारक-पूज्याचार्यदेव श्री विजयामृतसूरिगुरुभ्यो नमः।

श्री

आगम-सुधा-सिन्धुः

नवमो विभागः

श्री निशीथ-बृहत्कल्प-व्यवहार-दशाश्रुतस्कन्ध-
-जीतकल्प-पञ्चकल्पसूत्रात्मकः

सम्पादकः संशोधकश्च
तपोमूर्ति-पूज्याचार्यदेवश्रीमद्विजयकर्पूरसूरीश्वर पट्टालङ्कार-
हालारदेशोद्धारक-कविरत्न पूज्याचार्यदेवश्रीमद्विजयामृतसूरीश्वर-
पट्टधर पूज्याचार्यश्री विजयजिनेन्द्रसूरिवरः

प्रकाशिका-
श्री हर्षपुष्पामृत जैन ग्रन्थमाला
लाखाबावल-शांतिपुरी (सौराष्ट्र)

❀ अनुक्रमणिका ❀

श्री निशीथसूत्रम्

क्रमः	उद्देशकः	पृष्ठं
१	प्रथमः	१
२	द्वितीयः	३
३	तृतीयः	६
४	चतुर्थः	१०
५	पञ्चमः	१२
६	षष्ठः	१५
७	सप्तमः	१६
८	अष्टमः	१८
९	नवमः	१९
१०	दशमः	२२
११	एकादशः	२३
१२	द्वादशः	२५
१३	त्रयोदशः	२८
१४	चतुर्दशः	२९
१५	पञ्चदशः	३१
१६	षोडशः	३२
१७	सप्तदशः	३४
१८	अष्टादशः	३६
१९	एकोनविंशतितमः	३७
२०	उपसंहारः	३८

श्री बृहत्कल्पसूत्रम् ।

क्रमः	उद्देशकः	पृष्ठ
१	प्रथमः	४२
२	द्वितीयः	४५
३	तृतीयः	४८
४	चतुर्थः	५२
५	पञ्चमः	५८
६	षष्ठः	६२

श्री पञ्चकल्पभाष्यम् । ६५

श्री व्यवहारसूत्रम् ।

क्रमः	उद्देशकः	पृष्ठं
१	प्रथमः	२१५
२	द्वितीयः	२१६
३	तृतीयः	२२१
४	चतुर्थः	२२४
५	पञ्चमः	२२७
६	षष्ठः	२२८
७	सप्तमः	२३२
८	अष्टमः	२३४
९	नवमः	२३७
१०	दशमः	२४०

श्री दशाश्रुतस्कन्धसूत्रम् ।

क्रमः	अध्ययनं	पृष्ठं
१	असमाधि	२४५
२	सबल	२४६
३	आशातना	२४७
४	गणिसम्पद्	२४८
५	चित्तसमाधिस्थान	२५१
६	श्रमणोपासकप्रतिमा	२५३
७	भिक्षुप्रतिमा	२६०
८	पर्युषणाकल्प	२६४
९	मोहनीयस्थान	२६५
१०	आयतिस्थान	२६७

श्रीजीतकल्पसूत्रम् । २८३

आ सूत्रोना अधिकारी योगवाही गुरुकुलवासी सुविहित मुनिवरो छे.

[१] ॥ अर्हम् ॥

श्रीमद् गणधर देव निर्मितं

॥ श्री निशीथसूत्रम् ॥

॥ अथ प्रथमोद्देशकः ॥

भाष्ये पीठिकागाथा ४८६ प्रभिप्ता ३०॥ जे भिक्खू हत्थकम्मं करेइ करतं वा साइज्जइ '४९१' ॥ सूत्र १॥ जे भिक्खू अङ्गादाणं कट्ठेण वा किलिंचेण वा अंगुलियाए वा सलागाए वा संचालेइ संचालंतं वा साइज्जइ '४९६' ॥ सू०२॥ जे भिक्खू अंगादाणं संवाहेज्ज वा पलिमद्देज्ज वा संवाहंतं वा पमद्दंतं वा साइज्जइ ॥ सू०३॥ जे भिक्खू अंगादाणं तेल्लेण वा घएण वा वसाए वा नवणीएण वा अब्भंगेज्ज वा मक्खेज्ज वा अब्भंगंतं वा मक्खंतं वा साइज्जइ ॥ सू०४॥ जे भिक्खू अंगादाणं कक्केण वा लोद्धेण वा पउमचुण्णेण वा ण्हाणेण वा सिणाणेण वा चुण्णेहिं वा वण्णेहिं वा उव्वट्टेइ वा परिवट्टेइ वा उव्वट्टंतं वा परिवट्टंतं वा साइज्जइ ॥ सू०५॥ जे भिक्खू अंगादाणं सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलेज्ज वा पधोएज्ज वा उच्छोलंतं वा पधोवंतं वा साइज्जइ ॥ सू०६॥ जे भिक्खू अंगादाणं निच्छल्लेइ वा निच्छल्लंतं वा साइज्जइ ॥ सू०७॥ जे भिक्खू अंगादाणं जिग्घइ जिग्घंतं वा साइज्जइ '२९०' ॥ सू०८॥ जे भिक्खू अंगादाणं अन्नयरंसि अचित्तंसि सोयंसि अणुपवेसेत्ता सुक्कपोग्गले निग्घायइ निग्घायंतं वा साइज्जइ '६०३' ॥ सू०९॥ जे भिक्खू सचित्तपइट्ठियं गंधं जिग्घइ जिग्घंतं वा साइज्जइ '६०८' ॥ सू०१०॥ जे भिक्खू पयमग्गं वा संकमं वा अवलंबणं वा '६१९' ॥ सू०११॥ जे भिक्खू दगवीणियं '६२९' ॥ सू०१२॥ जे भिक्खू सिक्कगं वा सिक्कगणंतगं वा '६४१' ॥ सू०१३॥ जे भिक्खू सोत्तियं वा रज्जुयं वा चिलिमिलिं वा '६२१' ॥ सू०१४॥ जे भिक्खू सूइए ॥ सू०१५॥ पिप्पलगस्स ॥ सू०१६॥ नहच्छेयणगस्स ॥ सू०१७॥

कण्णसोहणगस्स उत्तरकरणं अन्नउत्थिएण वा गारत्थिएण वा कारेइ कारयंतं वा साइज्जइ '६६५'॥सू० १८॥ जे भिक्खू अणट्ठाए सूइं॥सू० '१९॥ पिप्पलगं ॥सू०२०॥ नह-छेयणगं ॥सू०२१॥ कण्णसोहणगं जायइ जायंतं वा साइज्जइ '६५९'॥सू०२२॥ जे भिक्खू अविहीए सूइं जाव जायइ जायंतं वा साइज्जइ '६६०'॥सू०२३-२६॥ जे भिक्खू अप्पणो एगस्स अट्ठाए सूइं जाव जाइत्ता अन्नमन्नस्स अणुप्पदेइ अणुप्पदेंतं वा साइज्जइ ॥सू०२७-३०॥ जे भिक्खू पडिहारियं सूइं जाइत्ता 'वत्थं सिव्विस्सामि' त्ति पायं सिव्वइ सिव्वंतं वा साइज्जइ ॥सू०३१॥ जे भिक्खू पडिहारियं पिप्पलगं जाइत्ता 'वत्थं छिंदिस्सामि' त्ति पायं छिंदइ छिंदंतं वा साइज्जइ ॥सू०३२॥ जे भिक्खू पडिहारियं नह-छेयणगं जाइत्ता 'नहं छिंदिस्सामि' त्ति सल्लुद्धरणं करेइ करेंतं वा साइज्जइ ॥सू०३३॥ जे भिक्खू पडिहारियं कण्णसोहणगं जाइत्ता 'कण्णमलं नीहरिस्सामि' त्ति दन्तमलं वा नहमलं वा नीहरइ नीहरंतं वा साइज्जइ '६६२'॥सू०३४॥ जे भिक्खू अविहीए सूइं जाव पच्चप्पिणइ पच्चप्पिणंतं वा साइज्जइ '६७२'॥सू०३५-३८॥ जे भिक्खू लाउपायं वा दारुपायं वा मट्टियापायं वा अन्नउत्थिएण वा गारत्थिएण वा परिघट्टावेइ वा संठवेइ वा जमावेइ वा अलमप्पणो करणयाए सुहुममवि नो कप्पइ जाणमाणे सरमाणे अन्नमन्नस्स वियरइ वियरंतं वा साइज्जइ '६८६'॥सू०३९॥ जे भिक्खू दण्डयं वा लट्ठियं वा अवलेहणियं वा वेणुसूइयं वा अन्नउत्थिएण वा गारत्थिएण वा परिघट्टावेइ सो चेव मज्झिल्लओ गमओ अणुगंतव्वो जाव पायं तड्डेति साइज्जइ '७०८'॥सू०४०॥ जे भिक्खू पायस्स एक्कं तुडियं तड्डेइ तड्डंतं वा साइज्जइ '७१४'॥सू०४१॥ जे भिक्खू पायस्स परं तिण्हं तुडियाणं तड्डेइ तड्डंतं वा साइज्जइ '७१९॥सू०४२॥ जे भिक्खू पायं अविहीए बंधइ बंधंतं वा साइज्जइ '७२६' ॥सू०४३॥ जे भिक्खू पायं एगेणं बंधेणं बंधइ बंधंतं वा साइज्जइ '७३१'॥सू०४४॥ जे भिक्खू पायं परं तिण्हं बंधाणं बंधइ बंधंतं वा साइज्जइ '७३६'॥सू०४५॥ जे भिक्खू अइरेगबंधणं पायं दिवड्ढाओ

मासाओ परेण धरेइ धरंतं वा साइज्जइ '१४५'॥ सू० ४६॥ जे भिक्खू वत्थस्स एगं पडियाणियं देइ देंतं वा साइज्जइ '७६२'॥ सू० ४७॥ जे भिक्खु वत्थस्स परं तिण्हं पडियाणियाणं देइ देंतं वा साइज्जइ '७६७' ॥ सू० ४८॥ जे भिक्खू अविहीए वत्थं सिव्वइ सिव्वंतं वा साइज्जइ '७७४' ॥ सू० ४९॥ जे भिक्खू वत्थे एगं फालियगण्ठियं करेइ करंतं वा साइज्जइ '७७७'॥ सू० ५०॥ जे भिक्खू वत्थे परं तिण्हं फालियगण्ठियाणं करेइ करंतं वा साइज्जइ॥ सू० ५१॥ जे भिक्खू वत्थे एगं फालियं गण्ठेइ गंठंतं वा साइज्जइ॥ सू० ५२॥ जे भिक्खू वत्थे परं तिण्हं फालियाणं गंठेइ गंठंतं वा साइज्जइ॥ सू० ५३॥ जे भिक्खू वत्थं अविहीए गंठेइ गंठंतं वा साइज्जइ '७७८'॥ सू० ५४॥ जे भिक्खू वत्थं अतज्जाएणं गाहेइ गाहंतं वा साइज्जइ '७८३'॥ सू० ५५॥ जे भिक्खू अइरेगगहियं वत्थं परं दिवड्ढाओ मासाओ धरेइ धरंतं वा साइज्जइ '७८७'॥ ५६॥ जे भिक्खू गिहधूमं अन्नउत्थिएण वा गारत्थिएण वा परिसाडावेइ परिसाडेंतं वा साइज्जइ '७९३'॥ सू० ५७॥ जे भिक्खू पूइकम्मं भुंजइ भुंजंतं वा साइज्जइ, तं सेवमाणे आवज्जइ मासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं '८०४'॥ सू० ५८॥ पढमो उद्देशओ समत्तो॥ १॥

॥ अथ द्वितीयोद्देशकः ॥

जे भिक्खू दारुदंडगं पायपुंछणगं करेइ करंतं वा साइज्जइ '३८'॥ सू० १॥ जे भिक्खू दारुदंडगं गिण्हइ गिण्हंतं वा साइज्जइ॥ सू० २॥ जे भिक्खू दारुदंडगं धरेइ धरंतं वा साइज्जइ॥ ३॥ जे भिक्खू दारुदंडगं वियरइ वियरंतं वा साइज्जइ॥ सू० ४॥ जे भिक्खू दारुदंडगं परिभाएइ परिभायंतं वा साइज्जइ॥ सू० ५॥ जे भिक्खू दारुदंडगं परिभुंजइ परिभुंजंतं वा साइज्जइ '२१'॥ सू० ६॥ जे भिक्खू दारुदंडगं परं दिवड्ढाओ मासाओ धरेइ धरंतं वा साइज्जइ '२८'॥ सू० ७॥ जे भिक्खू दारुदंडगं विसुयावेइ विसुयावेंतं वा साइज्जइ॥ सू० ८॥ जे भिक्खू अचित्तपइट्ठियं गंधं जिग्घइ जिग्घंतं वा साइज्जइ '३८'॥ सू० ९॥ जे भिक्खू पयमग्गं वा संकमं वा अवलंबणं वा॥ सू० १०॥ जे भिक्खू दगवीणियं॥ सू० ११॥ सिक्कगं वा सिक्कगणंतगं वा॥ सू० १२॥

जे भिक्खू सीसियं वा रज्जुयं वा (चिलिमिणिं वा) करेइ करेंतं वा साइज्जइ ॥सू०१३॥ जे भिक्खू सूइए ॥सू०१४॥ पिप्पलगस्स ॥१५॥ नहच्छेयणगस्स ॥सू०१६॥ कण्णसोहणगस्स उत्तरकरणं सयमेव करेइ करेंतं वा साइज्जइ '५६' ॥सू०१७॥ जे भिक्खू लहुस्सगं फरुसं वयइ वयंतं वा साइज्जइ '७९' ॥सू०१८॥ जे भिक्खू मुसं वयइ वयंतं वा साइज्जइ '९०' ॥सू०१९॥ जे भिक्खू अदत्तं आइयइ आइयंतं वा साइज्जइ '९९' ॥सू०२०॥ जे भिक्खू लहुस्सएण सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा हत्थाणि वा पायाणि वा कण्णाणि वा अच्छीणि वा दन्ताणि वा नहाणि वा मुहं वा उच्छोलेज्ज वा पच्छोलेज्ज वा उच्छोलंतं वा पच्छोलंतं वा साइज्जइ '११०' ॥ सू० २१॥ जे भिक्खू कसिणाइं चम्माइं धरेइ धरेंतं वा साइज्जइ '१५२' ॥सू०२२॥ कसिणाइं वत्थाइं '१७७' ॥ सू०२३॥ अभिन्नाइं वत्थाइं ॥सू०२४॥ जे भिक्खू लाउयपायं वा दारुपायं वा मट्टियापायं वा सयमेव परिघट्टइ वा संठवेइ वा जवेइ (जमावेइ) वा परिघट्टेंतं वा जवंतं (जवावंतं) वा साइज्जइ '१८०' ॥सू०२५॥ जे भिक्खू दंडगं वा लट्ठियं वा अवलेहणं वा वेणुसूइयं वा जाव साइज्जइ ॥सू०२६॥ जे भिक्खू नियगगवेसियं पडिग्गहगं धरेइ धरेंतं वा साइज्जइ '१९४' ॥सू०२७॥ जे भिक्खू परगवेसियं ॥सू०२८॥ वरगवेसियं ॥सू०२९॥ बलगवेसियं '२०४' ॥सू०३०॥ लवगवेसियं '२३०' ॥ सू०३१॥ जे भिक्खू नितियं अग्गपिंडं भुंजइ भुंजंतं वा साइज्जइ '२३९' ॥सू०३२॥ पिंडं ॥सू०३३॥ अवड्ढं ॥सू०३४॥ भागं ॥सू०३५॥ उवड्ढभागं ॥सू०३६॥ जे भिक्खू वासं वसइ वसंतं वा साइज्जइ '२३६' ॥सू०३७॥ जे भिक्खू पुरेसंथवं वा पच्छासंथवं वा करेइ करेंतं वा साइज्जइ '२६२' ॥सू०३८॥ जे भिक्खू समाणे वा वसमाणे वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे पुरेसंथुयाणि वा पच्छासंथुयाणि वा कुलाइं पुव्वामेव (पच्छा) वा भिक्खायरियाए अणुपविसइ अणुपविसंतं वा साइज्जइ '३१३' ॥सू०३९॥ जे भिक्खू अन्नउत्थिएण वा गारत्थिएण वा परिहारिओ वा अपरिहारिएण सद्धिं गाहावइकुलं पिंडवायपडियाए अणुपविसइ वा निक्खमइ

वा अणुपविसंतं वा निक्खमंतं वा साइज्जइ '३०६' ॥सू०४०॥
जे भिक्खू बहिया विहारभूमिं वा वियारभूमिं वा निक्खमइ
वा पविसइ वा निक्खमंतं वा पविसंतं वा साइज्जइ '३१४' ॥सू०४१॥
जे भिक्खू गामाणुगामं दुइज्जइ दुइज्जंतं वा साइज्जइ '३२२' ॥सू०
४२॥ जे भिक्खू अन्नयरं भोयणजायं पडिग्गाहेत्ता सुब्भिं सु-
ब्भिं भुंजइ२ दुब्भिं दुब्भिं परिट्ठवेइ परिट्ठवंतं वा साइज्जइ ॥सू०४३॥
जे भिक्खू अन्नयरं पाणगजायं पडिग्गाहेत्ता पुप्फगं पुप्फगं आइ-
यइ आइयंतं वा साइज्जइ कसायं कसायं परिट्ठवइ परिट्ठवंतं
वा साइज्जइ '२३३' ॥सू०४४॥ जे भिक्खू मणुन्नं (अन्नयरं) भोयण-
जायं पडिग्गाहेत्ता बहुपरियावन्नं सिया अदूरे तत्थ साहम्मिया
संभोइया समणुन्ना अपरिहारिया संता परिवसंति ते अणापु-
च्छित्ता अनिमंतिय परिट्ठवइ परिट्ठवंतं वा साइज्जइ '३४०'
॥सू०४५॥ जे भिक्खू सागारियपिंडं गिण्हइ गिण्हंतं वा साइज्जइ
॥सू०४६॥ जे भिक्खू सागारियपिंडं भुंजइ भुंजंतं वा साइज्जइ
'४१५' ॥सू०४७॥ जे भिक्खू सागारियं कुलं अजाणिय अपु-
च्छिय अगवेसिय पुव्वामेव पिंडवायपडियाए अणुप-
विसइ अणुपविसंतं वा साइज्जइ '४२०' ॥सू०४८॥ जे भिक्खू
सागारिय निस्साए असणं वा ४ ओभासिय आयइ जायं-
तं वा साइज्जइ '४२७' ॥सू०४९॥ जे भिक्खू उडुबद्धियं वा सेज्जा
संथारगं परं पज्जोसवणाओ उवाइणावेइ उवायणावेंतं वा सा-
इज्जइ '४५७' ॥सू०५०॥ जे भिक्खू वासावासियं सेज्जासंथारगं
परं दसरायकप्पाओ उवाइणावेइ उवायणावेंतं वा साइज्जइ '४९४'
॥सू०५१॥ जे भिक्खू उडुबद्धियं वा वासावासियं वा सेज्जासंथारगं
उवरिसिज्जमाणं पेहाए न ओसारेइ न ओसारंतं वा साइज्जइ
'५००' ॥सू०५२॥ जे भिक्खू पाडिहारियं सेज्जासंथारगं दोच्चंपि
अणुन्नवेत्ता बाहिं नीणेइ नीणंतं वा साइज्जइ ॥सू०५३॥ जे
भिक्खू सागारियसंतियं ॥सू०५४॥ जे भिक्खू पाडिहारियं
सागारियसंतियं वा '५१३' ॥सू०५५॥ जे भिक्खू पाडिहारियं

सेज्जासंथारगं आयाए अपडिहट्टु संपव्वइ संपव्वयंतं वा साइज्ज-
इ '५२३'॥सू०५६॥ जे भिक्खू सागारियसंतियं सेज्जासंथारगं
आयाए अविगरणं (अधिकरणं) कट्टु अणप्पिणित्ता संपव्वयइ
संपव्वयंतं वा साइज्जइ '५२७'॥सू०५७॥ जे भिक्खू पाडिहारियं
वा सागारियसंतियं वा सेज्जासंथारगं विप्पणट्ठं न गवेसइ
णगवेसंतं वा साइज्जइ '६००'॥सू०५८॥ जे भिक्खू इत्तरियंपि उव-
हिं न पडिलेहेइ नपडिलेहंतं वा साइज्जइ, तं सेवमाणे आवज्जइ
मासियं परिहारट्ठाणं उग्घाइयं ॥सू०५९॥ बिइउद्देसओ समत्तो॥२॥

॥अथ तृतीयोद्देशक:॥

जे भिक्खू आगंतारेसु वा आरामागारेसु वा गाहावइ-
कुलेसु वा परियावसहेसु वा अन्नउत्थियं वा गारत्थियं वा असणं
वा ४ ओभासइ ओभासंतं वा साइज्जइ ॥सू०१॥ जे भिक्खू जाव
अन्नउत्थिया वा गारत्थिया वा असणं वा ४ ओभासइ ओभास-
तं वा साइज्जइ ॥सू०२॥ जे भिक्खू जाव अन्नउत्थिणिं वा गा-
रत्थिणिं वा जाव साइज्जइ ॥सू०३॥ जे भिक्खू जाव अन्नउत्थि-
णीओ वा गारत्थिओ वा जाव साइज्जइ '११'॥सू०४॥ जे भिक्खू
जाव अन्नउत्थियं वा गारत्थियं वा कोऊहलपडियाए पडिया-
गयं समाणं असणं वा ४ ओभासिय २ जायइ जायंतं वा साइ-
ज्जइ, एवं एतेणावि चत्तारि गमगा '२०'॥सू०५-८॥ जे भिक्खू
जाव अन्नउत्थिएण वा गारत्थिएण वा असणं वा ४ अभिहडं
आहट्टु दिज्जमाणं पडिसेहेत्ता तमेव अणुवत्तिय २ परिवेढिय
२ परिजविय २ ओभासिय २ आयइ जायंतं वा साइज्जइ, एवं
एतेण चेव चत्तारि गमगा '२७'॥सू०९-१२॥ जे भिक्खू गाहावइ-
कुलं पिण्डवायपडियाए पविट्ठे पडियाइक्खिए समाणे दोच्चं
तमेव कुलं अणुपविसइ अणुपविसंतं वा साइज्जइ '३१'॥सू०१३॥
जे भिक्खू संखडिपलोयणाए असणं वा ४ पडिगाहेइ पडिगाहेंतं वा
साइज्जइ "४५"॥सू०१४॥ जे भिक्खू गाहावइकुलं पिण्डवायपडियाए

अणुपविट्ठे समाणे परं तिघरंतराओ असणं वा ४ अभिहडं आह-
ट्टु दिज्जमाणं पडिगाहेइ पडिगाहेंतं वा साइज्जइ '२३'॥सु०१५॥
जे भिक्खू अप्पणो पाए आमज्जेज्ज वा पमज्जेज्ज वा आमज्जंतं
वा पमज्जंतं वा साइज्जइ '२७'॥सु०१६॥ जे भिक्खू अप्पणो पाए
संवाहेज्ज वा पलिमद्देज्ज वा संवाहंतं वा पलिमद्दंतं वा साइज्जइ
॥सु०१७॥ जे भिक्खू अप्पणो पाए तेल्लेण वा घएण वा वसा-
ए वा नवणीएण वा मक्खेज्ज वा भिलिंगेज्ज वा मक्खंतं वा
भिलिंगंतं वा साइज्जइ ॥सु०१८॥ जे भिक्खू अप्पणो पाए लो-
द्धेण वा कक्केण वा उल्लोलेज्ज वा उव्वट्टेज्ज वा उल्लोलंतं वा
उव्वट्टंतं वा साइज्जइ ॥सु०१९॥ जे भिक्खू अप्पणो पाए सीओ-
दगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलेज्ज वा पधोएज्ज
वा उच्छोलंतं वा पधोयंतं वा साइज्जइ ॥सु०२०॥ जे भिक्खू
अप्पणो पाए फुमेज्ज वा रएज्ज वा फुमंतं वा रयंतं वा साइज्जइ
'६२'॥सु०२१॥ जे भिक्खू अप्पणो कायं आमज्जेज्ज वा पमज्जेज्ज
वा आमज्जंतं वा पमज्जंतं वा साइज्जइ, एतेण अभिलावेण सो
चेव गमो भाणियव्वो जाव रयंतं वा साइज्जइ '६३'॥सु०२२-२७॥
जे भिक्खू अप्पणो कायस्स वणेवि ते चेव '७२'॥सु० २८-३३॥जे
भिक्खू अप्पणो कायंसि गंडं वा पिलगं (पलियंगं) वा अरइयं
वा असियं वा भगंदलं वा अन्नयरेणं तिक्खेणं सत्थजाएणं
अच्छिंदेज्ज वा विच्छिंदेज्ज वा अच्छिंदंतं वा विच्छिंदंतं वा
साइज्जइ ॥सु०३४॥ जे भिक्खू अप्पणो जाव सत्थजाएणं अच्छि-
दित्ता वा विच्छिंदित्ता वा पूयं वा सोणियं वा नीहरेज्ज वा विसोहेज्ज
वा णीहरंतं वा विसोहंतं वा साइज्जइ ॥सु०३५॥ जे भिक्खू अप्पणो
जाव सत्थजाएणं अच्छिंदित्ता वा विच्छिंदित्ता वा पूयं वा सोणियं
वा नीहरित्ता विसोहेत्ता सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण
वा पच्छोलेज्ज वा पधोएज्ज वा प(उ)च्छोलंतं वा पधोवंतं वा साइ-
ज्जइ ॥सु०३६॥ जे भिक्खू जाव उसिणोदगवियडेण वा पच्छोलि-
त्ता पधोइत्ता अन्नयरेण आलेवणजाएणं आलिंपेज्ज वा विलिंपेज्ज

वा आलिंपंतं वा विलिंपंतं वा साइज्जइ ॥ सू० ३७॥ जे भिक्खू जाव अन्नयरेणं आलेवणजाएणं आलिंपित्ता विलिंपित्ता तेल्लेण वा घएण वा वसाए वा नवणीएण वा अब्भंगेज्ज वा मक्खेज्ज वा अब्भंगंतं वा मक्खंतं वा साइज्जइ ॥ सू० ३८॥ जे भिक्खू जाव नवणीएण वा अब्भंगेत्ता मक्खेत्ता अन्नयरेण धूवणजाएण धूवेज्ज वा पधूवेज्ज वा धूवंतं वा पधूवंतं वा साइज्जइ ॥ सू० ३९॥ जे भिक्खू अप्पणो पाउकिमियं वा कुच्छिकिमियं वा अंगुलिए निवेसिय निवेसिय नीहरइ नीहरंतं वा साइज्जइ '३६' ॥ सू० ४०॥ जे भिक्खू अप्पणो दीहाओ नहसिहाओ कप्पेज्ज वा संठवेज्ज० कप्पंतं वा संठवंतं वा साइज्जइ ॥ सू० ४१॥ दीहाइं जंघरोमाइं ॥ सू० ४२॥ वत्थि ॥ सू० ४३॥ चक्खू ॥ सू० ४४॥ कक्खव० ॥ सू० ४५॥ मंसु ॥ सू० ४६॥ जे भिक्खू अप्पणो दंते आघंसेज्ज वा पघंसेज्ज वा आघसंतं वा पघसंतं वा साइज्जइ ॥ सू० ४७॥ जे भिक्खू अप्पणो दंते उच्छोलेज्ज वा पधोएज्ज वा उच्छोलंतं वा पधोयंतं वा साइज्जइ ॥ सू० ४८॥ जे भिक्खू अप्पणो दंते फुमेज्ज वा रएज्ज वा फुमंतं वा रयंतं वा साइज्जइ ॥ सू० ४९॥ जे भिक्खू अप्पणो उट्ठे आमज्जेज्ज वा पमज्जेज्ज वा, एवं ओट्ठे पायगमो भाणियव्वो जाव फुमेज्ज वा रएज्ज वा ॥ सू० ५०-५५॥ जे भिक्खू अप्पणो दीहाइं उत्तरोट्ठरोमाइं कप्पेज्ज वा संठवेज्ज वा कप्पंतं वा संठवंतं वा साइज्जइ ॥ सू० ५६॥ जे भिक्खू अप्पणो अच्छिपत्ताइं जाव साइज्जइ ॥ सू० ५७॥ जे भिक्खू अप्पणो अच्छीणि आमज्जेज्ज वा एवं अच्छीसु पायगमो भाणियव्वो जाव रएज्ज वा ॥ सू० ५८-६३॥ दीहाइं भमुगरोमाइं ॥ सू० ६४॥ पासरोमाइं कप्पेज्ज वा संठवेज्ज वा कप्पंतं वा संठवंतं वा साइज्जइ ॥ सू० ६५॥ जे भिक्खू अप्पणो अच्छिमलं वा कण्णमलं वा दन्तमलं वा नहमलं वा नीहरेज्ज वा विसोहेज वा णीहरंतं वा विसोहंतं वा साइज्जइ ॥ सू० ६६॥ जे भिक्खू अप्पणो कायाओ सेयं वा जल्लं वा पङ्कं वा मलं वा जाव साइज्जइ ॥ सू० ६७॥ जे भिक्खू गामाणुगामं दुइज्जमाणे

अप्पणो सीसदुवारियं करेइ करंतं वा साइज्जइ ॥सू०६८॥जे भिक्खू सणकप्पासओ वा उण्णकप्पासओ वा पोण्डकप्पासओ वा अमिलकप्पासओ वा वसीकरणसोत्तियं करेइ करंतं वा साइज्जइ ॥सू०६९॥ जे भिक्खू गिहंसि वा गिहमुहंसि वा गिहदुवारंसि वा गिहपडिदुवारंसि वा गिहेलुयंसि वा गिहंगणंसि वा गिहवच्चंसि वा उच्चारं वा पासवणं वा परिट्ठवेइ परिट्ठवंतं वा साइज्जइ ॥सू०७०॥ जे भिक्खु मडगगिहंसि वा मडगछारियंसि वा मडगथूभियंसि वा मडगआसयंसि वा मडगलेणंसि वा मडगथण्डिलंसि वा मडगवच्चंसि वा उच्चारं वा पासवणं वा परिट्ठवेइ परिट्ठवंतं वा साइज्जइ ॥सू०७१॥ जे भिक्खू इंगालदाहंसि वा खारदाहंसि वा गायदाहंसि वा तुसदाहंसि वा भुसदाहंसि वा उच्चारं जाव साइज्जइ ॥सू०७२॥ जे भिक्खू अभिनवियासु वा गोलेहणियासु नवियासु वा मट्टियाखाणीसु परिभुज्जमाणियासु वा अपरिभुज्जमाणियासु वा उच्चारं जाव साइज्जइ ॥सू०७४॥ जे भिक्खू उंबरवच्चंसि वा नग्गोहवच्चंसि वा आसत्थवच्चंसि वा पिलंखुवच्चंसि वा डागवच्चंसि वा उच्चारं जाव साइज्जइ ॥सू०७५॥ जे भिक्खू इक्खुवणंसि वा सालिवणंसि वा कुसुंभवणंसि वा कप्पासवणंसि वा उच्चारं जाव साइज्जइ ॥सू०७६॥ जे भिक्खू डागवच्चंसि वा सागवच्चंसि वा मूलयवच्चंसि वा कोत्थुंबरिवच्चंसि वा खारवच्चंसि वा जीरयवच्चंसि वा दमणगवच्चंसि वा मरुगवच्चंसि वा उच्चारं जाव साइज्जइ ॥सू० ७७॥ जे भिक्खू असोगवणंसि वा सत्तिवण्णवणंसि वा चंपगवणंसि वा तिलयवणंसि वा वाउलवणंसि वा चूयवणंसि वा अन्नयरेसु तहप्पगारेसु पत्तोवएसु पुप्फोवएसु फलोवएसु छाओवएसु उच्चारं जाव साइज्जइ '३०६'॥ सू०७८॥ जे भिक्खू सपायंसि वा परपायंसि वा दिया वा राओ वा वियाले वा

उव्वाहिज्जमाणे सपायं गहाय परपायंसि वा जाइत्ता उच्चारपासवणं परिट्ठवेत्ता अणुग्गए सूरिये एइइ एइंतं वा साइज्जइ '११७' तं सेवमाणे आवज्जइ मासियं परिहारट्ठाणं उग्घाइयं ॥सू०७९॥ तइओ उद्देसओ॥३॥

॥अथ चतुर्थोद्देशकः॥

जे भिक्खू रायं अत्तीकरेइ अत्तीकरंतं वा साइज्जइ॥सू०१॥ जे भिक्खू अच्चीकरेइ अच्चीकरंतं वा साइज्जइ॥सू०२॥ जे भिक्खू अत्थीकरेइ अत्थीकरंतं वा साइज्जइ ॥सू०३॥ एवं रायारक्खियं ॥सू०४-६॥ नगरारक्खियं ॥सू०७-९॥ निगमारक्खियं ॥सू१०-१२॥ देसारक्खियं ॥सू०१३-१५॥ सव्वारक्खियं '२८' ॥सू०१६-१८॥ जे भिक्खू कसिणाओ ओसहीओ आहारेइ आहारेंतं वा साइज्जइ '३७' ॥सू०१९॥ जे भिक्खू आयरियउवज्झाएहिं अविइन्नं विगइं आहारेइ आहारेंतं वा साइज्जइ '६२'॥सू०२०॥ जे भिक्खू ठवणकुलाइं अजाणिय अपुच्छिय अगवेसिय पुव्वामेव पिण्डवायपडियाए अणुपविसइ अणुपविसंतं वा साइज्जइ '१०९' ॥सू०२१॥ जे भिक्खू निग्गंथीणं उवस्सयंसि अविहीए अणुपविसइ अणुपविसंतं वा साइज्जइ '२२२' ॥सू०२२॥ जे भिक्खू निग्गंथीणं आगमणपहंसि दण्डगं वा लट्ठियं वा रयहरणं वा मुहपोत्तियं वा अन्नयरं वा उवगरणजायं ठवेइ ठवंतं वा साइज्जइ '२३३'॥सू०२३॥ जे भिक्खू नवाइं अणुप्पन्नाइं अहिगरणाइं उप्पाएइ उप्पायंतं वा साइज्जइ '२४३' ॥सू०२४॥ जे भिक्खू पोराणाइं अहिगरणाइं खामियविउसमियाइं पुणो उदीरेइ उदीरंतं वा साइज्जइ '२५८' ॥सू०२५॥ जे भिक्खू मुहविप्फालियं हसइ हसंतं वा साइज्जइ '२६३'॥सू०२६॥ जे पासत्थस्स संघाडियं देइ पडिच्छइ देन्तं वा पडिच्छंतं वा साइज्जइ ॥सू०२७-२८॥ एवं ओसन्नस्स ॥सू०२९-३०॥ कुसीलस्स ॥सू०३१-३२॥ नितियस्स ॥सू०३३-३४॥ संसत्तस्स '२८३' ॥सू०३५-३६॥

जे भिक्खू उदउल्लेण वा ससिणिद्धेण वा हत्थेण वा दव्वीए वा भायणेण वा असणं वा ४ पडिगाहेइ पडिगाहेंतं वा साइज्जइ ॥सू० ३७॥ एवं एक्कवीसं हत्था भाणियव्वा (दशवैं०५ अ०३२-३५) ससरक्खेण वा मट्टियासंसट्ठेण वा ऊसासंसट्ठेण वा लोणियसंसट्ठेण वा हरियालसंसट्ठेण वा मणोसिलासंसट्ठेण वा वण्णियसंसट्ठेण वा गेरुयसंसट्ठेण वा सेडियसंसट्ठेण वा सोरट्ठियसंसट्ठेण वा हिंगुलुयसंसट्ठेण वा अञ्जणसंसट्ठेण वा लोद्धसंसट्ठेण वा कुक्कुससंसट्ठेण वा पिट्ठसंसट्ठेण वा कंतवसंसट्ठेण वा कंदमूलसंसट्ठेण वा सिङ्गबेरसंसट्ठेण वा पुप्फगसंसट्ठेण वा उक्कुट्ठसंसट्ठेण वा हत्थेण वा दव्वीए वा भायणेण वा असणं वा ४ पडिगाहेइ पडिगाहेंतं वा साइज्जइ '२८९' ॥सू०३८॥ जे भिक्खू गामारक्खियं अत्तीकरेइ अच्चीकरेइ अत्थीकरेइ करेंतं वा साइज्जइ, एवं सो चेव रायगमो णेयव्वो ॥सू०३९-४१॥ देसारक्खियं ॥सू०४२-४४॥ सीमारक्खियं ॥सू०४५-४७॥ रण्णारक्खियं ॥सू०४८-५०॥ सव्वारक्खियं '२९०' ॥सू०५१-५३॥ जे भिक्खू अन्नमन्नस्स पाए एवं तइयउद्देसगमेण णेयव्वं जाव गामाणुगामं दुइज्जमाणे अन्नमन्नस्स सीसदुवारियं करेइ करेंतं वा साइज्जइ '२९१' ॥सू०५४-१०६॥ जे भिक्खू साणुप्पाए उच्चारपासवणभूमिं न पडिलेहेइ नपडिलेहेंतं वा साइज्जइ '२९५' ॥सू०१०७॥ जे भिक्खू तओ उच्चारपासवणभूमीओ न पडिलेहेइ नपडिलेहेंतं वा साइज्जइ '२११' ॥सू०१०८॥ जे भिक्खू खुड्डागंसि थण्डिलंसि उच्चारपासवणं परिट्ठवेइ परिट्ठवंतं वा साइज्जइ '३०४' ॥सू०१०९॥ जे उच्चारपासवणं अविहीए परिट्ठवेइ परिट्ठवंतं वा साइज्जइ '३०७' ॥सू०११०॥ जे भिक्खू उच्चारपासवणं ठवेत्ता न पुञ्छइ नपुञ्छंतं वा साइज्जइ ॥सू०१११॥ जे भिक्खू कट्ठेण वा कलिञ्चेण वा अंगुलियाए वा सलागाए वा पुञ्छइ पुञ्छंतं वा साइज्जइ ॥सू०११२॥ जे भिक्खू नायमइ नायमंतं वा साइज्जइ ॥सू०११३॥ जे भिक्खू

तत्थेण आगमइ आयमंतं वा साइज्जइ ॥सू० ३३४॥ जे भिक्खू अतिदूरे आगमइ आयमंतं वा साइज्जइ ॥सू०३३५॥ जे भिक्खू परं तिण्हं नावापूराणं आयमइ आयमंतं वा साइज्जइ '३३४' ॥सू०३३६॥ जे भिक्खू अपरिहारिए णं परिहारियं बुया-एहि अज्जो ! तुमं च अहं च एगओ असणं वा ४ पडिग्गाहेत्ता तओ पच्छा पत्तेयं पत्तेयं भोक्खामो वा पाहामो वा, जो तमेवं वयइ वयंतं वा साइज्जइ, तं सेवमाणे आवज्जइ मासियं परिहारट्ठाणं उग्घाइयं '३२९' ॥सू०३३७॥ चउत्थो उद्देसओ॥

॥ अथ पञ्चमोद्देशक: ॥

जे भिक्खू सचित्तरुक्खमूलंसि ठिच्चा आलोएज्ज वा पलोएज्ज वा आलोयंतं वा पलोयंतं वा साइज्जइ ॥सू०१॥ जे भिक्खू सचित्तरुक्खमूले ठाणं वा सेज्जं वा निसीहियं वा तुयट्टणं वा चेएइ चेयंतं वा साइज्जइ ॥सू०२॥ जे भिक्खू सचित्तरुक्खमूलंसि ठिच्चा असणं वा ४ आहारेइ आहारेंतं वा साइज्जइ ॥सू०३॥ जे भिक्खू सचित्तरुक्खमूलंसि उच्चारपासवणं परिट्ठवेइ परिट्ठवेंतं वा साइज्जइ ॥सू०४॥ जे भिक्खू सचित्तरुक्खमूलंसि सज्झायं करेइ करेंतं वा साइज्जइ ॥सू०५॥ जे भिक्खू सचित्तरुक्खमूलंसि उद्दिसइ उद्दिसंतं वा साइज्जइ ॥सू०६॥ जे भिक्खू सचित्तरुक्खमूलंसि समुद्दिसइ समुद्दिसंतं वा साइज्जइ ॥सू०७॥ जे भिक्खू सचित्तरुक्खमूलंसि अणुजाणइ अणुजाणंतं वा साइज्जइ ॥सू०८॥ जे भिक्खू सचित्तरुक्खमूलंसि वाएइ वायंतं वा साइज्जइ ॥सू०९॥ जे भिक्खू सचित्तरुक्खमूलंसि पडिच्छइ पडिच्छंतं वा साइज्जइ ॥सू०१०॥ जे भिक्खू सचित्तरुक्खमूलंसि परियट्टइ परियट्टंतं वा साइज्जइ '३६' ॥सू०११॥ जे भिक्खू अप्पणो संघाडिं अन्नउत्थिएण वा गारत्थिएण वा सागारिएण वा सिव्वावेइ सिव्वावेंतं वा साइज्जइ '४१' ॥सू०१२॥

जे भिक्खू अप्पणो संघाडीए दीहसुत्ताइं करेइ करंतं वा साइज्जइ '५०' ॥सू०१३॥ जे भिक्खू पिउमंदपलासयं वा पडोलपलासयं वा बिल्लपलासयं वा सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा संफासिय संफासिय आहारेइ आहारंतं वा साइज्जइ '५१' ॥सू०१४॥ जे भिक्खू पाडिहारियं पायपुञ्छणं जाइत्ता तामेव रयणिए पच्चप्पिणिस्सामित्ति सुए पच्चप्पिणइ पच्चप्पिणंतं वा साइज्जइ ॥सू०१५॥ जे भिक्खू पडिहारियं पायपुञ्छणं जाइत्ता सुए पच्चप्पिणइस्सामित्ति तमेव रयणिं पच्चप्पिणइ पच्चप्पिणंत वा साइज्जइ ॥सू०१६॥ एव सागारियसंतिएवि जे पायपुञ्छणयं जाइत्ता दो आलावग्गा ॥सू०१७-१८॥ जे भिक्खू पाडिहारियं दण्डयं वा लट्ठियं वा अवलेहणिञ्जं वा वेलसूइं वा एवं एतेहिं सेहिं चेव पाडिहारियं सागारियं गमएहिं णेयव्वा ॥सू० १९-२२॥ जे भिक्खू पाडिहारियं सेज्जासंथारगं पच्चप्पिणित्ता दोच्चंपि अणुन्नविय अहिट्ठेइ अहिट्ठंतं वा साइज्जइ '८१ ॥सू०२३॥ एवं सागारियसंतिएवि ॥सू०२४॥ जे भिक्खू पाडिहारियं वा सागारियसंतियं वा सेज्जासंथारयं अपच्चप्पिणित्ता अणुण्णविय अहिट्ठेइ अहिट्ठंतं वा साइज्जइ ॥सू०२५॥ जे भिक्खू सणकप्पासाओ वा पोण्डकप्पासाओ वा उण्णकप्पासाओ वा अमिलकप्पासाओ वा दीहसुत्ताइं करेइ करंतं वा साइज्जइ '११२' ॥सू०२६॥ जे भिक्खू सचित्ताईं करेइ धरेइ परिभुंजइ करंतं वा धरंतं वा परिभुंजंतं वा साइज्जइ ॥सू०२७-२९॥ एवं चित्ताइं ॥सू०३०-३२॥ जे भिक्खू विचित्ताणि दारुदण्डाणि वा वेलुदण्डाणि वा वेत्तदण्डाणि वा करेइ करंतं वा साइज्जइ, एवं धरेइ धरंत वा साइज्जइ, परिभुंजइ परिभुंजंत वा साइज्जइ '१२०' ॥सू० ३३-३५॥ जे भिक्खू नवगनिवेसंसि गामंसि वा जाव संनिवेसंसि वा अणुपविसित्ता असणं वा ४ पडिगाहेइ पडिगाहंतं वा साइज्जइ ॥सू०३६॥ जे भिक्खू

नवगनिवेसंसि अयागरंसि वा तंबागरंसि वा तउआगरंसि वा सीस-
आगरंसि वा हिरण्णआगरंसि वा सुवण्णआगरंसि वा रयणआग-
रंसि वा वइरआगरंसि वा अणुप्पविसित्ता असणं वा ४ पडिगाहेइ
पडिगाहंतं वा साइज्जइ '१२९' ॥सू०३७॥ जे भिक्खू मुहवीणियं करे-
इ करंतं वा साइज्जइ ॥सू०३८॥ दन्तवीणियं ॥सू०३९॥ एवं उट्ठ-
वीणियं ॥सू०४०॥ नासावीणियं ॥सू०४१॥ कक्खवीणियं ॥सू०४२॥
हत्थवीणियं ॥सू०४३॥ नहवीणियं ॥सू०४४॥ पत्तवीणियं ॥सू०४५॥
पुप्फवीणियं ॥सू०४६॥ फलवीणियं ॥सू०४७॥ बीयवीणियं ॥सू०
४८॥ हरियवीणियं ॥सू०४९॥ जे भिक्खू मुहवीणियं जाव हरिय-
वीणियं वाएइ वायंतं वा साइज्जइ, अण्णतराणि वा तहापगाराइं
अणुदिन्नाइं सद्दाइं उदीरेइ उदीरंतं वा साइज्जइ '१३२' ॥सू०५०-६१
॥ जे भिक्खू उद्देसियं सेज्जं अणुपविसइ अणुपविसंतं वा साइज्ज-
इ ॥सू०६२॥ सपाहुडियं ॥सू०६३॥ सपरिकम्मं ॥सू०६४॥ जे भिक्खू न-
त्थि संभोगवत्तिया किरिय'त्ति वयइ वयंतं वा साइज्जइ '१३५' ॥सू०६५॥
जे भिक्खू वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा पायपुञ्छणं वा अलं थिरं धुवं
धरणिज्जं पलिच्छिंदिय २ परिट्ठवेइ परिट्ठवंतं वा साइज्जइ ॥सू०६६॥ जे भिक्खू
लाउयपायं वा दारुपायं मट्टियापायं वा जाव साइज्जइ ॥सू०६७॥ जे भिक्खू दण्डगं
वा जाव पिप्पलसूइगं वा पलिभज्जिय परिट्ठवेइ परिट्ठवंतं वा साइज्जइ '१३९' ॥सू०
६८॥ जे भिक्खू अइरेगपमाणं रयहरणसीसाइं धरेइ धरेंतं वा साइज्जइ ॥सू०६९॥
जे भिक्खू सुहुमाइं रयहरणसीसाइं करेइ करंतं वा साइज्जइ ॥सू०७०॥ जे भिक्खू
रयहरणस्स एक्कं बंधं देइ देंतं वा साइज्जइ ॥सू०७१॥ जे भिक्खू रय-
हरणस्स परं तिण्हं बंधाणं देइ देंतं वा साइज्जइ ॥सू०७२॥ जे भिक्खू
रयहरणं अविहीए बंधइ बंधंतं वा साइज्जइ ॥सू०७३॥ जे भिक्खू कण्डूसग-
बंधेण बंधइ बंधंतं वा साइज्जइ ॥ सू०७४॥ जे भिक्खू वोसट्ठं धरेइ धरेंतं
वा साइज्जइ ॥सू०७५॥ जे भिक्खू अनिसट्ठं धरेइ धरंतं वा साइज्जइ ॥सू०
७६॥ जे भिक्खू अभिक्खणं २ अहिट्ठेइ अहिट्ठंतं वा साइज्जइ ॥सू०७७॥ जे
भिक्खू उस्सीसमूले ठवेइ ठवंतं वा साइज्जइ ॥सू०७८॥ जे भिक्खू तुट्टेइ
तुट्टंतं वा साइज्जइ॥ तं सेवमाणे आवज्जइ मासियं परिहारट्ठाणं उग्घाइयं '१५१'॥
सू०७९॥ पञ्चमो उद्देसो ॥५॥

[१५] ॥अथ षष्ठोद्देशक :॥

जे भिक्खू माउग्गामं मेहुणवडियाए विन्नवेइ वा विन्नवंतं वा साइज्जइ '५१' ॥सू०१॥ जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए हत्थकम्मं करेइ करंतं वा साइज्जइ ॥सू०२॥ जे भिक्खू अंगादाणं कट्ठेण वा कलिंचेण वा अंगुलियाए वा सलागाए वा संचालेइ संचालंतं वा साइज्जइ, एवं माउग्गामऽभिलावेण पढमुद्देसाइगमो णेयव्वो जाव सोयसुयं, जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अन्नयरंसि अचित्तंसि सोयंसि अणुप्पविसित्ता सुक्कपोग्गले निग्घाएइ निग्घायंतं वा साइज्जइ ॥सू०३-१०॥ जे भिक्खू माउग्गामं मेहुणवडियाए सयं कुज्जा सयं बुया करंतं वा बुयंतं वा साइज्जइ ॥सू०११॥ जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए कलहं कुज्जा कलहं बुया कलहवडियाए गच्छइ गच्छंतं वा साइज्जइ ॥सू०१२॥ जे भिक्खू लेहं लिहइ लेहं लिहावेइ लेहवडियाए गच्छइ गच्छंतं वा साइज्जइ '६१' ॥सू०१३॥ जे भिक्खू पिट्ठंतं वा सोयंतं वा पोसंतं वा भल्लायएण उप्पाएइ उप्पायंतं वा साइज्जइ ॥सू०१४॥ जे भिक्खू पिट्ठंतं वा सोयंतं वा पोसंतं वा भल्लायएण उप्पाएत्ता सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलेज्ज वा पधोएज्ज वा उच्छोलेंतं वा पधोवंतं वा साइज्जइ ॥सू०१५॥ जे भिक्खू पिट्ठंतं वा सोयंतं वा पोसंतं वा भल्लायएण उप्पाएत्ता तेल्लेण वा एवं जहा तइए उद्देसए गंडादीण जो गमो सो चेव इहंपि णयव्वो जाव अण्णयरेणं आलेवणजाएण आलिंपेज्ज वा विलिंपेज्ज वा आलिंपंतं वा विलिंपंतं वा साइज्जइ ॥सू०१६॥ एवं धूवेज्ज वा पधूवेज्ज वा ॥सू०१७-१८॥ जे भिक्खू कसिणाइं वत्थाइं धरेइ धरेंतं वा साइज्जइ ॥सू०१९॥ एवं अहयाइं ॥सू०२०॥ धोवरत्ताइं ॥सू०२१॥ चित्ताइं ॥सू०२२॥ विचित्ताइं ॥सू०२३॥ जे भिक्खू अप्पणो पाए आमज्जेज्ज वा पमज्जेज्ज वा आमज्जंतं वा पमज्जंतं वा साइज्जइ, एवं तइयउद्देसे जो गमओ सो चेव इह मेहुणवडियाए णेयव्वो जाव जे माउग्गामस्स मेहुणवडियाए गामाणुगामं दूइज्जमाणे अप्पणो सीसदुवारियं करेइ करंतं वा साइज्जइ ॥सू०२४-७६॥ जे भिक्खू खीरं वा दहिं वा नवणीयं वा गुलं वा खण्डं वा सक्करं वा

पच्छंडियं वा अंबरयं वा पणीयं आहारं आहारेइ आहारेंतं वा साइज्जइ॥ ८८, तं सेवमाणे आवज्जइ चाउमासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं ॥ सू० ७७॥ छट्ठो उद्देसओ ॥६॥

॥ अथ सप्तमोद्देशकः ॥

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए तणमालियं वा मुंजमालियं भेंडमालियं वा मयणमालियं वा पिंछमालियं वा दन्तमालियं वा सिंग-मालियं वा संखमालियं वा हड्डमालियं वा कट्ठमालियं वा पत्त-मालियं पुप्फमालियं वा फलमालियं वा बीयमालियं वा हरियमालियं वा करेइ करेंतं वा साइज्जइ, धरेइ धरेंतं वा साइज्जइ, पिणिंधइ पिणिंधंतं वा साइज्जइ ॥सू० १-३॥ जे भिक्खू० अयलोहाणि वा तंबलोहाणि वा तउयलो-हाणि वा सीसगलोहाणि वा रुप्पगलोहाणि वा सुवण्णलोहाणि वा करे-इ करेंतं वा साइज्जइ, धरेइ धरेंतं वा साइज्जइ परिभुंजइ परिभुंजंतं वा साइज्जइ ॥सू० ४-६॥ जे भिक्खू० हाराणि वा अद्धहाराणि वा एगावलिं वा मुत्ता-वलिं वा कणगावलिं वा रयणावलिं वा कडगाणि वा तुडियाणि वा केऊ-राणि वा कुंडलाणि वा पट्टाणि वा मउडाणि वा पलंबसुत्ताणि सुवण्ण-सुत्ताणि वा करेइ करेंतं वा साइज्जइ, धरेइ धरेंतं वा साइज्जइ, परिभुं-जइ परिभुंजंतं वा साइज्जइ ॥सू० ७-९॥ जे भिक्खू० आईणाणि वा आईण-पावराणि वा कंबलाणि वा कंबलपावराणि वा कोयरा(वा)णि वा कोयर-(व)पावराणि वा कालमियाणि वा नीलमियाणि वा सामाणि वा महासामाणि वा उट्टाणि वा उट्टलेस्साणि वा वग्घाणि वा विवग्घाणि वा परवंगाणि वा सहिणाणि वा सहिणकल्लाणाणि वा खोमाणि वा दुगुल्लाणि वा पट्ट(तुल्ल)-णाणि वा आवरन्ताणि वा चीणाणि वा अंसुयाणि वा कणगकन्ताणि वा कण-गखंसि(खइ)याणि वा कणगचित्ताणि वा कणगविचित्ताणि वा आभरणवि-चित्ताणि वा करेइ जाव परिभुंजइ परिभुंजंतं वा साइज्जइ ॥सू० १०-१२॥ जे भिक्खू माउग्गामं मेहुणवडियाए अक्खंसि वा ऊरुंसि वा उयरंसि थणंसि वा गहाय संचालइ संचालेंतं वा साइज्जइ ॥सू० १३॥ जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अन्नमन्नस्स पाए आमज्जेज्ज वा पमज्जेज्ज

वा ओमज्जंतं वा पमज्जंतं वा साइज्जइ, एवं ततियउद्देस-गमओ णेयव्वो, जाव जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए गामाणुगामं दुइज्जमाणे अन्नमन्नस्स सीसदुवारियं करेइ करंतं वा साइज्जइ ॥सू०१७-६६॥ जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अणंतरहियाए एवं ससिणिद्धाए ससरक्खाए मट्टियाकडाए चित्तमन्ताए पुढवीए निसीयावेज्ज वा तुयट्टावेज्ज वा णिसीयावेंतं वा तुयट्टावेंतं वा साइज्जइ ॥सू०६७-७१॥ जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए चित्तमन्ताए सिलाए लेलुए निसीयावेज्ज वा तुयट्टावेज्ज वा णिसीयावेंतं वा तुयट्टावेंतं वा साइज्जइ ॥सू०७२-७३॥ जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए कोलावासंसि वा दारुए जीवपइट्ठिए सअण्डे सपाणे सबीए सहरिए सओस्से सउदए सउत्तिङ्गपणग-दगमट्टियमक्कडसंताणगंसि निसीयावेज्ज वा तुयट्टावेज्ज वा णिसीयावेंतं वा तुयट्टावेंतं वा साइज्जइ ॥सू०७४॥ जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए आगन्तारेसु वा जाव परियावसहेसु वा निसीयावेज्ज वा तुयट्टावेज्ज वा णिसीयावेंतं वा तुयट्टावेंतं वा साइज्जइ ॥सू०७५॥ जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए आगन्तारेसु वा जाव परियावसहेसु वा निसीयावेत्ता वा तुयट्टावेत्ता वा असणं वा ४ अणुग्घासेज्ज वा अणुपाएज्ज, वा अणुग्घासंतं वा अणुपायंतं वा साइज्जइ ॥सू०७६॥ जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अंकंसि वा पलियंकंसि वा णिसीयावेत्ता वा तुयट्टावेत्ता वा जाव साइज्जइ ॥सू०७७॥ जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अंकंसि वा पलियंकंसि वा णिसीयावेत्ता वा तुयट्टावेत्ता वा असणं वा ४ अणुग्घासेज्ज वा अणुपाएज्ज वा अणुग्घासंतं वा अणुपायंतं वा साइज्जइ ॥सू०७८॥ जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णयरं तेइच्छं आउट्टेइ आउट्टेंतं वा साइज्जइ ॥सू०७९॥ जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अमणुन्नाइं पोग्गलाइं नीहरइ नीहरंतं वा साइज्जइ ॥सू०८०॥ जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए मणुन्नाइं पोग्गलाइं उवहरइ उवहरंतं वा साइज्जइ ॥सू०८१॥ जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अन्नयरं पसुजाइं वा पक्खिजाइं वा

पायंसि वा पक्खंसि वा पुच्छंसि वा सीसंसि वा गहाय संचालेइ संचालंतं वा साइज्जइ ॥ सू०८२॥ जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए सोयंसि कट्ठं वा किलिंचं वा अंगुलीयं वा सलागं वा अणुप्पवेसेत्ता संचालेइ संचालंतं वा साइज्जइ ॥सू०८३॥ जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए 'अयं थी' तिकट्टु आलिङ्गेज्ज वा परिस्सएज्ज वा परिचुंबेज्ज वा विच्छेदेज्ज वा आलिंगंतं वा परिस्सयंतं वा परिचुंबंतं वा विच्छेदंतं वा साइज्जइ॥सू०८४॥ जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए असणं वा ४ देइ देंतं वा साइज्जइ ॥ सू०८५-८६॥ एवं वत्थंपि दोहिं गमएहिं ॥सू०८७-८८॥ सज्झायंपि दोहिं ॥सू०८९-९०॥ जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अन्नयरेणं इंदिएणं आगारं करेइ करंतं वा साइज्जइ ॥ पूरं? त सेवमाणे आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं ॥सू०९१॥ सत्तमो उद्देसओ ॥७॥

॥ अथ अष्टमोद्देशकः ॥

जे भिक्खू आगन्तारेसु वा जाव परियावसहेसु वा एगो एगित्थीए सद्धिं जाव कहेंतं वा साइज्जइ ॥ "८५"॥सू०१॥ जे भिक्खू उज्जाणंसि वा उज्जाणगिहंसि वा उज्जाणसालंसि वा निज्जाणंसि वा निज्जाणगिहंसि वा निज्जाणसालंसि वा एगो एगित्थीए सद्धिं जाव कहेंतं वा साइज्जइ ॥सू०२॥ जे भिक्खू अट्टंसि वा अट्टालयंसि वा पागारंसि वा दारंसि वा गोपुरंसि वा एगो एगित्थीए सद्धिं जाव कहेंतं वा साइज्जइ ॥सू०३॥ जे भिक्खू दगंसि वा दगमग्गंसि वा दगपहंसि वा दगतीरंसि वा दगट्ठाणंसि वा एगो एगित्थीए सद्धिं जाव कहेंतं वा साइज्जइ ॥सू०४॥ जे भिक्खू सुन्नगिहंसि वा सुन्नसालंसि वा भिन्नगिहंसि वा भिन्नसालंसि वा कूडागारंसि वा कोट्ठागारंसि वा एगो एगित्थीए सद्धिं जाव कहेंतं वा साइज्जइ ॥सू०५॥ जे भिक्खू तणगिहंसि वा तणसालंसि वा तुसगिहंसि तुससालंसि वा बुसगिहंसि वा बुससालंसि वा एगो एगित्थीए सद्धिं जाव कहेंतं वा साइज्जइ ॥सू०६॥ जे भिक्खू जाणसालंसि वा जाणगिहंसि वा जुग्गसालंसि वा जुग्गगिहंसि वा एगो एगित्थीए सद्धिं जाव कहेंतं वा साइज्जइ ॥सू०७॥ जे भिक्खू पणियसालंसि वा पणियगिहंसि परियाय गिहंसि वा परियायसालंसि वा कुवियगिहंसि वा कुवियसालंसि वा एगो एगित्थीए सद्धिं जाव कहेंतं वा साइज्जइ ॥सू०८॥ जे भिक्खू गोणसालंसि वा गोणगिहंसि वा महाकुलंसि वा महागिहंसि वा एगो एगित्थीए

सद्धिं विहारं वा करेइ सज्झायं वा करेइ असणं वा ४ आहारेइ उच्चारं वा पासवणं वा परिट्ठवेइ अन्नयरं वा अणारियं निट्ठुरं (पिठुणं) असमणपाओग्गं कहं कहेइ कहंतं वा साइज्जइ '८७' ॥सू०९॥ जे भिक्खू राओ वा वियाले वा इत्थीमज्झगए इत्थीसंसत्ते इत्थीपरिवुडे अपरिमाणाए कहं कहेइ कहंतं वा साइज्जइ ॥सू०१०॥ जे सगणिच्चियाए वा परगणिच्चियाए वा निग्गन्थीए सद्धिं गामाणुगामं दुइज्जमाणे पुरओ गच्छमाणे पिट्ठओ रीयमाणे ओहयमणसंकप्पे चिंतासोयसागरसंपविट्ठे करतलपल्हत्थमुहे अट्टज्झाणोवगए विहारं करेइ जाव करंतं वा साइज्जइ ॥सू०११॥ जे भिक्खू णायगं वा अनायगं वा उवासयं वा अणुवासयं वा अन्तो उवस्सयस्स अद्धं वा राइं कसिणं वा राइं संवसावेइ संवसावेंतं वा साइज्जइ ॥सू०१२॥ जे भिक्खू नायगं वा जाव संवसावेंतं तं न पडियाइक्खइ न पडियाइक्खंतं वा साइज्जइ ॥सू०१३॥ जो तं पडुच्च निक्खमइ वा पविसइ वा निक्खमंतं वा पविसंतं वा साइज्जइ '११६' ॥सू०१४॥ जे भिक्खू रन्नो खत्तियाणं मुदियाणं मुद्धाभिसित्ताणं समवाएसु वा पिण्डमहेसु वा असणं वा ४ पडिग्गाहेइ पडिग्गाहेंतं वा साइज्जइ ॥सू०१५॥ जे भिक्खू रन्नो खत्तियाणं मुदियाणं मुद्धाभिसित्ताणं उत्तरसालंसि वा उत्तरगिहंसि वा रीयमाणाणं समवाएसु वा जाव साइज्जइ ॥सू०१६॥ जे भिक्खू रन्नो जाव मुद्धाभिसित्ताणं हयसालगयाण वा गयसालगयाण वा मंतसालगयाण वा गुज्झसालगयाण वा रहस्ससालगयाण वा मेहुणसालगयाण वा समवाएसु जाव साइज्जइ ॥सू०१७॥ जे भिक्खू० संनिहिसंनिचयाओ खीरं वा दहिं वा नवणीयं वा सप्पिं वा गुलं वा खण्डं वा सक्करं वा मच्छण्डियं वा अन्नयरं वा भोयणजायं पडिगाहेइ पडिगाहेंतं वा साइज्जइ ॥सू०१८॥ जे भिक्खू० उस्सट्ठपिंडं वा संसट्ठपिण्डं वा अणाहपिण्डं वा किविणपिण्डं वा वणीमगपिण्डं वा पडिगाहेइ जाव साइज्जइ '१२५' तं सेवमाणे आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं ॥सू०१९॥ अट्ठमो उद्देसओ ॥८॥

॥अथ नवमोद्देशकः॥

जे भिक्खू रायपिण्डं गेण्हइ गेण्हंतं वा साइज्जइ ॥सू०१॥ जे भिक्खू रायपिण्डं भुंजइ भुंजंतं वा साइज्जइ '३६' ॥सू०२॥ जे भिक्खू रायन्तेपुरं प-

क्खिमइ पविसंतं वा साइज्जइ ॥सू०३॥ जे भिक्खू रायन्तेपुरियं वएज्जा 'आउसो! रायंतेउरिए! नो खलु अम्हं कप्पइ रायन्तेपुर निक्खमित्तए वा पविसित्तए वा इमण्हं तुमं पडिग्गहगं गहाय रायंतेपुराओ असणं वा ४ निहट्टियं आहट्टु दलयाहि' जे तं एवं वयइ वयंतं वा साइज्जइ ॥सू०४॥ जे भिक्खू य णं रायंतेउरिया वएज्जा 'आउसन्तो समणा नो खलु तुज्झं कप्पइ रायंतेपुरं निक्खमित्तए वा पविसित्तए वा आहरेयं पडिग्गहगं जाए अहं रायंतेपुराओ असणं वा ४ णीहडिय आहट्टु दलयामि' जे एवं पडिसुणेइ पडिसुणंतं वा साइज्जइ '२९' ॥सू०५॥ जे भिक्खू रन्नो जाव मुद्धाभिसित्ताणं दुवारियभत्तं वा पसुभत्तं वा भयगभत्तं वा बलभत्तं वा कयगभत्तं वा हयभत्तं वा गयभत्तं वा कन्तारभत्तं वा दुब्भिक्खभत्तं वा दुकालभत्तं वा दमगभत्तं वा गिलाणभत्तं वा वद्दलियाभत्तं वा पाहुणगभत्तं वा पडिगाहेइ पडिगाहेंतं वा साइज्जइ '३६' ॥सू०६॥ जे भिक्खू रण्णो खत्तियाणं जाव मुद्धाभिसित्ताणं इमाइं छद्दोसाययणाइं अजाणित्ता अपुच्छिय अगवेसिय परं चउरायपंचरायाओ पिण्डवायपडियाए निक्खमइ वा पविसइ वा निक्खमंतं वा पविसंतं वा साइज्जइ, तंजहा- कोट्ठागारसालाणि वा भण्डागारसालाणि वा पाणसालाणि वा खीरसालाणि वा गञ्जसालाणि वा महाणससालाणि वा '४२' ॥सू०७॥ जे भिक्खू रण्णो जाव मुद्धाभिसित्ताणं अइगच्छमाणाण वा निग्गच्छमाणाण वा '४८' ॥सू०८॥ जे भिक्खू इत्थीओ सव्वालंकारविभूसियाओ पदमवि चक्खुदंसणपडियाए गच्छइ वा अभिसंधारेइ वा गच्छन्तं वा अभिसंधारेंतं वा साइज्जइ ॥सू०९॥ जे भिक्खू मंसखायाण वा मच्छखायाण वा छविखायाण वा बहिया निग्गयाणं असणं वा ४ जाव साइज्जइ ॥सू०१०॥ जे भिक्खू अन्नयरं उववूहणीयं समीहियं पेहाए तीसे परिसाए अणुट्ठियाए अभिन्नाए अव्वोच्छिन्नाए जे तं अन्नं पडिगाहेइ पडिगाहेंतं वा साइज्जइ, अह पुण एवं जाणेज्जा 'इहज्ज राया खत्तिए परिवुसिए' जे भिक्खू ताए गिहाए ताए पएसाए ताए उवासन्तराए वा विहारं वा करेइ सज्झायं वा जाव कहेंतं वा साइज्जइ '६३' ॥सू०११॥ जे भिक्खू रण्णो खत्तियाणं जाव अभिसित्ताणं बहियाजत्तासंठियाणं असणं वा ४ पडिगाहेइ पडिगाहेंतं वा साइज्जइ ॥सू०१२॥ बहियाजत्तापडिणियत्ताणं ॥सू०१३॥ एवं णईजत्तापट्ठियाणं

॥सू०१४॥ पडिणिक्खत्ताणं ॥सू०१५॥ णिरिजत्तापट्ठियाणं ॥सू०१६॥ णिरिजत्तापडिणियत्ताणं ॥सू०१७॥ जे भिक्खू जाव अभिसित्ताणं महाभिसेयंसि वट्टमाणंसि णिक्खमइ वा पविसइ वा णिक्खमंतं वा पविसंतं वा साइज्जइ '९०' ॥सू०१८॥ जे भिक्खू जाव अभिसित्ताणं इमाओ दस अभिसेक्काओ रायहाणीओ उद्दिट्ठाओ गणियाओ वं(क)जियाओ अंतो मासस्स दुक्खुत्तो वा तिक्खुत्तो वा णिक्खमइ वा पविसइ वा णिक्खमंतं वा पविसंतं वा साइज्जइ, तंजहा- चम्पा महुरा वाणारसी सावत्थी साएयं कंपिल्लं कोसंबी मिहिला हत्थिणापुरं रायगिहं '१००' ॥सू०१९॥ जे भिक्खू रन्नो जाव अभिसित्ताणं असणं वा ४ परस्स नीहडं पडिग्गाहेइ पडिग्गाहेतं वा साइज्जइ, तंजहा- खत्तियाण वा राईण वा कुराईण वा रायसंसियाण वा रायपेसियाण वा ॥सू०२०॥ जे भिक्खू जाव साइज्जइ, तंजहा- नडाण वा नट्टाण वा कच्छुयाण वा जल्लाण वा मल्लाण वा मुट्ठियाण वा वेलम्बगाण वा कहगाण वा पवगाण वा लासगाण वा दीक्खवलयाण वा छत्ताणुयाण वा ॥सू०२१॥ जे भिक्खू जाव साइज्जइ, तंजहा- आसपोसयाण वा हत्थिपोसयाण वा महिसपोसयाण वा वसहपोसयाण वा सीहपोसयाण वा वग्घपोसयाण वा अयपोसयाण वा पोयपोसयाण वा मिगपोसयाण वा सुणहपोसयाण वा सूयरपोसयाण वा मेण्ढपोसयाण वा कुक्कुडपोसयाण वा तित्तिरपोसयाण वा वट्टयपोसयाण वा लावयपोसयाण वा चीरल्लपोसयाण वा हंसपोसयाण वा मयूरपोसयाण वा सुयपोसयाण वा ॥सू०२२॥ एवं आसदमगाण वा हत्थिदमगाण वा ॥सू०२३॥ आसमिंठाण वा हत्थिमिंठाण वा ॥सू०२४॥ आसरोहाण वा हत्थिरोहाण वा ॥सू०२५॥ जे भिक्खू जाव साइज्जइ, तंजहा- सत्थाहाण वा संवाहावयाण वा अब्भंगावयाण वा उव्वट्टावयाण वा मज्जावयाण वा मण्डावयाण वा छत्तग्गहाण वा चामरग्गहाण वा हडप्पग्गहाण वा परियट्टग्गहाण वा दीवियग्गहाण वा असिग्गहाण वा धणुग्गहाण वा सत्तिग्गहाण वा कोन्तग्गहाण वा ॥सू०२६॥ जे भिक्खू जाव साइज्जइ, तंजहा- वरिसधराण वा कञ्चुइज्जाण वा दोवारियाण वा दण्डारक्खियाण वा ॥सू०२७॥ जे भिक्खू जाव साइज्जइ, तंजहा- खुज्जाण वा चिलाइयाण वा वामणीण वा वडभीण वा बब्बरीण वा पउसीण वा जोणियाण वा पल्हवियाण वा इसिणीण वा थारुगिणीण वा लउसीण वा लासीण वा सिंहलीण वा आरबी(रबी)ण वा पुलिन्दीण वा सबरीण वा पारसीण वा, तं सेवमाणे आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं '१११' ॥सू०२८॥ नवमो उद्देसओ ॥९॥

[२२] ॥ अथ दशमोद्देशक ॥

जे भिक्खू भदन्तं आगाढं वयइ वयंतं वा साइज्जइ ॥सू०१॥
फरुसं ॥सू०२॥ आगाढफरुसं '३५' ॥सू०३॥ जे भिक्खू अन्नयरीए अच्चासाय-
णाए अच्चासाएइ अच्चासायंतं वा साइज्जइ '२२' ॥सू०४॥ जे भिक्खू अणन्त-
कायसंजुत्तं आहारं आहारेइ आहारंतं वा साइज्जइ '२६' ॥सू०५॥ जे भिक्खू आ-
हाकम्मं भुंजइ भुंजंतं वा साइज्जइ '८१' ॥सू०६॥ जे भिक्खू पडुप्पन्नं निमित्तं
वागरेइ वागरेंतं वा साइज्जइ ॥सू०७॥ जे भिक्खू अणागयं निमित्तं वाग-
रेइ वागरंतं वा साइज्जइ '९३' ॥सू०८॥ जे भिक्खू सेहं विप्परिणामेइ विपरि-
णामंतं वा साइज्जइ ॥सू०९॥ जे भिक्खू सेहं अवहरइ अवहरंतं वा साइ-
ज्जइ ॥सू०१०॥ जे भिक्खू दिसं विपरिणामेइ विपरिणामंतं वा साइज्जइ ॥सू०
११॥ जे भिक्खू दिसं अवहरइ अवहरंतं वा साइज्जइ '१५७' ॥सू०१२॥ जे
भिक्खू बहियावासियं आएसं परं तिरायाओ अविफालेत्ता संवसावेइ संवसा-
वेंतं वा साइज्जइ ॥सू०१३॥ जे भिक्खू साहिगरणं अविओसवियपाहुडं अकडपा-
यच्छित्तं संभुंजइ संभुंजंतं वा साइज्जइ '२५३' ॥सू०१४॥ जे भिक्खू उग्घाइयं
अणुग्घाइयं वयइ वयंतं वा साइज्जइ ॥सू०१५॥ जे भिक्खू अणुग्घाइयं उग्घा-
इयं वयइ वयंतं वा साइज्जइ ॥सू०१६॥ जे भिक्खू उग्घाइए अणुग्घाइयं देइ
देंतं वा साइज्जइ ॥सू०१७॥ जे भिक्खू अणुग्घाइए उग्घाइयं देइ देंतं
वा साइज्जइ ॥सू०१८॥ जे भिक्खू उग्घाइयं सोच्चा नच्चा संभुंजइ संभुंजंतं
वा साइज्जइ ॥सू०१९॥ उग्घाइयहेउं ॥सू०२०॥ उग्घाइयसंकप्पं ॥सू०२१॥ उग्घाइयं
वा उग्घाइयहेउं वा उग्घाइयसंकप्पं वा ॥सू०२२॥ जे भिक्खू अणुग्घाइयं सोच्चा
नच्चा संभुंजइ संभुंजंतं वा साइज्जइ ॥सू०२३॥ अणुग्घाइयहेउं ॥सू०२४॥ अणुग्घा-
इयसंकप्पं ॥सू०२५॥ अणुग्घाइयं वा अणुग्घाइयहेउं वा अणुग्घाइयसंकप्पं
वा ॥सू०२६॥ उग्घाइयं वा अणुग्घाइयं वा ॥सू०२७॥ उग्घाइयहेउं वा अणुग्घाइय-
हेउं वा ॥सू०२८॥ उग्घाइयसंकप्पं वा अणुग्घाइयसंकप्पं वा ॥सू०२९॥ उग्घा-
इयं वा अणुग्घाइयं वा उग्घाइयहेउं वा अणुग्घाइयहेउं वा उग्घाइयसंकप्पं
वा अणुग्घाइयसंकप्पं वा ॥सू०३०॥ जे भिक्खू उग्गयवित्तीए अणत्थमियमण-
संकप्पे संथडिए निव्वितिगिच्छासमावन्नेणं अप्पाणेणं असणं वा पडिग्गाहेत्ता सं

भुंजइ संभुंजंतं वा साइज्जइ ॥सू०३१॥ संथडिए विइगिंछासमावन्नेणं ॥सू०३२॥ असंथडिए निव्विइगिंछासमावन्नेणं ॥सू०३३॥ असंथडिए विइगिंछासमावन्नेणं (अह पुण एवं जाणेज्जा- अणुग्गए सूरिए अत्थमिए वा, से जं च मुहे जं च पाणिंसि जं च पडिग्गहे तं विगिंचिय विसोहिय तं परिट्ठवेमाणे नाइक्कमइ, जो तं भुंजइ भुंजंतं वा साइज्जइ) '३२५' ॥सू०३४॥ जे भिक्खू राओ वा वियाले वा सपाणं सभोयणं उग्गालं उग्गालित्ता पच्चोगिलइ पच्चोगिलंतं वा साइज्जइ '३२६' ॥सू०३५॥ जे भिक्खू गिलाणं सोच्चा न गवेसइ न गवेसंतं वा साइज्जइ ॥सू०३६॥ जे भिक्खू उम्मग्गं पडिपहं वा गच्छइ गच्छंतं वा साइज्जइ ॥सू०३७॥ जे भिक्खू गिलाणवेयावच्चे अब्भुट्ठियस्स सएण लाभेण असंथरमाणस्स जे तस्स न पडितप्पइ नपडितप्पेंतं वा साइज्जइ ॥सू०३८॥ जे भिक्खू गिलाणवेयावच्चे अब्भुट्ठियं गिलाणपाओग्गे दव्वजाए अलभमाणे जो तं न पडियाइक्खइ नपडिआइक्खंतं वा साइज्जइ '३३२' ॥सू०३९॥ जे भिक्खू पढमपाउसंसि गामाणुगामं दूइज्जइ दूइज्जंतं वा साइज्जइ ॥सू०४०॥ जे भिक्खू वासावासं पज्जोसवियंसि दूइज्जइ दूइज्जंतं वा साइज्जइ ॥सू०४१॥ जे भिक्खू अपज्जोसवणाए पज्जोसवेइ पज्जोसवेंतं वा साइज्जइ ॥सू०४२॥ जे भिक्खू पज्जोसवणाए न पज्जोसवेइ नपज्जोसवेंतं वा साइज्जइ ॥सू०४३॥ जे भिक्खू पज्जोसवणाए गोलोमाइंपि वालाइं उवाइणावेइ उवाइणावेंतं वा साइज्जइ ॥सू०४४॥ जे भिक्खू पज्जोसवणाए इत्तिरियंपि आहारं आहारेइ आहारेंतं वा साइज्जइ ॥सू०४५॥ जे भिक्खू अन्नउत्थियं वा गारत्थियं वा पज्जोसवेइ पज्जोसवेंतं वा साइज्जइ '६३०' ॥सू०४६॥ जे भिक्खू पढमसमोसरणुद्देसपत्ताइं चीवराइं पडिगाहेइ पडिगाहंतं वा साइज्जइ, '६६४' तं सेवमाणे आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं ॥सू०४७॥ दसमो उद्देसओ॥

॥ अथ एकादशोद्देशकः॥

जे भिक्खू अय-पायाणि वा कंसपायाणि वा तंबपायाणि वा तउयपायाणि वा रुप्पपायाणि वा सुवण्णपायाणि वा जायरूवपायाणि वा मणिपायाणि वा कायपायाणि वा कणगपायाणि वा दन्तपायाणि वा सिंगपायाणि वा चम्मपायाणि वा चेलपायाणि वा अंकपायाणि वा संखपायाणि वा वइरपायाणि वा करेइ करेंतं वा साइज्जइ ॥सू०१॥ जे भिक्खू अयपायाणि वा जाव वइरपायाणि वा धरेइ धरेंतं वा साइज्जइ

॥सू०२॥ जे भिक्खू अयपायाणि वा जाव वइरपायाणि वा परिभुंजइ परिभुंजंतं वा साइज्जइ ॥सू०३॥ जे भिक्खू अयबंधणाणि वा जाव वइरबंधणाणि वा करेइ करेंतं वा साइज्जइ जाव परिभुंजइ परिभुंजंतं वा साइज्जइ ॥सू०४-६॥ जे भिक्खू परं अद्धजोयणमेराओ पायवडियाए गच्छइ गच्छंतं वा साइज्जइ ॥सू०७॥ जे भिक्खू परं अद्धजोयणमेराओ सपच्चवायंसि पायं अभिहडं आहट्टु देज्जमाणं पडिग्गाहेइ पडिग्गाहेंतं वा साइज्जइ '२३' ॥सू०८॥ जे भिक्खू धम्मस्स अवण्णं वयइ वयंतं वा साइज्जइ ॥सू०९॥ जे भिक्खू अधम्मस्स वण्णं वयइ वयंतं वा साइज्जइ '३६' ॥सू०१०॥ जे भिक्खू अन्नउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा पाए आमज्जिज्ज वा पमज्जिज्ज वा आमज्जंतं वा पमज्जंतं वा साइज्जइ, एवं तइयउद्देसगमेण णेयव्वं नवरं अन्नउत्थियगारत्थियाभिलावा जाव जे गामाणुगामं दूइज्जमाणे अण्णउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा सीसदुवारियं करेइ करेंतं वा साइज्जइ '३८' ॥सू०११-६३॥ जे भिक्खू अप्पाणं बीभावेइ बीभावेंतं वा साइज्जइ ॥सू०६४॥ परं बीभावेइ ॥सू०६५॥ जे भिक्खू अप्पाणं विम्हावेइ विम्हावेंतं वा साइज्जइ ॥सू०६६॥ परं विम्हावेइ ॥सू०६७॥ जे भिक्खू अप्पाणं विप्परियासेइ विप्परियासेंतं वा साइज्जइ ॥सू०६८॥ परं विप्परियासेइ ॥सू०६९॥ जे भिक्खू अप्पाणं मुहवण्णं करेइ करेंतं वा साइज्जइ '८४' ॥सू०७०॥ जे भिक्खू वेरज्जविरुद्धरज्जंसि सज्जं गमणं आगमणं गमणागमणं करेइ करेंतं वा साइज्जइ '११५' ॥सू०७१॥ जे भिक्खू दियाभोयणस्स अवण्णं वयइ वयंतं वा साइज्जइ ॥सू०७२॥ राइभोयणस्स वण्णं '१२०' ॥सू०७३॥ जे भिक्खू दिया असणं वा ४ पडिग्गाहेत्ता दिया भुंजइ भुंजंतं वा साइज्जइ ॥सू०७४॥ जे भिक्खू असणं वा ४ दिया पडिग्गाहेत्ता रत्तिं भुंजइ भुंजंतं वा साइज्जइ ॥सू०७५॥ जे भिक्खू असणं वा ४ रत्तिं पडिग्गाहेत्ता दिया भुंजइ भुंजंतं वा साइज्जइ ॥सू०७६॥ जे भिक्खू असणं वा ४ रत्तिं पडिग्गाहेइ रत्तिं भुंजइ भुंजंतं वा साइज्जइ '१९१' ॥सू०७७॥ जे भिक्खू असणं वा ४ अणागाढे परिवासेइ परिवासंतं वा साइज्जइ ॥सू०७८॥ जे भिक्खू अणागाढे परिवासियस्स असणस्स वा ४ तयप्पमाणं वा भूइप्पमाणं वा आहारं आहारेइ आहारेंतं साइज्जइ '२०४' ॥सू०७९॥ जे भिक्खू मंसाइयं वा मच्छाइयं वा मंसखलं मच्छखलं वा आहेणं वा पहेणं वा सम्मेलं वा हिंगोलं वा अन्नयरं वा तहप्पगारं विरूवरूवं हीरमाणं पेहाए ताए आसाए ताए पिवासाए तं रयणिं अन्नत्थ

इणावेइ उवाइणावेंतं वा साइज्जइ '२११' ॥सू०८०॥ जे भिक्खू निवेयणपिंडं भुंजइ भुंजंतं वा साइज्जइ '२१५' ॥सू०८१॥ जे भिक्खू अहाछन्दं पसंसइ पसंसंतं वा साइज्जइ ॥सू०८२॥ जे भिक्खू अहाछंदं वंदइ वंदंतं वा साइज्जइ '२२६' ॥सू०८३॥ जे भिक्खू नायगं वा अनायगं वा उवासगं वा अणुवासगं वा अणलं वा पव्वावेइ पव्वावेंतं वा साइज्जइ ॥सू०८४॥ उवट्ठावेइ उवट्ठावेंतं वा साइज्जइ '४९१' ॥सू०८५॥ जे भिक्खू नायएण वा अनायएण वा उवासएण वा अणुवासएण वा अणलेण वा वेयावच्चं कारेइ कारेंतं वा साइज्जइ '४९६' ॥सू०८६॥ जे भिक्खू सचेले सचेलगाणं मज्झे संवसइ संवसंतं वा साइज्जइ ॥सू०८७॥ जे भिक्खू अचेले सचेलगाणं मज्झे संवसइ संवसंतं वा साइज्जइ ॥सू०८८॥ सचेले अचेलगाणं ॥सू०८९॥ अचेले अचेलगाणं '५०७' ॥सू०९०॥ जे भिक्खू पारियासियं पिप्पलिं वा पिप्पलिचुण्णं वा सिंगबेरं वा सिंगबेरचुण्णं वा बिलं वा लोणं वा उब्भिय(भि)यं वा लोणं आहारेइ आहारेंतं वा साइज्जइ '५२०' ॥सू०९१॥ जे भिक्खू गिरिपडणाणि वा मरुपडणाणि वा भिगुपडणाणि वा तरुपडणाणि वा गिरिपक्खंदणाणि वा मरुपक्खंदणाणि वा तरुपक्खंदणाणि वा जलपवेसाणि वा जलणपवेसाणि वा (२३९) जलपक्खंदणाणि वा जलणपक्खंदणाणि वा विसभक्खणाणि वा सत्थोवाडणाणि वा अंतोसल्लमरणाणि वा वेहाणसाणि वा गिद्धपट्ठाणि वा वलयमरणाणि वा जाव अन्नयराणि वा तहप्पगाराणि बालमरणाणि पसंसइ पसंसंतं वा साइज्जइ '५३७'॥ तं सेवमाणे आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं ॥सू०९२॥ एक्कारसमो उद्देसओ ॥११॥

॥अथ द्वादशोद्देशक:॥

जे भिक्खू कोलुणपडियाए अन्नयरिं तसपाणजाइं तणपासएण वा मुंजपासएण वा कट्ठपासएण वा चम्मपासएण वा वत्तपासएण वा रज्जुपासएण वा सुत्तपासएण वा बंधइ बंधंतं वा साइज्जइ ॥सू०१॥ जे भिक्खू बद्धेलगं मुयइ मुयंतं वा साइज्जइ '१०' ॥सू०२॥ जे भिक्खू अभिक्खणं २ पच्चक्खाणं भंजइ भंजंतं वा साइज्जइ '१५' ॥सू०३॥ जे भिक्खू परित्तकायसंजुत्तं आहारेइ आहारेंतं वा साइज्जइ '२०' ॥सू०४॥ जे भिक्खू

सलोमाइं चम्माइं धरेइ धरंतं वा (अहिट्ठेइ अहिट्ठेंतं वा) साइज्जइ '४५'॥सू०
५॥ जे भिक्खू तणपीढगं वा पलालपीढगं वा छगणपीढगं वा कट्ठपी-
ढगं वा परवत्थेणोच्छन्नं अहिट्ठेइ अहिट्ठंतं वा साइज्जइ '५०'॥सू०६॥
जे भिक्खू निग्गन्थीए संघाडिं अन्नउत्थिएण गारत्थिएण वा सि-
व्वावेइ सिव्वावेंतं वा साइज्जइ '५१'॥सू०७॥ जे भिक्खू पुढवीकायस्स वा
कलमायमवि समारभइ समारभंतं वा साइज्जइ, एवं जाव वणप्फतिकायस्स'५६
॥सू०८॥ जे भिक्खू सचित्तरुक्खं दुरुहइ दुरुहंतं वा साइज्जइ '६६'॥सू०९॥ जे भिक्खू
गिहिमत्ते भुंजइ भुंजंतं वा साइज्जइ ॥सू०१०॥ जे भिक्खू गिहिवत्थं परिहेइ परिहंतं वा
साइज्जइ ॥सू०११॥ जे भिक्खू गिहिनिसेज्जं वाहेइ वाहंतं वा साइज्जइ ॥सू०१२॥ जे भि-
क्खू गिहितिगिच्छं करेइ करंतं वा साइज्जइ '८२'॥सू०१३॥ जे भिक्खू पुरेकम्मकडेण
हत्थेण वा मत्तेण वा दव्विए वा भायणेण वा असणं वा ४ पडिग्गाहेइ पडिग्गाहंतं वा
साइज्जइ ॥सू०१४॥ जे भिक्खू अन्नउत्थियाण वा गारत्थियाण वा सीओदगपरि-
भोएण हत्थेण जाव असणं वा ४ पडिग्गाहेइ पडिग्गाहंतं वा साइज्जइ '१४४'॥सू०१५॥
जे भिक्खू कट्ठकम्माणि वा चित्तकम्माणि वा पोत्थकम्माणि वा दन्तकम्माणि वा म-
णिकम्माणि वा सेलकम्माणि वा गंथिमाणि वा वेढिमाणि वा पूरिमाणि वा
संघाइमाणि वा पत्तच्छेज्जाणि वा विविहाणि वा वेहिमाणि वा चक्खुदंसणव-
डियाए अभिसंधारेइ अभिसंधारंतं वा साइज्जइ ॥सू०१६॥ जे भिक्खू वप्पाणि
वा फलिहाणि वा उप्पलाणि वा पल्ललाणि वा उज्झराणि वा निज्झराणि वा
वावीणि वा पोक्खराणि वा दीहियाणि वा गुंजालियाणि वा सराणि वा सर-
पंतियाणि वा सरसरपंतियाणि वा चक्खुदंसणवडियाए अभिसंधारेइ अभि-
संधारंतं वा साइज्जइ ॥सू०१७॥ जे भिक्खू कच्छाणि वा गहणाणि वा नूमा-
णि वा वणाणि वा वणविदुग्गाणि वा पव्वयाणि वा पव्वयविदुग्गाणि
वा चक्खुदंसणवडियाए अभिसंधारेइ अभिसंधारंतं वा साइज्जइ ॥
॥सू०१८॥ जे भिक्खू गामाणि वा नगराणि वा खेडाणि वा कब्बडाणि
वा मडम्बाणि वा दोणमुहाणि वा पट्टणाणि वा आगराणि वा सम्बाहा-
णि वा सन्निवेसाणि वा चक्खुदंसणवडियाए अभिसंधारेइ अभिसंधा-
रंतं वा साइज्जइ ॥सू०१९॥ जे भिक्खू गाममहाणि वा जाव संनिवेसमहा-
णि वा जाव साइज्जइ ॥सू०२०॥ जे भिक्खू गामवहाणि वा जाव सन्निवेस

वहाणि वा गामदाहाणि वा जाव संनिवेसदाहाणि वा जाव अभिसंधारेतं वा साइज्जइ ॥सू०२१॥ जे भिक्खू गामपहाणि वा जाव संनिवेसपहाणि वा जाव अभिसंधारेतं वा साइज्जइ ॥सू०२२॥ जे भिक्खू आसकरणाणि वा हत्थिकरणाणि वा उट्टकरणाणि वा गोणकरणाणि वा महिसकरणाणि वा सूयरकरणाणि वा जाव अभिसंधारेतं वा साइज्जइ ॥सू०२३॥ जे भिक्खू जाव आसजुद्धाणि वा हत्थिजुद्धाणि वा उट्टजुद्धाणि वा गोणजुद्धाणि वा महिसजुद्धाणि वा जाव अभिसंधारेतं वा साइज्जइ ॥सू०२४॥ जे भिक्खू उज्जूहियट्ठाणाणि वा हयजूहियट्ठाणाणि वा गयजूहियट्ठाणाणि वा जाव अभिसंधारेतं वा साइज्जइ ॥सू०२५॥ जे भिक्खू अभिसेयट्ठाणाणि वा अक्खाइयट्ठाणाणि वा माणुम्माणियट्ठाणाणि वा महयाहय-नट्टगीयवाइय-तन्ती-तलताल-तुडियपडुप्पवाइयट्ठाणाणि वा जाव अभिसंधारेतं वा साइज्जइ ॥सू०२६॥ जे भिक्खू आघायणाणि वा डिम्बाणि वा डमराणि वा खाराणि वा वेराणि वा महाजुद्धाणि वा महासंगामाणि वा कलहाणि वा बोलाणि वा जाव अभिसंधारेतं वा साइज्जइ ॥सू०२७॥ जे भिक्खू विरूवरूवेसु महुस्सवेसु इत्थीणि वा पुरिसाणि थेराणि वा मज्झिमाणि वा डहराणि वा अणलंकियाणि वा सुअलंकियाणि वा गायन्ताणि वा वायन्ताणि वा नच्चन्ताणि वा हसन्ताणि वा रमन्ताणि वा मोहन्ताणि वा विउलं असणं वा ४ परिभायन्ताणि वा परिभुंजन्ताणि वा जाव अभिसंधारेतं वा साइज्जइ ॥सू०२८॥ जे भिक्खू इहलोइएसु वा रूवेसु परलोइएसु वा रूवेसु दिट्ठेसु वा अदिट्ठेसु वा सुएसु वा असुएसु वा विन्नाएसु वा अविन्नाएसु वा रूवेसु सज्जइ रज्जइ गिज्झइ अज्झोववज्जइ सज्जमाणं वा अज्झोववज्जमाणं वा साइज्जइ ॥ '१६३' ॥सू०२९॥ जे भिक्खू पढमाए पोरिसीए असणं वा ४ पडिगाहेत्ता पच्छिमं पोरिसिं उवाइणावेइ उवाइणावेंतं वा साइज्जइ '१८१' ॥सू०३०॥ जे भिक्खू परं अद्धजोयणमेराओ असणं वा ४ उवाइणावेइ उवाइणावेंतं वा साइज्जइ '१८' ॥सू०३१॥ जे भिक्खू दिया गोमयं पडिगाहेत्ता दिया कायंसि वणं आलिम्पेज्ज वा विलिम्पेज्ज वा आलिंपंतं वा विलिंपंतं वा साइज्जइ ॥सू०३२॥ जे भिक्खू दिया गोमयं पडिगाहेत्ता रत्तिं वणं आलिंपेज्ज वा विलिंपेज्ज वा आलिंपंतं वा विलिंपंतं वा साइज्जइ ॥सू०३३॥ जे भिक्खू रत्तिं गोमयं पडिगाहेत्ता दिया वणं आ-

लिंपेज्ज वा विलिंपेज्ज वा आलिंपंतं वा विलिंपंतं वा साइज्जइ ॥सू०३४॥ जे भिक्खू रत्तिं गोमयं पडिगाहेत्ता रत्तिं वण आलिंपेज्ज वा विलिंपेज्ज वा आलिंपंतं वा विलिंपंतं वा साइज्जइ ॥सू०३५॥ जे भिक्खू दिया आलेवणजायं पडिगाहेत्ता दिया कायंसि वणं जाव चउभंगो '२२६' ॥सू०३६-३९॥ जे भिक्खू अन्नउत्थिएण वा गारत्थिएण वा उवहिं वहावेइ वहावेंतं वा साइज्जइ ॥सू०४०॥ जे भिक्खू तन्नीसाए असणं वा ४ देइ देंतं वा साइज्जइ '२३०' ॥सू०४१॥ जे भिक्खू पडिमाओ महण्णवाओ महानईओ उद्दिट्ठाओ गणियाओ वंजियाओ अंतो मासस्स दुक्खुत्तो वा तिक्खुत्तो वा उत्तरइ वा संतरइ वा उत्तरंतं वा संतरंतं वा साइज्जइ, तंजहा- गंगा जउणा सरऊ एरावई मही, '२३८' तं सेवमाणे आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं उग्घाइयं ॥सू०४२॥ बारसमो उद्देसओ ॥१२॥

॥ अथ त्रयोदशोद्देशकः ॥

जे भिक्खू अणन्तरहियाए पुढवीए ठाणं वा सेज्जं वा निसेज्जं वा णिसीहियं वा चेएइ चेयंतं वा साइज्जइ, जाव मक्कडासंताणगंसि ॥सू०१-८॥ जे भिक्खू थूणंसि वा गिहेलुयंसि वा उसुयालंसि वा कामजलंसि वा ठाणं जाव चेयंतं वा साइज्जइ ॥सू०९॥ जे भिक्खू कुलियंसि वा भित्तिंसि वा सिलंसि वा लेलुयंसि वा अन्तलिक्खजायंसि वा ठाणं जाव चेयंतं वा साइज्जइ ॥सू०१०॥ जे भिक्खू खंधंसि वा फलहंसि वा मञ्चंसि वा मण्डवंसि वा मालंसि वा पासायंसि वा हम्मतलंसि वा दुब्बद्धे दुण्णिक्खित्ते अनिकम्पे चलाचले ठाणं जाव चेयंतं वा साइज्जइ ॥सू०११॥ '२२' जे भिक्खू अन्नउत्थियं वा गारत्थियं वा सिप्पं वा सिलोगं वा अट्ठापयं वा कक्कडगं वा वुग्गहं वा सलाहं (जं) वा सलाह (कउ) हत्थयं वा सिक्खावेइ सिक्खावेंतं वा साइज्जइ ॥सू०१२॥ जे भिक्खू आगाढं वयइ वयंतं वा साइज्जइ ॥सू०१३॥ फरुसं, आगाढफरुसं, अन्नयरीए अच्चासायणाए अच्चासाएइ अच्चासायंतं वा साइज्जइ '३१' ॥सू०१४-१६॥ जे भिक्खू अन्नउत्थियाण वा गारत्थियाण वा कोउगकम्मं करेइ करेंतं वा साइज्जइ ॥सू०१७॥ भूइकम्मं ॥सू०१८॥ पसिणं कहेइ ॥सू०१९॥ पसिणापसिणं ॥सू०२०॥ तीयं निमित्तं

॥सू०२१॥ लक्खणं ॥सू०२२॥ सुमिणं ॥सू०२३॥ जे भिक्खू विज्जं पउंजइ पउंजंतं वा साइज्जइ '५०'॥सू०२४॥ एवं मन्तं ॥सू०२५॥ जोगं ॥सू०२६॥ जे० नट्ठाणं मूढाणं विप्परियासियाणं मग्गं वा पवेएइ संधिं वा पवेएइ मग्गेण वा संधिं पवेएइ संधीओ वा मग्गं पवेएइ पवेएंतं वा साइज्जइ ॥सू० २७॥ जे भिक्खू धाउं पवेएइ पवेएंतं वा साइज्जइ ॥सू०२८॥ निहिं '६२' ॥सू०२९॥ जे भिक्खू मत्तए अप्पा(ता)णं देहइ देहंतं वा साइज्जइ ॥सू० ३०॥ अद्दाए ॥सू०३१॥ एवं असीए (अप्पाणं) ॥सू०३२॥ मणिए ॥सू०३३॥ कुंडइ(डा)पाणे ॥सू०३४॥ तेल्ले ॥सू०३५॥ फा(फा)णिए ॥सू०३६॥ वसाए '७३' ॥सू०३७॥ जे भिक्खू वमणं पडिकम्मं करेइ करंतं वा साइज्जइ ॥सू०३८॥ विरेयणं वमणविरेयणं, अरोगियं '८४'॥सू०३९-४१॥ जे० पासत्थं वंदइ वंदंतं वा साइज्जइ, पसंसइ पसंसंतं वा साइज्जइ ॥सू० ४२-४३॥ एवं ओसन्नं ॥सू०४४-४५॥ कुसीलं, नितियं, संसत्तं, काहियं, पासणियं, मामगं, संपसारगं '११९' ॥सू०४६-५९॥ जे भिक्खू धाइपिंडं भुंजइ भुंजंतं वा साइज्जइ ॥सू०६०॥ एवं दूइपिंडं, निमित्तपिण्डं, आजीवियपिण्डं वणीमगपिण्डं, तिगिच्छापिण्डं, कोहपिण्डं, माणपिण्डं, मायापिण्डं, लोभपिण्डं, विज्जापिण्डं, मन्तपिण्डं, जोगपिण्डं, चुण्णपिण्डं ॥सू०६१-७३॥ अंतद्धाणपिण्डं '२१६' तं सेवमाणे आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं उग्घाइयं ॥सू०७५॥ तेरसमो उद्देसओ ॥१३॥

॥अथ चतुर्दशोद्देशकः॥

जे भिक्खू पडिग्गहं किणइ किणावेइ कीयं आहट्टु देज्जमाणं पडिग्गाहेइ पडिग्गाहेंतं वा साइज्जइ ॥सू०१॥ जे भिक्खू पडिग्गहं पामिच्चेइ पामिच्चावेइ पामिच्चियं आहट्टु देज्जमाणं जाव साइज्जइ ॥सू०२॥ परियट्टेइ परियट्टावेइ परियट्टियं ॥सू०३॥ अच्छेज्जं अनिसिट्ठं अभिहडं '५१'॥सू०४॥ जे भिक्खू अइरेगं पडिग्गहगं गणिं उद्दिसिय गणिं समुद्दिसिय तं गणिं अणापुच्छिय अणामन्तिय अन्नमन्नस्स वियरइ वियरंतं वा साइज्जइ॥ सू०५॥ जे भिक्खू खुड्डगस्स वा खुड्डियाए वा थेरगस्स वा थेरियाए वा अहत्थच्छिन्नस्स अपायच्छिन्नस्स अनासच्छिन्नस्स अकण्णछिन-

भस्स अणोट्ठिच्छिन्नस्स सकुस्स देइ देंतं वा साइज्जइ ॥सू०६॥ जे भिक्खू खुड्डगस्स वा जाव थेरियाए वा अच्छिन्नस्स जाव ओट्ठिच्छिन्नस्स असिक्कस्स न देइ नदेंतं वा साइज्जइ '३५२' ॥सू०७॥ जे भिक्खू पडिग्गहं अणलं अथिरं अधुवं अधारणिज्जं धरेइ धरेंतं वा साइज्जइ ॥सू०८॥ जे भिक्खू अलं थिर धुवं धारणिज्जं न धरेइ न धरेंतं वा साइज्जइ '३५९' ॥सू०९॥ जे भिक्खू वण्णमन्तं पडिग्गहं विवण्णं करेइ करेंतं वा साइज्जइ ॥सू०१०॥ जे भिक्खू विवण्णं पडिग्गहं वण्णमन्तं करेइ करेंतं वा साइज्जइ ॥सू०११॥ जे भिक्खू 'नो नवए मे पडिग्गहे लद्धे' त्तिकट्टु तेल्लेण वा घएण वा नवणीएण वा वसाए वा मक्खेज्ज वा भिलिंगेज्ज वा मक्खेंतं वा भिलिंगंतं वा साइज्जइ ॥सू०१२॥ जे भिक्खू लोद्धेण वा कक्केण वा चुण्णेण वा वण्णेण वा उल्लोलेज्ज वा उव्वले(ट्टे)ज्ज वा उल्लोलंतं वा उव्वलं(ट्टं)तं वा साइज्जइ ॥सू०१३॥ जे भिक्खू सीओदगवियडेण वा जाव उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलेज्ज वा पधोएज्ज वा उच्छोलंत वा पधावंतं वा साइज्जइ ॥सू०१४॥ जे भिक्खू बहुदेवसिएण तेल्लेण वा जाव वसाए वा लोद्धेण वा जाव वण्णेण वा सीओदगवियडेण वा जाव साइज्जइ ॥सू०१५-१७॥ जे णवए मे पडिग्गहे इतिकट्टु एवं ते गमा भाणियव्वा ॥सू०१८-१९॥ जे णवए मे सुब्भिगंधे पडिग्गहे लद्धे इतिकट्टु जाव साइज्जइ ॥सू०२०॥ बहुदेवसिएण सीओदगवियडेण वा जाव साइज्जइ ॥सू०२१-२३॥ जे नो नवए सुब्भिगंधेणवि ते चेव गमा, जे दुब्भिगंधे पडिग्गहे लद्धेत्ति- दुब्भिगंधेण ते चेव गमा णेयव्वा '३७४' ॥सू०२४-२९॥ जे भिक्खू अणंतरहियाए पुढवीए जाव जीवपतिट्ठिते सअंडे जाव ससंकमणंसि चलाचले सपडिग्गहगं आयावेज्ज वा पयावेज्ज वा आयावंतं वा पयावंतं वा साइज्जइ ॥सू०३०-४०॥ एवं जे भिक्खू कुलियंसि वा जाव लेलुयंसि वा सपडिग्गहगं आयावेज्ज वा पयावेज्ज वा आयावंतं वा पयावंतं वा साइज्जइ ॥सू०४१॥ जे भिक्खू खंधंसि जाव पासायंसि वा अद्दयरंसि वा अंतरिक्खजायंसि सपडिग्गहगं आयावेज्ज वा पयावेज्ज वा आयावंतं वा पयावंतं वा साइज्जइ '३७९' ॥सू०४२॥ जे भिक्खू पडिग्गहाओ पुढवीकायं आउकायं तेउकायं नीहरइ नीहरावेइ नीहरियं आहट्टु देज्जमाणं पडिग्गाहेइ पडिग्गाहेंतं वा साइज्जइ ॥सू०४३॥ जे भिक्खू कंदाणि वा मूलाणि

वा पत्ताणि वा पुप्फाणि वा फलाणि वा बीयाणि वा णीहरइ जाव साइ-
ज्जइ ॥सू०४४॥ ओसहि बीयाइं ॥सू०४५॥ तसपाणजाये '१९५' ॥सू०४६॥
जे भिक्खू पडिग्गहगं णिक्कोरेइ णिक्कोरावेइ णिक्कोरियं आहट्टु देज्ज-
माणं पडिग्गाहेइ पडिगाहंतं वा साइज्जइ '२००' ॥सू०४७॥ जे भिक्खू
णायगं वा अणायगं वा उवासगं वा अणुवासगं वा गामंतरंसि वा गा-
मपहन्तरंसि वा पडिग्गहगं ओभासिय २ जायइ जायंतं वा साइज्जइ ॥
सू०४८॥ जे भिक्खू जाव अणुवासगं वा परिसामज्झाओ उट्ठवेत्ता जायइ जायंतं
वा साइज्जइ '२१३' ॥सू०४९॥ जे भिक्खू पडिग्गहगनीसाए उडुबद्धं वसइ वसंत
वा साइज्जइ ॥सू०५०॥ जे भिक्खू पडिग्गहगनीसाए वासावासं वसइ वसंतं
वा साइज्जइ '२१५' तं सेवमाणे आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं उग्घा-
इयं ॥सू०५१॥ चउद्दसमो उद्देसओ ॥१४॥

॥अथ पञ्चदशोद्देशक:॥

जे भिक्खू भिक्खूणं आगाढं वयइ वयंतं वा साइज्जइ ॥सू०१॥
एवं फरुसं ॥सू०२॥ आगाढफरुसं ॥सू०३॥ जे भिक्खू अन्नयरीए अच्चा-
सायणाए अच्चासाएइ अच्चासायंतं वा साइज्जइ ॥सू०४॥ जे भिक्खू स-
चित्तं अम्बं भुंजइ भुंजंतं वा साइज्जइ ॥सू०५॥ जे भिक्खू सचित्तं अम्बं
विडसइ विडसंतं वा साइज्जइ ॥सू०६॥ जे भिक्खू सचित्तं अम्बं वा
अम्बपेसिं वा अम्बभित्तं वा अम्बसालगं वा अम्बडालगं वा अम्ब-
चोयगं वा भुंजइ भुंजंतं वा साइज्जइ ॥सू०७॥ जे भिक्खू सचित्तं जाव
अंबचोयगं वा विडसइ विडसंतं वा साइज्जइ ॥सू०८॥ जे भिक्खू सचित्त-
पइट्ठियं अम्बं भुंजइ भुंजंतं वा साइज्जइ, एवं सचित्तपतिट्ठिएणवि चत्तारि
आलावगा णेयव्वा '२५८' ॥सू०९-१२॥ जे भिक्खू अन्नउत्थिएण वा
गारत्थिएण वा अप्पणो पाए आमज्जावेज्ज वा पमज्जावेज्ज वा आमज्जावंतं
पमज्जावंतं वा साइज्जइ, एवं तइयउद्देसगगमओ णेयव्वो जाव सीसदुवारियं,
जे गामाणुगामं दूइज्जमाणे अन्नउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अप्पणो
सीसदुवारियं कारवेइ कारवंतं वा साइज्जइ ॥सू०१३-६५॥ जे भिक्खू
आगन्तारेसु वा जाव महागिहंसि वा उच्चारपासवणं परिट्ठवेइ परिट्ठवंतं

वा साइज्जइ '२६८' ॥सू०६६-७४॥ जे भिक्खू अन्नउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा असणं वा ४ देइ देंतं वा साइज्जइ ॥सू०७५॥ जे भिक्खू अन्नउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा असणं वा ४ पडिच्छइ पडिच्छंतं वा साइज्जइ ॥सू०७६॥ जे भिक्खू वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा पायपुञ्छणं वा देइ देंतं वा साइज्जइ ॥सू०७७॥ जे भिक्खू वत्थं वा जाव पायपुञ्छणं वा पडिच्छइ पडिच्छंतं वा साइज्जइ ॥सू०७८॥ जे भिक्खू पासत्थस्स असणं वा ४ देइ देंतं वा साइज्जइ, पडिच्छति पडिच्छंतं वा साइज्जइ, वत्थं वा जाव पायपुञ्छणं वा देति देंतं वा साइज्जइ, वत्थं वा जाव पायपुञ्छणं वा पडिच्छइ पडिच्छंतं वा साइज्जइ ॥सू०७९-८२॥ एवं ओसन्नस्स, कुसीलस्स, नितियस्स, संसत्तस्स '३०४' ॥सू०८३-९८॥ जे भिक्खू जायणावत्थं वा निमन्तणावत्थं वा अजाणिय अपुच्छिय अगवेसिय पडिग्गाहेइ पडिग्गाहेंतं वा साइज्जइ, से य वत्थे चउण्हं अन्नयरे सिया, तंजहा- निच्चनियंसणिए मज्जणिए छणूस्सविए रायदुवारिए '३१४' ॥सू०९९॥ जे भिक्खू विभूसापडियाए अप्पणो पाए आमज्जेज्ज वा पमज्जेज्ज वा आमज्जंतं वा पमज्जंतं वा सातिज्जइ, एवं तइयउद्देसगमेण जाव जे गामाणुगामं दूइज्जमाणे विभूसापडियाए अप्पणो पाए आमज्जेज्ज वा पमज्जेज्ज वा आमज्जंतं वा पमज्जंतं वा साइज्जइ ॥सू०१००-१५२॥ जे भिक्खू वत्थं वा पडिग्गहं वा कम्बलं वा पायपुञ्छणं वा अन्नयरं वा उवगरणजायं धरेइ धरंतं वा साइज्जइ ॥सू०१५३॥ धोवइ धोवंतं वा साइज्जइ '३१८' त सेवमाणे आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं उग्घाइयं ॥सू०१५४॥ पण्णरसमो उद्देसओ ॥१५॥

॥ अथ षोडशोद्देशकः ॥

जे भिक्खू सागारियं सेज्जं उवागच्छइ उवागच्छंतं वा साइज्जइ '१३३' ॥सू०१॥ जे भिक्खू सउदगं सेज्जं अणुपविसइ अणुपविसंतं वा साइज्जइ '२५६' ॥सू०२॥ सागणियं सेज्जं '२१३' ॥सू०३॥ जे भिक्खू सचित्तं उच्छुं भुंजइ, एवं पन्नरसमे उद्देसे अंबस्स जहा गमो सो चेव इहंपि णेयव्वो ॥सू०४॥ विडसइ ॥सू०५॥ जे भिक्खू सचित्तं अन्तरुच्छुयं वा उच्छुखंडियं वा उच्छुचोयगं वा उच्छुमेरगं वा उच्छुसालगं वा उच्छुडालगं वा भुंजइ भुंजंतं वा साइज्जइ ॥सू०६॥

विदसइ ॥सू०७॥ जे भिक्खू सचित्त पइट्ठियं उच्छुं भुंजइ भुंजंतं वा साइज्जइ, विडसइ, ॥सू०८-९॥ जे भिक्खू सचित्तं अन्तरुच्छुयं वा जाव उच्छुडालगं वा भुंजइ भुंजंतं वा साइज्जइ, विडसइ ॥सू०१०-११॥ जे भिक्खू आरण्णगाणं वणंवयाण (वण्णधाणं) अडवीजत्तासंपट्ठियाणं असणं वा ४ पडिगाहेइ पडिगाहन्तं वा साइज्जइ '२०३' ॥सू०१२॥ जे भिक्खू वुसराइयं अवुसराइयं वयइ वयंतं वा साइज्जइ ॥सू०१३॥ जे भिक्खू अवुसराइयं वुसराइयं वयइ वयंतं वा साइज्जइ '४७७' ॥सू०१४॥ जे भिक्खू वुसराइयाओ गणाओ अवुसराइयं गणं संकमइ संकमंतं वा साइज्जइ ॥सू०१५॥ जे भिक्खू वुग्गहवक्कंताणं असणं वा ४ देइ देंतं वा साइज्जइ ॥सू०१६॥ जे भिक्खू वुग्गहवक्कंताणं असणं वा ४ पडिच्छइ पडिच्छंतं वा साइज्जइ ॥सू०१७॥ एवं वत्थं वा पडिग्गहं वा कम्बलं वा पायपुञ्छणं वा देइ देंतं वा साइज्जइ ॥सू०१८॥ पडिच्छइ पडिच्छंतं वा साइज्जइ ॥सू०१९॥ एवं वसहिंवि दोहिं गमएहिं देइ देंतं वा साइज्जइ ॥सू०२०॥ पडिच्छइ ॥सू०२१॥ अणुपविसइ ॥सू०२२॥ जे भिक्खू सज्झायं देइ देंतं वा साइज्जइ ॥सू०२३॥ जे भिक्खू वुग्गहवक्कंताणं सज्झायं पडिच्छइ पडिच्छंतं वा साइज्जइ '५१६' ॥सू०२४॥ जे विह (अडवि) अणेगाहगमणिज्जं अभिसंधारेइ अभिसंधारेंतं वा साइज्जइ '५६४' ॥सू०२५॥ जे भिक्खू विरूवरूवाइं दस्सुगायतणाइं अणारियाइं मिलक्खूइं पच्चन्तियाइं सति लाढे विहाराए संथरमाणेसु संथरणिज्जेसु जणवएसु विहारपडियाए अभिसंधारेइ अभिसंधारेंतं वा साइज्जइ '६१६' ॥सू०२६॥ जे भिक्खू दुगुञ्छियकुलेसु असणं वा ४ पडिगाहेइ पडिगाहंतं वा साइज्जइ ॥सू०२७॥ जे भिक्खू दुगुञ्छियकुलेसु वत्थं वा पडिग्गहं वा कम्बलं वा पायपुञ्छणं वा पडिगाहेइ पडिगाहंतं वा साइज्जइ ॥सू०२८॥ वसहिं ॥सू०२९॥ जे भिक्खू दुगुञ्छियकुलेसु सज्झायं उद्दिसइ उद्दिसंतं वा साइज्जइ ॥सू०३०॥ वाएइ ॥सू०३१॥ पडिच्छइ ॥सू०३२॥ जे भिक्खू असणं वा ४ पुढवीए निक्खिवइ निक्खिवंतं वा साइज्जइ ॥सू०३३॥ संथारए ॥सू०३४॥ वेहासे '६२८' ॥सू०३५॥ जे भिक्खू अन्नउत्थीहि वा गारत्थीहि वा सद्धिं भुंजइ भुंजंतं वा साइज्जइ ॥सू०३६॥ जे भिक्खू आवेढियपरिवेढिए भुंजइ भुंजंतं वा साइज्जइ '६३८' ॥सू०३७॥ जे भिक्खू आयरियउवज्झायाणं सेज्जासंथारगं पाएणं संघट्टेत्ता हत्थेण अणणुन्नवेत्ता धारयमाणो गच्छइ गच्छंतं वा साइज्जइ '६४२' ॥सू०३८॥ जे भिक्खू पमाणाइरित्तं वा गणणाइरित्तं वा उवहिं धरेइ धरंतं वा साइज्जइ '७४७' ॥सू०३९॥

जे भिक्खू अनन्तरहियाए पुढवीए चलाचले उच्चारपासवणं परिट्ठवेइ परिट्ठवेंतं वा साइज्जइ, जाव खंधंसि, '७८९' तं सेवमाणे आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं उग्घाइयं ॥सू० ४०-५०॥ सोलसमो उद्देसओ ॥१६॥

॥ अथ सप्तदशोद्देशकः ॥

जे भिक्खू कोउहल्लपडियाए अन्नयरं तसपाणजायं तणपासएण वा जाव सुत्तपासएण वा बंधइ बंधंतं वा साइज्जइ ॥सू० १॥ जे० बद्धेल्लगं वा मुयइ मुयंतं वा साइज्जइ ॥सू० २॥ जे भिक्खू तणमालियं वा जाव हरियमालियं वा पिणद्धइ पिणद्धंतं वा साइज्जइ, करेइ करेंतं वा साइज्जइ धरेइ धरेंतं वा साइज्जइ '८' ॥सू० ३-५॥ जे भिक्खू अयलोहाणि वा जाव सुवण्णलोहाणि वा करेइ करेंतं वा साइज्जइ, धरेइ धरेंतं वा साइज्जइ, परिभुंजइ परिभुंजंतं वा साइज्जइ '१०' ॥सू० ६-८॥ जे हाराणि वा जाव सुवण्णसुत्ताणि वा करेइ करेंतं वा साइज्जइ धरेइ धरेंतं वा साइज्जइ, परिभुंजइ परिभुंजंतं वा साइज्जइ (पिणद्धइ०) '१३' ॥सू० ९-११॥ जे भिक्खू आइणाणि वा जाव आभरणविचित्ताणि वा करेइ करेंतं वा साइज्जइ, धरेइ धरेंतं वा साइज्जइ, परिभुंजइ परिभुंजंतं वा साइज्जइ '१४' ॥सू० १२-१४॥ जा निग्गन्थी निग्गन्थस्स पाए अन्नउत्थिएण वा गारत्थिएण वा आमज्जावेज्ज वा एवं ततिओद्देसगमेण णेयव्वं जाव जा निग्गन्थी निग्गन्थस्स गामाणुगामं दुइज्जमाणस्स अन्नउत्थिएण वा गारत्थिएण वा सीसदुवारियं कारवेइ कारवेंतं वा साइज्जइ ॥सू० १५-६७॥ जे निग्गन्थे निग्गन्थीए पाए अन्नउत्थिणीए वा गारत्थिणीए वा आमज्जावेज्ज वा जाव साइज्जइ, एवं मज्झिल्लगमयसरिसं णेयव्वं जाव निग्गन्थीए गामाणुगामं दूइज्जमाणीए अन्नउत्थिणीए वा गारत्थिणीए वा सीसदुवारियं कारवेइ कारवेंतं वा साइज्जइ '२८' ॥सू० ६८-१२०॥ जे निग्गन्थे निग्गन्थस्स सरिसगस्स संते ओवासे अंते ओवासं न देइ न देंतं वा साइज्जइ ॥सू० १२१॥ जा निग्गन्थी निग्गन्थीए सरिसियाए जाव साइज्जइ '४६' ॥सू० १२२॥ जे भिक्खू मालोहडं असणं वा ४ देज्जमाणं पडिग्गाहेइ पडिग्गाहेंतं वा साइज्जइ ॥सू० १२३॥ जे भिक्खू कोट्ठाउत्तं असणं वा ४ उक्कुज्जिय निकुज्जिय देज्जमाणं पडिग्गाहेइ पडिग्गाहेंतं वा साइज्जइ ॥सू० १२४॥ जे भिक्खू मट्टिओलित्तं असणं वा ४ उब्भिंदिय निब्भिंदिय देज्जमाणं पडिग्गाहेइ पडिग्गाहेंतं वा साइज्जइ '५५' ॥सू० १२५॥ जे भिक्खू

मणं वा ४ अन्नयरं पुढवीपइट्ठियं पडिग्गाहेइ पडिग्गाहेंतं वा साइज्जइ ॥सू० १२६॥ एवं आउपइट्ठियं, तेउपइट्ठियं वणस्सकायपइट्ठियं '६२' ॥सू० १२७-१२९॥ जे भिक्खू अच्चुसिणं असणं वा ४ सुप्पेण वा विहुणेण वा तालियंटेण वा पत्तेण वा पत्तभङ्गेण वा साहाए वा साहाभङ्गेण वा पेहुणेण वा पेहुणहत्थेण वा चेलेण वा चेलकण्णेण वा हत्थेण वा मुहेण वा फुमित्ता वा वीइत्ता वा आहट्टु देज्जमाणं पडिग्गाहेइ पडिग्गाहेंतं वा साइज्जइ ॥सू० १३०॥ जे भिक्खू असणं वा ४ उसिणुसिणं पडिग्गाहेइ पडिग्गाहेंतं वा साइज्जइ ॥सू० १३१॥ जे भिक्खू उस्सेइमं वा संसेइमं वा चाउलोदगं वा वारोदगं वा तिलोदगं वा तुसोदगं वा जवोदगं वा (भुसोदगं वा) आयामं वा सोवीरं वा अम्बकञ्जियं वा सुद्धवियडं वा अहुणाधोयं अणंबिलं अपरिणयं अवक्कन्तजीवं अविद्धत्थं पडिग्गाहेइ पडिग्गाहेंतं वा साइज्जइ '७४' ॥सू० १३२॥ जे भिक्खू अप्पणो आयरियत्ताए लक्खणाइं वागरेइ वागरेंतं वा साइज्जइ '७५' ॥सू० १३३॥ जे भिक्खू गाएज्ज वा (हसेज्ज वा) वाएज्ज वा नच्चेज्ज वा अभिणएज्ज वा हयहेसियं हत्थिगुलगुलाइयं किलकिलाइयं उक्कुट्ठसीहनायं करेइ करेंतं वा साइज्जइ ॥सू० १३४॥ जे भिक्खू भेरी सद्दाणि वा पडहसद्दाणि वा मुरवसद्दाणि वा मुइंगसद्दाणि वा, एवं नंदिसद्दाणि वा झल्लरिसद्दाणि वा वल्लरिसद्दाणि वा डमरुगसद्दाणि वा मड्डयसद्दाणि वा सदुयसद्दाणि वा पएससद्दाणि वा गोलुइसद्दाणि वा अन्नयराणि वा तहप्पगाराणि वितयाणि सद्दाणि कण्णसोयपडियाए अभिसंधारेइ अभिसंधारेंतं वा साइज्जइ, बारसमउद्देसगमेण णेयव्वं ॥सू० १३५॥ जे भिक्खू वीणा सद्दाणि वा विपञ्चिसद्दाणि वा तुणसद्दाणि वा वव्वीसगसद्दाणि वा वीणाइयसद्दाणि वा तुबवीणासद्दाणि वा झो(पों)डयसद्दाणि वा ढंकुणसद्दाणि वा अन्नयराणि वा तहप्पगाराणि वितयाणि सद्दाणि कण्णसोयपडियाए अभिसंधारेइ अभिसंधारेंतं वा साइज्जइ ॥सू० १३६॥ जे भिक्खू तालसद्दाणि वा कंसतालसद्दाणि वा लत्तियसद्दाणि वा गोहियसद्दाणि वा मकरियसद्दाणि वा कच्छभिसद्दाणि वा महइसद्दाणि वा सणालियासद्दाणि वा वालियासद्दाणि वा अन्नयराणि वा तहप्पगाराणि झुसिराणि सद्दाणि कण्णसोयपडियाए अभिसंधारेइ अभिसंधारेंतं वा साइज्जइ ॥सू० १३७॥ जे भिक्खू संखसद्दाणि वा वंससद्दाणि वा वेणुसद्दाणि वा खरमुहिसद्दाणि वा परिलिसद्दाणि वा वेचुयसद्दाणि वा अन्नयराणि वा तहप्पगाराणि झुसिरा-

सद्दाणि कण्णसोयपडियाए अभिसंधारेइ अभिसंधारेंतं वा साइज्जइ '९१'॥ सू० १३८॥ जे भिक्खू वप्पाणि वा फलिहाणि वा जाव इह (पर) लोइएसु वा सद्देसु जाव अज्झोववज्जेमाण वा साइज्जइ '९४' तं सेवमाणे आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं उग्घाइयं ॥सू० १३९-१४१॥ सत्तरसमो उद्देसओ॥१७॥

॥ अथ अष्टादशो देशकः॥

जे भिक्खू अणट्ठाए णावं दुरुहइ दुरुहंतं वा साइज्जइ ॥सू०१॥ जे भिक्खू नावं किणइ किणावेइ कीयमाहट्टु दिज्जमाणं दुरुहइ दुरुहंतं वा साइज्जइ, एवं जो चोद्दसमे उद्देसे पडिग्गहगमो सो णेयव्वो जाव अच्छेज्जं, णवर दुरुहतित्ति भाणियव्वं ॥सू०२-५॥ जे भिक्खू थलाओ नावं जले ओक्कसावेइ ओक्कसावेंतं वा साइज्जइ ॥सू०६॥ जे भिक्खू जलाओ नावं थले उक्कसावेइ उक्कसावेंतं वा साइज्जइ ॥सू०७॥ जे भिक्खू पुण्णं नावं उस्सिंचइ उस्सिंचंतं वा साइज्जइ ॥सू०८॥ जे भिक्खू सन्नं नावं उप्पिलावेइ उप्पिलावेंतं वा साइज्जइ ॥सू०९॥ जे भिक्खू पडिणावियं कट्टु नावाए दुरुहइ दुरुहंतं वा साइज्जइ ॥सू०१०॥ जे भिक्खू उड्ढगामिणिं वा णावं अहोगामिणिं वा नावं दुरुहइ दुरुहंतं वा साइज्जइ ॥सू०११॥ जे भिक्खू जोयणवेलागामिणिं वा अद्धजोयणवेलागामिणिं वा नावं दुरुहइ दुरुहंतं वा साइज्जइ ॥सू०१२॥ जे भिक्खू नावं आकसावेइ ओकसावेइ खेवावेइ रज्जुणा वा कट्ठेण वा कड्ढइ कड्ढंतं वा साइज्जइ ॥सू०१३॥ जे भिक्खू नावं आलित्तएण वा पप्फिडएण वा वंसेण वा वलेण वा वाहेइ वाहेंतं वा साइज्जइ ॥सू०१४॥ जे भिक्खू नावाओ उदगं भायणेण वा पडिग्गहेण वा मत्तेण वा नावाउस्सिंचणेण वा उस्सिंचइ उस्सिंचंतं वा साइज्जइ ॥सू०१५॥ जे भिक्खू नावं उत्तिंगेण उदगं आसवमाणिं उवरुवरिं कज्जलमाणिं पेहाय हत्थेण वा पाएण वा आसत्थपत्तेण वा कुसपत्तेण वा मट्टियाए वा चेलकण्णेण वा पडिपीहेइ पडिपीहेंतं वा साइज्जइ ॥सू०१६॥ जे भिक्खू नावागओ नावागयस्स असणं वा ४ पडिग्गाहेइ पडिग्गाहेंतं वा साइज्जइ '३०' एतेण गमेण णावागओ जलगतस्स णावागतो पंकगयस्स नावागतो थलगतस्स, एवं जलगएणवि चत्तारि पंकगएणवि चत्तारि थलगएणवि चत्तारि गमा णेयव्वा ॥सू०१७-३२॥ जे भिक्खू वत्थं किणइ किणावेइ कीयमाहट्टु दिज्जमाणं पडिग्गाहेइ पडिग्गाहेंतं वा साइज्जइ, एवं चो-

इसमे उद्देसे पडिग्गहए जो गमो भणिओ सो चेव इहंपि वत्थेण णेयव्वो जाव वासावासं संवसइ संवसंतं वा साइज्जइ, नवरं णिक्कोरणं नत्थि '३१' तं सेवमाणे आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं उग्घाइयं ॥सू० ३१-८८॥
॥ अट्ठारसमो उद्देसओ ॥१८॥

॥अथ एकोनविंशतितमोद्देशकः॥

जे भिक्खू वियडं किणइ किणावेइ कीयं आहट्टु देज्जमाणं पडिग्गाहेइ पडिग्गाहंतं वा साइज्जइ ॥सू०१॥ एवं पामिच्चेति पामिच्चावेति पामिच्चियमिति ॥सू०२॥ परियट्टति परियट्टावेति परियट्टियमिति ॥सू०३॥ अच्छेज्जं अनिसट्ठं अभिहडं ॥सू०४॥ जे भिक्खू गिलाणस्सऽट्ठाए परं तिण्हं वियडदत्तीणं पडिग्गाहेइ पडिग्गाहंतं वा साइज्जइ ॥सू०५॥ जे भिक्खू वियडं गहाय गामाणुगामं दूइज्जइ दूइज्जंतं वा साइज्जइ ॥सू०६॥ जे भिक्खू वियडं गालेइ गालावेइ गालियं आहट्टु देज्जमाणं पडिग्गाहेइ पडिग्गाहंतं वा साइज्जइ '२६' ॥सू०७॥ जे भिक्खू चउहिं संझाहिं सज्झायं करेइ करेंतं वा साइज्जइ, तंजहा- पुव्वाए संझाए पच्छिमाए संझाए अवर(मज्झ)ण्हे अड्ढरत्ते ॥सू०८॥ जे भिक्खू कालियसुयस्स परं तिण्हं पुच्छाणं पुच्छइ पुच्छंतं वा साइज्जइ ॥सू०९॥ जे भिक्खू दिट्ठिवायस्स परं सत्तण्हं पुच्छाणं पुच्छइ पुच्छंतं वा साइज्जइ '३६' ॥सू०१०॥ जे भिक्खू चउसु महामहेसु सज्झायं करेइ करेंतं वा साइज्जइ, तंजहा- इन्दमहे खंदमहे जक्खमहे भूयमहे ॥सू०११॥ जे भिक्खू चउसु महापाडिवएसु सज्झायं करेइ करेंतं वा साइज्जइ, तंजहा- सुगिम्हियापाडिवए आसाढीपाडिवए भद्दवयए इन्दमह, आसोय) पाडिवए कत्तियपाडिवए ॥सू०१२॥ जे भिक्खू पोरिसिं सज्झायं उवाइणावेइ उवाइणावेंतं वा साइज्जइ ॥सू०१३॥ जे भिक्खू चाउक्कालं सज्झायं न करेइ नकरेंतं वा साइज्जइ '४६' ॥सू०१४॥ जे भिक्खू असज्झाइए सज्झायं करेइ करेंतं वा साइज्जइ ॥सू०१५॥ जे भिक्खू अप्पणो असज्झाइए सज्झायं करेइ करेंतं वा साइज्जइ '१५९' ॥सू०१६॥ जे भिक्खू हेट्ठिल्लाइं समोसरणाइं अवाएत्ता उवरिल्लाइं समोसरणाइं वाएइ वायंतं वा साइज्जइ ॥सू०१७॥ जे भिक्खू नव बंभचेराइं अवाएत्ता उवरिमसुयं वाएइ वायंतं वा साइज्जइ '१६१' ॥सू०१८॥ जे भिक्खू अवत्तं वाएइ वायंतं वा साइज्जइ ॥सू०१९॥ जे भिक्खू वत्तं न वाएइ नवायंतं वा साइज्जइ ॥सू०

२०॥ जे भिक्खू अपत्तं वाएइ वायंतं वा साइज्जइ ॥सू० २१॥ जे भिक्खू पत्तं न वाएइ नवायंतं वा साइज्जइ '२१५' ॥सू० २२॥ जे भिक्खू दोण्हंपि सरिसगाणं एक्कं संचिक्खावेइ एक्कं न संचिक्खावेइ एक्कं वाएइ एक्कं न वाएइ नवायंतं वा साइज्जइ '२२१' ॥सू० २३॥ जे भिक्खू आयरियउवज्झाएहिं अविदिन्नं गिरं आइयइ आइयंतं वा साइज्जइ ॥सू० २४॥ जे भिक्खू अन्नउत्थियं वा गारत्थियं वाएइ वायंतं वा साइज्जइ ॥सू० २५॥ पडिच्छइ ॥सू० २६॥ एवं पासत्थं ॥सू० २७-२८॥ ओसन्नं, कुसीलं नितियं ॥सू० २९-३४॥ संसत्तं '२६१' तं सेवमाणे आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं उग्घाइयं ॥सू० ३५-३६॥
॥ एगुणवीसइमो उद्देसओ ॥१९॥

॥अथ उपसंहारः॥

जे भिक्खू मासियं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा अपलिउंचियं आलोएमाणस्स मासियं पलिउंचियं आलोएमाणस्स दोमासियं, एवं ववहारपढमुद्देसगमो णेयव्वो जाव दस गमा समत्ता एगत्तसो बहुत्तसोवि जाव सव्वमेयं सकयं एगओ साहणित्ता जाए य पट्ठवणाए पट्ठविए निव्विसमाणए पडिसेविज्जा सावि कसिणा तत्थेव आरुहेयव्वा सिया '३०९' ॥सू० १-२२॥ (पंचमासियं) छम्मासियं [illegible]रट्ठाणं पट्ठविए अणगारे अंतरा दोमासियं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा अहावरा वीसइराइया आरोवणा आइमज्झावसाणे सअट्ठं सहेउं सकारणं अहीणमइरित्तं तेण परं सवीसइराइया दो मासा ॥सू० २३॥ पंचमासियं एवं चाउम्मासियं, एवं तेमासियं एवं दोमासियं मासियावि जाव सवीसराइया दो मासा ॥सू० २४-२८॥ सवीसराइयं दोमासियं परिहारट्ठाणं पट्ठविए अणगारे जाव तेण परं दसराया तिण्णिमासा ॥सू० २९॥ सदसरायतेमासियं परिहारट्ठाणं जाव तेण परं चत्तारि मासा ॥सू० ३०॥ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं जाव तेण परं सवीसराइया चत्तारि मासा ॥सू० ३१॥ सवीसराइयं चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं जाव तेण परं सदसराया पंचमासा ॥सू० ३२॥ सदसरायं पंचमासियं परिहारट्ठाणं जाव तेण परं छम्मासा ॥सू० ३३॥ छम्मासियं परिहारट्ठाणं पट्ठविए अणगारे अन्तरा मासियं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा अहावरा पक्खिया आरोवणा आइमज्झावसाणे सअट्ठं सहेउं सकारणं अहीणमइरित्तं तेण परं दिवड्ढो मासो ॥सू० ३४॥

एवं पञ्चमासियं चाउम्मासियं तेमासियं दोमासियं मासियं परि-
हारट्ठाणं पट्ठविए अणगारे जाव दिवड्ढो मासो ॥सू०३५-३९॥ दिवड्ढमासियं
परिहारट्ठाणं पट्ठविए अणगारे अंतरा मासियं जाव दो मासा ॥सू०४०॥
दोमासियं परिहारट्ठाणं पट्ठविए अणगारे जाव अड्ढाइज्जा, एवं एत्तो
पक्खे २ आरोवेयव्वो जाव छम्मासा पुण्णत्ति ॥सू०४१-४८॥ (दोमासियं परि-
हारट्ठाणं पट्ठविए जाव तेण परं अड्ढाइज्जा मासा ॥सू०४९॥ अड्ढाइज्जमासियं परि-
हारट्ठाणं अणगारे जाव तिण्णि मासा ॥सू०५०॥ तेमासियं परिहारट्ठाणं पट्ठविए अण-
गारे जाव अद्धुट्ठामासा ॥सू०५३॥ अद्धुट्ठमासियं परिहारट्ठाणं पट्ठविए अणगारे जा-
व चत्तारिमासा ॥सू०४४॥ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं पट्ठविए अणगारे जाव
अड्ढपञ्चमासा ॥सू०४५॥ अड्ढपञ्चमासियं परिहारट्ठाणं पट्ठविए अणगारे जाव
पञ्च मासा ॥सू०४६॥ पञ्चमासियं परिहारट्ठाणं पट्ठविए अणगारे जाव अद्ध-
छट्ठामासा ॥सू०४७॥ अद्धछट्ठमासियं परिहारट्ठाणं पट्ठविए अणगारे जाव
छम्मासा ॥सू०४८॥) दोमासियं परिहारट्ठाणं पट्ठविए अणगारे अन्तरा मा-
सियं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा अहावरा पक्खिया आरोवणा जाव तेण
परं अड्ढाइज्जा मासा ॥सू०४९॥ अड्ढाइज्जमासियं परिहारट्ठाणं पट्ठविए अणगारे
अन्तरा दोमासियं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा अहावरा वीसइरा-
इया आरोवणा जाव तेण परं सपञ्चराया तिण्णि मासा ॥सू०५०॥ सपञ्चराय
तेमासियं परिहारट्ठाणं पट्ठविए अणगारे अन्तरा मासियं परिहारट्ठाणं
पडिसेवित्ता आलोएज्जा अहावरा पक्खिया आरोवणा जाव तेण परं सवीसइ-
राया तिण्णिमासा ॥सू०५१॥ सवीसइराय तेमासियं परिहारट्ठाणं पट्ठविए
अणगारे अन्तरा दोमासियं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा अहावरा
वीसइराया आरोवणा जाव तेण परं सदसराया चत्तारि मासा ॥सू०५२॥
सदसराय चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं पट्ठविए अणगारे अन्तरा मा-
सियं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा अहावरा पक्खिया आरोवणा
जाव तेण परं पञ्चूणा पञ्चमासा ॥सू०५३॥ पञ्चूणं पञ्चमासियं परिहारट्ठाणं
पट्ठविए अणगारे अन्तरा दोमासियं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलो-
एज्जा अहावरा वीसइराइया आरोवणा जाव तेण परं अद्धछट्ठा मासा ॥सू०
५४॥ अद्धछट्ठं मासियं परिहारट्ठाणं पट्ठविए अणगारे अन्तरा मासियं परि-

हारट्ठाणं पडिसेविता आलोएज्जा अहावरा पट्ठविया आरोवणा जाव तेण परं छम्मासा '३६९' ॥सू०५४॥ उपसंहार: '१२५' ॥

॥ इति श्रीनिशीथ-छेदसूत्रम् ॥ ३ ॥

लिखित संशोधितश्च तपोमूर्ति पूज्याचार्यदेव श्री-विजयकर्पूरसूरीश्वर-पट्टधर हालारदेशोद्धारकाचार्यदेवश्री-विजयामृतसूरीश्वर-विनेय-पन्यास-जिनेन्द्रविजय-गणिना श्रुतभक्तिभावनासहितेन जामनगर दिग्विजय प्लोट-हालारी वीशा-ओसवाल-तपागच्छ-जैन-उपाश्रयमध्ये वीरात् २५०४ वर्षे श्री अक्षयतृतीयायां श्रीविमलनाथजिनेन्द्रनिश्रायाम् ॥

॥ अर्हम् ॥

श्रुतकेवलिश्री भद्रबाहु स्वामि-प्रणीतं

श्री बृहत्कल्पसूत्रम् ॥

अथ प्रथमोद्देशकः।

पीढिकाभाष्यगाथा: '८०८' नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा आमे तालपलम्बे अभिन्ने पडिग्गाहेत्तए ॥सू०१॥ कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा आमे तालपलम्बे भिन्ने पडिग्गाहेत्तए '१०३५' ॥सू.२॥ कप्पइ निग्गन्थाणं पक्के तालपलम्बे भिन्ने वा अभिन्ने वा पडिग्गाहेत्तए ॥सू.३॥ नो कप्पइ निग्गन्थीण पक्के तालपलम्बे अभिन्ने पडिग्गाहेत्तए ॥सू.४॥ कप्पइ निग्गन्थीणं पक्के तालपलम्बे भिन्ने पडिग्गाहेत्तए, सेऽवि य विहिभिन्ने, नो चेव णं अविहिभिन्ने (पलम्बपगरण '१०८९') ॥सू.५॥ से गामंसि वा नगरंसि वा खेडंसि वा कब्बडंसि वा पट्टणंसि वा मडम्बंसि वा आगरंसि वा दोणमुहंसि वा निगमंसि वा रायहाणिंसि वा आसमंसि वा सन्निवेसंसि वा संवाहंसि वा घोसंसि वा अंसियंसि वा पुडभेयणंसि वा सपरिक्खेवंसि अबाहिरियंसि कप्पइ निग्गन्थाण हेमन्तगिम्हासु एगं मास वत्थए ॥६॥ से गामंसि वा जाव रायहाणिंसि वा सपरिक्खेवंसि सबाहिरियंसि कप्पइ निग्गन्थाणं हेमन्तगिम्हासु दो मासे वत्थए, अन्तो एगं मास बाहिं एगं मासं, अन्तो वसमाणाणं अन्तो भिक्खायरिया बाहिं वसमाणाणं बाहिं भिक्खायरिया ॥सू.७॥ से गामंसि वा जाव रायहाणिंसि वा सपरिक्खेवंसि अबाहिरियंसि कप्पइ निग्गन्थीणं हेमन्तगिम्हासु दो मासे वत्थए ॥सू.८॥ से गामंसि वा जाव रायहाणिंसि

वा सपरिक्खेवसि सबाहिरियसि कप्पइ निग्गन्थीण हेमंतगिम्हासु चत्तारि मासे वत्थए अन्तो दो मासे बाहिं दो मासे अन्तो वसमाणीणं अंतो भिक्खायरिया बाहिं वसमाणीण बाहिं भिक्खायरिया '२१ ३८ ॥सू.९॥ से गामंसि वा जाव रायहाणिंसि वा एगवगडाए एगदुवाराए एगनिक्खमणपवेसाए नो कप्पइ निग्गन्थाण य निग्गन्थीण य एगय ओ वत्थए ॥सू.१०॥ से गामंसि वा जाव रायहाणिंसि वा अभिनिव्वगडाए अभिनिद्दुवाराए अभि(णेगा)निक्खमणपवेसाए कप्पइ निग्गन्थाण य निग्गन्थीण य एगयओ वत्थए '२३००' ॥सू.११॥ नो कप्पइ निग्गन्थीण आवणगिहंसि वा रत्थामुहंसि वा सिंघाडगंसि वा तियंसि वा चउक्कंसि वा चच्चरंसि वा अतरावणंसि वा वत्थए ॥सू.१२॥ कप्पइ निग्गन्थाणं आवणगिहंसि वा जाव अतरावणंसि वा वत्थए '२३३०' ॥सू.१३॥ नो कप्पइ निग्गन्थीण अवंगुयदुवारिए उवस्सए वत्थए, एगं पत्थारं अंतो किच्चा एगं पत्थारं बाहिं किच्चा ओहाडियचिलिमिलियागंसि एवण्हं कप्पइ वत्थए '२३४१' ॥सू.१४॥ कप्पइ निग्गन्थाण अवंगुयदुवारिए उवस्सए वत्थए '२३६६' ॥सू.१५॥ कप्पइ निग्गन्थीण अंतोलित्तयं घडिमत्तयं धारेत्तए वा परिहरित्तए वा '२३६९' ॥सू.१६॥ नो कप्पइ निग्गन्थाणं अंतोलित्तयं घडिमत्तयं धारेत्तए वा परिहरित्तए वा '२३७५' ॥सू.१७॥ कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा चेलचिलिमिलियं धारेत्तए वा परिहरित्तए वा '२३८०' ॥सू.१८॥ नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा दगतीरंसि चिट्ठित्तए वा निसीइत्तए वा तुयट्टित्तए वा निद्दाइत्तए वा पयलाइत्तए वा असणं वा ४ (आहारमाहारेत्तए) उच्चारं वा पासवणं वा खेलं वा सिंघाणं वा परिट्ठवेत्तए, सज्झायं वा करेत्तए, धम्मजागरियं वा जागरित्तए (झाणं वा झाइत्तए), काउस्सग्गं वा ठाणं (करित्तए वा) ठाइत्तए '२४२३' ॥सू.१९॥ नो कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा सचित्तकम्मे उवस्सए वत्थए ॥सू.२०॥ कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा अचित्तकम्मे उवस्सए वत्थए '२४३८' ॥सू.२१॥ नो कप्पइ निग्गंथीणं सागारियं अनिस्साए वत्थए ॥सू.२२॥ कप्पइ निग्गंथीणं सागारियं निस्साए वत्थए '२४५०'

॥सू.२३॥कप्पइ निग्गंथाणं सागारियनिस्साए वा अनिस्साए वा वत्थए '२४५२'॥सू.२४॥ नो कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा सागारिए उवस्सए वत्थए,(कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा अप्पसागारिए उवस्सए वत्थए)'२५५५'॥सू.२५॥नो कप्पइ निग्गंथाणं इत्थिसागारिए उवस्सए वत्थए॥सू.२६॥कप्पइ निग्गंथाणं पुरिससागारिए उवस्सए वत्थए॥सू.२७॥ नो कप्पइ निग्गंथीणं पुरिससागारिए उवस्सए वत्थए॥सू.२८॥ कप्पइ निग्गन्थीणं इत्थीसागारिए उवस्सए वत्थए'२५८७'॥सू.२९॥ नो कप्पइ निग्गंथाणं पडिबद्धाए सेज्जाए वत्थए॥सू.३०॥कप्पइ निग्गंथीणं पडिबद्धाए सेज्जाए वत्थए'२६३३'॥सू.३१॥ नो कप्पइ निग्गंथाणं गाहावइकुलस्स मज्झंमज्झेणं गंतुं वत्थए॥सू.३२॥ कप्पइ निग्गंथीणं गाहावइकुलस्स मज्झंमज्झेणं गंतु वत्थए'२६८०'॥सू.३३॥ भिक्खू य अहिगरणं कट्टु तं अहिगरणं अविओसवेत्ता अविओसवियपाहुडे इच्छाए परो आढाएज्जा इच्छाए परो णो आढाएज्जा इच्छाए परो अब्भुट्ठेज्जा इच्छाए परो नो अब्भुट्ठेज्जा इच्छाए परो वंदेज्जा इच्छाए परो नो वंदेज्जा इच्छाए परो संभुञ्जेज्जा इच्छाए परो नो संभुञ्जेज्जा इच्छाए परो संवसेज्जा इच्छाए परो नो संवसेज्जा इच्छाए परो उवसमेज्जा इच्छाए परो नो उवसमेज्जा, जो उवसमइ तस्स अत्थि आराहणा जो न उवसमइ तस्स नत्थि आराहणा, तम्हा अप्पणा चेव उवसमियव्वं से किमाहु भंते ?, उवसमसारं(खु)सामण्णं '२७३८'॥सू.३४॥ नो कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा वासावासासु चारए॥सू.३५॥ कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा हेमंतगिम्हासु चारए'२७६३'॥सू.३६॥ नो कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा वेरज्जविरुद्धरज्जंसि सज्जं गमणं सज्जं आगमणं सज्जं गमणागमणं करेत्तए, जे खलु निग्गंथे वा निग्गंथी वा वेरज्जविरुद्धरज्जंसि सज्जं गमणं सज्जं आगमणं सज्जं गमणागमणं करेइ करेंतं वा साइज्जइ से दुहओ वीइक्कममाणे आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं '२७९५'॥सू.३७॥ निग्गंथं च णं गाहावइकुलं पिंडवायपडियाए अणुप्पविट्ठं केई वत्थेण

वा पडिग्गहेण वा कम्बलेण वा पायपुंछणेण वा उवनिमंतेज्जा कप्पइ से सागारकडं गहाय आयरियपायमूले ठवेत्ता दोच्चंपि उग्गहं अणुन्नवेत्ता परिहारं परिहरित्तए '२८१८'॥सू.३८॥ निग्गंथं च णं बहिया वियारभूमिं वा विहारभूमिं वा निक्खंतं समाणं केइ वत्थेण वा पडिग्गहेण वा कम्बलेण वा पायपुंछणेण वा उवनिमंतेज्जा कप्पइ से सागारकडं०आयरियपायमूले ठवेत्ता दोच्चंपि उग्गहं अणुन्नवेत्ता परिहारं परिहरित्तए '२८१९'॥सू.३९॥ निग्गंथिं च णं गाहावइकुलं पिंडवायपडियाए अणुप्पविट्ठं तं चेव णवरं पवत्तिणीपायमूले ठवेत्ता ~~●●------●●~~ दोच्चंपि उग्गहं अणुन्नवेत्ता परिहारं परिहरित्तए॥सू.४०॥ निग्गंथिं च णं बहिया वियारभूमिं वा विहारभूमिं वा जाव परिहारं परिहरित्तए '२८४०' ॥सू.४१॥ नो कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा राओ वा वियाले वा असणं वा ४ पडिग्गाहेत्तए॥सू.४२॥ नन्नत्थ एगेणं पुव्वपडिलेहिएणं सेज्जासंथारएणं '२८७२'॥सू.४३॥ नो कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा राओ वा वियाले वा वत्थं वा पडिग्गहं वा कम्बलं वा पायपुञ्छणं वा पडिग्गाहेत्तए '३००५'॥सू.४४॥ नन्नत्थ एगाए हरियाहडियाए, सावि य परिभुत्ता वा धोया वा रत्ता वा घट्ठा वा मट्ठा वा संपधूमिया वा '३०४२'॥सू.४५॥ नो कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा राओ वा वियाले वा अद्धाणगमणं एत्तए '३१४२'॥सू.४६॥ संखडिं वा संखडिपडियाए अद्धाणगमणं एत्तए '३११०'॥सू.४७॥ नो कप्पइ निग्गन्थस्स एगाणियस्स राओ वा वियाले वा बहिया वियारभूमिं वा विहारभूमिं वा निक्खमित्तए वा पविसित्तए वा, कप्पइ से अप्पबिइयस्स वा अप्पतइयस्स वा राओ वा वियाले वा बहिया वियारभूमिं वा विहारभूमिं वा निक्खमित्तए वा पविसित्तए वा '३२२५'॥सू.४८॥ नो कप्पइ निग्गन्थीए एगाणियाए राओ वा वियाले वा बहिया वियारभूमिं वा विहारभूमिं वा निक्खमित्तए वा पविसित्तए वा, कप्पइ से (अप्पबिइयाए वा) अप्पतइयाए वा अप्पचउत्थीए वा राओ वा वियाले वा बहिया

वियारभूमिं वा विहारभूमिं वा निक्खमित्तए वा पविसित्तए वा "३२४३" ॥सू. ४९॥ कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा पुरत्थिमेणं जाव अङ्गमगहाओ एत्तए दक्खिणेणं जाव कोसम्बीओ एत्तए पच्चत्थिमेणं जाव थुणाविसयाओ एत्तए उत्तरेणं जाव कुणालाविसयाओ एत्तए, एयावयाव कप्पइ, एयाव याव आरिए खेत्ते, नो से कप्पइ एत्तो बाहिं तेण परं जत्थ नाणदंसणचरित्ताइं उस्सप्पन्ति त्ति बेमि "३२९३" ॥सू. ५०॥ पढमो उद्देसओ ॥१॥

अथ द्वितीयोद्देशकः।

उवस्सयस्स अन्तो वगडाए सालीणि वा वीहीणि वा मुग्गाणि वा मासाणि वा तिलाणि वा कुलत्थाणि वा गोधूमाणि वा जवाणि वा जवजवाणि वा उक्खित्ताणि वा विक्खित्ताणि वा (ओकिण्णाणि वा विक्खिण्णाणि वा) विइकिण्णाणि वा विप्पइण्णाणि वा नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा अहालन्दमवि वत्थए ॥सू. १॥ अह पुण एवं जाणेज्जा नो उक्खित्ताणि (ओकिण्णाणि) नो विक्खित्ताणि (विक्खिण्णाइं) नो विइकिण्णाणि नो विप्पइण्णाइं रासिकडाणि वा भित्तिकडाणि वा पुंजकडाणि वा कुलियकडाणि वा लञ्छियाणि वा मुद्दियाणि वा पिहियाणि वा कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गंथीण वा हेमन्तगिम्हासु वत्थए ॥सू. २॥ अह पुण एवं जाणेज्जा-नो रासिकडाइं नो पुंजकडाइं नो भित्तिकडाइं नो कुलियकडाइं कोट्ठाउत्ताणि वा पल्लाउत्ताणि वा मञ्चाउत्ताणि वा मालाउत्ताणि वा ओलित्ताणि वा लित्ताणि वा पिहियाणि वा लञ्छियाणि वा मुद्दियाणि वा कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा वासावासं वत्थए "१८६" ॥सू. ३॥ उवस्सयस्स अन्तो वगडाए सुरावियडकुम्भे वा सोवीरयवियडकुम्भे वा उवनिक्खित्ते सिया नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा अहालन्दमवि वत्थए हुरत्था य उवस्सयं पडिलेहमाणे नो लभेज्जा एवं से कप्पइ एगरायं वा दुरायं वा वत्थए, (नो से कप्पइ एगरायाओ वा दुरायाओ वा परं वत्थए) जे तत्थ एगरायाओ वा दुरायाओ वा परं वसेज्जा। से

सन्तरा छेए वा परिहारे वा ॥सू.४॥ उवस्सयस्स अन्तो वगडाए सीओदगवियडकुम्भे वा उसिणोदगवियडकुम्भे वा उवनिक्खित्ते सिया नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा अहालन्दमवि वत्थए, हुरत्था य उवस्सयं पडिलेहमाणे नो लभेज्जा एवं से कप्पइ एगराय वा दुराय वा वत्थए (नो से कप्पइ एगरायाओ वा दुरायाओ वा परं वत्थए) जे तत्थ एगरायाओ वा दुरायाओ वा परं वसेज्जा से सन्तरा छेए वा परिहारे वा '२२१'॥सू. ५॥ उवस्सयस्स अन्तो वगडाए सव्वराइए जोई झियाएज्जा नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा अहालन्दमवि वत्थए, हुरत्था य उवस्सयं पडिलेहमाणे नो लभेज्जा एवं से कप्पइ एगराय वा दुराय वा वत्थए (नो से कप्पइ एगरायाओ वा दुरायाओ वा परं वत्थए) जे तत्थ एगरायाओ वा दुरायाओ वा परं वसेज्जा से सन्तरा छेए वा परिहारे वा '२५०'॥सू. ६॥ उवस्सयस्स अंतो वगडाए सव्वराइए पईवे दिप्पेज्जा नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा अहालन्दमवि वत्थए, हुरत्था य उवस्सयं पडिलेहमाणे नो लभेज्जा एवं से कप्पइ एगराय वा दुराय वा वत्थए, (नो से कप्पइ एगरायाओ वा दुरायाओ वा परं वत्थए,) जे तत्थ एगरायाओ वा दुरायाओ वा परं वसेज्जा से सन्तरा छेए वा परिहारे वा '२६३'॥सू. ७॥ उवस्सयस्स अंतो वगडाए पिण्डए वा लोयए वा खीरं वा दहिं वा सप्पिं वा नवणीए वा तेल्ले वा फाणियं वा पूवे वा सक्कुली वा सिहिरिणी वा उक्खित्ताणि (ओकिण्णाणि) वा विक्खित्ताणि (विकिण्णाणि) वा विइगिण्णाणि वा विप्पइण्णाणि वा नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा अहालन्दमवि वत्थए '२६९'॥सू. ८॥ अह पुण एवं जाणेज्जा नो उक्खित्ताणि (ओकिण्णाइं) नो विक्खित्ताणि (विक्खिण्णाइं) नो विइकिण्णाणि नो विप्पइण्णाइं रासिकडाणि वा भित्तिकडाणि वा पुञ्जकडाणि वा कुलियकडाणि वा लञ्छियाणि वा मुद्दियाणि वा पिहियाणि वा कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा हेमन्तगिम्हासु वत्थए '२७२'॥सू. ९॥ अह पुण एवं जाणेज्जा नो रासिगडाइं जाव नो भित्तिगडाइं कोट्ठाउत्ताणि

वा पक्खाउत्ताणि वा मच्छाउत्ताणि वा मासाउत्ताणि वा कुम्भिउत्ताणि वा करभिउत्ताणि वा ओलित्ताणि वा विलित्ताणि वा पिहियाणि वा लञ्छियाणि वा मुद्दियाणि वा कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा वासावासं वत्थए '२०४'॥सू.१०॥ नो कप्पइ निग्गन्थीणं अहे आगमणगिहंसि वा वियडगिहंसि वा वंसीमूलंसि वा रुक्खमूलंसि वा अब्भावगासियंसि वा वत्थए '३००'॥सू.११॥ कप्पइ निग्गन्थाणं अहे आगमणगिहंसि वा वियडगिहंसि वा वंसीमूलंसि वा रुक्खमूलंसि वा अब्भावगासियंसि वा वत्थए '३०८'॥सू.१२॥ एगे सागारिए पारिहारिए दो तिण्णि चत्तारि पञ्च सागारिया पारिहारिया एगं तत्थ कप्पागं ठवइत्ता अवसेसे निव्विसेज्जा '३९५'॥सू.१३॥ नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा सागारियपिण्डं बहिया अनीहडं असंसट्ठं संसट्ठं वा पडिग्गाहेत्तए '३०६'॥सू.१४-१५॥ नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा सागारियपिण्डं बहिया नीहडं असंसट्ठं पडिग्गाहेत्तए॥सू.१५॥ कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गंथीण वा सागारियपिण्डं बहिया नीहडं संसट्ठं पडिग्गाहेत्तए॥सू.१७॥ नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा सागारियपिण्डं बहिया नीहडं असंसट्ठं संसट्ठं करेत्तए, जो खलु निग्गन्थो वा निग्गंथी वा सागारियपिण्डं बहिया नीहडं असंसट्ठं संसट्ठं करेइ करेन्तं वा साइज्जइ से दुहओ वीइक्कममाणे आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं '४०१'॥सू.१८॥ सागारियस्स आहडिया सागारिएणं पडिग्गाहिता तम्हा दावए नो से कप्पइ पडिग्गाहेत्तए॥सू. १९॥ सागारियस्स आहडिया सागारिएणं अपडिग्गाहिता तम्हा दावए एवं से कप्पइ पडिग्गाहेत्तए '४२०'॥सू.२०॥ सागारियस्स नीहडिया परेण अपडिग्गाहिता तम्हा दावए नो से कप्पइ पडिग्गाहेत्तए॥सू.२१॥ सागारियस्स नीहडिया परेण पडिग्गाहिता तम्हा दावए एवं से कप्पइ पडिग्गाहेत्तए '४२८'॥सू.२२॥ सागारियस्स अंसियाओ अविभत्ताओ अव्वोच्छिन्नाओ अव्वोगडाओ अनिज्जूढाओ तम्हा दावए नो से कप्पइ पडिग्गाहेत्तए॥सू.२३॥ सागारियस्स अंसियाओ

विभत्ताओ वोच्छिन्नाओ वोगडाओ निज्जूढाओ तम्हा दावए एवं से कप्पइ पडिग्गाहेत्तए '४४१'॥सू.२४॥ सागारियस्स पूयाभत्ते उद्देसिए चेइए पाहुडियाए सागारियस्स उवगरणजाए निट्ठिए निसट्ठे पाडिहारिए न सागारिओ देइ सागारियस्स परिजणो देइ तम्हा दावए नो से कप्पइ पडिग्गाहेत्तए '४४२'॥सू.२५॥ सागारियस्स पूयाभत्ते उद्देसिए चेइए जाव पाडिहारिए तं नो सागारिओ देइ नो सागारियस्स परिजणो देइ सागारियस्स पूया देइ तम्हा दावए नो से कप्पइ पडिग्गाहित्तए ॥सू.२६॥ सागारियस्स पूयाभत्ते उद्देसिए चेइए पाहुडियाए सागारियस्स उवगरणजाए निट्ठिए निसट्ठे अपाडिहारिए तं सागारिओ देइ सागारियस्स परिजणो वा देइ तम्हा दावए नो से कप्पइ पडिग्गाहेत्तए ॥सू.२७॥ सागारियस्स पूयाभत्ते जाव अपाडिहारिए तं नो सागारिओ देइ नो सागारियस्स परिजणो देइ सागारियस्स पूया देइ तम्हा दावए एवं से कप्पइ पडिग्गाहेत्तए '४४४'॥सू.२८॥ कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा इमाइं पञ्च वत्थाइं धारेत्तए वा परिहरित्तए वा, तं जहा-जंगिए भंगिए साणए पोत्तए तिरीडपट्टे नामं पञ्चमे '४५८'॥सू.२९॥ कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा इमाइं पञ्च रयहरणाइं धारेत्तए वा परिहरित्तए वा, तं जहा-ओण्णिए उट्टिए साणए वच्चाचि(चिप्पावि)प्पए मुञ्जचिप्पिएवि नाम पञ्चमेत्तिबेमि '४६४'॥सू.३०॥ **बीइओ उद्देसओ ॥२॥**

अथ तृतीयोद्देशकः।

जो कप्पइ निग्गंथाण निग्गंथीणं उवस्सयंसि (आसइत्तए वा) चिट्ठित्तए वा निसीइत्तए वा तुयट्टित्तए वा निद्दाइत्तए वा पयलाइत्तए वा असणं वा ४ आहार आहारेत्तए उच्चारं वा पासवणं वा खेलं वा सिङ्घाणं वा परिट्ठवेत्तए सज्झायं वा करेत्तए झाणं वा झाइत्तए काउस्सग्गं वा ठाणं वा ठाइत्तए '१२३'॥सू.१॥ जो कप्पइ निग्गंथीण निग्गंथाणं उवस्सयंसि आसइत्तए वा चिट्ठित्तए वा जाव ठाणं ठाइत्तए '१२६'॥सू.२॥ जो कप्पइ निग्गंथीणं सलोमाइं चम्माइं

अहिट्ठित्तए'१४०'॥सू.३॥ कप्पइ निग्गन्थाणं सलोमाइं चम्माइं
अहिट्ठित्तए, सेवि य परिभुत्ते नो चेव णं अपरिभुत्ते, सेवि य पाडि-
हारिए नो चेव णं अपाडिहारिए. सेवि य एगराइए नो चेव णं
अणेगराइए'१६४'॥सू.४॥ नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण
वा कसिणाइ चम्माइं धारित्तए वा परिहरित्तए वा'१९१'॥सू.५॥
कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गंथीण वा अकसिणाइं चम्माइं धारि-
त्तए वा परिहरित्तए वा'१९८'॥सू.६॥ नो कप्पइ निग्गन्थाण
वा निग्गन्थीण वा कसिणाइं वत्थाइं धारित्तए वा परिहरित्तए
वा, कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा अकसिणाइं वत्थाइं
धारित्तए वा परिहरित्तए वा'२३७'॥सू.७॥ नो कप्पइ निग्गंथाण
वा निग्गन्थीण वा अभिन्नाइ वत्थाइं धारित्तए वा परिहरित्तए
वा, कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा भिन्नाइं वत्थाइं धारि-
त्तए वा परिहरित्तए वा'४१७'॥सू.८॥ नो कप्पइ निग्गंथाणं उग्ग-
हणन्तगं वा उग्गहपट्टगं वा धारित्तए वा परिहरित्तए वा'४२२॥
सू.९॥ कप्पइ निग्गन्थीणं उग्गहणन्तगं वा उग्गह(ओगाहण)पट्ट-
गं वा धारित्तए वा परिहरित्तए वा'४३५'॥सू.१०॥ निग्गंथीए य
गाहावइकुलं पिण्डवायपडियाए अणुप्पविट्ठाए चेलट्ठे समुप्प-
ज्जेज्जा नो से कप्पइ अप्पणो निस्साए चेलं पडिग्गाहेत्तए, कप्पइ
से पवत्तिणीनिस्साए चेलं पडिग्गाहेत्तए. नो य से तत्थ पवत्ति-
णी समाणी सिया जे तत्थ समाणे आयरिए वा उवज्झाए वा
पवत्ती वा थेरे वा गणी वा गणहरे वा गणावच्छेइए वा जं चऽण्णं पुर-
ओ कट्टु विहरति कप्पइ से तन्नीसाए चेलं पडिग्गाहेत्तए'५०५'
॥सू.११॥ निग्गन्थस्स तप्पढमयाए संपव्वयमाणस्स कप्पइ रय-
हरणगोच्छगपडिग्गहमायाए तिहि य कसिणेहिं वत्थेहिं आयाए
संपव्वइत्तए, से य पुव्वोवट्ठिए सिया एवं से नो कप्पइ रयहरण-
पडिग्गहगोच्छगमायाए तिहि य कसिणेहिं वत्थेहिं आयाए संपव्व-
इत्तए, कप्पइ से अहापरिग्गहियाइं वत्थाइं गहाय आयाए संप-
व्वइत्तए'५५०'॥सू.१२॥ निग्गन्थीए णं तप्पढमयाए संपव्वयमा-

णीए कप्पइ से रयहरणगोच्छगपडिग्गहमायाए चउहिं कसिणेहिं वत्थेहिं आयाए संपव्वइत्तए, सा य पुव्वोवट्ठिया सिया एवं से नो कप्पइ रयहरणगोच्छगपडिग्गहमायाए चउहिं कसिणेहिं वत्थेहिं आयाए संपव्वइत्तए, कप्पइ से अहापरिग्गहियाइं वत्थाइं गहाय आयाए संपव्वइत्तए '५५२' ॥सू-१३॥ नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा पढमसमोसरणुद्देसपत्ताइं चेलाइं पडिगाहेत्तए, कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा दोच्चसमोसरणुद्देसपत्ताइं चेलाइं पडिगाहेत्तए '६२४' ॥सू-१४॥ कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा अहाराइणियाए चेलाइं पडिगाहेत्तए '६८३' ॥सू-१५॥ कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा अहाराइणियाए सेज्जासंथारयं पडिगाहेत्तए '७२९' ॥सू-१६॥ कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा अहाराइणियाए किइकम्मं करेत्तए '८३' ॥सू-१७॥ नो कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा अंतरगिहंसि चिट्ठित्तए वा (आसइत्तए वा) निसीइत्तए वा तुयट्टित्तए वा निद्दाइत्तए वा पयलाइत्तए वा असणं वा ४ आहारमाहारेत्तए उच्चारं वा ४ परिट्ठवेत्तए सज्झायं वा करेत्तए झाणं वा झाइत्तए काउस्सग्गं वा ठाणं वा ठाइत्तए, अह पुण एवं जाणेज्जा वाहिए जराजुण्णे तवस्सी दुब्बले किलन्ते (जज्जरिए) मुच्छेज्ज वा पवडेज्ज वा एवं से कप्पइ अंतरगिहंसि चिट्ठित्तए वा जाव ठाणं वा ठाइत्तए '८८१' ॥सू-१८॥ नो कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा अंतरगिहंसि जाव चउगाहं वा पंचगाहं वा आइक्खित्तए वा विभावेत्तए वा किट्टित्तए वा पवेइत्तए वा नन्नत्थ एगनाएण वा एगवागरणेण वा एगगाहाए वा एगसिलोएण वा, सेवि य ठिच्चा, नो चेव णं अट्ठिच्चा '९०५' ॥सू-१९॥ नो कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा अंतरगिहंसि इमाइं पंच महव्वयाइं सभावणाइं आइक्खित्तए वा जाव पवेइत्तए वा नन्नत्थ एगनाएण वा जाव एगसिलोएण वा, सेवि य ठिच्चा, नो चेव णं अट्ठिच्चा '९१३' ॥सू-२०॥ नो कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा पाडिहारियं सेज्जासंथारयं आयाए अपडिहट्टु संपव्वइत्तए

'८२५'॥सू.२१॥ नो कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा सागारिय संतियं सेज्जासंथारयं आयाए अविगरणं (२४१) कट्टु संपव्वइत्तए कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा पाडिहारियं वा सागारियसंतियं वा सेज्जासंथारयं आयाए विगरणं कट्टु संपव्वइत्तए'९३०'॥सू.२२॥इह खलु निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा पाडिहारिए वा सागारियसंतिए वा सेज्जासंथारए विप्पणसेज्जा परिभट्ठे सिया से य अणुगवेसियव्वे, सिया से य अणुगवेसमाणे लभेज्जा तस्सेव अणुप(पडि)दायव्वे, सिया से य अणुगवेसमाणे नो लभेज्जा एवं से कप्पइ दोच्चंपि उग्गहं अणुण्णवेत्ता (ओगिण्हित्ता) परिहार परिहरित्तए'९६४'॥सू.२३॥ जद्दिवसं च णं समणा निग्गंथा सेज्जासंथारयं विप्पजहंति तद्दिवसं च णं अवरे समणा निग्गंथा हव्वमागच्छेज्जा स च्चेव ओग्गहस्स पुव्वाणुन्नवणा चिट्ठइ अहालन्दमवि उग्गहे ॥सू.२४॥ अत्थि या इत्थ केइ उवस्सयपरियावन्नए अचित्ते परिहरणारिहे स चेव उग्गहस्स पुव्वाणुन्नवणा चिट्ठइ अहालन्दमवि उग्गहे'१०७८'॥सू.२५॥ से वत्थुसु अव्वावडेसु अव्वोगडेसु अपरपरिग्गहिएसु अमर परिग्गहिएसु स च्चेव उग्गहस्स पुव्वाणुन्नवणा चिट्ठइ अहालन्दमवि उग्गहे ॥सू.२६॥ से वत्थूसु वावडेसु वोगडेसु परपरिग्गहिएसु भिक्खुभावस्स अट्ठाए दोच्चंपि उग्गहे अणुन्नवेयव्वे सिया अहालन्दमवि उग्गहं'११०४'॥सू.२७॥ से अणुकुड्डेसु वा अणुभित्तीसु वा अणुचरियासु वा अणुफरिहासु वा अणुपंथेसु वा अणुमेरासु वा स च्चेव उग्गहस्स पुव्वाणुन्नवणा चिट्ठइ अहालन्दमवि उग्गहे'१११०'॥सू.२८॥ से गामंसि वा जाव रायहाणीए संनिवेसंसि वा बहिया सेण्णं संनिविट्ठं पेहाए कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा तद्दिवसं भिक्खायरियाए गंतूणं पडिनियत्तए, नो से कप्पइ तं रयणिं तत्थेव उवाइणावेत्तए, जो खलु निग्गंथे वा निग्गंथी वा तं रयणिं तत्थेव उवाइणावेइ उवाइणावेंतं वा साइज्जइ से दुहओ अइक्कममाणे आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं'११५५'॥सू.२९॥ से गामंसि वा जाव संनिवेसंसि वा कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा सव्वओ

समंता सक्कोसं जोयणं उग्गहं ओगिण्हित्ताणं चिट्ठित्तए त्तिबेमि '११९२'॥सू.३॥ तइओ उद्देसओ ॥३॥

अथ चतुर्थोद्देशकः।

तओ अणुग्घाइया पन्नत्ता, तं जहा-हत्थकम्मं करेमाणे मेहुणं पडिसेवमाणे राईभोयणं भुञ्जमाणे '७२'॥सू.१॥ तओ पारंचिया पन्नत्ता, तंजहा-दुट्ठे पारंचिए पमत्ते पारंचिए अन्नमन्नं करेमाणे पारंचिए '१८१'॥सू.२॥ तओ अणवट्ठप्पा पन्नत्ता, तंजहा साहम्मियाणं तेन्नं करेमाणे अन्नधम्मियाणं तेन्नं करेमाणे हत्थायालं (हत्थालंबं अत्थादाणं) दलमाणे '२६२'॥सू.३॥ तओ नो कप्पंति पव्वावेत्तए, तंजहा पण्डए वाइए कीवे '३१४'॥सू.४॥ एवं मुण्डावेत्तए सिक्खावेत्तए (सेहावित्तए) उवट्ठावेत्तए संभुञ्जित्तए संवासित्तए '३२१'॥सू.५॥ तओ नो कप्पन्ति वाएत्तए, तंजहा-अविणीए विगईपडिबद्धे अविओसवियपाहुडे, तओ कप्पन्ति वाएत्तए तंजहा-विणीए नोविगईपडिबद्धे विओसवियपाहुडे '३३५'॥सू.६॥ तओ दुस्सन्नप्पा पन्नत्ता, तंजहा-दुट्ठे मूढे वुग्गाहिए '३५८'॥सू.७॥ तओ सुस्सन्नप्पा पन्नत्ता, तंजहा-अदुट्ठे अमूढे अवुग्गाहिए '३६०'॥सू.८॥ निग्गंथिं च णं गिलायमाणिं पिया वा भाया वा पुत्ते वा पलिस्सएज्जा तं च निग्गन्थी साइज्जेज्जा मेहुणपडिसेवणपत्ता आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं '३८७'॥सू.९॥ निग्गंथिं च णं गिलायमाणिं माया वा भगिणी वा धूया वा पलिस्सएज्जा तं च निग्गन्थे साइज्जेज्जा मेहुणपडिसेवणपत्ते आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं॥सू.१०॥ नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा असणं वा ४ पढमाए पोरिसीए पडिग्गाहेत्ता पच्छिमं चउत्थिं पोरिसिं उवाइणावेत्तए, से य आहच्च उवाइणाविए सिया तं नो अप्पणा भुञ्जेज्जा नो अन्नेसिं अणुप्पदेज्जा एगन्ते बहुफासुए थंडिले पएसे पडिलेहित्ता पमज्जित्ता परिट्ठवेयव्वे सिया, त अप्पणा भुञ्जमा-

णे अन्नेसिं वा दल (अणुप्पदे)माणे आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं उग्घाइयं ॥सू. ११॥ नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा असणं वा ४ परं अद्धजोयणमेराए उवाइणावेत्तए, से य आहच्च उवाइणाविए सिया तं नो अप्पणा भुञ्जेज्जा नो अन्नेसिं अणुप्पदेज्जा एगन्ते बहुफासुए पएसे पडिलेहित्ता पमज्जित्ता परिट्ठवेयव्वे सिया, तं अप्पणा भुञ्जमाणे अन्नेसिं वा दलमाणे आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं उग्घाइयं '४३९' ॥सू. १२॥ निग्गन्थेण य गाहावइकुलं पिण्डवायपडियाए अणुप्पविट्ठेणं अन्नयरे अचित्ते अणेसणिज्जे पाणभोयणे पडिग्गाहिए सिया, अत्थि य इत्थ केइ सेहतराए अणुवट्ठावियए कप्पइ से तस्स दाउं अणुप्पदाउं वा, नत्थि य इत्थ केइ सेहतराए अणुवट्ठावियए तं नो अप्पणा भुञ्जेज्जा नो अन्नेसिं दावए (अणुप्पदेज्जा) एगन्ते बहुफासुए पएसे पडिलेहित्ता पमज्जित्ता परिट्ठवेयव्वे सिया '४६३' ॥सू. १३॥ जे कडे कप्पट्ठियाणं कप्पइ से अकप्पट्ठियाणं नो से कप्पइ कप्पट्ठियाणं, जे कडे अकप्पट्ठियाणं नो से कप्पइ कप्पट्ठियाणं कप्पइ से अकप्पट्ठियाणं, कप्पे ठिया कप्पट्ठिया अकप्पे ठिया अकप्पट्ठिया '४८५' ॥सू. १४॥ भिक्खू य गणाओ अवक्कम्म इच्छेज्जा अन्नं गणं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए नो से कप्पइ अणापुच्छित्ताणं आयरियं वा उवज्झायं वा पवत्तिं वा थेरं वा गणिं वा गणहरं वा गणावच्छेइयं वा अन्नं गणं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, कप्पइ से आपुच्छित्ता आयरियं वा जाव गणावच्छेइयं वा अन्नं गणं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, ते य से वियरेज्जा एवं से कप्पइ अन्नं गणं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, ते य से नो वियरेज्जा एवं से नो कप्पइ अन्नं गणं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए '५३४' ॥सू. १५॥ गणावच्छेइए य गणाओ अवक्कम्म इच्छेज्जा अन्नं गणं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए नो कप्पइ गणावच्छेइयस्स गणावच्छेइयत्तं अनिक्खिवित्ता अन्नं गणं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, कप्पइ से गणावच्छेइयस्स गणावच्छेइयत्तं निक्खिवित्ता अन्नं गणं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, नो से कप्पइ अणापुच्छित्ता आयरियं

वा जाव गणावच्छेइयं वा अन्नं गणं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, कप्पइ से आपुच्छित्ता आयरियं वा जाव गणावच्छेइयं वा अन्नं गणं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, ते य से वियरेज्जा एवं से कप्पइ अन्नं गणं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, ते य से नो वियरेज्जा एवं से नो कप्पइ अन्नं गणं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए ॥सू. १६॥ आयरियउवज्झाए य गणाओ अवक्कम्म इच्छेज्जा अन्नं गणं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, नो से कप्पइ आयरियउवज्झायस्स आयरियउवज्झायत्तं अनिक्खिवित्ता अन्नं गणं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, कप्पइ से आयरियउवज्झायस्स आयरियउवज्झायत्तं निक्खिवित्ता अन्नं गणं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, नो से कप्पइ अणापुच्छित्ता आयरियं वा जाव गणावच्छेइयं वा अन्नं गणं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, कप्पइ से आपुच्छित्ता आयरियं वा जाव गणावच्छेइयं वा अन्नं गणं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, ते य से वियरेज्जा एवं से कप्पइ अन्नं गणं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, ते य से नो वियरेज्जा एवं से नो कप्पइ अन्नं गणं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए '५७७' ॥सू. १७॥ भिक्खू य गणाओ अवक्कम्म इच्छेज्जा अन्नं गणं संभोगपडियाए उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, नो से कप्पइ अणापुच्छित्ता आयरियं वा उवज्झायं वा पवत्तिं वा थेरं वा गणिं वा गणहरं वा गणावच्छेइयं वा अन्नं गणं संभोगपडियाए उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, कप्पइ से आपुच्छित्ता आयरियं वा जाव गणावच्छेइयं वा अन्नं गणं संभोगपडियाए उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, ते य से वियरेज्जा एवं से कप्पइ अन्नं गणं संभोगपडियाए उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, ते य से नो वियरेज्जा एवं से नो कप्पइ अन्नं गणं संभोगपडियाए उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, जत्थुत्तरियं धम्मविणयं लभेज्जा एवं से कप्पइ अन्नं गणं संभोगपडियाए उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए जत्थुत्तरियं धम्मविणयं नो लभेज्जा एवं से नो कप्पइ अन्नं गणं संभोगपडियाए उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए '५७८' ॥सू. १८॥ गणावच्छेइए य गणाओ अवक्कम्म इच्छेज्जा अन्नं गणं संभोगपडियाए उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए नो से कप्पइ गणावच्छेइयस्स

गणावच्छेइयत्तं अनिक्खिवित्ता संभोगपडियाए उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए कप्पइ से गणावच्छेइयस्स गणावच्छेइयत्तं निक्खिवित्ताणं अन्नं गणं संभोगपडियाए उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए नो से कप्पइ अणापुच्छित्ता आयरियं वा जाव गणावच्छेइयं वा अन्नं गणं संभोगपडियाए उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए कप्पइ से आपुच्छित्ता आयरियं वा जाव गणावच्छेइयं वा अन्नं गणं संभोगपडियाए उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, ते य से वियरंति एवं से कप्पइ अन्नं गणं संभोगपडियाए उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए ते य से नो वियरंति एवं से नो कप्पइ अन्नं गणं संभोगपडियाए उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए जत्थुत्तरियं धम्मविणयं लभेज्जा एवं से कप्पइ अन्नं गणं संभोगपडियाए उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए जत्थुत्तरियं धम्मविणयं नो लभेज्जा एवं से नो कप्पइ अन्नं गणं संभोगपडियाए उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए ॥सू. १९॥ आयरियउवज्झाए य गणाओ अवक्कम्म इच्छेज्जा अन्नं गणं संभोगपडियाए उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए नो से कप्पइ आयरियउवज्झायस्स आयरियउवज्झायत्तं अनिक्खिवित्ता संभोगपडियाए उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए. कप्पइ से आयरियउवज्झायस्स आयरियउवज्झायत्तं निक्खिवित्ताणं अन्नं गणं संभोगपडियाए उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए. नो से कप्पइ अणापुच्छित्ता आयरियं वा जाव गणावच्छेइयं वा अन्नं गणं संभोगपडियाए उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, कप्पइ से आपुच्छित्ता आयरियं वा जाव गणावच्छेइयं वा अन्नं गणं संभोगपडियाए उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए. ते य से वियरंति एवं से कप्पइ अन्नं गणं संभोगपडियाए उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, ते य से नो वियरंति एवं से नो कप्पइ अन्नं गणं संभोगपडियाए उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए जत्थुत्तरियं धम्मविणयं लभेज्जा एवं से कप्पइ अन्नं गणं संभोगपडियाए उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, जत्थुत्तरियं धम्मविणयं नो लभेज्जा एवं से नो कप्पइ अन्नं गणं संभोगपडियाए उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए ॥सू. २०॥ भिक्खू य इच्छेज्जा अन्नं आयरिय–उवज्झायं उद्दिसावेत्तए, नो से कप्पइ अणापुच्छित्ता आयरियं वा जाव गणावच्छेइयं वा अन्नं आयरियउवज्झायं उद्दिसावेत्तए, कप्पइ से आपुच्छित्ता आयरियं वा जाव गणावच्छेइयं वा अन्नं आयरियउवज्झायं

उद्दिसावेत्तए ते य से वियरंति एवं से कप्पइ अन्नं आयरियउवज्झाय उद्दिसावेत्तए, ते य से नो वियरन्ति एवं से नो कप्पइ अन्नं आयरियउवज्झायं उद्दिसावेत्तए, नो से कप्पइ तेसिं कारणं अदीवेत्ता अन्नं आयरियउवज्झायं उद्दिसावेत्तए, कप्पइ से तेसिं कारणं दीवेत्ता अन्नं आयरियउवज्झायं उद्दिसावेत्तए ॥ सू० २१॥ गणावच्छेइए य इच्छेज्जा अन्नं आयरियउवज्झायं उद्दिसावेत्तए, नो से कप्पइ गणावच्छेइयस्स गणावच्छेइयत्तं अनिक्खिवित्ता अन्नं आयरियउवज्झायं उद्दिसावेत्तए, कप्पइ से गणावच्छेइयस्स गणावच्छेइयत्तं निक्खिवित्ता अन्नं आयरियउवज्झायं उद्दिसावेत्तए, नो से कप्पइ अणापुच्छित्ता आयरियं वा जाव गणावच्छेइयं वा अन्नं आयरियउवज्झायं उद्दिसावेत्तए, कप्पइ से आपुच्छित्ता आयरियं वा जाव गणावच्छेइयं वा अन्नं आयरियउवज्झायं उद्दिसावेत्तए, ते य से वियरंति एवं से कप्पइ अन्नं आयरियउवज्झायं उद्दिसावेत्तए, ते य से नो वियरंति एवं से नो कप्पइ अन्नं आयरियउवज्झायं उद्दिसावेत्तए, नो से कप्पइ तेसिं कारणं अदीवेत्ता अन्नं आयरियउवज्झायं उद्दिसावेत्तए, कप्पइ से तेसिं कारणं दीवेत्ता अन्नं आयरियं वा उवज्झायं वा उद्दिसावेत्तए ।६१। ॥सू० २२॥ आयरियउवज्झाए य इच्छेज्जा अन्नं आयरियउवज्झायं उद्दिसावेत्तए नो से कप्पइ आयरियउवज्झायस्स आयरियउवज्झायत्तं अनिक्खिवित्ता अन्नं आयरियउवज्झायं उद्दिसावेत्तए कप्पइ से आयरियउवज्झायस्स आयरियउवज्झायत्तं निक्खिवित्ता अन्नं आयरिय-उवज्झायं उद्दिसावेत्तए नो से कप्पइ अणापुच्छित्ता आयरियं वा जाव गणावच्छेइयं वा अन्नं आयरिय-उवज्झायं उद्दिसावेत्तए कप्पइ से आपुच्छित्ता आयरियं वा जाव गणावच्छेइयं वा अन्नं आयरियउवज्झायं उद्दिसावेत्तए ते य से वियरंति एवं से कप्पइ अन्नं आयरियउवज्झायं उद्दिसावेत्तए ते य से नो वियरंति एवं से नो कप्पइ अन्नं आयरिय-उवज्झायं उद्दिसावेत्तए नो से कप्पइ तेसिं कारणं अदीवेत्ता अन्नं आयरिय-उवज्झायं उद्दिसावेत्तए कप्पइ से तेसिं कारणं दीवेत्ता अन्नं आयरिय-उवज्झायं उद्दिसावेत्तए ।६२। ॥सू० २३॥ भिक्खू य राओ वा वियाले वा आहच्च वीसुंभेज्जा तं च सरीरगं केई वेयावच्चकरा भिक्खू इच्छेज्जा

एगंते बहुफासुए पएसे परिट्ठवेत्तए, अत्थि य इत्थ केइ सागारियसंतिए
उवगरणजाए अचित्ते परिहरणारिहे कप्पइ से सागारकडं गहाय तं सरी-
रगं एगंते बहुफासुए पएसे परिट्ठवेत्ता तत्थेव उवनिक्खेवियव्वे सिया
'६९०'॥सू.२४॥ भिक्खू य अहिगरणं कट्टु तं अहिगरणं अविओसवेत्ता
नो से कप्पइ गाहावइकुलं भत्ताए वा पाणाए वा निक्खमित्तए वा
पविसित्तए वा बहिया विहारभूमिं वा वियारभूमिं वा निक्खमित्तए वा
पविसित्तए वा, गामाणुगामं दुइज्जित्तए, गणाओ वा गणं संकमित्तए वा-
सावासं वा वत्थए, जत्थेव अप्पणो आयरियउवज्झायं पासेज्जा बहु-
स्सुयं (तस्संतिए आलोएज्जा इत्यादि पा०) बज्झा(ब्भा,ब्बा)गम कप्पइ से
तस्संतिए आलोएत्तए पडिक्कमित्तए निंदित्तए गरिहित्तए विउट्टित्तए वि-
सोहित्तए अकरणाए अब्भुट्ठित्तए अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं पडिवज्जि-
त्तए, से य सुएण पट्ठविए आइयव्वे सिया, से य सुएण नो पट्ठविए नो
आइयव्वे सिया, से य सुएण पट्ठविज्जमाणे नो आइयइ से निज्जूहियव्वे
सिया '७१८'॥सू.२५॥ परिहारकप्पट्ठियस्स णं भिक्खुस्स कप्पइ आयरि-
यउवज्झाए णं तद्दिवसं एगगिहंसि पिंडवायं दवावेत्तए, तेण परं नो से
कप्पइ असणं वा ४ दाउं वा अणुप्पदाउं वा कप्पइ से अन्नयरं वेयाव-
डियं करेत्तए, तं जहा - उट्ठावणं वा निसीयावणं वा तुयट्टावणं वा उच्चा-
रपासवणखेलजल्लसिंघाणाणं विगिंचणं वा विसोहणं वा करेत्तए, अह
पुण एवं जाणेज्जा छिन्नावाएसु पंथेसु तवस्सी आउरे झिंझिए पिवा-
सिए दुब्बले किलंते मुच्छेज्ज वा पवडेज्ज वा एवं से कप्पइ असणं
वा ४ दाउं वा अणुप्पदाउं वा '७४१'॥सू.२६॥ नो कप्पइ निग्गंथाण
वा निग्गंथीण वा इमाओ पंच महण्णवाओ महानईओ उद्दिट्ठाओ
गणियाओ वंजियाओ अंतो मासस्स दुक्खुत्तो वा तिक्खुत्तो वा उत्तरित्त-
ए वा संतरित्तए वा, तं जहा - गंगा जउणा सरऊ कोसिया मही ॥सू.२७॥ अह
पुण एवं जाणेज्जा एरावई कुणालाए जत्थ चक्किया एगं पायं जले किच्चा
एगं पायं थले किच्चा एवं णं कप्पइ अंतो मासस्स दुक्खुत्तो वा तिक्खु-
त्तो वा उत्तरित्तए वा संतरित्तए वा, जत्थ एवं नो चक्किया एवं णं नो क-
प्पइ अंतो मासस्स दुक्खुत्तो वा तिक्खुत्तो वा उत्तरित्तए वा संतरित्तए

वा '१८८' ॥सू०२८॥ से तणेसु वा तणपुञ्जेसु वा पलालेसु वा पलाल पुञ्जेसु वा अप्पंडेसु अप्पपाणेसु अप्पबीएसु अप्पहरिएसु अप्पोसेसु अप्पुत्तिङ्गपणगदगमट्टियमक्कडसंताणएसु अहेसवणमायाए नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा तहप्पगारे उवस्सए हेमन्तगिम्हासु वत्थए ॥सू०२९॥ से तणेसु वा जाव संताणएसु वा उप्पिंसवणमायाए कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा तहप्पगारे उवस्सए हेमन्तगिम्हासु वत्थए ॥सू०३०॥ से तणेसु वा जाव संताणएसु अहेरयणिमुक्कमउडेसु नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा तहप्पगारे उवस्सए वासावासं वत्थए ॥सू०३१॥ से तणेसु वा जाव संताणएसु उप्पिंरयणिमुक्कमउडेसु कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा तहप्पगारे उवस्सए वासावासं वत्थए त्तिबेमि '८०५' ॥सू०३२॥ चउत्थो उद्देसओ ॥४॥

॥ अथ पञ्चमोद्देशकः ॥

देवे य इत्थिरूवं विउव्वित्ता निग्गन्थं पडिग्गाहेज्जा तं च निग्गन्थे साइज्जेज्जा मेहुणपडिसेवणपत्ते आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं ॥सू०१॥ देवी य इत्थिरूवं विउव्वित्ता निग्गन्थं पडिग्गाहेज्जा तं च निग्गन्थे साइज्जेज्जा मेहुणपडिसेवणपत्ते आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं ॥सू०२॥ देवी य पुरिसरूवं विउव्वित्ता निग्गन्थिं पडिग्गाहेज्जा तं च निग्गन्थी साइज्जेज्जा मेहुणपडिसेवणपत्ता आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं '४४' ॥सू०३॥ देवे य पुरिसरूवं विउव्वित्ता निग्गन्थीं पडिग्गाहेज्जा तं च निग्गन्थी साइज्जेज्जा मेहुणपडिसेवणपत्ता आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं ॥सू०४॥ भिक्खू य अहिगरणं कट्टु तं अहिगरणं अविओसवेत्ता इच्छेज्जा अन्नं गणं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, कप्पइ तस्स पञ्च राइंदियाइं छेयं कट्टु परिणिव्वविय २ दोच्चंपि तमेव गणं पडिनिज्जाएयव्वे सिया, जहा वा तस्स गणस्स पत्तियं सिया '१००' ॥सू०५॥ भिक्खू य उग्गयवित्तीए (उग्गयमुत्तीए) अणत्थमिय-

संकप्पे संथडिए निव्वितिगिच्छे (च्छासमावण्णेणं अप्पाणेणं) असणं वा ४ पडिग्गाहेत्ता आहारमाहारेमाणे अह पच्छा जाणेज्जा- अणुग्गए सूरिए अत्थमिए वा से जं च आसयंसि जं च पाणिंसि जं च पडिग्गहे तं विगिंचमाणे वा विसोहेमाणे वा नो अइक्कमइ, तं अप्पणा भुंजेमाणे अन्नेसिं वा दलमाणे (अणुप्पदेमाणे) राइभोयणपडिसेवणपत्ते आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं ॥सू. ६॥ भिक्खू य उग्गयवित्तीए अणत्थमियसंकप्पे संथडिए विइगिच्छासमावन्ने असणं वा ४ पडिग्गाहेत्ता आहारमाहारेमाणे अह पच्छा जाणेज्जा- अणुग्गए सूरिए अत्थमिए वा, से जं च आसयंसि (मुहे) जं च पाणिंसि जं च पडिग्गहे तं विगिंचमाणे वा विसोहेमाणे वा नो अइक्कमइ, तं अप्पणा भुंजमाणे अन्नेसिं वा दलमाणे राइभोयणपडिसेवणपत्ते आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं ॥सू.७॥ भिक्खू य उग्गयवित्तीए अणत्थमियसंकप्पे असंथडिए निव्विइगिच्छे असणं वा ४ पडिग्गाहेत्ता आहारमाहारेमाणे अह पच्छा जाणेज्जा अणुग्गए सूरिए अत्थमिए वा, से जं च आसयंसि जं च पाणिंसि जं च पडिग्गहे तं विगिंचमाणे वा विसोहेमाणे वा नाइक्कमइ, तं अप्पणा भुंजमाणे अन्नेसिं वा दलमाणे राइभोयणपडिसेवणपत्ते चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं ॥सू.८॥ भिक्खू य उग्गयवित्तीए अणत्थमियसंकप्पे असंथडिए विइगिच्छासमावन्ने असणं वा ४ पडिग्गाहेत्ता आहारमाहारेमाणे अह पच्छा जाणेज्जा- अणुग्गए सूरिए अत्थमिए वा, से जं च मुहे जं च पाणिंसि जं च पडिग्गहंसि तं विगिंचमाणे वा विसोहेमाणे वा न अइक्कमइ, तं अप्पणा भुंजमाणे अन्नेसिं वा दलमाणे राइभोयणपडिसेवणपत्ते आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं '१४५' ॥सू. ९॥ इह खलु निग्गन्थस्स वा निग्गन्थीए वा राओ वा वियाले वा सपाणे सभोयणे उग्गाले आगच्छेज्जा तं विगिंचमाणे वा विसोहेमाणे वा नो अइक्कमइ तं उग्गिलित्ता पच्चोगिलमाणे राइभोयणपडिसेवणपत्ते आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं '१७७' ॥सू. १०॥ निग्गन्थस्स य गाहावइकुलं पिण्डवायपडियाए अणुप्पविट्ठस्स अंतो पडिग्गहंसि से पाणे वा बीए वा रए वा परियावज्जेज्जा तं च संचाएइ विगिंचित्तए वा विसोहित्तए वा तओ

पुव्वामेव आलोइया २ विसोहिया २ तओ संजयामेव भुञ्जेज्ज वा पिएज्ज वा, तं च नो संचाएइ विगिञ्चित्तए वा विसोहित्तए वा तं नो अप्पणा भुञ्जेज्जा नो अन्नेसिं दावए एगन्ते बहुफासुए पएसे (थंडिले) पडिलेहित्ता पमज्जित्ता परिट्ठवेयव्वे सिया '२१३' ॥सू. ११॥ निग्गन्थस्स य गाहावइकुलं पिण्डवायपडियाए अणुप्पविट्ठस्स अंतो पडिग्गहंसि दए वा दगरए वा दगफुसिए वा परियावज्जेज्जा से य उसिणे भोयणजाए भोत्तव्वे सिया, से य नो उसिणे सीए भोयणजाए तं नो अप्पणा भुञ्जेज्जा नो अन्नेसिं दावए एगन्ते बहुफासुए पएसे (थंडिले) पडिलेहित्ता पमज्जित्ता परिट्ठवेयव्वे सिया '२३५' ॥सू. १२॥ निग्गन्थीए य राओ वा वियाले वा उच्चारं वा पासवणं वा विगिञ्चमाणीए वा विसोहेमाणीए वा अन्नयरे पसुजाइए वा पक्खिजाइए वा अन्नयरं इन्दियजायं परामुसेज्जा तं च निग्गन्थी साइज्जेज्जा हत्थकम्मपडिसेवणपत्ता आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं ॥सू. १३॥ निग्गन्थीए य राओ वा वियाले वा उच्चारं वा पासवणं वा विगिञ्चमाणीए वा विसोहेमाणीए वा अन्नयरे पसुजाइए वा पक्खिजाइए वा अन्नयरंसि सोयंसि ओगाहेज्जा तं च निग्गन्थी साइज्जेज्जा मेहुणपडिसेवणपत्ता आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं '२४५' ॥सू. १४॥ नो कप्पइ निग्गन्थीए एगाणियाए होत्तए ॥सू. १५॥ नो कप्पइ निग्गन्थीए एगाणियाए गाहावइकुलं भत्ताए वा पाणाए वा निक्खमित्तए वा पविसित्तए वा ॥सू. १६॥ नो कप्पइ निग्गन्थीए एगाणियाए बहिया विहारभूमिं वा वियारभूमिं वा निक्खमित्तए वा पविसित्तए वा ॥सू. १७॥ नो कप्पइ निग्गन्थीए एगाणियाए गामाणुगामं दूइज्जित्तए ॥सू. १८॥ नो कप्पइ निग्गन्थीए एगाणियाए वासावासं वत्थए '२५१' ॥सू. १९॥ नो कप्पइ निग्गन्थीए अचेलियाए होत्तए '२५६' ॥सू. २०॥ नो कप्पइ निग्गन्थीए अपाइयाए होत्तए '२६०' ॥सू. २१॥ नो कप्पइ निग्गन्थीए वोसट्ठकाइयाए होत्तए '२६१' ॥सू. २२॥ नो कप्पइ निग्गन्थीए बहिया गामस्स वा जाव संनिवेसस्स वा उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय २ सूराभिमुहाए एगपाइयाए ठिच्चा आयावणाए आयावेत्तए ॥सू. २३॥ कप्पइ से उवस्सयस्स अंतो वगडाए संघाडिपडिबद्धाए

पलंबियबाहियाए समतलपाइयाए ठिच्चा आयावणाए आयावेत्तए '२६९' ॥सू० २४॥ नो कप्पइ निग्गन्थीए ठाणाय(इ)याए होत्तए ॥सू० २५॥ नो कप्पइ निग्गन्थीए पडिमट्ठाइयाए होत्तए ॥सू० २६॥ नो कप्पइ निग्गन्थीए नेसिज्जियाए होत्तए ॥सू० २७॥ नो कप्पइ निग्गन्थीए उक्कुडियासणियाए होत्तए ॥सू० २८॥ नो कप्पइ निग्गन्थीए वीरासणियाए होत्तए ॥सू० २९॥ नो कप्पइ निग्गन्थीए दण्डासणियाए होत्तए ॥सू० ३०॥ नो कप्पइ निग्गन्थीए लगण्डसाइयाए होत्तए ॥सू० ३१॥ नो कप्पइ निग्गन्थीए ओमन्थियाए होत्तए ॥सू० ३२॥ नो कप्पइ निग्गन्थीए उत्ताणियाए होत्तए ॥सू० ३३॥ नो कप्पइ निग्गन्थीए अम्बखुज्जियाए होत्तए ॥सू० ३४॥ नो कप्पइ निग्गन्थीए एगपासियाए होत्तए '२८१' ॥सू० ३५॥ नो कप्पइ निग्गन्थीणं आउञ्चणपट्टगं धारेत्तए वा परिहरित्तए वा ॥सू० ३६॥ कप्पइ निग्गन्थाणं आउञ्चणपट्टगं धारेत्तए वा परिहरित्तए वा ॥सू० ३७॥ नो कप्पइ निग्गन्थीणं सावस्सयंसि आसणंसि (चिट्ठित्तए वा निसीइत्तए वा) आसइत्तए वा तुयट्टित्तए वा ॥सू० ३८॥ कप्पइ निग्गन्थाणं सावस्सयंसि आसणंसि (चिट्ठित्तए वा निसीइत्तए वा) आसइत्तए वा तुयट्टित्तए वा ॥सू० ३९॥ नो कप्पइ निग्गन्थीणं सविसाणंसि फलगंसि वा पीढंसि वा जाव तुयट्टित्तए वा ॥सू० ४०॥ कप्पइ निग्गन्थाणं जाव तुयट्टित्तए वा '२८९' ॥सू० ४१॥ नो कप्पइ निग्गन्थीणं सवेण्टयं लाउयं धारेत्तए वा परिहरित्तए वा ॥सू० ४२॥ कप्पइ निग्गन्थाणं सवेण्टयं लाउयं धारेत्तए वा परिहरित्तए वा '२९०' ॥सू० ४३॥ नो कप्पइ निग्गन्थीणं सवेण्टयं पायकेसरियं धारेत्तए वा परिहरित्तए वा ॥सू० ४४॥ कप्पइ निग्गन्थाणं सवेण्टयं पायकेसरियं धारेत्तए वा परिहरित्तए वा '२९१' ॥सू० ४५॥ नो कप्पइ निग्गन्थीणं दारुदण्डयं पायपुञ्छणं धारेत्तए वा परिहरित्तए वा ॥सू० ४६॥ कप्पइ निग्गन्थाणं दारुदण्डयं पायपुञ्छणं धारेत्तए वा परिहरित्तए वा '२९२' ॥सू० ४७॥ नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा अन्नमन्नस्स मोयं आइत्तए वा आयमित्तए वा नन्नत्थ गाढागाढेसु रोगायङ्केसु '३१२' ॥सू० ४८॥ नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा पारियासियस्स आहारस्स जाव तयप्पमाणमेत्तमवि भूइप्पमाणमेत्तमवि बिंदुप्पमाणमेत्त-

मवि आहारमाहारेत्तए, नन्नत्थ आगाढेसु रोगायंकेसु '२२८' ॥सू० ४९॥ नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा पारियासिएणं आलेवणजाएणं गायाइं आलिम्पित्तए वा विलिम्पित्तए वा, नन्नत्थ आगाढेहिं (गाढागाढेहिं) रोगायंकेहिं '२४०' ॥सू० ५०॥ नो कप्पइ निग्गन्थाण वा० पारियासिएणं तेल्लेण वा घएण वा नवणीएण वा वसाए वा गायाइं (ना) अब्भंगित्तए वा मक्खेत्तए वा, नन्नत्थ आगाढेहिं रोगायंकेहिं (नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा कक्केण वा लोद्धेण वा पधूवणेण वा अन्नयरेण वा आलेवणजाएणं गायाइं उव्वलेत्तए वा उव्वट्टेत्तए वा, नन्नत्थ आगाढागाढेहिं रोगायंकेहिं) '२४८' ॥सू. ५१॥ परिहारकप्पट्ठिए णं भिक्खू बहिया थेराणं वेयावडियाए गच्छेज्जा, से य आहच्च अइक्कमेज्जा, तं च थेरा जाणेज्जा, अप्पणो आगमेणं अन्नेसिं वा अंतिए सोच्चा, तओ पच्छा तस्स अहालहुसए नाम ववहारे पट्ठवियव्वे सिया '२६२' ॥सू० ५२॥ निग्गन्थीए य गाहावइकुलं पिण्डवायपडियाए अणुप्पविट्ठाए अन्नयरे पुलागभत्ते पडिग्गाहिए सिया, सा य संथरेज्जा कप्पइ से तद्दिवसं तेणेव भत्तट्ठेणं पज्जोसवेत्तए, नो से कप्पइ दोच्चंपि गाहावइकुलं पिण्डवायपडियाए पविसित्तए, सा य नो संथरेज्जा एवं से कप्पइ दोच्चंपि गाहावइकुलं पिण्डवायपडियाए भत्ताए वा पाणाए वा निक्खमित्तए वा पविसित्तए वत्तिबेमि '२७५' ॥सू० ५३॥ पञ्चमो उद्देसओ ॥५॥

अथ षष्ठोद्देशकः ।

नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा इमाइं छ अवयणाइं वइत्तए, तं जहा - अलियवयणे हीलियवयणे खिंसियवयणे फरुसवयणे गारत्थियवयणे विओसवियं वा पुणो उदीरेत्तए '६९' ॥सू० १॥ छ कप्पस्स पत्थारा पन्नत्ता, तं जहा - पाणाइवायस्स वायं वयमाणे मुसावायस्स वायं वयमाणे अदिन्नादाणस्स वायं वयमाणे अविरइयवायं वयमाणे अपुरिसवायं वयमाणे दासवायं वयमाणे, इच्चेए छ कप्पस्स पत्थारे पत्थरेत्ता सम्मं अप्पडिपूरे-

माणे तद्दाणपत्ते सिया'११'॥सू.२॥ निग्गंथस्स य अहे पायंसि खाणु-
ए वा कंटए वा हीरे वा सक्करे वा परियावज्जेज्जा तं च निग्गंथे नो संचा-
एज्जा नीहरित्तए वा विसोहेत्तए वा, तं निग्गंथी नीहरमाणी वा विसोहेमाणी
वा नाइक्कमइ ॥सू.३॥ निग्गंथस्स य अच्छिंसि पाणे वा बीए वा रए वा
परियावज्जेज्जा तं च निग्गंथे नो संचाएज्जा नीहरित्तए वा विसोहे-
त्तए वा, तं निग्गंथी नीहरमाणी वा विसोहेमाणी वा नाइक्कमइ ॥सू.४॥
निग्गंथीए य अहे पायंसि खाणुए वा कंटए वा हीरे वा सक्करे वा परि-
यावज्जेज्जा तं च निग्गंथी नो संचाएज्जा नीहरित्तए वा विसोहेत्तए
वा, तं च निग्गंथे नीहरमाणे वा विसोहेमाणे वा नाइक्कमइ ॥सू.५॥
निग्गंथीए य अच्छिंसि पाणे वा बीए वा रए वा परियावज्जेज्जा, तं
च निग्गंथी नो संचाएइ नीहरित्तए वा विसोहेत्तए वा, तं च निग्गंथे
नीहरमाणे वा विसोहेमाणे वा नाइक्कमइ '१२८'॥सू.६॥ निग्गन्थे
निग्गन्थीं दुग्गंसि वा विसमंसि वा पव्वयंसि वा पक्खलमाणिं
वा पवडमाणिं वा गेण्हमाणे वा अवलम्बमाणे वा नाइक्कमइ
॥सू.७॥ निग्गंथे निग्गंथिं सेयंसि वा पंकंसि वा पणगंसि
वा उदयंसि वा ओकसमाणिं वा ओवुज्झमाणिं वा गेण्हमाणे
वा अवलम्बमाणे वा नाइक्कमइ ॥सू.८॥ निग्गंथे निग्गंथिं नावं
आरुभमाणिं वा ओरुभमाणिं वा गेण्हमाणे वा अवलम्बमाणे वा
नाइक्कमइ '१३१'॥सू.९॥ खित्तचित्तं निग्गंथिं निग्गंथे गिण्हमाणे
वा अवलम्बमाणे वा नातिक्कमति '१३८'॥सू.१०॥ दित्तचित्तं निग्गंथिं
निग्गन्थे गेण्हमाणे वा अवलम्बमाणे वा नाइक्कमइ '१३३'॥सू.११॥
जक्खाइट्ठं ॥सू.१२॥ उम्मायपत्तं ॥सू.१३॥ उवसग्गपत्तं ॥सू.१४॥ साहि-
गरणं ॥सू.१५॥ सपायच्छित्तं ॥सू.१६॥ भत्तपाणपडियाइक्खियं ॥
सू.१७॥ अट्ठजायं निग्गंथिं निग्गंथे गेण्हमाणे वा अवलम्बमाणे
वा नाइक्कमइ '२४८'॥सू.१८॥ छ कप्पस्स पलिमंथू (थी) पन्नत्ता
तं जहा - कोक्कुइए संजमस्स पलिमंथू, मोहरिए सच्चवयणस्स पलि-
मंथू, तिन्तिणिए एसणागोयरस्स पलिमंथू, चक्खुलोलुए इरियावहि-
याए पलिमंथू, इच्छालोभे मुत्तिमग्गस्स पलिमंथू, भुज्जो नियाण

कुकुए संजमस्स पलिमंथू, सव्वत्थ भगवया अनियाणया पसत्था २८६॥सू. १९॥ छव्विहा कप्पट्ठिई पन्नत्ता, तं जहा-सामाइयसंजयकप्पट्ठिई छेओवट्ठावणियसंजयकप्पट्ठिई निव्विसमाणकप्पट्ठिई निव्विट्ठकाइयकप्पट्ठिई जिणकप्पट्ठिई थेरकप्पट्ठिई त्तिबेमि ४२८ ॥सू. २०॥ छट्ठो उद्देसओ ॥६॥

(ग्रन्थाग्रं ४३७)

॥ इति श्री बृहत्कल्पसूत्रम् ॥

इदं श्रीबृहत्कल्पसूत्रं लिखितं तपोमूर्तिपूज्याचार्यदेव श्रीविजयकर्पूरसूरीश्वरपट्टालङ्कार हालारदेशोद्धारकपूज्याचार्यदेवश्रीविजयामृतसूरीश्वर-विनेय पन्यासप्रवर-श्रीजिनेन्द्रविजयगणिवरस्य आज्ञानुवर्ति-तपस्वी साध्वीश्रीमहेन्द्रप्रभाश्रीजी तत्-शिष्या साध्वीश्रीसुरेन्द्रप्रभाश्रीजी तच्छिष्या साध्वी इन्द्रप्रभाश्रीजी श्रुतभक्त्या सोत्साहेन वीर सं. २५२४ वि.सं. २०५४ वर्षे ज्येष्ठशुक्लतृतीयायां आगमानां संशोधितं तु आगमसंशोधक-सपादक-पन्यासप्रवर-श्रीजिनेन्द्रविजयगणिवरेण श्रुतभक्तिभावनाभावितेन ॥ शिवमस्तु सर्वजगतः ॥

॥ अर्हम् ॥

क्षमाश्रमण श्री संघदासगणि विरचितं

श्री पञ्चकल्पभाष्यम्

(श्रीबृहत्कल्पीयनामनिक्षेपान्तर्गतम्)

वंदामि भद्दबाहुं पाईणं चरिमसगलसुयनाणी। सुत्तत्थ(स्स)कारगमिसिं दसाण कप्पे य ववहारे ॥१॥ कप्पं ति णामणिप्फण्णं महत्थं वत्तुकामतो। णिज्जूहगस्स भत्तीय मंगलट्ठाए य संथुतिं ॥२॥ तित्थगरणमोक्कारो सत्थस्स तु आइए समक्खाओ। इह पुण जेणऽज्झयणं णिज्जूढं तस्स कीरति तु ॥३॥ सत्थाणि मंगलपुरस्सराणि सुहसवणगहणधरणाणि। जम्हा भवंति जंति य सिस्सपसिस्सेहिं पचयं (च्चाइं) च ॥४॥ भत्ती य सत्थकत्तरि तं कय(त्तो)उवओगगोरवं सत्थे। एएण कारणेणं कीरइ आदी णमोक्कारो ॥५॥ वद अभिवाद-थुतीए सुभसद्दो णेगहा तु परिगीतो। वंदणपूयणणमणं थुणणं सक्कारमेगट्ठा ॥६॥ भद्दं ति सुंदरंति य तुल्लत्थो जस्स सुंदरा बाहू। सो होति भद्दबाहू गोण्णं जेणं तु बालत्ते ॥७॥ पाएणं(ण) लक्खिज्जइ पेसलभावो तु बाहुजुयलस्स। उववण्णमतो णामं तस्सेयं भद्दबाहुत्ति ॥८॥ अण्णे वि भद्दबाहू विसेसणं गोण्ण(त्त)गहणपाईणं। अण्णेसिं पिय सिद्धे विसेसणं चरिमसगलसुतं ॥९॥ चरिमो अपच्छिमो खलु चोद्दसपुव्वा उ होति सगलसुतं। सेसाण वुदासट्ठा सुत्तकरज्झयणमेयस्स ॥१०॥ किं तेण कयं सुत्त ? जं भण्णति तस्स कारतो सो उ। भण्णति गणधारीहिं सव्वसुयं चेव पुव्वकतं ॥११॥ तत्तो च्चिय णिज्जूढं अणुगहट्ठाए संपयजतीणं। तो सुत्तकारओ खलु स भवति दसकप्पववहारे ॥१२॥ वंदे तं भगवंतं बहुभद्द सुभद्द सव्वओभद्दं। पवयणहियसुयकेउं सुयणाणपभावग धीरं ॥१३॥ वंदिसद्दो पुव्वभ-

गिओ तदिती त चेव णाममोत्तेहिं। इस्सरियाइगुण भगो सो से अत्थित्ति तो भगवं ॥१४॥ भद्दं कल्लाणं ति य एगट्ठं तं च सुबहुयं जस्स। सो होति सुबहुभद्दो सोभणभद्दो सुभद्दोत्ति ॥१५॥ खीरासवमादीणि तु सुभाणि भद्दाणि तस्स सुबहूणि। सव्वओ इहपरलोए भद्द तो सव्वतो भद्दो ॥१६॥ आमोसहादि इह भद्द परलोए होंतऽणुत्तरसुरादी। सुकुलुप्पत्ती य तओ ततो पच्छा य णेव्वाणं ॥१७॥ भातित्ति भद्दमहवा भाई णाणादिएहिं सो जम्हा। सो होति भद्दणामो कुव्वति भद्दाणि वा जम्हा ॥१८॥ पवयण दुवालसंगं तस्स हितो जं करेतऽवोच्छित्तिं। संघो तु पवयणं तू हितोवदेसं अतो तस्स ॥१९॥ केतूसद्दो उसिए ऊसियं तुगं तु तस्स तु सुहं तो। इहलोए परलोए सो भगवं होति परमसुही ॥२०॥ वायणयपभावणया सुतणाणगुणा य जे वदंति लोए। विउसपरिसाए मज्झे सुतणाणपभावणा एसा ॥२१॥ किं कारण तस्स कओ महया भत्तीय तू णमोक्कारो। जम्हा तेणं जूढा अम्हं हियट्ठाय सुत्त इमे ॥२२॥ आयारदसाकप्पो ववहारो णवमपुव्वणीसंदो। चारित्तरक्खणट्ठा सूयकडस्सूपरिं ठविता ॥२३॥ अंगदसा अण्णावि हु उवासगादीण तेण तु विसेसो। आयारदसा उ इमा जेणेत्थं वण्णियाऽऽयारा ॥२४॥ दसकप्पव्ववहारा एग सुतक्खंध केइ इच्छंति। केई व दसा एक्कं कप्पववहार बीयं तु ॥२५॥ रयणागरपाणीयं णवमं पुव्वं तु तस्स णीसंदो। परिगाल परिस्सावो एते दसकप्पववहारा ॥२६॥ किं कारण णिज्जूढा चरित्तसारस्स रक्खणट्ठाए। खलियस्स तहिं सोही कीरइ तो होति निरुवहयं ॥२७॥ सूयकडुवरिं ठविता जम्हा तं पंचवासपरियाए। सूयकडमहिज्जति तू तो जोग्गो होति से तेसिं ॥२८॥ अणुकंपावुच्छेदो कुसुमा भेरी तिगिच्छा पारिच्छा। कप्पे परिसा य तहा दिट्ठंता आदिसुत्तम्मि ॥२९॥ ओसप्पिणि समणाणं हाणिं णाऊण आउबलाणं। होहिंतुवग्गहकरा पुव्वगतम्मी पहीणम्मि ॥३०॥ खेत्तस्स य कालस्स य परिहाणी गहणधारणाणं च। बलवीरिए संघयणे सद्धा उच्छाहता चेव ॥३१॥ किं खेत्तं कालो वा संकुयती जेण तेण परिहाणी। भण्णइ न संकुयंती परिहाणी तेसि तु गुणेहिं ॥३२॥ भणियं च दूसमाए गामा होहिंति तू मसाणसमा। इय कारण (खेत्त)-गुणहाणी काले वि उ होहिमा हाणी ॥३३॥ समए समएऽणंता परिहायंते उ वण्णमादीया। दव्वादीपज्जाया अहोरत्तं तत्तियं चेव ॥३४॥ दूसम अणुभा-

वेणं साहूजोग्गा उ दुल्लभा खेत्ता। कालो वि य दुब्भिक्खा अभिक्खणं
होंति डमरा य ॥३५॥ दूसम अणुभावेण य परिहाणी होति ओसहिबलाणं।
तेणं मणुयाणं पि तु आउगमेहादि परिहाणी (दारं) ॥३६॥ संघयणं पि य हीयति
इतो य हाणी य धितिबलस्स भवे। विरियं सारीरबलं तं पि य परि-
हाति सत्तं च ॥३७॥ हायंति य सइयाओ गहणे परियट्टणे य मणुयाणं।
उच्छाहो उज्जोगो अणालसत्तं च एगट्ठा ॥३८॥ इय णाउं परिहाणिं अणु-
ग्गहट्ठाए एस साहूणं। णिज्जूढं ऽणुकंपाए दिट्ठंतेहिं इमेहिं तु ॥३९॥ पग-
रण चेऽणुकंपा दइढविदइठेहिं होयऽगारीणं। जह ओमे बीयभत्तं रण्णा
दिण्णं जणवयस्स ॥४०॥ एवं अप्पत्तच्चिय पुव्वगतं केइ मा उ मरिहंति
। तो उद्धरिऊण ततो हेट्ठा उत्तारियं तेहिं (दारं) ॥४१॥ मा य हु वोच्छि-
ज्जिहिती चरणऽणुओगोत्ति तेण णिज्जूढं। वोच्छिण्णे अह तम्मी चरणाभा-
वो भवेज्जाहि (दारं) ॥४२॥ कह पुण तेण गहेउं दिण्णाइं तत्थिमो तु दिट्ठं-
तो। जह कोइ दुरारोहो सुसुरभिकुसुमो तु कप्पदुमो ॥४३॥ पुरिसा केइ
असत्ता तं आरोढूण कुसुमगहणट्ठा। तेसिं अणुकंपट्ठा कोइ ससत्तो समा-
रुज्झे ॥४४॥ घेत्तुं कुसुमा सुहगहणहेतुगं गंथिउं दले तेसिं। तह चोद्दसपु-
व्वतरु आरूढो भद्दबाहू तु ॥४५॥ अणुकंपट्ठा गंथितुं सूयगइस्सुप्परिं ठवे
धीरो। त पुण सुतोवएसेण चेव गहितं ण सेच्छाए (दारं) ॥४६॥ अण्णह ग-
हिए दोसो असाहुग होति णाणमाईणं। केसवभेरीणातं वक्खात पुव्वसा-
मइए ॥४७॥ अहवा तिगिच्छाओ तू ऊणहियं वावि ओसह देज्जा। तेहिं
तु ण कज्जसिद्धी सिद्धी विवरीयाए भवति (दारं) ॥४८॥ पारिच्छ पारिच्छि-
त्तू पकप्पमादी दलंति जोग्गस्स। परिणामादीणं तू दारुगमादीहिं णातेहिं
॥४९॥ पारिच्छ आदिसुत्ते पुव्वं भणिया तु जा उ विहिसुत्ते। सेलघणादी प-
रिसा सूरंता इय भण्णिहिती ॥५०॥ परिसादारे भणितं कप्पहार कमेण हु इ-
दाणिं। किं पुण उवक्कमकारणं बहुवत्तव्वं ति णाऊणं ॥५१॥ किं पुण कप्प-
ज्झयणे वण्णिज्जति १ भण्णती सुणसु ताव। जे अभिहिता उ अत्था तहियं
ते ऊ समासेणं ॥५२॥ कप्पे य कप्पिए चेव कप्पणिज्जेत्ति आवरे। फासु-
ए एसणिज्जे य संजमे त्ति य यावरे ॥५३॥ चालए वागए चेव चम्मए प
ट्टए आवरे। पम्हए किमिए चेव धातुए मीसतेति य ॥५४॥ उवसंपया चरित्त-
स्य चरित्ते कइविहे इय। णियंठा कति पण्णत्ता कह समोतारणाति य? ॥५५॥

ववहारे कस्स पण्णत्ते कहं पडिसेवणावि य ?। देसभंगो कहं वुत्ते ? सव्वभंगो त्ति थावरे ॥५६॥ पच्छित्ते कइविहे वुत्ते ? छट्ठाणे त्ति थावरे। पंचट्ठाणे चउट्ठाणे तिट्ठाणे त्ति थावरे ॥५७॥ छट्ठाणे दंसणे वुत्ते संजमेत्ति थावरे। गाहणा य च-रित्तस्स एमेता पडिवत्तीओ ॥एताओ दारगाहाओ॥५८॥ कप्पो य होइ दुविहो जिणकप्पो चेव थेरकप्पो य। दुविहो उ कप्पिओ खलु दव्वे भावे य णायव्वो ॥५९॥ आगम णोआगमओ दव्वम्मी कप्पिओ भवे दुविहो। आगमतो पुव्वउत्तो णोआगमओ इमो होति ॥६०॥ जाणगसरीर भविए तव्वतिरित्ते य होति णायव्वो। जाणग मययासरीरं भविओ पुण सिक्खिहि जो तु ॥६१॥ वतिरित्तो पुणभवी बद्धा-उ अभिमुहो य बोधव्वो। भावेऽवि होति दुविहो आगम णोआगमे चेव ॥६२॥ आगमओ उवउत्तो णोआगमओ य पिंडमाईणं। गहणम्मि कप्पिओ खलु पव्वावेतुं च सेहाणं ॥६३॥ जं जं जोग्ग जतीणं आहारादी तहेव सेहा य। एयं तु कप्पणिज्जं अपरिग-हणा अकप्पम्मि ॥६४॥ आहारे पत्तंभादी सलोममजिणादि होति उवहीए। सेज्जाए दगसाला अकप्पसेहा य जे अण्णे ॥६५॥ केरिसयं कप्पणिज्जं ? फासुयगं फासुयं तु केरिसगं ?। जीवजढं जं दव्वं तंपि य जं एसणिज्जं तु ॥६६॥ दसदोसविप्पमु-क्कं गहियं चसद्देण उग्गमादीवि। एयं तु साहुजोग्गं गिण्हंतो संजतो होति ॥६७॥ अहवा सत्तरसविहो संजमो जं वावि सुत्तछंदेणं। भुंजति आहाराती विवरीयमसं-जमो होति (दारं) ॥६८॥ आहारस्स उ भेदा असणादी उवहिणो उ वालादी। एतेसिं तु परूवणया वालयमादीणिमा होति ॥६९॥ वालेहिं णिप्फण्ण वालय-सोण्णोट्टियादिगं होति (दारं) वक्केहि तु णिप्फण्णं वागजसणवक्कमादी(गं)णं ॥७०॥ चम्मं च चम्मपाडिए पट्टो उण होतिमो मुणेयव्वो। पत्तत्थोगाहपट्टा तिरीडपट्टो य एमादी ॥७१॥ पक्खुजं हंसगभादि अहवा कप्पासिय मुणेयव्वं (दारं) कोसेज्ज-पट्टमादी जं किमियं तू पवुच्चति। (दारं) ॥७२॥ धुव्वति वसकविल्लो कम्मिवि देसम्मि तरुणतो घडइ। वट्टंतो पूरयती त घडय विप्पिए तीमि ॥७३॥ सकोहि ऊण कणयं तेहि तम्हा उ किज्जए सुत्तं। तेण वुय ज वत्थं भण्णति त धातुतं णाम ॥७४॥ दुगसंजोगादीहिं एएसिं चेव वालयादीणं। त मीसय ति भण्णति जह उण्ण (लुण्हं) पक्खोम्हियादीय ॥७५॥ वत्थव्व चसद्देणं भेयपभेदा उ जेत्तिया तेसिं। सुद्धे हिं तेहिं तु उवसंपण्णो हु सुचरित्ते। (दारं) ॥७६॥ अहवा पचविहाओ उवसंपय हे-तेसा समासेणं। सुय सुहदुक्खे खेत्ते मग्गे विणए य बोधव्वा ॥७७॥ अहवा ति विहुवसंपय णाणे तह दंसणे चरित्ते य। चरित्ते च कतिविह तु पचविह त इमे

होति ॥७८॥ सामाइय छेदुवट्ठावणं च परिहारसुद्धियं चेव। तत्तो य सुहुमरागं अहक्खायं चेव बोधव्वं ॥७९॥ अहवा वयसमितादी सराग तह वीतरागमहवावि। खाइग खओवसमितं उवसमियं वा भवे तिविहं। (दारं)॥८०॥ भेदा उ वसहेणं होंति इमे णाणदंसणाणं तु। खाइयखओवसमियं दुविहं णाणं मुणेयव्वं ॥८१॥ खइयं केवलणाणं खओवसमियाइं सेसणाणाइं। खइयं खओवसमियं उवसमियं दंसणं तिविहं ॥८२॥ कस्सेतं चारित्तं णियंठ तह संजयाण ते कतिहा?। पंच णियंठा पंचेव संजया होंतिमे कमसो ॥८३॥ पुलए बउस कुसीलो होति णियंठे तहा सिणाए य। एएसिं एक्केक्को पंचविहो होति बोधव्वो ॥८४॥ णाणपुलाए तह दंसणे य चारित्त लिंग अहसुहुमे। एसो पंचविहो खलु पुलागणियंठो मुणेयव्वो ॥८५॥ आभोगमणाभोगे तह संवुडमसंवुडे अहासुहुमे। एसो पंचविहो तू बउसणियंठो मुणेयव्वो ॥८६॥ दुविहो होति कुसीलो पडिसेवणया तहा कसाए य। एक्केक्को पंचविहो परूवणा तेसिमा होइ ॥८७॥ णाणपडिसेवणाए दंसणचरणे य लिंग अहसुहुमे। पडिसेवणाकुसीलो पंचविहो एस णायव्वो ॥८८॥ णाणकसायकुसीले दंसण चरणे य लिंग अहसुहुमे। एस कसायकुसीलो पंचविहो तू मुणेयव्वो ॥८९॥ पढमगासमयणियंठे अपढम-चरिमे य तह अचरिमे य। तत्तो य अहासुहुमे पंचमए होति णायव्वो ॥९०॥ पंचविहसिणाए उ अच्छवि तह असबले अकम्मंसे। संसुद्धणाणदंसणधरे य होती चउत्थे तु ॥९१॥ अरहा जिणे य केवलि अप्परिसावी य होति पंचमए। एते पंच विकप्पा सिणायस्स तु होंति णायव्वा ॥९२॥ पंचविह संजता वी सामाइय-छेउवट्ठ-परिहारे। सुहुमे य अहक्खाए एक्केक्के ते पुणो दुविहा ॥९३॥ इत्तरिए आवकही सामाइयसंजए भवे दुविहे। दुविहे छेओवट्ठे सतियारे णिरतियारे य ॥९४॥ परिहारविसुद्धीए णिव्विसमाणे तहेव णिव्विट्ठे। दुविहे य सुहुमरागे संकिस्संते विसुज्झंते ॥९५॥ अहक्खाओ वि य दुविहो छउमत्थो चेव केवली चेव। एसो तु संजतो खलु पंचविहो होति णायव्वो ॥९६॥ सामाइयम्मि उ कए चाउज्जामं अणुत्तरं धम्मं। तिविहेण फासयतो सामाइयसंजतो स खलु ॥९७॥ छेत्तूण तु परियागं पोराणं तो ठवेति अप्पाणं। धम्मम्मि पंचजामे छेओवट्ठावणो स खलु। दारं ॥९८॥ परिहरति जो विसुद्धं पंचजामं अणुत्तरं धम्मं। तिविहेण फासयंतो परिहारियसंजतो स खलु ॥९९॥ लोभमणुं वेदिंतो जो खलु उवसामओ व खवओ वा। सो सुहुमसंपराओ अहक्खा-

था ऊणओ किंचि ॥१००॥ उवसंते खीणम्मि व जो खलु कम्मम्मि मोहणिज्ज-
म्मि। छउमत्थो व जिणो वा अहक्खाओ संजतो स खलु ॥१०१॥ एतेसिं समोतारो
दुविहो सट्ठाण तह परट्ठाणे। वोच्छामि आणुपुव्विं जो जत्थ समोयरति तेसिं
॥१०२॥ जहणुवसंपज्जणता सव्वेसिं चेव पुच्छियव्वाओ। वाकरण जहाकमसो
तेसिं इणमो उ वोच्छामि ॥१०३॥ पुलागो तु पुलागत्तं जहमाणो जहइ से
पुलागत्तं। उवसंपज्जेऽसंजम अहवावि कसायसीलं तु ॥१०४॥ बउसो य
बउसत्तं जहती पडिसेवणं कसायं वा। संजमसंजम अस्संजमं च पडि-
वज्जती सो तु ॥१०५॥ पडिसेवणाकुसीलो विजहति पडिसेवणाकुसीलत्तं।
बउसकसायकुसीलं पडिवज्ज असंजमं वावि ॥१०६॥ अहवावि संजमासंजमं
तु पडिवज्जती ततो सो उ। जोऽवि कसायकुसीलो विजहति सो तू कसायत्तं
॥१०७॥ पुलगं बउसं वा अहवा पडिसेवणाकुसीलं तु। पडिवज्ज नियंठं वा अ-
हवावि असंजमं वावि ॥१०८॥ अहवा संजमसंजम उवसंपज्जे तु सो चुतो तत्तो।
णियंठे उ णियंठत्तं विजहति तत्तो चुतो संतो ॥१०९॥ उवसंपज्जे कसायं सि-
णाय अहवा असंजमं वावि। विजहति सिणायगत्तं सिणायगो उ चुतो त-
त्तो ॥११०॥

उवसंपज्जति तत्तो सिद्धिगतिं सो पहीणकम्मंसो। एसो
तु णियंठाणं समोयारो संजयाणेत्तो ॥१११॥ सामादिसंजतो तू सामाइयत्तं
जहंत किं जहति। किं वा उपसंपज्जे एवं पुच्छा उ सव्वेसिं ॥११२॥ सामाइ-
यत्तं जहती सामाइय संजते चूते तत्तो। छेदुवट्ठावणियं वा पडिवज्जति सु-
हुमरागं वा ॥११३॥ अहवावि संजमासंजमं च अस्संजमं च पडिवज्जे। छेदु-
वट्ठावणिए पुण वि जहति से छेदुवट्ठवणं ॥११४॥ परिहारविसुद्धीयं अहवा
वी सो तु सुहुमरागं तु। अस्संजमं संजमसंजमं च पडिवज्जती अहवा ॥११५॥
परिहारविसुद्धीओ विजहति व तत्तो चुतोऽवि तं चेव। उवसंपज्जति छेदं अ-
हवावि असंजमं सो तु ॥११६॥ विजहति सुहुमसरागो तत्तो चुतो सुहुमसंप-
रायत्तं उवसंपज्जति सामाइसंजमं छेदमहवा वि ॥११७॥ अहवा अहक्खा-
यं तू अस्संजममहव सो उ पडिवज्जे। अहक्खायसंजतो पुण अहक्खायत्तं
विजहमाणो ॥११८॥ जहति अहक्खायत्तं उवसंपज्जे तु सो चुतो तत्तो। सुहुमं
च संपरायं अस्संजमसिद्धिगतिमहवा ॥११९॥ एस समोतारो खलु अहवावि
णियंठसंजएसुं तु। संजयनिग्गंथेसु अवरोप्परतो समोतारो ॥१२०॥ पुलगबउ

साण दुण्हवि सामइयछेदेसु तू समोतारो। ओतरीते कुसीलो पुण आदि-
ल्लेसुं चउसुंपि ॥१२१॥ णिगांथसिणाता पुण समोतरंते तु ते अहक्खाते।
एवं तु णियंठा तू उत्तरिया संजतेसुं तु ॥१२२॥ पुलबउसकुसीलेसुं सामइ-
छेदा समोतरंती तु। परिहारसुहुमरागा ओतरति कुसीलएसुं तु ॥१२३॥ ओत-
रति अहक्खाओ णिगांथसिणातएसु दोसुंपि। एमेते समोतरिता अण्णोऽण्णेसुं
जहाकमसो ॥१२४॥ उत्तरे सव्वमहव्वयाणि णियमा तु सव्वदव्वेसु। ण तु स-
व्वपज्जवेहिं जम्हा सामादिए उदितं ॥१२५॥ पढमम्मि सव्वजीवा बीते चरिमे य
सव्वदव्वाइं। सेसा महव्वता पुण (खलु) तदेक्कदेसेण दव्वाणं। दारं ॥१२६॥ ए-
तेसिं णियंठाणं आवण्णाणं तु संजयाणं च। ववहारो होति दुहा पच्छित्ते आभवं-
ते य ॥१२७॥ पच्छित्ते पंचविहो आगमसादी उ होति णायव्वो। कस्सा भवति ण
वावी सच्चित्तादी तु आभव्वो ॥१२८॥ सावराहिस्स ववहारो अवराहो पडिसेवणा
। पडिसेवणा य कतिहा तीसे भेदा इमे भवे ॥१२९॥ दप्पिया कप्पिया चेव दुविहा
पडिसेवणा। जयणा अजयणा कप्पी जयणासुद्धो तु सेवतो ॥१३०॥ जयणा-
सेवी कप्पो दप्पो जयणाए अजयणाए य। आवज्जति सट्ठाणं वण्णिज्जति वि-
त्थरो कप्पे। दारं ॥१३१॥ पडिसेवगस्स होती देसब्भंगो य सव्वभंगो य। अंव-
राडे केरिसए देसे सव्वेऽवि सो होति ॥१३२॥ पणगादी जा छेदो एसो खलु हो-
ति देसभंगो तु। मूलादिउवरिमेसु णायव्वो सव्वभंगो तु ॥१३३॥ तस्स उ विसुद्धि-
हेउं पच्छित्तं तस्स केत्तिया भेदा। छट्ठाणादीया खलु परूवणा तेसिमा
होति ॥१३४॥ छसु काएसु वएसु य छव्विह एगिंदियादि पंचविहं। संघट्टण
परितावण उद्दवणे चेव निप्फण्ण ॥१३५॥ चउहा तु णाणवंते दंसणवंते चरि-
त्तवंते य। तत्तो चियत्तकिच्चो अहवा दव्वाइयं चउहा ॥१३६॥ अहवा अति-
क्कमादी चउहा कोहाइयं च चउहा तु। णाणादियारमादी होति तिविहं च पच्छित्तं
॥१३७॥ अहवा आहारोवहि सिज्जतियारे य होति तिविहं तु। उग्गम उप्पायण ए-
सणा य तिविहं तु एक्केक्के ॥१३८॥ आलोयणपडिक्कमणे तदुभयमेवं तु होति
तिविहं तु। सच्चित्तअचित्तमीसग तिविहं चेदं मुणेयव्वं ॥१३९॥ अहवा सत्तट्ठवि-
हं नव दसहा वावि होति पच्छित्तं। आलोयणपडिक्कमणे मीसविवेगो य वोसग्गो
॥१४०॥ छट्ठं तवे य तत्तो सव्वे उवरिल्ल सत्तमं छेदो। अट्ठविह छेद दुवि-
हो देसे सव्वे य बोद्धव्वो ॥१४१॥ णवविह सव्वच्छेदो दुह संजमुवट्ठ विज्ज-
ती मूलं। कालंतरमितरे पुण सेवंतो बीहिं च दसभेदं ॥१४२॥ अह वण्णइ दुवि-

ड्रेदं एगविहं वाति होज्ज णायव्वं। रागद्दोसा दोण्णी दुगविहोऽसंजमो होति॥
॥१४३॥ छद्दव्वाणे दसणेत्ती जो काए छव्विहे ण सद्दहति। णत्थि ण णिच्चादी वा
छव्विहमेयं तु मिच्छत्तं॥१४४॥ धम्मत्थिकायमादी कालंतादिं तु छत्तु दव्वाइं।
जो ताइं न सद्दहति छव्विहमेय तु मिच्छत्तं॥१४५॥ संजमो सत्तरसविहो तु सा-
माइयमादी अहव पंचविहो। दारं। गाहण ताव चरित्तस्स गहणं चिय गाहणा
होति॥१४६॥ किह पुण चरित्तगहणं होज्जाहि? भण्णती इमेहिं तु। वेरग्गेणं अह-
वा मिच्छत्ता होइ सम्मत्तं॥१४७॥ सम्मत्ता उ चरित्तं अहवा होज्जा इमेहिं गहणं
तु। सवणे णाणविणाणे इमादी गाहण चरित्ते॥१४८॥ अहवा वी उवएसो एगट्
ठं होति गाहणाउत्ति। तह उवदिस्सति जह ऊ चरित्तं गेण्हती सो तु॥१४९॥ अ-
विराहणम्मि य गुणा दोसा य विराहणे चरित्तस्स। तह गाहिज्जति जह तू ओगाढो
होति चारित्ते॥१५०॥ णाणे य चेव तह दंसणे य जातिगाहणेण संभूया। एयाति गा-
हिंति गाहणता वण्णिता एसा॥१५१॥ एमेता जा भणिता अहवा अवहारणे चसद्दो
तु। पडिवत्ती उवगारो वागरणं वावि पडिवत्ती॥१५२॥ एतं कप्पे वणिज्जती उ
अण्णे य बहुविहा अत्था। अन्नेसु अणेगेसु य कप्पऽभिधाणं मुणेयव्वं
॥१५३॥ सामत्थे वण्णणा काले छेयणे करणे तहा। ओवम्मे अहिवासे य
कप्पसद्दो वियाहिओ॥१५४॥ सामत्थे अट्ठमासे य वत्तीकप्पो तु होति
जब्भगतो। वण्णणे अज्झयण तू कप्पिय जहसेग साहूणं॥१५५॥ काले
ऐसंताणं जह तू दसराय कप्प अतिक्कंते। छेदण जह केसे तू चउरंगुल-
वज्ज कप्पेहि॥१५६॥ करणे वत्ती कप्पिय अहो? इमेण जहा तु पुरि-
सेणं। आइच्च चंद कप्पा हवंति जह साहुणो धम्मे॥१५७॥ सोहम्मकप्प-
वासी अहिवासे जह तु होंति देवा तु। एते सामत्थादी जोएयव्वा इहं क-
प्पे॥१५८॥ कप्पज्झयणमधीतुं अतियारविसोहणे समत्थो उ। कतिविह
पायच्छित्तं परूवणे वण्णणा होंति॥१५९॥ काले उडुबद्धाणं वासावासं
च वुड्ढवासं वा। वसती जहाविहिं खलु उस्सग्गववायसंजुत्तं॥१६०॥
तवसोहिमतिक्कंतं छिंदति पणगादिएहिं परियागं। कुणइ य तहा पय-
त्तं जह तं दिण्णं वहइ सम्मं॥१६१॥ ओवम्मे जिणकप्पो जाणण गह-
णे य सो हवति गीतो। अहिवासे मासादिसु ऊणातिरित्ते विभासा तु
॥१६२॥ सव्वेसिं कप्पाणं पण्णवण परूवणा उ नवमम्मि। आसज्ज
उ सोयारं एगन्ते वा इहं वावि अधिकं॥१६३॥ एतेसिं सव्वेसिं

छव्विह कप्पाइयाण कप्पाणं। पण्णवण परूवणता णवमे पुव्व-
म्मि णिद्दिट्ठा ॥१६४॥ सोतारं पुण आसज्ज होज्ज इह कप्पि अहव
णवमम्मि। धारण गहण समत्थे तहि तं असमत्थे इहइं तु ॥१६५॥क-
प्पाणं वक्खाणं पुव्वगते वण्णितं समत्तं तु। इह थोवगंति काउं ण हु
बहुमाणो ण कायव्वो ॥१६६॥ दव्वे खेत्ते काले उग्गह संघयण धारण
गुरूणं। तंपि बहुमण्णियव्वं जं एगपदे पदं अत्थि ॥१६७॥ दुस्समअणु-
भावेणं हाणी विरियस्स ओसहीणं तु। दुलभाणि य दव्वाइं जइ जो-
ग्गाइं तदणुभावे ॥१६८॥ खेत्ताणि य (प)हायंती विहारजोग्गाइं तदणु-
भावेणं। दारं। दुब्भिक्खपउरकालो तेणऽणुभावेण मणुयाणं ॥१६९॥ त-
हि उग्गहणम्मि संघयणं धारणा य परिहाति। ण य सीसायरियाणं
सत्ती वत्तुं व सोतुं वा ॥१७०॥ ण य संति बहू गुरवो जे वत्तारो य हुंति
अत्थस्स। तेवि ण सव्वस्स तहुं पसादसुमुदा भवंती तु। दारं, ॥१७१॥
इय णातुं परिहाणिं जं एगपदे वि एगमत्थपदं। बहु मंतव्वं तंपि हु किं
पुण संतेसुऽणेगेसु ॥१७२॥ तो ण पमाएयव्वं ण य भत्ती तू तहिं ण काय-
व्वा। सुदहुतरं उज्जोगो कायव्वो तम्मि घित्तव्वे ॥१७३॥ सो पुण पंच
विकप्पो कप्पो इह वण्णिओ समासेणं। वित्थरतो पुव्वगतो तस्स इमे हों-
ति भेदा तु ॥१७४॥ छव्विह सत्तविहे या दसविह वीसतिविहे य बायाले
॥ जस्स तु णत्थि विभागो सुव्वत्त जलंधकारो से ॥१७५॥ विभयण वि-
भागो भण्णति जहेरिसो छव्विहो य सत्तविहो। णामादिविभागो वा जस्से-
सो ण विदितो होति ॥१७६॥ सुव्वत्त सुदहु वत्तं तस्स णिबुड्डस्स वा ज-
लमगाहे। होती सचक्खुयस्स वि जहंधकारो मणुस्सस्स ॥१७७॥ अहवा
जलंधकारो मेहोच्छइयम्मि होति गगणम्मि। अहवा जलंधकारो जत्था-
दिच्चो ण दीसति तु ॥१७८॥ एवं तु अंधकारो कप्पपकप्पं पडुच्च तस्स
भवे। अहवा सो चेव जलो भवइ य से अंधकारं तु ॥१७९॥ छव्विह
कप्पस्सिणमो णिक्खेवो छव्विहो मुणेयव्वो। णामं ठवणा दविए खेत्ते
काले तहेव भावे य ॥१८०॥ जेण परिग्गहिएणं दव्वेणं कप्प होति णा-
ऽकप्पो। तं दव्वमेव कप्पो कारणकज्जोवयारातो ॥१८१॥ सो तिवि-
हो बोधव्वो जीवमजीवे य मीसतो चेव। एतेसिं तु विभागं वोच्छामि
अहाणुपुव्वीए ॥१८२॥ तिविहो य जीवकप्पो दुपयचउप्पय तहेव अप-

देहिं। अहिगारो दुपदेहिं तत्थवि य मणुस्सदुपदेहिं ॥१८३॥ तत्थवि
य कम्मभूमगसंखिज्जगवासआउएहिं तु। पव्वइतुकामएहिं तत्थवि तू
होति अहिगारो ॥१८४॥ सो होति छव्विहो तू बोधव्वो मणुयजीव-
कप्पो तु। वोच्छामि तस्स इणमो भेदविकप्पं समासेणं ॥१८५॥ प-
व्वावण मुंडावण सिक्खावणुवट्ठ भुंजसंवसणा। एसो तु जीवकप्पो
छब्भेदो होति णायव्वो ॥१८६॥ अब्भुवगमो पव्वावण मुंडावण हो-
ति लोयकरणं तु। गहणासेवण सिक्खं सिक्खाविन्तम्मि सिक्ख-
वणा ॥१८७॥ वयट्ठवणमुवट्ठवणा संभुंजण मंडलीए सह भोगो। ए-
गततो सहवासो संवसणा होति णायव्वा ॥१८८॥ णाऽपव्वाविते
मुंडावणा तु णाऽमंडिए तु सिक्खवणा। एमादी तु विभासा पव्वाव-
यंती तु केरिसगा ॥१८९॥ सुत्तत्थतदुभयविसारयस्स संगहउवायकु-
सलस्स। कप्पति पव्वावेतुं संवेगमुवट्ठितमतिस्स ॥१९०॥ सुत्तत्थेण
विसारए चउभंगो एत्थ होति कायव्वो। तं चेव तदुभयं खलु विसा-
रतो जाणतो तस्स ॥१९१॥ दव्वे भावे संगहो दव्वे आहारमादिएहिं
तु। सिक्खावणमगिलाए गेलण्णे यावि करणं तु ॥१९२॥ भावम्मि
संगहो खलु णाणादी तं तु होति बोधव्वो। जाणइ वट्टावेतुं गच्छं
तु उवायकुसलो तु ॥१९३॥ संसारभउव्विग्गो संविग्गो सो तु होति
णायव्वो। एतेसिं तु पदाणं चउभंगा होंति एक्केक्के ॥१९४॥ तदुभय-
विसारदो खलु ण संगहे कुसलो एत्थ चउभंगो। तदुभयउवा-
यकुसलो एत्थंपि तु होइ चउभंगो ॥१९५॥ तदुभयसंविग्गेहि वि
चउभंगो एव होति कायव्वो। एव गुणजातियस्सा पव्वावेतुं तु
कप्पति तु ॥१९६॥ पव्वावेंता भणिता अहुणा पव्वावणिज्ज वो-
च्छामि। पवज्जाए जोग्गा जे वा होंति अजोग्गा तु ॥१९७॥ पव्वा-
वणारिहा खलु जातीकुलरूवविणयसंपण्णा। तव्विवरीय गुणा
खलु होंति अपव्वावणाजोग्गा ॥१९८॥ तेसिं तु जे विवक्खा त-
व्विवरीया हवंति ते णियमा। अहवावि इमे वीसं वज्जित्ता सेस
गा जोग्गा ॥१९९॥ बाले वुड्ढे नपुंसे य जड्डे कीवे य वाहिए। ते-
णे रायाऽवगारी य उम्मत्ते य अदंसणे ॥२००॥ दासे दुट्ठे य मूढे
य अणत्ते जुंगिते इय। ओबद्धए य भयए सेहनिप्फेडिया इय ॥२०१॥

गुव्विणी बालवच्छा य पव्वावेतुं न कप्पए। एसि परूवण दुविहा उस्सग्गाववायसंजुत्ता ॥२०२॥ कारणमकारणे अहव कारण जयणेतरा पुणो दुविहा। एस परूवण दुविहा एत्तो बालादि वोच्छामि ॥ ॥२०३॥ तिविहो य होति बालो उक्कोसो मज्झिमो जहण्णो य। एतेसिं तिण्हं पी पत्तेय परूवणं वोच्छं ॥२०४॥ सत्तट्ठगमुक्कोसो छप्पण मज्झो य चतु तिय जहण्णो। एवं वयणिप्फण्णं सभावओ होंति णव भेदा ॥२०५॥ जहण्णो जहण्णसभावो मज्झसभावो तहेव उक्कोसो। एवं मज्झिम तिण्णी उक्कोसावि भवे तिण्णि ॥२०६॥ हिंदंतमहिंदंता तिन्निवि हरितादि वारिता संता। पुणरवि य छिंदमाणा जइ दिट्ठ गुरूणवऽण्णेणं ॥२०७॥ उक्कोसो दट्ठूणं मज्झिमतो ठाति वारितो संतो। जो पुण जहण्णबालो हत्थे गहिओऽवि णवि ठाति ॥२०८॥ दाहिणकरम्मि गहितो वामकरेणं स छिंदती ताइं। मंडलगंमिव धरिता चिट्ठइ एवं च भणिता तु ॥२०९॥ जइ भणितो तह तु ठिता पढमो बीएण फेडियं ठाणं। तइओ न ठाति ठाणे अह रुव्व(न्न)ति विस्सरं रुयति ॥२१०॥

एतेसिं बालाणं पव्वावितस्सिमं तु पच्छित्तं। तिण्हंपि कमेणं तू वोच्छामी आणुपुव्वीए ॥२११॥ अउणत्तीसा वीसा इगुवीसा चेव तिविह बालम्मि। तव छेद वीसु पढमे बिति मिस्सा ततिय छेदाइ ॥२१२॥ अउणत्तीसं दिवसे सिक्खावितस्स मासियं लहुयं। उक्कोसगम्मि बाले सो चेव असिक्खणे गुरुगो ॥२१३॥ अण्णे अउणत्तीसं गुरुओ सिक्खे असिक्खि चउलहुया। पुणरवि अउणत्तीसं गुरु(लहु)गा सिक्खे य छल्लहुया(तेर गुरुगा) ॥२१४॥ अण्णे अउणत्तीसं सिक्खावितस्स होति पच्छित्तं। छल्लहुगा सिक्खम्मि य असिक्ख गुरुगा अउणत्तीस ॥२१५॥ अण्णे सिक्खे छग्गुरु (असिक्ख) तवो छेदो छग्गुरू चेव। मूलणवट्ठं पारंचिगं च एक्केक्कगं तत्तो ॥२१६॥ अहवा सो चेव तवो छेदादी माससमादिया होंति। सिक्खावितमसिक्खे मूलेक्कदुगं तहेक्केक्कं ॥२१७॥ अहवा सो चेव तवो छेदो पणगादि जाव छम्मासा। सिक्खावितमसिक्खे लहु गुरु एक्केक्क

इगुतीसो ॥२१८॥ मूलणवट्टई च तओ पारंचियमेव होति एक्केक्कं। सिक्खासिक्खपगारा उक्कोसे होंति बत्तेते ॥२१९॥ अहवा सो चेव गमो दिणेहिं सिक्खितरवज्जिए होति। मासादि तव छेदा मूलाईया दिणेक्केक्कं ॥२२०॥ एमेव मज्झिमे वी णवरं दिवसा तु वीस वीसं तु। एमेव जहण्णे वी उगुवीसु गुवीस दिवस तु ॥२२१॥ अहवा मज्झे मीसा जहण्ण छेदादी अन्नपरिवाडी। तव छेदंगंतरिया मज्झे जहण्णे तु भयणाए ॥२२२॥ मज्झिमि वीसं लहुओ सिक्खमसिक्खस्स मासिओ छेदो। वीसण्णछेदो लहुओ सिक्खमसिक्खणे गुरुगो ॥२२३॥ तवो (गुरुगो जो) अइट्ठोक्कंती एवं तवछेदेगंतरा तु णेयव्वा। जा छम्मासा ता चतु परओ मूलादि एक्केक्कं ॥२२४॥ अउणावीस जहण्णे सिक्खावितस्स मासिओ छेदो। सो च्चिय सिक्खे गुरुओ जा छग्गुरु तिण्णि परओ तु ॥२२५॥ अहवा ण होइ छेदो हाणे च्चिय मूल तह य अणवट्ठो। पारंचिए य तत्तो एवं भयणा जहण्णस्स ॥२२६॥ अहवा पढमे छेदो तद्दिवसे चेव हवइ मूलं वा। एमेव होति बीए तइए पुण होति मूलं तु ॥२२७॥ किं कारण सोधेसा दोसा तहियं इमे समक्खाता। पव्वाविएसु तेसुं उड्डाहाई मुणेयव्वा ॥२२८॥ बंभस्स वयस्स फलं अयगोले चेव होंति छक्काया। णिसिभत्तमंतराए चारग अजसो य पडिबंधो ॥२२९॥ लोगो बेती पेच्छह इणमो बंभवईण तु फलं तु। अयगोलो विव तत्तो डहती सो जित्तिए मुक्को ॥२३०॥ भत्त णिसि मग्गमाणे दिंते तू राइभत्तभंगो तु। हवइ अदिंतम्मि तु अंतराइयं बेइ लोगो य ॥२३१॥ चारगपाला हु इमे जे बालाइं तु एव रुंभंति। लोगो जायति अजसो अहह इमे णिरणुकंपत्ति ॥२३२॥ तेण य पडिबंधेणं पडिबद्धा णवि कहिंचि विहरंति। जे दोसा णीयवासे ते पावंते य अच्छंता ॥२३३॥ ऊणट्ठे णत्थि चरणं पव्वाविंतो वि भस्सइ चरणा। मूलावराहिणी खलु णारभते वाणिओ चेट्ठं ॥२३४॥ उग्घायमणुग्घायं णाऊणं छव्विहं तवोकम्मं। एमेव छेदछव्विह जिण चोद्दसपुव्विए दिक्खा ॥२३५॥ उग्घायमणुग्घातो मासो चउ छच्च

छव्विह तवे सो। एमेव छव्विहो च्चिय छेदो सेसाण एक्केक्कं ॥२३६॥ एयं पायच्छित्तं णाउं पव्वावए तओ बालं। णवरं पव्वाविंती जिण चोद्दसपुव्वि अतिसेसी ॥२३७॥ ते जाणिउं गुणागुण बहुगुण णाऊण तेण दिक्खंति। के पुण जिणमादीहिं दिक्खिय बाला इमे सुणसु ॥२३८॥ सत्थाए अतिमुत्तो मणओ सिज्जंभवेण पुव्वविदा। अतिसेसिणा य वतिरो छम्मासो सीहगिरिणावि ॥२३९॥ एते अव्ववहारी जह पव्वाविंतीह गच्छवासी तु। एयं इत्थं णाउं भण्णति इणमो णिसामेहि ॥२४०॥ उवसंते व महाकुले णातीवग्गे व सन्निसिज्जातरे। अज्जाकारणजाते बाले पव्वज्जऽणुण्णाया ॥२४१॥ पव्वज्जाए परिणए विउलकुले तत्थ बाल होज्जाहि। मा सव्वे तेसि कते अच्छंदू तेण पव्वावे ॥ ॥२४२॥ णातीवग्गे य तहा थेर(छेव)गमादीमयम्मि संतम्मि। जणवादरक्खतो सारवेइ आसण्णबालाइं ॥२४३॥ एवं सण्णितराण वि अज्जायव डिंडिबंधपडिणीए। कज्जं करेमि सचिवो जदि मे पव्वाव तह बाल ॥२४४॥ एतेहि कारणेहिं पव्वाविज्जाहि गच्छवासी तु। पव्वावियाण तेसिं इमेण विहिणा उ सारवणा ॥ ॥२४५॥ भत्ते पाणे धोवण सारणया वारणा निउंजणता। चरणकरणा सज्झायं गाहेयव्वो पयत्तेणं ॥२४६॥ निद्धमहुरेहिं आउं दुस्सति देहिंमि पाडवं मेहा। अच्छति जत्थ ण णज्जति सइठादिसु पीढगादीया ॥२४७॥ ठावेति सालवाडा पडिलेहणमादि सारणमभिक्खं। वारिज्जए अभिक्खं हरियादी छिंदमाणो य ॥२४८॥ सामायारिं सव्वं सज्झायं चेव उ पयत्तेणं। गाहिज्जति सो एवं जयणा एसा तु बालस्स। दारं ॥२४९॥ तिविहो य होइ वुड्ढो उक्कोसो मज्झिमो जहण्णो य। एतेसिं तिण्हं पी पत्तेय परूवणं वोच्छं ॥२५०॥ दस आउविपागदसा दसभागे आउयं विभतिऊणं। दसभागे२ होति दसा ता इमे होति ॥२५१॥ बाला किड्डा मंदा बला य पण्णा य हायणि पवंचा। पब्भार मुम्मुही वि य सयणी दसमा य णायव्वा ॥२५२॥ तहियं पढमदसाए अट्ठमवरिसादि होति दिक्खा तु। सेसासु छसुवि दिक्खा पब्भा-

रादीसु सा ण भवे ॥२५३॥ वुड्ढट्ठ दसुक्कोसो मज्झो णवमि दसमी य तु जहण्णो। जं उवरिं तं हेट्ठा भयणाऽप्पबलं समासज्ज ॥२५४॥ केसिंचि पवंचादी वुड्ढो उक्कोसगो उ जा सतरिं। अट्ठदसाए मज्झो णवमी दसमीसु य जहण्णो ॥२५५॥ कुरुकुयमादि णिसिद्धो जह मा बीयं करेहि पवंति। पुणरवि य करेमाणो दिट्ठो साहूहिं ताहे तू ॥२५६॥ उक्कोसो दट्ठूणं मज्झिमओ होति वारिओ संतो। जो पुण जहण्णवुड्ढो हत्थे गहिओ णवरि होति ॥२५७॥ ठाणे य चिट्ठसुत्ती जह भणिओ तह हिओ भवे पढमो। बीएणं फेडियं तं तइओ णवि ठायई ठाणे ॥ ॥२५८॥ एगुणतीसा वीसा अउणावीसा य तिविह वुड्ढम्मि। पन्नेयं लवछेदा पढमे बितिमीसितवछेदा ॥२५९॥ तह चेव विभागो तू जह बालाणं तु होति तिण्हंपि। किं पुण एसाऽऽरूवणा? भण्णति इणमो निसामेहि ॥२६०॥ आवस्सय छक्काया कुसत्थ सोए य भिक्ख पलिमंथो। थंडिल अप्पडिलेहा पमज्ज पाढे करणजड्डो ॥२६१॥ आवस्सयं न सक्को गाहेतुं जड्डयाए सो वुड्ढो। छक्काय ण सद्दहती ण तरति ते यावि परिहरिउं ॥२६२॥ कुद्दिट्ठिकुसत्थेहिं तु भावितो नेच्छए तगं मोत्तुं। लोगस्स अणुग्गहकरा चिरपुराणत्ति अम्हे मो ॥२६३॥ अतिसोयवायएणं पुढविं गेण्हति बहु दवं छड्डे। अपरीहत्थो भिक्खायरियं पलिमंथ पातवहो ॥२६४॥ थंडिल्लं णवि पासइ दुब्बलगहणी य गंतु ण चएइ। अण्णस्सवि वक्खेवो चोदण इहरा विराहणया ॥२६५॥ पडिलेहणं ण गिण्हइ पमज्जणे यावि सो भवति जड्डो। णवि तीरति पाढेतुं दुम्मेहो जड्डबुद्धी य ॥२६६॥ भंजति अभिक्खमालावगं च अण्णेसिं यावि पलिमंथो। उवहिं वीसारेती छड्डेइ व पंथि वच्चंतो ॥२६७॥ उट्ठिंतणिवेसिंते चंकमंते अ वाउडियदोसा। चरणकरणसज्झाए दुक्खं वुड्ढो ठवेतुं जे ॥२६८॥ उग्घायमणुग्घायं छव्विह पच्छित्त कारणे तेणं। तम्हा वुड्ढ ण दिक्खे जिणचोद्दसपुव्विए दिक्खे ॥२६९॥ पव्वाविंति जिणा खलु चोद्दसपुव्वी य जे य अतिसेसी। जिणमादीहिं तेहिं कयरे ते दिक्खणा वुड्ढा ॥२७०॥ सत्थाए पुव्वपिता चो-

दसपुव्वीण जंबुणा सपिता। तं मग्गेणं जणतो तु दिक्खितो र-क्खियज्जेणं ॥२७१॥ एते अव्ववहारी इच्छामी णातु अणति-सेसीय। जह दिक्खंते भण्णति सुणसू जह तेऽवि दिक्खंति। ॥२७२॥ उवसंते व महाकुले णातिवग्गे व सण्णिसेज्जतरे। अ-ज्जाकारणजाते वुड्ढस्सेवं भवे दिक्खा ॥२७३॥ जह चेव य बाल-स्सा विभास तह चेव होति वुड्ढस्स। णवरं इमो विसेसो अ-ज्जाणं कारणा होति ॥२७४॥ अज्जाण णत्थि कोती संचारिंतो तु खेत्तमादीसु। तेणं तेसट्ठाए वुड्ढं(संकप्प)हतसंक पव्वाए ॥२७५॥ एतेहिं कारणेहिं जति णाम होज्ज दिक्खितो वुड्ढो। ताहे य तस्स सारणं कायव्व इमीइ तु विहीए ॥२७६॥ भत्ते पाणे सय-णासणे य उवही तहेव वंदणए। चरणकरणसज्झायं अणुयत्त-णया य गाहणता ॥२७७॥ जारिसतभत्तपाणेण णिव्वाहो दिज्जते से तारिसगं। सयणीयसमा भूमी पाउंछणमादि आसणयं ॥२७८॥ जत्तिय तरए वोढुं सीयत्ताणं व जत्तिएणं सो। तत्तियमेतो उवही दिज्जति सेऽणुग्गहट्ठाए ॥२७९॥ वंदणए अणुकंपा कीरति न य सारियम्मि वंदावे। चरणकरणसज्झायं अणुकूलेउं चरणगाहे॥२८०॥ उवउंजिउं णिमित्ते दोण्हंपि य कारणा दुवग्गाणं। होहिंति जुगप्प-वरा दुण्हवि अट्ठा दुवग्गाणं ॥२८१॥ ओहिमणो उवउंजिय परो-क्खणाणी णिमित्त घेत्तूणं। जदि पारगतो दिक्खा जुगप्पहाणा व होहिंति ॥२८२॥ दोण्णत्ति बालवुड्ढा पुणरवि दो वग्ग इत्थि पु-रिसा य। सुत्तत्थदुगट्ठाए कालियपुव्वगयअट्ठा वा ॥२८३॥ पुण-रवि दो वग्गा खलु समणा समणी य होंति। णायव्वा तेसिं अ-ट्ठा दिंती आहारा तेसि होहिंति दारं ॥२८४॥ एत्तो वुच्छ ण-पुंसं सो किह णज्जेज्ज जह णपुंसोत्ति। भण्णति ण चेव क-प्पति दिक्खेतुं विहि अजाणंतो ॥२८५॥ तम्हा दिक्खा णीते दि-क्खंते चउगुरू अणीयस्स। णीतेऽवि अपुच्छत्ता गुरुगा पु-च्छा उवाहणं ॥२८६॥ अम्हं णपुंसगादी ण कप्पते एव भणि-ते साहेज्जा। को ता णिव्वेदो ते भणिज्ज भगवं अहं ततिओ ॥२८७॥ अजाणंते य मिन्ना से णिव्वेदं पुच्छिया तु साहेज्जा।

अहुवा वि लक्खणेहिं इमेहिं णाउं परिहरेज्जा ॥२८८॥ महिला-
सहावो सरवण्णभेदो मेंढं महंतं मउया य वाणी । ससद्दगं मुत्त-
मफेणगं च एताइं छप्पंडगलक्खणाइं ॥२८९॥ गती भवे पच्च-
वलोइयं च, मिउत्तया सीतलगत्तया य। धुवं भवे दुक्खरणामधे-
ओ, संकार पच्चंतरिओ ढकारो ॥२९०॥ गतिहत्थवच्छकडिभमु-
यभास दिट्ठी य केसलंकारे । पच्छण्णमज्जणाणि य पच्छण्णत-
रं च णीहारो ॥२९१॥ मंदा गती विक्खिवे वामहत्थं, लंबं णियं-
सेति जहेव इत्थी । कडिथंभगं वा विकरे अभिक्खं सविब्भमं उ-
क्खिवए भुमाओ ॥२९२॥ भासंतो या वि करं वत्थं णिवेसेति इत्थि-
या चेव । हीणस्सरो य जायइ दिट्ठी य सविब्भमा तस्स ॥२९३॥ के-
से इत्थी व जहा आमोडति इत्थिमंडणं चेव । ण्हायति एगंते या प-
च्छण्णे आयरुच्चारं ॥२९४॥ पुरिसेसु भीरु महिलासु संकरो पम-
यकम्मकरणो य । एवं बाहिरलक्खण णपुंसवेदो भवे अंतो॥२९५
॥ सो पुण णपुंसवेदो लिंगे तिविहो वि होति बोधव्वो । कह लिंग
तिए ? भण्णति एत्थं एक्केक्क वेदलिंगं ॥२९६॥ उस्सग्गलक्खणं तु
त्थीपुरिसणपुंसगाण वेदाणं । फुंफुमदवग्गिमहणगरदाहसरिसा जहा-
कमसो ॥२९७॥ एक्केक्के तिह भयणा इत्थी पीसरिस पुरिस अपुमे
य। इय पुरिसणपुंसेया एक्केक्के होति वेदलिंगं ॥२९८॥ सो पुण
णपुंसगो तू सेलसमा होति तू मुणेयव्वो । पंडग कीवे वातिय कुंभी ई-
सालु सउणी य ॥२९९॥ तक्कम्मसेवि पक्खियमपक्खिए तह सुगंधि
आसित्ते । वद्धिय चिप्पिय मंतोसहीहिं वा उवहए जे य ॥३००॥

इत्थिसत्तदेवसत्ते एतेसि परूवणा इमा होति । ल-
हियं पडो तिविहो लक्खणदूसी य उवघाओ ॥३०१॥ पंडगलक्खण ज-
स्सा जाया अवलोयणेण तु गहाणं । सो लक्खणतो पंडो दूसीपंडो इ-
मो होति ॥३०२॥ दूसियवेदो दूसी दोसु य वेदेसु संज्जए दूसी। दो
सेवइ वा वेदे दोसु व दूसिज्जई दूसी ॥३०३॥ दूसेति सेसए वा सो
दुह आसित्तो तह य ऊसित्तो । सावच्चो आसित्तो अणवच्चो होति
ऊसित्तो ॥३०४॥ उवघाओवि य दुविहो वेदे य तहेव होति उवकरणे।
वेदोवघायपंडो इणमो तहियं मुणेयव्वो ॥३०५॥ पुव्विं दुच्चिण्णाणं

कम्माणं असुहफलविवागेणं । तो उवहम्मति वेदो जीवाणं पावकम्-
माणं ॥३०६॥ जह हेमकुमारो ऊ इंदमहे बालियाणिमित्तेणं । मुच्छि-
य गिद्धो अतिसेवणेण वेदोवघातमतो ॥३०७॥ एयस्स वि भास इ-
मा जह एगो रायपुत्तो वण्णेणं । तवियवरहेमसरिसो तो से णामं
कतं हेमो ॥३०८॥ सो अण्णदा कदाई इंदमहे इंदहाणपत्ताओ
। णगरस्स बालियाओ पुप्फादीहत्थ दट्ठूणं ॥३०९॥ पुच्छति से-
वगपुरिसे किं एया आगताउ इह इंति ? । ते बिंती सोहग्गं म-
ग्गंते ता वरत्थीओ ॥३१०॥ तो बेई एयासिं इंदेण वरो हु दिण्ण
महमेव । घेत्तूणं ता तेणं छूढा अंतेउरे सव्वा ॥३११॥ तो णाग-
रगा रण्णो उवदिट्ठा । मोयवेह एताओ । तो बेति मज्झ पुत्तो किं
जामाता ण रुच्चति भे ॥३१२॥ तो तासु अतिप्पसत्तस्स तस्स
णिग्गलियसव्वबीयस्स । वेदोवघातो जातो सागारीयं ण उट्ठेति
॥३१३॥ तो ताहिं रुसियाहिं सो अट्ठागीहिं घातितो ताहे । वेदोव-
घातपंडो एसोऽभिहितो समासेणं ॥३१४॥ उवहत उवगरणम्मी
सेज्जातरभूणियाणिमित्तेणं । तो कविलगस्स वेदो ततिओ जातो
दुरहियासो ॥३१५॥ उवहय उवगरणम्मी एवं होज्ला णपुंसवेदो
तु । दोसा सवेदुदिण्णं धारेत्तु ण चयइ णायमिणं ॥३१६॥ जह
पढमपाउसम्मी गोणो धातो तु हरियगतणस्स । अणुस(म)ज्जति
कोद्दिंबिं(ड्डिच्चं) वावण्णं दुब्भिगंधीयं ॥३१७॥ एवं तु केइ पुरिसा
भोत्तूणं भोयण पतिविसिट्ठं । ताव ण भवंति तुट्ठा जाव ण पडि-
सेविओ वेदो ॥३१८॥ लक्खणदूसियउवघायपंडगं तिविहमेव जो दि-
क्खे । पच्छित्त तिसुवि मूलं दोसा तहियं इमे होंति ॥३१९॥ तरु-
णादीहिं सह गओ चरित्तसंभेदिणी करे विकहा । इत्थिकहाउ क-
हित्ता तो सि य ऽवण्ण पगासेइ ॥३२०॥ समलं आविलगंधिं खेदे
य ण ताणि आसए होंति । सागारियं णिरिक्खेइ मलेत्तु हत्थे-
हिं जिग्घइ य ॥३२१॥ पुच्छति सेवियपुव्वो णपुंसगो णाबिति अ-
तिसुह एव । आसयदोसे य तहा दुविहेवि सेवी अहं चेव ॥३२२॥
एवं पुच्छित्तु तओ अहवावि अपुच्छिऊण सहसेवे । गेण्हेज्जा ही
समणं तेण कहेयव्वतो गुरूणं ॥३२३॥ छंदिय कहिय गुरूणं जो

ण करेति कोहिए ऽवि य उवेहं। परपक्ख सपक्खे वा जं कोहिति
सो तमावज्जे ॥३२४॥ सो समणसुविहिएहिं पवियारं कत्थती अ-
लभमाणो। तो सेवितुं पवत्तो गिहिणो तह अण्णतित्थी य ॥३२५॥
अजसो य अकित्ती या तं मूलाग तहिं पवयणस्स। तेसिंपि हो-
ति संका सव्वे एतारिसा मण्णे ॥३२६॥ एरिसस्सेवी एतारिसा
त्ती एतारिसो चरतिसद्दो। सो एसो णवि अण्णो अस्संखडंघो-
डमादीहिं ॥३२७॥ जम्हा एते दोसा तम्हा णवि दिक्खणिज्जो पं-
डो ॥ एसो पंडोऽभिहिओ एत्तो किलिवं पवक्खामि ॥३२८॥
किलिवस्सं गोण्ण णामं तदोभिप्पाओ कलिज्जए जस्स। सागारियं
से गलती किलिवोत्ती भण्णती तम्हा ॥३२९॥ सो तु णिरुब्भमा-
णो कम्मुदएणं तु जायए तइओ। तम्मिवि सो चेव गमो प-
च्छित्तं चेव जह पंडे ॥३३०॥ उदएण वातियस्सा सविगारं जा ण
होती संपत्ती। तच्चणिय असंवुडिते दिट्ठंतो तत्थिमो होति ॥३३१॥
णावारूढो तच्चणिणतो तु दट्ठुं असंवुडमगारिं। ओवतिओ पुरिसे-
हिं ज्झडित्ति धारिज्जमाणोवि ॥३३२॥ एसोऽवि वातिगो तु अल-
भंतो सेवितु अणायारं। कालंतरेण सोऽवि तु णपुंसगत्तेण प-
रिणमति ॥३३३॥ दुविहो य होति कुंभी जातीकुंभी य वेदकुंभी य।
जातीकुंभी वायणिइओ तु सो भइय दिक्खाए ॥३३४॥ होइ पुण
वेदकुंभी असेवओ सुज्जते सि सागरियं। सोऽवि य णिरुद्धव-
त्थी णपुंसगत्ताए परिणमति ॥३३५॥ वेउक्कडता ईसालुगो तु
सेविज्जमाण दट्ठूणं। ण चएती धारेउं णिरुब्भमाणो भवे ततिओ
॥३३६॥ सउणी उक्कडवेओ चडउव्व अभिक्ख सेवए जो उ।
सोऽवि य णिरुद्धवत्थी णपुंसगत्ताए परिणमति ॥३३७॥ तक्कमसे-
वि जो खलु सेविय तं चेव लिहति साणोव्व। सोऽविय अपडिसेवं-
तो णपुंसगत्ताए परिणमति ॥३३८॥ एगे पक्खे उदओ एगे प-
क्खम्मि जस्स अप्पो उ। सो पक्खपक्खिओ तु सोऽवि णिरुद्धो
भवे अपुमं ॥३३९॥ सागारियस्स गंधं जिंघति सोगंधिओ भवे
स खलु। कालंतरेण सोऽवि अलभंतो परिणमे अपुमं ॥३४०॥
तिगाइअणुप्पवेसिय अच्छति सागारियंपि आसित्तो। ण य से

भावोवसमो अलभंतो सोवि अपुम भवे ॥३४१॥ गालिय दोसा भा-
ऊगा जस्स हु सो वद्धिओ मुणेयव्वो । चिप्पियबालस्सेव तु चि-
प्पित्तु विरहिता जस्स ॥३४२॥ मंतेहुवहुतवेदो अहुवावी ओस-
हीहिं जस्स भवे । इसिसत्तदेवसत्ता इसिणा देवेण वा सत्ता
॥३४३॥ वद्धियमादि उवरिमा छच्चा णपुंसा हवंति भयणि-
ज्जा । जदि पडिसेवि ण दिक्खे अह णवि पडिसेवि तो दिक्खे
॥३४४॥ आदिल्लेसु दससु वि पव्वावेंतो हु पावए मूलं । जो
पुण पव्वावेडा वदसेवं तस्स चउगुरुगा ॥३४५॥ जे पुण छ
तूवरिमा पव्वावितस्स चउगुरू तेसु । वदमाणेऽवि य गुरुगा किं
वदते सो इमं सुणसु ॥३४६॥ थीपुरिसा जह उदयं धरेंति झा-
णोववासणियमेहिं । एवमपुमंपि उदयं धरेज्ज जदि को तहिं दो
सो? ॥३४७॥ अहवा ततिए दोसो जायति इयरेसु किं न सो भ-
वति? । एवं तु णत्थि दिक्खा सवेदगाणं ण वा तित्थं ॥३४८॥
भण्णति थीपुरिसा खलु पत्तेयं दोसरहियठाणेसु । णिवसंती इ-
यरो पुण कहिं छुब्भति दोसु वी दोसा ॥३४९॥ संवासफासदिट्ठी
दोसा हु तस्स उभयसंवासे । अपत्थंबगादिदिट्ठंतो जह रायमतो अ-
लारंतो ॥३५०॥ एतंबगादिदिट्ठंतो अहवा जह वच्छो मातरं दट्ठुं ।
अभिलसती मायावि य वच्छं दट्ठूण पण्हुयति ॥३५१॥ अंबं वा
खज्जंतं दट्ठुं अहिलासो होति अण्णस्स । सागारियादि दट्ठुं एव ण-
पुंसे भवे दोसा ॥३५२॥ तम्हा हु ण दिक्खिज्जा एवं णाऊणमेत दो
सगाणं । बितियपदे दिक्खिज्जा इमेहिं अह कारणेहिं तु ॥३५३॥ अ-
सिवे ओमोयरिए रायदुट्ठे भए य आगाढे । गेलण्ण उत्तिमट्ठे
णाणे तह दंसण चरित्ते ॥३५४॥ रायदुट्ठभएसु ताणट्ठ णिवस्स
चेव गमणट्ठा । वेज्जो व सय तस्स व तप्पिस्सति वा गिलाण-
स्स ॥३५५॥ पडिचरगस्सऽसतीए एगागी उत्तिमट्ठपडिवण्णो ।
अहवा वी अ(कु)सहाए वेयावच्चट्ठता दिक्खे ॥३५६॥ गुरुणो व
अप्पणो वा णाणादी गिण्हमाण तप्पिहिती । अचरणदेसा णिंते त-
प्पे ओमासिवेहिं वा ॥३५७॥ एतेहिं कारणेहिं आगाढेहिं तु जो तु
णिक्खामे । पंडादी सोलसगं कयकज्ज विगिंचणट्ठाए ॥३५८॥

—

तस्स विही होति इमा दिक्खिउज्जंतस्स कारणज्जाए । सो पुण जाणिमजाणी जाणति जाणी.जहा तीतओ ॥३५९॥ णवि कप्पति दिक्खेतु समुवट्ठित पण्णवेति अह एवं । तुज्झ ण कप्पति दिक्खा णाणादिविराहणा मा ते ॥३६०॥ जो पुण ण जाण एवं तस्स विही होति मा करेयव्वा । जणपच्चयदढताए जाणंतमजाणए वावि ॥ ॥३६१॥ कोइपरट भंड छिहुली कत्तरि खुर लोय परमत पाठे । धम्मकह सण्णि राउल ववहार विगिंचण कुज्जा ॥३६२॥ कोइ परटभडछिहुली कीरति णवि धम्म अम्ह चेवासी । कत्तरि खुरे ण णिच्छे हाणी एक्केक्क जा लोओ ॥३६३॥ लोएवि कए प च्छा भिक्खुगमादीमताइं पाढेंति । तंपि य अणिच्छमाणे पा ति धलियकव्वाइं ॥३६४॥ ताणिवि अणिच्छमाणे धम्मकहा ता वि हू अणिच्छंते । परतित्थियवत्तव्वं दिज्जति ताहे ससमए वि ॥३६५॥ तंपि य अणिच्छमाणे उक्कमतो तस्स दिज्जए सुत्तं । अण्णोण्णमुत्तपल्लव पुव्वावरओ असंबद्धं ॥३६६॥ वीयारगोयरे थेरसंजुत्तो रत्तिं दूरि तरुणाण । गाहेह ममंपि ततो थेरा जुत्तेण गाहिंति ॥३६७॥ वेरग्गकहा विसयाण णिंदणा उट्ठणिसियणेगुत्ता । चुक्कखलितम्मि बहुसो सरोसमिव तज्जए तरुणा ॥३६८॥ कतकज्जा से धम्मं कहिंति मुंचाहि लिंगमेयंति । मा हुण दुएवि लोए अणुव्वता तुज्झ णो दिक्खा ॥३६९॥ इय पण्णविओ संतो जइ मुंचइ लिंग तो उ रमणिज्जं । अह णवि मुंचति ताहे भेसिज्जति सो इमेहिंतो ॥ ३७०॥ सण्णि खरकम्मितो वा भेसेइ कओ इहेस किंचिव्वो । ते सासति रायकुले यदि सो ववहार मोगाज्जा ॥३७१॥ एतेहिं दिक्खिओऽहं जति वि य लोगो ण याणते कोति । जइ एतेहिं दिक्खतो तो ते बिंती ण दिक्खेमो ॥३७२॥ अज्झाविओवि एतेहिं चेव पडिसेहो किंव धीय ते । धलियकहादी कइढति कत्थ जती कत्थ धलिताइ ॥३७३॥ पुव्वावरसंजुत्तं वेरग्गकरं सतंतमविरुद्धं । पोराणमद्धमागहभासाणियतं हवति सुत्तं ॥३७४॥ जे सुत्तगुणाभिहिता तव्विवरीयाइं गाहिओ पुव्वि । तेहिं चेव विवेगो जह एरिसयं भवति सुत्तं ॥३७५॥ णिववल्लह बहुपक्खम्मि वावि कुइड च गम्मि पव्वइए । वोसिरणा

वोच्छामी विहिए जइ कीरइ तस्स ॥३७६॥ भिण्णकडाओभट्टं बिं-
ती ण घडति इइं खु एरिसयं । परतित्थियादि वयसू जति बेती तु-
ज्झ समयंत्ति ॥३७७॥ इय होउत्ती वोत्तूण णिग्गतो भिक्खमादि-
लक्खेणं । भिक्खुगमादी होदुं विपलायंती पुणो तत्तो ॥३७८॥
कावालिए सरक्खे तच्चण्णिय लिंगमादि वसभा तु । तं णिंतु दे-
उलादिसु सुत्तं छड्डेन्तु वसहि इंति ॥३७९॥ तिविहो य होति ज-
इडो भाससरीरे य करणजड्डो य । भासाजड्डो चउहा जलएल-
गमम्मणदुमेहो ॥३८०॥ जह जलबुड्डो भासति जलमूओ एव भासइ
अवत्तं । जह एलओ व्व एवं एलगमूगो वलवलेति ॥३८१॥ मम्मणमूओ
बोब्बडो खलेइ वाया हु अवि सदा जस्स । दुम्मेहस्स ण किंची घोसंत-
स्सावि ठायइ हु ॥३८२॥ दंसणणाणचरित्ते तवे य समितीसु करण-
जोगे य । उवइट्ठंपि ण गेण्हति जलमूगो एलमूगो य ॥३८३॥ णा-
णादिऽट्ठा दिक्खा भासाजड्डो अपच्चलो तस्स । सो य बहि-
रो य णियमा गाहणे उड्डाहो अहिकरणं ॥३८४॥ तिविहो सरीर-
जड्डो पंथे भिक्खे तहेव वंदणए । एतेहिं कारणेहिं सरीरजड्डं ण
दिक्खेज्जा ॥३८५॥ अद्धाणे पलिमंथो भिक्खायरियाए अपरिहत्थो
य । उड्डुस्सासऽपरक्कम अहियगी उदगमादीसु ॥३८६॥ आगाढ-
गिलाणस्स य असमाही जाव होज्ज मरणं वा । जड्डे पासेवि ठिए अ-
ण्णे य भवे इमे दोसा ॥३८७॥ सेदेण कक्खमादी कुच्छण धुवणुप्पि-
लावणे दोसा । णत्थि गलओ य चोरो णिंदिय मुंडा य जणवादो ॥३८८॥
णेगे सरीरजड्डे एमादीया हवंति दोसा तु । तम्हा तं णवि दिक्खे
गच्छे मडुल्ले वऽणुण्णाओ ॥३८९॥ इरियासमिई भासेसणासु आ-
दाणसमिइगुत्तिसु । णवि ठाति चरणकरणे कम्मुदएणं करणजड्डो ॥
॥३९०॥ जलमूग एलमूगो अइथूरसरीर करणजड्डे य । दिक्खं-
तस्सेते खलु चउगुरु सेसेसु मासलहु ॥३९१॥ भासाजड्डं मम्मण
सरीरजड्डं च णातिथूरं च । जावज्जियपरियट्टे करणे जड्डं तु छ-
म्मासा ॥३९२॥ मोत्तुं गिलाणकज्जं दुम्मेहं वावि पाढि छम्मासे
। ताहे तं दुम्मेहं जाविय करणम्मि सो जड्डो ॥३९३॥ छण्हुवरिं ते
दोण्हवि आयरिओ अण्ण गाहि छम्मासा । पच्छा अण्णो ततिओ

सो ऽवि य छम्मास परियट्टो ॥३९४॥ जो ऊ न गाहुना सेसम्मो नवसे
व सो हवति ताहे । तहवि ण णिएड्डइ जति तु कल्लाणमदो विलोच-
णता ॥३९५॥ दुविहो य होति कीवो अभिभूओ चेव णाभिभूओ
य । अभिभूतो ऽवि य दुविहो आलिद्धोलत्तणाकीवो ॥३९६॥ दुविहो य
अणभिभूओ दिट्ठीकीवो य सद्दकीवो य । एतेसिं विसेसमिण वु-
च्छामि अहाणुपुव्वीए ॥३९७॥ आलिद्धो जो णिवडति इत्थीहि एस
पढमओ कीवो । जो पुण पडति णिमंतिओ सो होति णिमंतणा कीवो
॥३९८॥ दुव्वियड्डदुण्णिसण्णं णिप्पणसण्णमेव वावि दट्ठूण
जो खुब्भति दिट्ठीकीव तय होति ॥३९९॥ अह साहुस्साण नड्ड
णधम्मिणा अहव वावि गेहियाण । इत्थीओ दट्ठूण खुब्भति दि-
ट्ठीय कीवो सो ॥४००॥

भासा भूसण नह गंधसद्दपरियार सद्दमहुवावि
सोऊणं जो खुब्भति सो भण्णति सद्दकीवोत्ति ॥४०१॥ मोहुक्कड
ताए ते करेज्ज दोसे इमे णिरुंभंता । सज्ज इत्थिगाहण मरण
अहवावि ओहाण ॥४०२॥ आलिद्धणिमंतणदिट्ठिसद्दकीवाण होति आ-
रुवणा । चउगुरु छग्गुरु छेदो मूलं च जहक्कमेण तु ॥४०३॥ एसं
दो आदिल्ले जदि दिक्खे तो हु एव परियट्टे । जावज्जीवं णियमि-
य चरित्तसंघातसहिएहिं ॥४०४॥ दिट्ठीयसद्दकीवा णवरं दिक-
खेज्ज उत्तिमट्ठम्मि । अण्णह ण तेसि दिक्खा एव कीवो समक्-
खातो ॥४०५॥ रोगेण व वाहीण व अभिभूयस्स णो कप्पती दि-
क्खा । गंडीकोढादीओ सोलसहा हवति रोगो उ ॥४०६॥ वाही पु-
ण अट्ठविहो कासादिओ य होति णायव्वो । त रोगवाहिघत्थं दि-
क्खंते ऊ इमे दोसा ॥४०७॥ छक्कायसमारंभो णाणचरित्ताण
चेव परिहाणी । घंसण-पीसणपयणं दोसा एवविहा होंति ॥४०८॥
जाता अणाहसाला समणावि य दुक्खिया तिगिच्छंता । तेवि य
पउणा संता होज्ज व समणा ण वा होज्जा ॥४०९॥ अवक्कंतिओ
य तेणो पागइओ गामदेसअब्भाणे । तक्करखाणगतेणे परूवणा
तेसिमा होति ॥४१०॥ अवक्कंतिओ अडाडा पागइओ छिरा य
अहव पागइणं । हरती गामाईणं अंतर अहवावि तेसिं तु ॥४११॥

तेणेव तु कम्मेणं जीवति णाऽण्णेण तक्करो य खलु । खत्ताइ जो खणती खाणगतेणो भवे स खलु ॥४१२॥ सो पुण तेणो चउहा दव्वे खित्ते य कालभावे य । एतेसिं चउण्हं पी पत्तेय परूवण वोच्छं ॥४१३॥ सच्चित्ते अच्चित्ते मीसे वि य होति दव्वतेणो हु । सच्चित्ते दुपयादी दुपदे दासाइयं होति ॥४१४॥ गोमादी य चउप्पय अपदं फलधण्णमादियं होति । अच्चित्त हिरण्णादी दुपयादि सभंड मीसम्मि ॥४१५॥ एमादि दव्वतेणो साहम्मिय अण्णधम्मियगिहीणं । तेणिंतो सो तिविहो उक्कोसो मज्झिम जहण्णो ॥४१६॥ हयगतमाणिक्कादि य तेणिंतो तेणितो उ उक्कोसो । खत्तखणकण्हुवण्णिय गोणी तेणो तु मज्झिमेओ ॥४१७॥ गड्डी-भेदग पहियजणदव्वहारी जहण्ण तेणो तु । एक्केक्कस्स य एसो पडिच्छगा पडिच्छगो चेव ॥४१८॥ सगदेस परविदेसे अन्तरतेणे य होति खित्तम्मि ।दारं। राइंदिया वि काले भावम्मि य णाणतेणादी ॥४१९॥ गोविंदज्जो णाणे दंसण सुत्तट्ठ हेतुसट्ठा वा । पारंचिग उवचरगा उदाइवहगादओ चरणे ॥४२०॥ दव्वादि तेण एसो पव्वावेतुं ण कप्पए सव्वो । समणाण व समणीण व पव्वाविंते इमे दोसा ॥४२१॥ बंधण रोहण तालण दासत्तं मारणं च पाविज्जा । णिव्विसयं च णरिंदो करेज्ज संघंपि सो रुट्ठो ॥४२२॥ अजसो य अकित्ती या तं मूलागं तहिं पवयणस्स । होति गिहीण वि एवं सव्वे एयारिसा मण्णे ॥४२३॥ सग्गाम परग्गामे सदेस परदेस अंतो बाहिं वा । दिट्ठमदिट्ठुक्कोसा मज्झिम जहण्णे इमा सोही ॥४२४॥ मूलं छेदो छग्गुरु छल्लहु चत्तारि लहुग गुरुगा य । गुरुग लहुगो य मासो एएसिं चारणा तु इमा ॥४२५॥ सग्गामंतो दिट्ठे उक्कोसे मूल छेदो अदिट्ठे । बाहिं दिट्ठे छेदो अदिट्ठे होंति छग्गुरुगा ॥४२६॥ परगामंतो दिट्ठे उक्कोसे छेदो छग्गुरुमदिट्ठे । बाहिं दिट्ठे छग्गुरु अदिट्ठे होंति छल्लहुगा ॥४२७॥ सदेसंतो दिट्ठे छग्गुरु अदिट्ठे होंति छल्लहुगा । बहिं दिट्ठे छल्लहुगा अदिट्ठे होंति छग्गुरुगा ॥४२८॥ परदेसंतो दिट्ठे छल्लहुगा अदिट्ठे होंति चउगुरुगा । बाहिं दिट्ठे चउ-

गुरुआ अट्ठिदहे होंति चउलहुगा ॥४२९॥ एवं ता उक्कोसे मज्झे छेदादि हाति गुरुमासे। छग्गुरुगादि जहण्णे हायइ अंतम्मि लहुमासे ॥४३०॥ बितियपदमुक्कमोइ य अहवा वीसज्जितो णरिंदेणं। अद्धाण परविदेसे दिक्खा से उत्तिमट्ठे वा ॥४३१॥ रज्जो उवरोडादिसु संबद्धे तह य दव्वजोगम्मि। अब्भुट्ठिओ विणासाय होइ ग्याववकारी तु ॥४३२॥ सचित्त अचित्त मीसगसवकारे दूतलेइ उवकरणं। समणाण व समणीण व ण कप्पते तारिसे दिक्खा ॥४३३॥ आसो हत्थी खरिया वाहीतं कतकतं च कणगादी। अहवा सभंडमत्ता खरियादी अवहिता होज्जा ॥४३४॥ दोच्चं विरुद्धं य कतं होज्जाहि पउत्तकूडलेहो वा। पिउपुत्तभाउगादी कोई वहिओ व से होज्जा ॥४३५॥ तं तु अणुद्धियदंडं जो पव्वावेति होति मूलं से। एगमणेगपओसे होज्जा पत्थारदोसा वा ॥४३६॥ बितियपद मुक्कमोचिय अहवा विसज्जितो णरिंदेणं। अद्धाणपरविदेसे दिक्खा से उत्तिमट्ठे वा। दारं ॥४३७॥ उम्मादो खलु दुविहो जक्खादेसो य मोहणिज्जो य। दुविहं पि ण दिक्खिज्जा दोसा तु भवे इमे तस्स ॥४३८॥ अगणी आलीवणता आयवयविराहणा य उड्डाहो। छक्काय ण सद्दहती सज्झायज्झाणजोगे य ॥४३९॥ पडिलेहणादि वितहं करेति समितीसु असमितो आवि। उवदिट्ठंपि ण गिण्हति तम्हा णावि दिक्ख उम्मत्तं। दारं ॥४४०॥ दुविहो अदंसणो खलु जातिउ उवघाततो य णायव्वो। उवघातो पुण तिविहो वाहि उवघाउ अंजणता ॥४४१॥ एय पसंगेणं चिय अवरो थीणाद्धिओ मुणेयव्वो। एतेसिं सोहि इमा जहक्कमेणं मुणेयव्वा ॥४४२॥ उद्धियणयणे तह सेसएसु थीणद्धितो तु कमसो तु। छग्गुरु चउगुरु चरिमं दोसा तहिं दिक्खिते इणमो ॥४४३॥ छक्कायविउरमणता आवडणं खाणुकंटमादीसु। पंडिल्लअपडिलेहा अंधस्स ण कप्पती दिक्खा ॥४४४॥ आवहति महादोसं दंसणकम्मोदएण थीणद्धी। एगमणेगपओसे जं काही तं तु आवज्जे ॥४४५॥ गब्भे कीए अणए दुब्भिक्खे सावराहि रुद्धे य। एमाइ होंति दा-

सा ण कप्पती तारिसे दिक्खा ॥४४६॥ राया व रायमच्चो कितिकम्मं संजताण कुव्वंतो। दट्ठूण दुवक्खरय सव्वे एयारिसा मण्णे ॥४४७॥ वहबंधं उद्दवणं खिंसण दासत्तमेव पावेज्जा। णिव्विसयंपि णरिंदो करेज्ज सघंपि सो रुट्ठो ॥४४८॥ अजसो य अकित्ती या तम्मूलाग तहि पवयणस्स। लोगस्स होति संका सव्वे एयारिसा णूणं ॥४४९॥ मुक्को व मोइओ वा अहुवा वीसज्जितो णरिंदेणं। अद्धाण परविदेसे दिक्खा से उत्तिमट्ठे वा। दारं ॥४५०॥

दुविहो य होति दुट्ठो कसायदुट्ठो य विसयदुट्ठो य। दुविहो कसायदुट्ठो सपक्ख परपक्ख चउभंगो ॥४५१॥ सासवणाले मुहणंतए य उलुगच्छि सिहरिणि सपक्खे। सासवणाल सुभंभिय एगेण गुरूणमुवणीयं॥४५२॥ सव्वं गुरुणा खइयं इयरे कोवो य खामणे गुरुणा। अणुवसमंते उ गणे गणिं ठवेत्ताऽज्जहिं परिन्ना ॥४५३॥ पुच्छंतमणक्खाए सोव्वहे अण्णस्स गंतु कत्थ से देहं। गुरुणो पुव्वं कहिते दाइ य पडियरण दंतवहो ॥४५४॥ मुहणंतगस्स गहणे एमेव य गंतु णिसि गलग्गहणं। संमूढेणियरेण वि गलए गहितो मया दो वि ॥४५५॥ अत्थं गते वि सिव्वसि उलुगच्छी उक्खणामि तुह अच्छी। पढमगमो नवरि इहं उलुगच्छीउ त्ति ढोकेइ ॥४५६॥ सिहरिणि लद्धु णिवेदे गुरुणं सव्वादि तं ते उग्गिरण। भत्तपरिण्णा अण्णहिं ण गच्छती सो इहं णवरि ॥४५७॥ परपक्खम्मि सपक्खे उदाइणिवमारतो जह पदुट्ठो। सो पवयणरक्खट्ठा णिच्छुभति लिंग हातूणं ॥४५८॥ परपक्खि सपक्खे पुण जउणारायव्व सो तु भयणिज्जो। तं पुण अतिसयणाणी दिक्खेंतिऽधिगारिणं णाउं ॥४५९॥ परपक्खे परपक्खे दंडियमादी पदुट्ठ परदेसे। उवसंते वा तत्थ उ दमगादि पदुट्ठ भइतो वा ॥४६०॥ तिविहो य विसयदुट्ठो सलिंग गिहिलिंग अण्णलिंगे य। अहवा सव्वोऽवि दुहा सपक्ख परपक्ख चउभंगो ॥४६१॥ सपक्खे विसयदुट्ठो सपक्ख पारंचिओ तु आ-

उद्दो । ओहियम्मि लिंगहरणं एमेव सपक्खपरपक्खे ॥४६२॥ परपक्खं तु सपक्खे विसयपदुट्ठं ण तं तु दिक्खंति । सेज्झिज्झियमादि पदुट्ठं ण य परपक्खं तु तत्थेव ॥४६३॥ दव्वादिसखेत्तकाले गणणा सारिक्ख अभिभवे वेदे । वुग्गाहणमण्णाणे कसायमत्ते य मूढपदा ॥४६४॥ दव्वि दुह बाहि अंतो अंतो धत्तूरगादि बहि धूमो । जाव दवियं ण याणति घडियाबोद्दो व दिट्ठंपि ॥४६५॥ दिसमूढो पुव्वमवरं मण्णति खेत्तम्मि खेत्तवच्चासं । दियरातिविवच्चासो काले पिंडारदिट्ठंतो ॥४६६॥ जह कोई पिंडारो खीरणिसद्धाए रत्ति(पाउ) पासुत्तो । अब्भच्छण्णे उट्ठिओ भण्णति जह वट्टए रत्ती ॥४६७॥ महिसीओ पविसंतो दिट्ठो लोएण हसियतो ताहे । किं एयं ति य भणियं एमादी कालमूढो सो ॥४६८॥ ऊणऽहियं मण्णंतो उट्टारूढो य गणणतो मूढो । सारिक्खथाणुसरिसो महतरसंगामदिट्ठंतो ॥४६९॥ जह एक्के गामम्मी चोरा पडिया तु तत्थ जुद्धम्मि । सेणावती तहिं वहिओ सारिक्खो महतरो वणितो ॥४७०॥ सो णीओ चोरपल्लिं इयरो दड्ढो य तेण गामेणं । बेंती य चोरे महतरो णाहं सेणावती तुज्झं ॥४७१॥ ता ते चोरा बिंति तो गाहिओ एसो तरुणपिसाईए । तो णासिऊण नत्तो गामगतो विणियतो णियमा ॥४७२॥ दड्ढोसी अम्हेहिं किं देवेहिं जियावितो तंसी । इय सारिक्खविमूढा दोण्णवि गामेल्लचोरा य ॥४७३॥ अभिभूतो संमुज्झति सत्थग्गीचोर(वात)सावयादीहिं । अब्भुदयऽणंगरती वेदम्मी रायदिट्ठंतो ॥४७४॥ जह कोति रायपुत्तो बालो अच्छीसु दुक्खमाणासु । मादुगहसारिसारियसंफुसणाडितो तु तुण्हिक्को ॥४७५॥ लद्धोवाउत्ति तओ एवमभिक्खं तु ताहे सा कुणति । सो वि य विवद्धमाणो सत्तो तीए तु पासम्मि ॥४७६॥ तीयवि अणुप्पियं चिय पितु उवरमणे य तस्स रायत्तं । तह वि य तं पडिसेवति सचित्तादीणिसिज्झमाणोवि ॥४७७॥ वुग्गाहितो परेणं कज्जमकज्जं य ण सुणती जो तु । सो वुग्गाहणमूढो दिट्ठंता दीवजातादि ॥४७८॥ ओमद्दरग पियमहिलो तीय समं गमण वारिजाणेणं । गब्भि-

णी पोतविवत्ती समुद्दमज्झे फलगलग्गा ॥४७९॥ अंतरदीवुत्ति- ण्णा पसूय दारग विवड्ढितो कमसो । तेण सह लग्ग वितिरि- च्छपोतरूढा गता सपुरं ॥४८०॥ वुग्गाहिय तीय सुतो ण सुण- ति लोगेण भण्णमाणोऽवि । जह ज्णणि तवेस त्ती अगम्मगम- णं ण वट्टति उ ॥४८१॥ जह वा अणंगसेणो ण सुणति वु- ग्गाहियऽच्छराहिं तु । मित्तवयणं हियं पी जह वावि सुव- ण्णगारीणं ॥४८२॥ वुग्गाहितो तु बोहो मा हीरेज्जा सुवण्ण- कारेणं । तुज्झं तु मोरगाइं छाएमी तंबएण अहं ॥४८३॥ लो- गो य तुमं भणिहिति हरियाइं मोरगाइं बोद्द ! तुहं । तं मा हु प- त्तियाही एवं च भणिज्जसी लोगं ॥४८४॥ जो एत्थं भूतत्थो त- महं जाणे कलाय ! मा सोय । सोऽवि य एवं भणती वुग्गाहिय अहुय अंधल्लया ॥४८५॥ अंधल्लगभत्तणिवे सयणासणभत्तवस- हिमादीहिं । सुपरिग्गहिअंधल्लग तेऽवि य धुत्तेण भणिया य ॥४८६॥ अहयम्मि अंधदासो अम्हं राया य अंधल्लगभत्तो । इह दुक्खित तहिं वच्चह जह कयपुण्णो व्व दियलोयं ॥४८७॥ इय होतु त्तिय णेहिं णीणेतुं रत्ति डोंगरे नेणं । वेढेऊण पुरिल्ला लावि- ओ मंगिल्लपदईए ॥४८८॥ आणेह भे जं अत्थि एत्थ चोराण पतिभयं ठाणं । गेण्हह पत्थर मा हु य कासति देहित्थ अल्लियितुं ॥४८९॥ भणिहिंति चोर तुब्भे केणेते अंधल्ला वराग तु । गिरिडोंग- रे वेढाविय पहणह ते पत्थरेहिं तु ॥४९०॥ इय वोत्तुण पलाओ घि- त्तूणं अत्थजातयं तेसिं । ते य पभाते दिट्ठा गोवादीएहिं भणिता य ॥४९१॥ केणेते एव कता इय वुत्ते पत्थरेहिं ते पहया । णवि दिंति अ- ल्लियावं वुग्गाहिय एवमादीया ॥४९२॥ वणिमहिल मूढु दव्वे वेय- म्मि य मूढु होति राया ऊ । वुग्गाहणमूढा पुण दीवादी सेस सव्वे- ऽवि ॥४९३॥ अण्णाणमूढ इणमो दाइज्जंतंपि कारणसतेहिं । जो स- प्पहं ण याणति जच्चंधो चेव जह चंदं ॥४९४॥ कोडादिकसाओद- यमूढो णावि जाणती मणूसो तु । इह य परम्मि य लोए हिताहि- तं कज्जऽकज्जं वा ॥४९५॥ दव्वेण य भावेण य दुविहो मत्तो तु होति णायव्वो । मज्जमदादी दव्वे माणदइविहेण भावम्मि ॥४९६॥

मोत्तूण वेदमूढं आदिल्लाणं तु णत्थि पडिसेहो । वुग्गाहुण अण्णाणो कसायमूढो य पडिकुट्ठो ॥४९७॥ सच्चित्तं व अचित्तं मोसूणं जो अणं तु धारेति । समणाण व समणीण व ण कप्पते तारिसे दिक्खा ॥४९८॥ अयसो य अकित्ती या तंमूलागं तहिं पवयणस्स ; अण चोप्पडझंझडिया सव्वे एतारिसा मण्णे ॥ ४९९ ॥ बितियपद दाणतोसिय अहवा वीसज्जितो पभूण तु । अद्धाण परविदेसे दिक्खा से उत्तिमट्ठे वा ।दारं ॥ ५०० ॥

चउरो य जुंगिया खलु जाती कम्मे य सिप्प सारीरे । जाती य पाण वरुडा डोंबा णिक्कारमादीया ॥ ५०१ ॥ पोसगसंबरणडलंखवाहसोयरियमच्छिगा कम्मे । पडकारा य परीमह रजगा कोसेज्जगा सिप्पे ॥५०२॥ करपादकण्णणासियओट्ठविहूणा य वामणा वडभा । खुज्जा पंगुल कुंटा काणा एते अदिक्खा य ॥५०३॥ .च्छा य होंति विगला आयरियत्तं ण कप्पए तेसिं । सीसो हावेयव्वो काणगमहिसो य णिण्णम्मि ॥५०४॥ जे पुण जाती जुंगित जाती कम्मे (सिप्पे) य तिण्णि वि ण दिक्खे । बितियपदे दिक्खेज्जा इमेहिं अह कारणेहिं तु ॥ ५०५ ॥ जाहे य माहणेहिं परिभुत्तो कम्मसिप्पपडिजेरतो । अद्धाण परविदेसे दिक्खा से अब्भणुण्णाया ।दारं ॥५०६॥ कम्मे सिप्पे विज्जा मंते जोगेण चेव ओबद्धे । समणाण व समणीण व ण कप्पए तारिसे दिक्खा ॥ ५०७ ॥ कम्मं तु उइडमादि सिप्पं सिक्खिज्जते गुरुवदेसा । लोहारादी तं पुण विज्ज कला लेहसादीओ ॥ ५०८ ॥ अहवा विज्ज ससाहुणा मंतो पुण होति पढियसिद्धो तु । वसिकरणपादलेवादि ततो उ जोगा मुणेयव्वा ॥५०९॥ गोवालादी कम्मे ओबद्धा छिण्णछिन्नकालेणं । दिण्णा अदिण्ण भतिया दिण्णभतीया ण कप्पंति ॥ ५१० ॥ सिप्पादी सिक्खंतो सिक्खावितस्स देंति जा सिक्खे । गहितम्मि वि सव्वं पी जच्चिरकालं तु ओबद्धो ॥५११॥ बंध वहो रोहो वा हविज्ज परिताव संकिलेसो वा । ओबद्धगम्मि दोसा अवण्ण सुत्ते य परिहाणी ॥५१२॥ मुक्को व मोइओ वा अहवा वीसज्जितो णरिंदेणं । अद्धाण परविदेसे दिक्खा से अब्भणुण्णाया ।दारं ॥५१३॥ दिवसभयए व जत्ता भत्तीथ कव्वा-

तभतग उव्वत्ते । भयओ चउव्विहो खलु ण कप्पते तारिसे दिक्खा ॥ ५१४॥ दिवसभयओ उ घिप्पइ छिण्णेण धणेण दिवसदेवसियं । जत्ता तु होति गमणं उभयं वा एत्तियधणेण ॥५१५॥ कव्वाल उडुमादी हत्थमित्तं कम्मसेत्तियधणेणं । एच्चिरकालो धत्ते कायव्वं एत्तियधणेणं ॥५१६॥ कतजत्तगहियमोल्लं दिक्खेज्ज कया य होति पडिसेहो। पव्वाविंते गुरुगा गहिए उड्डाहमादीणि ॥५१७॥ छिण्णमछिण्णे य धणे वावारे काल इस्सरे चेव। सुत्तत्थजाणएण अप्पाबहुयं तु णायव्व ॥५१८॥ वावारे काल धणे छिण्णमछिण्णे य होंति भंगट्ठा । माहियगहिते अ कते मोत्तुं सेसेसु दिक्खेंति ॥५१९॥ गहिए व अगहिए वा छिण्णधणे साधिते ण दिक्खंति । अछिण्णधणे कप्पति गहिते वा अगहिते वावि ॥५२०॥ जत्थ पुण होति छिण्णं थोवो कालो य होति कम्मस्स । तत्थ अणिस्सर दिक्खा इस्सरो बंधंपि कारेज्जा ॥५२१॥ घेत्तु समयंसमत्थो रायकुले अत्थहाणि कइठंले । केत्तलस्स तेण कप्पति सेहे रसबीरिए भयणा ।दारं ॥५२२॥ सेहुस्स णिप्फेडिय जो सेह घेत्तु आसियावेति । सो पुण व तेण केरिसो ण कप्पती आसियावेतुं ॥५२३॥ अप्पडुपण्णो बालो सोलसवरिसूणो अहव अणिविट्ठो । अम्मापितु अविदिण्णो ण कप्पती तत्थ वऽण्णत्थ ॥ ५२४॥ ततियवतअतियारो णिप्फेडिण तेणसद्द भइणिज्जो । तेणे य तेणतेणे पडिच्छगपडिच्छगे चउहा ॥५२५॥ ततियवतस्सऽइयारो निक्खावितस्स सेहुसविदिण्ण । भयणा तेणगसद्दे होती इणमो समासेणं ॥५२६॥ जो सो अप्पडुप्पण्णो विरट्ठवरिसूण अहुव अणिविट्ठो । त दिक्खंत अविदिण्णं तेणो परतो अतेणोतु ॥५२७॥ अहुवा मुंडित ससिहे भइयव्वो होति तेणसद्दो तु । एक्केक्कस्स य इत्तो चतभगो हो इमो कमसो ॥५२८॥ मुडपभुपेल्लएया चतभंगो पढमततिय अणुण्णाया । ते हुरमाणो अतेणो सेसेसु तु तेणओ होति ॥५२९॥ एव पभुससिहपिल्ल । चउभंगो णूण एत्थ वि तहेव । एतेण कारणेण तेणगसद्दो नहि भजितो ।दारं ॥५३०॥ अहुवऽण्णे चउभंगा ससिहेण एक्को तेणि इति एक्को । असिहम्मि होति तिन्नि भो तेणा चत्तारि तत्थ इमे ॥ ५३१॥ जो तं तु सय णेती सो तेणो

होति लोगउत्तरओ । भिक्खादिगते तम्मि तु हरमाणो तेणतेणो तु ॥ ५३२ ॥ तं पुण पडिच्छमाणो पडिच्छओ तस्स जो पुणो मूला । गिण्हति एगंतरियो पडिच्छगपडिच्छओ स खलु ॥ ५३३ ॥ तइयव्वगाइयारो एवं गिंतस्स होइ सेहं तु । अण्णे य इमे दोसा गहणादीया भवे तस्सं ॥५३४॥ अम्मापितरो कस्सइ विपुलं घेत्तूण अत्थसारं तु । रायादीणं कहते कहियम्मि य गिण्हणादीया ॥ ५३५ ॥ विप्परिणामे व सण्णी कोई संबंधिणो भवे तस्स । विप्परिणाया य धम्मं मुएज्ज कुज्जा व गहणादी ॥ ५३६ ॥ आयरियउवज्झाया कुल गण संघो तहेव धम्मो य । सव्वे वि य परिचत्ता सेहं णिप्फेडयंतेण ॥ ५३७ ॥ तम्हा तु ण हायव्वो बितियपदेणं हरेज्ज व कयाइ । होही जुगप्पहाणो ण य दोसा तत्थ केइ भवे ॥ ५३८ ॥ तो अतिसेसी दिक्खे ओहीमादी अमूढहत्थो वा । थिरहत्थो व अमूढो दिक्खेज्जा सो तहिं चेव ॥ ५३९ ॥ केइ पुण मंदधम्मा बितियपद णिसेविय ववदिसंति । वडपादवो विव जहा मूलविणट्ठा णडुविलग्गा ॥ ५४० ॥ णिप्फेडियमिच्छंता रक्खियमालंबणं ववदिसंति । मूलविणट्ठो व वडो जह चिट्ठति लग्गपादेसु ॥ ५४१ ॥ एवं तु मूलसुत्तं छड्डेतुं ते तु लग्गसाहासु । साकारणणिप्फेडी णिक्कारणओ य पडिकुट्ठा ॥ ५४२ ॥ जे केई सेहु दोसा बालादीता मए समक्खाया । ते चेव य सविसेसा गुव्विणि तह बालवच्छासु ॥ ५४३ ॥ कह ते तु संभवंती गब्भम्मी तम्मि चेव बाले य । दिट्ठा तु बालदोसा होज्ज कदादी णपुंसो वी ॥ ५४४ ॥ एवं अवसेसा वि णवरं मोत्तूणिमे तहिं अणले । वुड्ढं जड्डसरीरं तेणं रायाऽवकारिं व ॥ ५४५ ॥ दासमणत्तं च तहा ओबद्धं भतग सेहणिप्फेडि । अविसेस अणलदोसा भइयव्वा गुव्विणीए उ ॥ ५४६ ॥ अहवा वि गुव्विणीए अण्णे दोसा इमे भवंती हु । कायभवत्थो बिंबं वतिकितिविणयम्मि व मरेज्जा ॥ ५४७ ॥ कीवे तेणे रायावकारि दुट्ठे य सेहणिप्फेडे । गुव्विणिए य जहक्कम वोच्छं आरोवणं इणमो ॥ ५४८ ॥ मूलं चतुगुरु पारंचिया दुवे चउगुरुं तओ मूलं । अहवाऽवकारि मोत्तुं सेहं वा सेस मूलं तु ॥ ५४९ ॥ पारंची मूलं वा अवकारिए

सेढे होंति चउगुरुगा । सेसेसु ठाणएसुं चउगुरुगा हू मुणेयव्वा ॥
५५०॥ बाले वुड्ढे कीवे जड्डे मत्ते अदंसणे चेव । कस्मादेजुंगिए
वा उदे पच्छा होज्ज णिक्खंतो ॥ ५५१ ॥ गच्छे संगहियाणं सं-
वासो तेसि होति णिद्दिट्ठो । ण विउ(उ)त्ताण णियमा एगट्ठाणे
य पाएण ॥ ५५२ ॥ होज्जाहि गुव्विणीय वि जह पउमवातिव सु-
इडमाया वा । तं तू उवस्सयम्मी भावियसड्ढेसु वा गोवे ॥ ५५३॥
जिणवयणपडिकुट्ठो जो पव्वावेति लोभदोसेणं । चरित्तहितो तव-
स्सी लोवेइ तमेव तु चरित्तं ॥५५४॥ पव्वाविओ सियत्ती सेसं प-
णगं अणायरणजोग्गं । अहुवा समायरंते पुरिमपदणिवारिया दोसा
॥ ५५५ ॥ पव्वावण मुंडावण सिक्खावणुवट्ठभुंज संवसणा । पढम-
पदहीण सेसा पंच पदा तेहिं वज्जेंति ॥ ५५६॥ पव्वज्जा तु अभिहि-
या सा पुण होज्जा कहं तु पव्वज्जा । तं वत्तुमणायरिओ गाहासुत्तं
इमं आह ॥५५७॥ छंदा रोसा परिजुण्णा सुविणणाणा पडिस्सुता ।
सारणिया रोगिणिया अणादिया देवसण्णत्ति ॥ ५५८ ॥ प(व)च्छाणुबंधि-
या अजणियकण्णिया बहुजणस्स संमुदिया । अक्खाता संगारा वे-
याकरणा सयंबुद्धा ॥ ५५९ ॥ पत्ति सुराऽभय देवी वड तेतलि मू-
ग वासुदेवे य । उद्दायण मण केसी जंबु पभव मल्लि सोम जि-
णा ॥५६०॥ गामेगो चोर पडिया वत्थहिरण्णादि गेण्हितुं ते य । सं-
पट्ठिते य पल्लिं रूववती महिलिया भणति ॥ ५६१॥ किं णा
हरह महिलाओ चोरा चितंति इच्छिया महिला । णेतुं पल्लिव-
इणो उवणीता तेण पडिवण्णा ॥ ५६२॥ तीए धवो सयणेणं भ-
णितो किं बंदिगं ण मोएसि । गंतूण चोरपल्लिं धेरी ओलग्ग-
ए पत्तओ ॥ ५६३॥ किं ओलग्गसि पुत्ता! चोरेहिं भारिया इहा-
णीया । विरहे तीए कहेती इहागतो तुज्झ भत्तत्ति ॥ ५६४॥ कहि-
ते तु चोरअहिवम्मि पउत्थे भणति अज्ज रत्तीए । पविसतु चोर-
हिओकं पविट्ठे पच्छा सेणावती आओ ॥ ५६५ ॥ हेट्ठा आसं-
दिपवेसो चोरहिवं भणति धुत्ति इणमो तु । जदि एज्ज मज्झ
भत्ता तस्स तुमं किं करिज्जासि ॥ ५६६ ॥ चोराहिवाह सक्का-
रइत्तु तुमं देज्ज तो करे भिउडिं । आह ततो चोराहिवो दारे थंभ-

म्मि उल्लेहिं ॥५६७॥ वद्धेहिं वेढेज्जा तुरहा मण्णेति हेट्ठसंदीए । णीणेतुं चोरहिवो खंभे वद्धेहिं वेढेइ ॥५६८॥ सुणएण खइयबद्धे पासुत्ताणं च चोरअहिवस्स । सगआसिणा छेत्तूणं सीसं गहिइत्थिओ भण(चल)ति ॥५६९॥ णीणिज्जंती सीसं चोरहिवस्सा तु सा गहेऊणं । गालंती ऊ रुहिरं अह गच्छति मग्गतो तस्स ॥ ५७० ॥ जाहे जा तब्भासं ताहे सीसं तय पमोत्तूणं । दसिया चीराईणि य साहिंति य जातिचिंधट्ठा ॥५७१॥ जाहे य णिद्दिट्ठताइं ताहे तणपूलियाओ बंधंती । वच्चाति अवयवग्घंती पुणो पुणो मग्गतो सा तु ॥ ५७२ ॥ गोसे य पभायम्मी सेणाहिवं घाइयं तत्तो दट्ठुं । लग्गा कुढेण चोरा पासंति य ताणि चिंधाणि ॥५७३॥ रुहिरदसिगादियाइं अणिच्छिया णिज्जइत्ति मण्णंता । तुरियं धावे कुढिया ताणि वि य पभायकालम्मि ॥५७४॥ पंथस्स एगपासे ट्ठिया णि कुढिएण जाव दिट्ठाइं । तं खीलेहि वितडिइय सहिल घेत्तूण ते य गता ॥५७५॥ ते चोरा तं णेउं चोराहिवभाउगस्स उवणिंति । सा तेणं पडिवण्णा चोराहिवपट्टबंधम्मि ॥५७६॥ इतरोवि खीलएहिं वितडिउओ अच्छती तु अडवीए । जूहाहिवणिज्जूढो अह एति अणीहुतो तहियं ॥ ५७७॥ तो कवितो दट्ठूणं कहिं मण्णे एस दिट्ठपुव्वोत्ति । चिंतेऊणं सुचिरं संभरिता णियगजाती उ ॥५७८॥ अहमेतस्स तिगिच्छी आसि विसल्लोसही य तं मोए । संरोहणीइ य तओ संरोहेत्ता वणे तस्स ॥५७९॥ लिहितऽक्खरा अणिहुओ सोऽहं वेज्जो तवासि पुव्वभवे । संभारियसंभिण्णाणतो उ तो वाणरो कहते ॥५८०॥ जह जूहा णिच्छूढो साहिज्जं सज्झ कुणसुं वरमित्त ! । आमं ति तेण भणितो जूहं गंतूण ते लग्गा ॥ ५८१॥ दोण्ह विसेसमणातुं ण किंचि कासी य सो हु साहिज्जं । णट्ठो लुत्तविलुत्तो लिहति ततो अक्खरा पुरतो ॥ ५८२ ॥ किं साहिज्जं ण कतं पुरिसाहु ण जाण दोण्हवि विसेसं। तो तुट्ठो वाणरतोवणमालं अप्पणो विलए ॥ ५८३ ॥ लग्गो सेगपहारेण मारितुं चोरपल्लिमतिगंतुं । रत्तिं मारिय चोराहिवं तु तं गिण्हितुं इत्थिं ॥ ५८४॥ सग्गामं आणेत्ता इत्थिं उवणेति सयणवग्गस्स । वेरग्गसमाजुत्तो धिरत्थू इत्थीहि जे भोगा ॥५८५॥ मज्झत्तं(त्थ) अच्छंतं सयणो जं-

पति तु झायसे किण्णु ? । किं वासि कज्जकामो भणती काहं अप्पणो छंद ॥५८६॥ थेरालंतिय धम्मं सोतुं पवज्जमब्भुवेसी य । एसा छंदा भणिता अहुणा रोसा तु पव्वज्जा ॥५८७॥ सीसारक्खो रण्णो धम्मं सोऊण सावओ जातो । मा मारेहिं किंचि वि उज्झ तु असिं हरे दारं ॥५८८॥ तप्पडिणि रायकहिए पिच्छामि असिं ति सावएणुत्तं । सम्मद्दिट्ठीदेवय सारक्खिज्ज त्ति तो रुट्ठो ॥५८९॥ दिव्वप्पभावमायसमयं तु दट्ठूण कुद्ध तो राया । णिज्जंते पद्मनीए सड्ढो तेसिं तु रक्खट्ठा ॥५९०॥ बेति णरिंदं अह सो मा एतेसिं तु रूसहा तुब्भे । जं जंपियमेतेहिं तं सव्वं णरवर ! सद्देव ॥५९१॥ ताहे छोढूण पुणो णिकुट्ट असी तु जंवरि दारुमओ । दिट्ठो णरवसभेणं विम्हइओ बेति किं एयं ? ॥५९२॥ जंपति सड्ढो ताहे णरवर ! देवप्पसाद इच्चेसो । पावविवज्जीउ णरा हुवंति देवाण वि पुज्जा ॥५९३॥ तो तुट्ठो भणति णिवो सेवसु एतेव दारु असिणा उ । कडगादीहिं य पूजितो पावितो सुमहन्तसिरिपरिय ॥५९४॥ कालगयम्मि य सड्ढे पुत्तो णामेण चपडकण्डोत्ति । पडिवण्णो त भोगं सामंते णाणमंतम्मि ॥५९५॥ पेसेति चंडकण्हं गंतूण घेत्तु सजियमाणेति । तुट्ठो य भणति राया किं देमि अहाह सो इणमो ॥५९६॥ जं खज्जपेज्जभोज्जं गेण्हेज्ज पुरम्मि तं तु सुग्गाहियं । इय होतुत्ति य भणिए वारुणिपाणे पसादेण ॥५९७॥ रत्तिं चिरस्स सगिहं आगच्छति भज्ज सा तरो तस्स । दुहिया जग्गंतीओ उण्णहा अण्णदा रत्तिं ॥५९८॥ पिक्खितदारं पिहए अह वदती आगतो तु सो दारं । उग्घाडेतो जणिणं वएसु जत्थेरिसे वेले ॥५९९॥ उग्घाडिय दाराइ तहियं वच्च त्ति मातु रुसितो तु । साहुग्घाडिय दारत्ति गंतू साहूणमल्लियओ ॥६००॥

पव्वावेह लवेई ते विय मत्तो त्ति कातु बक्खेवं । बिंती गोसग्गम्मी पभाते पव्वावइस्सामो ॥६०१॥ सयमेव कुणति लोयं ताहे लिंगं दलेंति जतिणो तु । पव्वाविंती विहिणा एसा रोसा तु पव्वज्जा । दारं ॥६०२॥ दमगं भइयं कम्मं कुणमाणं

दट्ठु सावओ पुच्छे । केवतिभत्तीय कम्मं करेसि पाएण प-
च्चाइ ॥६०३॥ दाइामी पतिदिवसं तव पादं गतु साहुणो बूहि
। सावेण पेसिओऽहं करेज्ज जं आणवे साहु ॥६०४॥ साहु
भणंति दमगं जो पव्वइतं करेति कम्ममम्हं । तं कारवेमु न ति
हिं पव्वइओ दव्वओ ताहे ॥६०५॥ साहू भणंति दिवसं पटि
यव्वं जं च देमु उवएसं । एयं कम्म अम्हं सिक्खं दुविहं
पि गाहिंति ॥६०६॥ कतिवयदिवसगतेहिं अह सड्ढो भणति तं
भतिं गिण्ह । उक्कोसगभत्तेणं सुहितो रत्तो तवे इगमो ॥६०७॥
अच्छतु तुब्भं इत्थे जति ता मग्गे तदा दलेज्जाहि । कतिवयदि
वसेहिं ततो अभिगयधम्मो उवट्ठविओ । दारं ॥६०८॥ परिजुण्णे
सा भणिता सुविणे देवीए पुप्फचूलाए । नरगाणं दंसणेणं प-
व्वज्जाऽऽवस्सए वुत्ता । दारं ॥६०९॥ चतुरो तु गोणपाला सत्था-
हीणं जतिं तु अडविए । पडिलाभिंति पहट्ठा दोहि दुगुंछाइय
तहियं ॥६१०॥ दियलोगगता तत्तो चइतु दुगुंछी दसण्णे दासत्तं
। तत्तो मिगा य हंसा सोवागा चित्तसंभूता ॥६११॥ अदुगुंछी ति-
त्थगरं पुच्छति किं सुलभदुल्लभबोहि म्हे । तित्थंकराह विग्यं
अम्मापितरो करेहिंति ॥६१२॥ तो ओहिणा पासित्ता माहणपु-
त्तत्त णगरमुसुगारे । सो माहणो अपुत्तो पुच्छति णेमित्तिए ब-
हवे ॥६१३॥ ते काउ समणरूवं उसुगारपुरम्मि आगता कहए
। बहुजण तीतादीणि तो पुच्छे माहणो ते उ ॥६१४॥ होज्जऽम्ह
किं चऽवच्चं पच्चाह चुया दिया तु होहिंति । दो जमलदारगा तू
कुमारगा पव्वइस्संति ॥६१५॥ मा तेसिं करेज्जासी विग्घमव-
स्सं च तेसि पव्वज्जा । होही वोत्तूण गता चइत्तु उववन्नया
तेसिं ॥६१६॥ बालत्तऽम्मापितरो भणंति समणाण सरिसरूवेणं ।
रक्खस माणुसखाता भमंति ददट्ठूण ते पुत्ता ॥६१७॥ मा तेसि अ-
ल्लिएज्जह दूरंदूरेण परिहरेज्जाह । मा भक्खेज्जा ते भे तेवि य
तेसिं पडिसुणेंति ॥६१८॥ रत्थादि जत्थ पासंति संजए ते तओ प-
लायंति । अह अन्नया नगरबाहिं चेडे पासंति वंदंते ॥६१९॥ बिंति
य अम्मापितरो दिट्ठाऽम्हे चेड वंदमाणा तु । णवि समणरूव र-

वत्थस भविक्खंति व चेटरूवाइ ॥६२०॥ चिंतेतऽम्मापितरो अविवी-सत्था इमे तु जाय त्ति । मा पव्वएज्ज इइति अल्लियमाणा तु स-मणाणं ॥६२१॥ सरयज्झाया एते वइय णिज्जंतु तत्थऽहिज्जंतु । इ-य संचिंतेऊण वइयं णीता ततो तेहिं ॥६२२॥ वइयाए समोवम्मी स-णाभिगमो तु अत्थि वडरुक्खो । अह अन्नदा कदाई ते तु रमंता गता तहियं ॥६२३॥ सत्थाईणा य जती तिसियकिलंता तु आगता त-हियं । एत्थ करेमो भिक्खं वडहेटहा पट्टिया ततो ॥६२४॥ तो ते भयाभिभूता चेइ विलग्गा तमेव वडरुक्खं । जतिणोऽवि य तस्साहे ठातु पविसंति भिक्खट्ठा ॥६२५॥ णवरि पवत्तिंति गुरु तहियं अ-ज्झयणं णालिणगुम्मंति । तो ते सरंति जातीं ओयरितुं वंदिउं बिंति ॥६२६॥ अम्मापितरो पुच्छित पव्वज्जं अब्भुवेमोऽसेसं तु । जह उसु-गारज्झयणे वक्खात सुत्तआलावे । दारं ॥६२७॥ एसा पडिस्सुता स-तु पव्वज्जा सारणी य णातेसु । चोद्दसमे अज्झयणे जह तेतलि-पोट्टिलाबोहे । दारं ॥६२८॥ पतिट्ठाणे जुवराया राइयारियाण पासि णिक्खंतो । नगराए तस्स भगिणी दिण्णा जितसत्तुरायस्स ॥६२९॥ नगरगताण कदायी उज्जेणीओ य आगतो साहू । साहुगुरुपुच्छऽ-णाबाहु बिंती बाहेति रायसुतो ॥६३०॥ पुत्तो पुरोहियस्स य दोऽवि ते णिवघरम्मि वाहेंति । तं सोतुं जुवणिवमुणी बेति मम नत्तुओ सो तु ॥६३१॥ सासेमि न दुरप्पं आपुच्छित्ता गुरुं तु उज्जेणिं । णिक्खस्स-ग्गं पुरट्ठा न चेव कहिंति से जतिणो ॥६३२॥ भिक्खट्ठणिग्गयम्मि य भणिते अच्छाहि आणइस्सामो । भत्तट्ठ अत्तलाभी मि बेति दंसेह णिवओवक्कं ॥६३३॥ दसेतूण णियत्तो सुइडो इयरो वि गंतुं णिवओकं । सद्देण महंतेण अह कुणती धम्मलाभं तु ॥६३४॥ तो तेहिं सोतु दिट्ठो पदितुट्ठेहिं चऽणेहिं सो गहिओ । भणितो तं नच्चसु त्ती इय होतु तेण तो भणिता ॥६३५॥ गायह तुब्भे-त्ति ततो ते तु पगीता पणच्चिओ साहू । ता ते उवद्दविता सा-धुणा खिज्जिया दोवि ॥६३६॥ पुणरवि बेंती गायसु तुमं तु अ-म्हे उ णच्चिमो इण्हिं । इय होतु त्ति य भणिते पणच्चिता ता-हे ते दोवि ॥६३७॥ पुणरवि य विद्दवेत्ता गोवालग विद्दवेह किं

इयं । भणिता ते साधूणं चिंतेय के य वसि नं अम्हे ॥६३८॥ देही जुद्धं अम्हं लविता साहुण दोण्हु वी समगं । आगच्छह त्ति सिग्घं तो ते आधाविता तुरितं ॥६३९॥ आधावेला य ततो घेत्तुं बाहासु दोवि साहूणं । तह विधुणणेण दूल जह संधिविसंधिता सव्वे ॥६४०॥ उत्ताणए महीए पाडेतुं णिग्गतो तु सो तत्तो । उज्जाण गंतूणं झायति झाणं गुणसमग्गो ॥६४१॥ अह ते दट्ठुं णिहते संभंतो परिजणो कहे रण्णो । रायावि य संभंतो आगतु णियच्छती ते तु ॥६४२॥ पुच्छावेइ य जीतत्तो बिंति य णेत्थंम्ह पविसते कोइ । णवरि एक्को पाहुणओ आगतो ण तं तु जाणामो ॥६४३॥ ताहे उज्जाणादिसु रण्णा गवेसाविओ य दिट्ठो य । गंतूण सयं राया चलणेसु णिवडिओ जतिणो ॥६४४॥ बेई य जम्मिमेहिं अवरद्धं तं खमाहिसी भंते ! । जंपति साधू जदि णिक्खमंति मोक्खामि तो णवरिं ॥६४५॥ सण्णाओ अवरेहिं एस कुमारस्स मातुलो सो उ । बहुसो णिब्बंधकते पडिवण्णो जाहे ते दोऽवि ॥६४६॥ ताहे गंतूण तहिं दोण्णवि घेत्तूण तेण बाहासु । तह णं खलंखलीकत जह संधी सि पुणो लग्गा ॥६४७॥ णिक्खामेउं दोण्णि वि सूरिसगासं णीणिया तेण । चिंतेइ रायतणओ साधुकतं मातुलेण मम ॥६४८॥ मम हियमिच्छंतेणं रुदमाणे पीहको व्व बालस्स । तह मज्झं सेयंति अतियारविवज्जितो विहरे ॥६४९॥ इतरो जातिमदेणं अविणयमादीणि ओवगाडेत्ताण । दुल्लभबोहीयत्तं बंधेतु गतो तु दियलोयं ॥६५०॥

कोसंबीए इणमो सेट्ठी णामेण तावसो णामं । मरिऊण सूयरोरग जातो पुत्तस्स पुत्तो तु ॥६५१॥ जातो जातिं सरंतो चिंतयति किं नु सुण्हु अम्मोत्ति । पुत्तो वि य बप्पो त्ती भणामि मूयत्तण वरं मे ॥६५२॥ मरुदेवो तित्थकर पुच्छति किह सुलभदुल्लभबोहीहं । भणितो दुल्लभबोही तंमि गुरू परिभवकएणं ॥६५३॥ कहं बुज्झेज्जामित्ति य भणितो कोसंबिमूगमाऊए । उववज्जिहिसी तहियं मूगो अब्भत्थितो बोहो ॥६५४॥ ताहे आगंतूणं साहू समायति भणति सो देवो । अहगं चइऊण इतो तुज्झ मातूए उदरम्मि ॥६५५॥ उववज्जीहं अइरा होहिति अबोहिं डोहलो अकाले । अविणिज्जंते तम्मि

य किच्छउप्पाणा य होहिति तु ॥६५६॥ अहगं गिरिणतिंबे सव्वो-
तुय अंबगं करेत्तामो । अंबाऽलंभे सि(वे)ज्जासि दे अंबे देह जदि ग-
ब्भं ॥६५७॥ अब्भुवगते ससक्खे अंबे देज्जासि बालभावे य । मा-
तुणं चलणेसुं पाडेज्जाही अणिच्छंपि ॥६५८॥ किं बहुणा तह कु-
ज्जा जइऽहं साहु साणे दढो होमि । संबोहिकारओ खलु लभति अज-
त्तेण बोहिं तु ॥६५९॥ मूगेण अब्भुवगते देवो णमिऊण सालयं पत्तो।
चइऊण य उववन्नो कुच्छीए मूगमाऊए ॥६६०॥ अंबगडोहलजाते अ-
विणिज्जंतम्मि देहुडाणीए । अद्दण्ण परिजणाणं मूगो लिहतक्खरा-
णिणमो ॥६६१॥ जीदे देइ मेय गब्भं मज्झं तो अंबगाणि आणेमि ।
देमुत्ति अब्भुवगते ससक्खमाणेति अंबाइं ॥६६२॥ तो पुण्णडोह-
लाए जातो दिण्णो य ताहे से तस्स । उत्ताणसायगं तं जतिणो
पादेसु पाडेति ॥६६३॥ अनिविस्सरं परोती जाडेवि य पाडिओ उ
पादेसु । सुहचलणेसु जतीणं मूगेणुत्तो तु णेच्छी या ॥६६४॥
घेत्तुं गीवाए तओ मूगेणं पाडिओ स्वे बहुसो । परितंतु ततो मूओ
णिक्खंतो गतो य दियलोयं ॥६६५॥ ओहीए ददट्ठूणं सुविणादिसु बो-
हिओ जति ण बुज्झे । ताहे करेति रोगी देवोवि उ वेज्जरूवेणं ॥६६६॥
जदि वहति सत्थकोसं भमति मए यावि जदि समं एसो । तो णिरोगु
करेमी पडिवण्णो कतो य णीरोगो ॥६६७॥ घेत्तूण तं पयाओ गुरु-
गं से सत्थकोसगं दावे । तं वज्जभारगुरुगं बेती ण तरामि वोढुं
जे ॥६६८॥ दंसेति साधुरूवं बेति जति णिक्खमाहि तो तेऽहं ।
मुंचामि विमुंचेमि य रोगा पडिवण्ण तो मुक्को ॥६६९॥ णिक्खंते
तो तम्मी देवोवि ततो तु सालयं पत्तो । कालेणुप्पवइतुं सघरं
संपदिहतो अह सो ॥६७०॥ देवेण पलायंतो दिट्ठो विगुरुव्विऊण
तो अडविं । काऊं मणुस्सरूवं अह अडविं पदिहतो तत्तो ॥६७१॥
लवति ततो दुब्बोही किं इच्छसि अप्पगं विणासेतुं । जं जासि
अडविहुत्तं देवोऽवि ततोऽणु पच्चाह ॥६७२॥ तं पुण विजाणमा-
णो णरगादीदुक्खसंकिलेस तु । किं णिग्गंतुं तत्तो पुणरवि दु-
क्खाडविमतीसि ॥६७३॥ अगणिंतो तं वयणं सघरं अह आगतो
ततो से तु । रोगाण साहरणं भूओ विज्जागमो दिक्खा ॥६७४॥

कालेण केणइ पुणो लिंगं मोत्तूण पडिहतो सगिहं । देवेण पुणो दिट्ठो गामपलित्तंतरा कुणति ॥६७५॥ पुणरवि मणुस्सरूवी त णभारेणं नु विसति तं गामं । दट्ठुं लवे पुराणो किं इच्छसि अप्पणो णासं ॥६७६॥ जं तणभारेण तुमं विससि पलित्तं ततो लवे देवो । एव तुमं जाणंतो जरमरणपलित्तसंसार ॥६७७॥ पविसंतिच्छसि णासं मुंचसि जं दुक्खलद्धियं दिक्खं । अगणिंतो वच्चति घरं गलस्स रोगं पुणो कुणति ॥६७८॥ पुणरवि तहेव दिक्खा उप्पव्वइए य सघरहुत्तम्मि । संपट्ठिए अडवीए तस्स पहे वंतरप्पडिमं ॥६७९॥ काउं अच्चणदेवो अच्चियमहितो तु पडति हेट्ठमुहो । पुणरवि समट्ठवेतु एहवियच्चिओ सो पुणो पडितो ॥६८०॥ एवं पुणोवि अच्चियमहितो वि त बहुसो पडे जाहे । लवति ततो दुब्बोही किं वरहाणे ण हाए सो ॥६८१॥ देवाह जहासि तुमं वरहाणेवि ठविओऽवि ण रमेसि । पव्वज्जं मोत्तू णरगादहहाणं पुणवि अभिलससि ॥६८२॥ लवति पुराणो को तुम देवो दंसेति मूगरूवं से । देवत्तं पुव्वभवं संगारं वावि संभारे ॥६८३॥ तो संभरितुं जातिं संवेगमुवागतो भणाति देवं । इच्छामो अणुसट्ठिं जातो थिरो संजमे ताहे।दारं ॥६८४॥ रोगिणि य एस दिक्खा अणाढिया रामकण्ह पुव्वभवो ।दारं। उद्दायण संबोही पभावती देवसण्णत्ती ।दारं॥६८५॥ वच्छ अणुबंधी मणको ।दारं। कण्णाए अजणिओ तु केणइवि । पुत्तो जायति जो तू सो होती अजणकण्णी तु ॥६८६॥ णिवीते सुतातिं दोन्निवि णिक्खंताइं तु भातुभंडाइं । अण्णद रायसुतो तू णिसाए लोयप्पणो कुणति ॥६८७॥ छड्डेहामि पभाते चलणाहो कालपडियरंतीए । पोग्गलवेदागमणं अह णिवयति तेसु वालेसु ॥६८८॥ वीसरिया ते तस्स य सिरोरुहा तम्मि चेव हाणम्मि । तत्थ य पवित्तिणीओ अहागता गाम गंतुमणा ॥६८९॥ अह तीए रायदुहिया तं वंदिउं सा पदेसे अहु तम्मि । उवविट्ठ णवरि तीए य मोलुगं सद्दसमोगाढं ॥६९०॥ लज्जाए सहस घेत्तुं तेसिं जे सुक्कपुग्गलाइण्णे । गुज्झम्मि सन्निवेसिय अह सुक्कं जोणिमोगाढं ॥६९१॥ तो गब्भो आभूतो अह

पोदरं वड्ढियं पयत्तं च । मुणिया य सुविहियाहिं पुदहा बेर्ती तु ०
वि जाणे ॥६९२॥ अतिसयणाणी पेरा य पुच्छिता तेहिं सिरइ
जइवत्तं । होही जुगप्पहाणो रक्खइ ० अप्पमादेणं ॥६९३॥ जम्म
सइढकुलेसू स वड्ढितो गोण्णणाम कत जेसी । एसा तु भजणाक
ण्णी पव्वज्जा होति णायव्वा । दार ॥६९४॥ बहुजणसम्मुतेयाए
णिक्खमणं होति जंबुणामस्स । दारं । अक्खायाए जंबू पभव अ-
क्खादि पभवस्स ॥६९५॥ संगार मल्लिणाते सत्त णिवा कोसेज-
तु उ संगारं । दार । वेयाकरणे सोमिलपुच्छा जह जाकरे भगवं
। दारं ॥६९६॥ सयबुद्धा तित्थगरा । दारं । सोलसहा एस होति प
व्वज्जा । पुच्छा परिसुद्धम्मि तु अब्भुवगते होति पव्वज्जा ॥६९७॥
गोयरसचित्तभोयण सज्झायमण्डाण भूमि सिज्जाती । अब्भुवगय-
म्मि दिक्खा दव्वादीसु पसत्थेसु । दार ॥६९८॥ णाणादिसु तूरते
अणुकूले दिज्जते अहाजातं । सयमेव तु थिरहत्थो गुरू जहण्णेण
लिण्हइ ऽट्टा ॥६९९॥ अन्नो वा थिरहत्थो सामाइग तिगुण अट्टग
हणं च । तिगुण पादक्खिण्णं णित्थारग गुरुगुणे वुड्ढी । मुडाव
ण गत । दार ॥७००॥

फासुय आहारो से अणहिंडंत च गाहए सिक्खा । ताहेव
उवट्ठवण छज्जीवणियं तु पत्तस्स ॥७०१॥ अप्पत्ते अकहेत्ता
अणभिगय परिच्छ अतिक्कमे पासे । एक्केक्के चउगुरुगा वि-
सेसिया आदिमा चउरो ॥७०२॥ अप्पत्त तु सुतेण परियाग उ-
वट्ठवेंत चउगुरुगा । आणादिणो य दोसा विराहणा छण्ह काया-
णं । दार ॥७०३॥ सुत्तत्थं अकहेत्ता जीवाजीवे य बंधमोक्खं च ।
उवट्ठवणे चउगुरुगा विराहणा जा भणिय पुव्वं । दार ॥७०४॥ अण-
हिगतपुण्णपावं उवट्ठवितस्स चउगुरू होंति । आणादिणो य दोसा
मालाए होति दिट्ठंतो । दार ॥७०५॥ सयरक्ख दगउल्लगणी प-
तिट्ठिते हरितबीजमादीसु । होति परिक्खा गोयर कि परिहरती ण-
वा वि त्ति ॥७०६॥ उच्चारादि अपंडिल्ल वोसिर ठाणादि वावि पु-
ढवीए । णदिमादिदगसमीवे सारादीदाह अगणिम्मि ॥७०७॥ वि-
जण अभिधारण वाते हरिए जह पुढविए तसेसु च । एमादि ०-

रिक्खियत्ता वतदाणमिमेण विहिणा सो ॥३०८॥ दव्वादि पसत्थे व-
ता एक्केक्कं तिगुणणोवरिं हेट्ठा । दुविहा तिविहा य दिसा आ-
यंबिलणिव्विगतिगा वा ॥दारं ॥३०९॥ पितिपुत्ताणं जुयला दोण्णि
तु णिक्खंत तत्थ एगस्स । पत्तो पिता ण पुत्तो एगस्स तु पुत्तो
ण तु थेरो ॥३१०॥ ताहे तु पण्णविज्जति दंडियणायं तु कातु
भण्णइ तु । मा गेण्ह अरुग्गाहं रातिणिओ होति एसवि ता ॥
३११॥ एवं सो पण्णवितो जदि इच्छे तो उवट्ठवेंती तु । णे-
च्छंते पंचाहं हंती दो तिण्णि वा पणगा ॥३१२॥ वत्थु सभावा
सज्ज व जाऽधीतं ताव तं परिच्छंति । एवं रायअमच्चे सं-
जतिमज्झे महादेवी ॥दारं ॥३१३॥ राया रायाणो वा दोण्णि वि-
समपत्त दोसु पासेसुं । ईसरसेट्ठिअमच्चे णियम घडा कुल दुवे
खुड्डे ॥३१४॥ समयं तु अणेगेसुं पत्तेसु अणभिओगमावलिया ।
एगतो दुहतो व ठिता समराइणिता जहासण्णं ॥३१५॥ ईसिं अ-
णोयइत्ता वामे पासम्मि होति आवलिया । अहिसरणम्मि य व-
ड्ढी ओसरणे सो व अण्णो वा ॥दारं ॥३१६॥ उवट्ठावियस्स एवं
संभुंजणता तहेव संवासो । बितियपदं संबंधी ओमादिसु मा हु
बहिभावं ॥३१७॥ भुंजीसु मए सद्धिं इयाणि णेच्छति तु मा तु
बहिभावं । अहिखायंति च ओमे पच्छन्ने जेण भुंजंति ॥३१८॥
एमादिणा तु भावं ताहे अप्पत्त अहव पत्तं वा । उवट्ठावेतु भुंजति
अपरिणते चित्तरक्खट्ठा ॥३१९॥ उवट्ठाविए संभुत्ते संवासो ए-
त्थ होति कायव्वो । बितियपए संवसेज्जा अणुवट्ठवियं पिमोहिं
तु ॥३२०॥ अण्णत्थ णत्थि ठाओ अहुवा होज्जाहि सोऽवि एगं-
गी। ण य कप्पति एगस्सा संवासो तेण संवासो ॥३२१॥ सच्चि-
त्तदवियकप्पो एमेसो वन्निओ महत्थो तु । अच्चित्तदवियकप्पं
एत्तो वोच्छं समासेणं ॥३२२॥ आहारे उवहिम्मि य उवस्सए
तह पस्सवणए य । सेज्जाणिसेज्जठाणे दंडे चम्मे चिलिमिणी य
॥३२३॥ अवलेहणिया दंताण धोवणे कण्णसोहणे चेव । पिप्पल-
ग सूति णखाण छेदणे चेव सोत्तसमे ॥३२४॥ आहारो खलु दु-
विहो लोइय लोउत्तरो य णायव्वो । तिविहो य लोइओ खलु तत्थ

इमे होइ णायव्वो ॥७२५॥ भायणे भोयणे चेव भुंजियव्वे तहेव
य। भायणे तु इमं थेरा गाहासुत्तमुदाहरे ॥७२६॥ सुवण्णरज-
ते भोज्जं मणिसेले चिलेवणं। अविदाही घतमायसे पयं तंबे पा-
णसुहं च मिम्मते ॥७२७॥ सूपोदणं जवण्णं तिन्नि य मंसाणि
गोरसो जूसो। भक्खा गुललावणिया मूलफलं हरियगं डागो ॥
७२८॥ होइ रसालो य तहा पाणं पाणीय पाणगं चेव। सागं च-
ऽट्ठारसहा णिरुवहतो लोगपिंडो सो ॥७२९॥ सूवगहणेणं गहिता
वंजणभेदा उ जत्तिया लोए। ओदणगहणेणं पुण सत्तविहो
ओदणो गहियो ॥७३०॥ जो तू जवण्णं भण्णति तिन्नि तु मंसा-
णि जलयरादीणं। गोरसो खीरादीउ मुग्गपडोलादि जूसो तू ॥७३१
॥ भक्खविहि उल्लसुक्खा गुलकत तह लावणी त बोद्धव्वा। मू-
लग अल्लगमादिमूलं अंबादि फलगं तु ॥७३२॥ हरितग मूलकु-
टेरगभूयणगादी य होंति णायव्वो। डागो य गोरसकओ पजेव-
णादी बहुविहाणो ॥७३३॥ दो घतपला महुपलं दहिस्स अद्धाढयं म-
रिय वीसा। खंड तुलादसभागो एस रसालू णिवइजोगो ॥७३४॥
खंड तुलादसभागो दस खंडपला हवंति णायव्वा। ते तम्मि प-
क्खिविता मज्जिय णामं रसालोत्ति ॥७३५॥ पाणं मज्जविही-
ओ पाणीयं धारपाणियादीयं। दक्खादिपाणगाइं सागेणं वंजणा
जे तु ॥७३६॥ एवं अट्ठारसहा णिरुवहतो दइढगादिपरिहीणो।
ण य उवहुम्मति जेणं रसादि छट्ठेण दव्वेणं ॥७३७॥ परिसुक्कं
दाहिणतो दव्वाणि सव्वाणि वामतो कुज्जा। णिद्धमहुराणि पुव्वं
मज्झे अंबं दवंताणि ॥७३८॥ परिसुक्खं सालणगादि तं गिण्ह
सुहं तु दाहिणकरेणं। वामेण पाणगादी तेण तयं वामपासम्मि ॥
७३९॥ अप्पाइज्जति देहं पुव्वं तू णिद्धमहुरदव्वेहिं। पेतादीहिं
णियमा केवइयं तं तु भोत्तव्वं ॥७४०॥ अद्धमसणस्स सव्वं-
जणस्स कुज्जा दवस्स दो भाए। वातपवियारणट्ठा छब्भागं
ऊणयं कुज्जा ॥७४१॥ तं पुण एयपमाणं आदी मज्झे तहेव
अवसाणे। केरिसयं भोत्तव्वं तस्स इमं गाहमाहंसु ॥७४२॥
असतामिव संजोगं पण्णा भोयणविहिं उवदिसंति। लुक्खं दवा-

वसाणं मज्झविचित्त महुरमादि ॥७४३॥ असता असज्जणा
दुज्जणा य एगट्ठिताणि एयाणि । तेहिं सम जा मेत्ती सं-
जोगो सो तु णायव्वो ॥७४४॥ गुलमहुरा उल्लावा तेसिं पु-
व्वं करिंति य पियाइ । मज्झे य होंति मज्झा महुरा विगतिं
च दाएंति ॥७४५॥ कुव्वंति य भासंति य अवसाणे तारि-
साणि जेहिं तु । जिज्झति सव्व सुकयं एवं किर भोयणं भुंजे
॥७४६॥ आदिए णिद्धमहुर मज्झ विचित्तं दवलुक्ख अवसाणे
। तेणं विपागमेत्ती दुज्जणमेत्ती व अवसाणे ॥७४७॥ कुस-
लाभिहिएणं पुण तं भोत्तव्वं इमेण विहिणा तु । असुरसुरं अ-
चवचवं अद्दुतमविलंबियं चेव ॥७४८॥ अयमण्णोऽवि विही
खलु भोयणजायम्मि होति णायव्वो । जारिसयं ण भोत्तव्वं दो-
सा जे यावि भुत्तस्स ॥७४९॥ अच्चुण्ह हुणइ रसं अतियंबं इं-
दियाइ उवहुणति । अतिलोणियं च चक्खुं अतिणिद्धं भंजते गह-
णिं ॥७५०॥ आहारियम्मि एवं णीहारेणं अवस्स भवियव्वं ।
तत्थ ण धारे वेगं दोसा य इमे धरिज्जंते ॥७५१॥ मुत्तनिरोहे
चक्खु वच्चणिरोहे य जीवियं हुणति । उड्ढणिरोहे कोढं सु-
क्कणिरोहे भवे अपुमं ॥७५२॥ तेइच्छियधूताए आहरणं तत्थ हो-
इ कायव्वं । तेइच्छिम्मते राया पुच्छति पुत्तत्थि णत्थित्ति ! ॥७५३॥
णत्थित्ति अत्थि धूया राया बेती अहिज्जउ सत्थं । पिउसंतिओ
य भोगो तह चेव य तीयणुण्णातो ॥७५४॥ मच्छरिता विज्जऽ-
ण्णे बेती किं एस णाहिति वराई । भिसमत्थं अहवा से परिच्छि-
उं दिज्ज अह भोगे ॥७५५॥ सद्दावेतुं पुट्ठा किमधितं ते त्ति ते-
सिं सा पुरतो । तोऽणाए वातकम्मं सद्देण कतं हसे वेज्जा ॥
७५६॥ तो भणति णिव सा तू एते वेज्जा ण चेव तु णरिंद ! ।
ण य जाणंती सत्थं कहंति बेती इमं सुणसु ॥७५७॥ तिण्णि
सल्ला महाराय ! अस्सिं देहे पइट्ठिता । वाउमूत्तपुरीसाणं प-
त्तवेगं ण धारए ॥७५८॥ णिम्मुहिकता तु वेज्जा तीए साविय
पतिट्ठिता तहियं । तम्हा ण धारए वेगं वायालीण तु सव्वेसिं
॥७५९॥ एवं भुत्ते समाणे जति वातादी पकोव गच्छेज्जा ।

जाणेज्ज तेसि वेलं पच्चूसादी इमं तहियं ॥७६०॥ सिंभो वड्ढति प-
च्चूसे पदोसे पित्तमड्ढरत्तम्मि । मज्झंतिए य वाओ वड्ढति पु-
व्वावरण्हे य ॥७६१॥ तत्थ ण वेज्जो पुच्छिज्जती तु तेसिं तु वेल
सच्चेव । कुवियाण अवेलाए ण्हे किरिया इमा तेसिं ॥७६२॥
तित्तकडुएहिं सिंभं जिणाहि पित्तं कसायमहुरेहिं । णिद्धुण्हेहि
य वायं सेसा वाही अणसणाते ॥७६३॥ केरिसए कालम्मी आहमो
केरिसो तु पुरिसेणं । आहारेयव्वो खलु तत्थ इमो वण्णितो सो य
॥७६४॥ सीते उण्हं पविसेज्जा उण्हे सीय पवेसए दव्वं । णिद्धे लु-
क्खं पविसेज्जा लुक्खे णिद्धं पवेसए ॥७६५॥ जो वाही णिद्धेणं
समुट्ठितो तस्स लुक्खकिरिया उ । लुक्खेणमुट्ठियस्स तु कायव्वा
णिद्धकिरिया तु ॥७६६॥ एसो तु लोइओ खलु पिंडो तू वण्णिओ स-
मासेणं । दारं । लोउत्तरिए पिंडे वणिज्जति पिंडणिज्जुत्ती ॥७६७॥ पिं-
डे उग्गम उप्पायणेसणा संजोयणा पमाणे य । इंगाल धूम कारण
अट्ठविहा पिंडणिज्जुत्ती ॥७६८॥ पुढवाईया भेदा वत्तव्व जहक्क-
मेण पिंडस्स । गविसणमादीया वि य एसणभेदा य तह चेव ॥७६९॥
उग्गममादी दोसा सव्वे य जहक्कमेण वत्तव्वा । जह भणिय पिं-
डणुत्तीइ णवरि इमो पूतिए विसेसो ॥७७०॥ सचय कोट्ठग दा-
सय डाए तह गोरसे य लोणे य । लवणणेहे हिंगू दालिम तह
तित्तए चेव ॥७७१॥ अगडारामे पुत्ते तुंबे फलही तहेव गाओ य ।
एतारिसे समुप्पण्णे गहणं णणु कस्स केरिसय ॥७७२॥ भत्तस्स उ-
वक्खेवो गोरसमादी तु संचतो होति । सो संघट्ठा ठवितो भावे अ-
वोच्छिण्णे अगिज्झो ॥७७३॥ अत्तट्ठिय परिभुत्ते कप्पति भावम्मि ता-
हे वोच्छिण्णे । कह वोच्छिज्जति भावो सोतूण अफासुदोस तु । दारं ॥
७७४ । कोट्ठग तंदुल लिहडा समणट्ठा सिं कडा ण कप्पंति । अह
दुच्छाए सजयट्ठा आयट्ठोवक्खडा कप्पे ॥७७५॥ आयट्ठाए दुछडा
सजयअट्ठा तिच्छडा ण कप्पे । जदेवि य आयट्ठाए आरभो हो-
ति तेसि तु दारं ॥७७६॥ एमेव य दारुसागाइयाइं जाइ अफासु-
दव्वाइं । अत्तट्ठणिट्ठिताइ कप्पे समणट्ठ णवि कप्पे ॥७७७ ॥
गोरसहिंगू तेल्लादि दालिमे तित्तकडुयदव्वाइ । लंबण गुलो य

भण्णंति संचियमेवाहि सपरट्ठ ७७८ फासुयादव्वा जे तू अजो-हिण्णम्मि भावे ण तु करे । [illegible] वसइ वोच्छिण्णभावे य कप्पंति । [illegible] ७७९ । [illegible] आरामं वणिं अ-हव रोवेज्ज । [illegible] कोई [illegible] न दाहिंति ॥७८०॥ तत्थ वि संजयजोग्गा संजयट्ठा कडा ण कप्पंति । अत्तट्ठाए कं-ता पुण कप्पंति तदुत्तं जइ उ ॥७८१॥ पुत्तं जणेज्ज कोई आय-रिओ मज्झ अपडिकारो त्ति । तेमि सड्ढाओ होहिति पव्वावेउं तु, सो कप्पे ॥७८२॥ भायणअट्ठा तुंबीओ वावे फलेहि य वत्थमा-तट्ठा । संजयट्ठाए जा सुत्तं आतट्ठ निट्ठम्मि पुण कप्पे ॥७८३॥ एतो संजयट्ठाते आतट्ठासुत्तमादिकं ण कप्पे । जम्हा गहण अजो-ग्गो तु संजतट्ठाए कारितो ॥७८४॥ संजत अट्ठा कितो आ-तट्ठोवट्ठितो य तत्तो य । कप्पति जम्हा य कतो संजतजोग्गो तु आतट्ठा ॥७८५॥ एवं गावीओ वी कोइ किणिज्जाहि संजयट्ठाए । आतट्ठ दूढ कप्पे समणट्ठा दूढ णो कप्पे ॥७८६॥ एसो पुतिवि-सेसो भणितो पुव्वं तु पिंडुनुत्तीए । दारं । एत्तो उवहीकप्पं वोच्छा-मि गुरूवएसेणं ॥७८७॥ दुविहो य होति उवही पत्ते वत्थे य ओहुवग्गहिए । जिणथिरअज्जाण तहा वोच्छामि अहाणुपुव्वीए ॥७८८॥ पाए उग्गम उप्पायणेसणा संजोयणा पमाणे य । इं-गाल धूम कारण अट्ठविहा पातणिज्जुत्ती ॥७८९॥ जह संभव णेयव्वा पिंडगमेणं तु पातणिज्जुत्ती । सव्वात्थुग्गममादी जहा जहा जे तु जुज्जंति ॥७९०॥ पातपमाणं तु इमं पमाणदारम्मि हों-ति वत्तव्वं । मज्झजहण्णुक्कोसं वोच्छामि अहाणुपुव्वीए ॥७९१॥ ति-ण्णि विहत्थी चउरंगुलं च भाणस्स मज्झिमपमाणं । एत्तो हीण जहण्णं अतिरेगतरं तु उक्कोसं ॥७९२॥ उक्कोस तिसामासे दु-गाउअद्धाणमागतो साहू । भुंजति एगट्ठाणे एयं किर मत्तगप-माणं ॥७९३॥ एवं चेव पमाणं अतिरेगतरं अणुग्गहपवत्तं । कं-तारे दुब्भिक्खे रोहगमादीसु भइयव्वं ॥७९४॥ वट्टं समचउरंसं होति थिरं थावरं च वण्णं च । हुंडं वाताइद्धं भिण्णं च अ-धारणिज्जाइं ॥७९५॥ संठियम्मि भवे लाभो पतिट्ठा सुपति

दिहए । णिव्वणे किन्निमारोग्ग सव्वणे वणमादिसे दार ॥७९६॥
वत्थे उग्गम उप्पायणेसण जोयणा पमाणे य । इंगाल धूम कारण
अइहविडा वत्थणिज्जुत्ती ॥७९७॥ एत्थ वि य जहासम्भव घोसे-
यव्वाइं सव्वदाराइं । पडलादिपमाणाणि य पमाणदारे समोतारो
॥७९८॥ गिम्हसिसिरवासासु य पडला उक्कोसमज्झिम जहन्ना
। गणणेकणं कमसो पच्छादा पुविम्मे सोच्छामि ॥७९९॥ एमेव
य पच्छादा पुरिसं खेत्तं च कालमासज्ज तिण्णादी जा सत्त तु
परिजुण्णा पाउणेज्जाहि ॥८००॥ पुरिसो असहू कालो सिसिरो
खेत्तं व उत्तरपहादी । गिम्हेऽवि पाउणेज्जा तोरिसयं देसमास-
ज्ज ॥८०१॥ एवं तु उग्गमादिसु सुद्धो सव्वोऽवि एस उवही उ
धारेयव्वो णियतं अहाकडो चेव जहलिहिणा ॥८०२॥ असती ते-
णेण जुन्नो जोगि ओहोवही उवग्गहितो । छेदणभेदणकारणे जा
जहिं आरोवणा भणिता ॥८०३॥ तिविह असति त्ति जा सा दव्वे
काले य होति पुरिसे य । दव्वम्मि णत्थि पात ओमोदरिया
य कालम्मि ॥८०४॥ पुरिसो य उग्गमंतो ण विज्जती एस पु-
रिस असती तु । अहवा अणत्त अथिरं अधुव संतासती ति-
विहा ॥८०५॥ अहवा तिग त्ति असती अहाकडाण अप्पपरिक-
म्मं । तस्सऽसति अपरिकम्म तं तु विहीए इमाए तु ॥८०६॥
चत्तारि अहागडए दो मासा होंति अप्पपरिकम्मे । तेण परि वि-
मग्गेज्जा दिवड्ढमासं सपरिकम्मं ॥८०७॥ पुणसद्दा तिक्खुत्तं वि-
मग्गियव्व तु होति एक्केक्कं । एवं तु जुत्तजोगी अलभंतो
गिण्हती ततियं ॥८०८॥ अहवा असिवोमेहिं रायदुट्ठे व से
गुरूणं वा । सेहे चरित्त सावय भए य ततियं पि गिण्हेज्जा
॥८०९॥ असिवादि पुव्व भणिता गुरूवमग्गो गुरू भणिज्जाहि
अच्छाहि ताव अज्जो तत्थ तु ते कारण विदंति ॥८१०॥ एतेहिं
कारणेहिं अहगडवज्जेण दोण्ह गहिताणं छेदणमादी कुव्वं
जयणाए होति सुद्धो तु ॥८११॥ णिक्कारणगहणे उण वेराहुणा
होति संजमायाए । छेदणमादीएसुं जा जहि आरोवणा भणिता
॥८१२॥ तं पुण सपरिकम्मं जयणाए होति तिंपियव्वं तु ।

एतेण तु नेसेणं लेवगाहणं तु वण्णेऽहं ॥८१३॥ हरिते बीजे चले जुत्ते वच्छे साणे जलादिहते । पुढवी संपाइमा सामा मड्याए महिया हिमे ॥८१४॥ एव लेवगाहणं जहक्कमं वण्णितं समासेणं । दारं । ओहोवहुत्तग्गाहित उग्गिगोऽह समासेणा ॥८१५॥

जिणकप्प थेरकप्पे अज्जाणं चेव ओहुवग्गाहितं । वोच्छामि समासेणं जहण्णगा मज्झिमुक्कोसं ॥८१६॥ पत्त पत्तावंधो पायट्ठवण च पायकेसरिया । पडलाइं रयत्ताण च गोच्छओ पायणिज्जोगो ॥८१७॥ तिण्णेव य पच्छागा रयहरणं चेव होइ मुहपोत्ती । एसो दुवालसविहो उवही जिणकप्पियाणं तु ॥८१८॥ उक्कोसिओ उ चउहा मज्झिमगा जहण्णगोवि चउहा उ । पच्छादतिग उग्गहो जिणाण अट्ठ होंति उक्कोसो ॥८१९॥ पडलाणि रयत्ताणं रयहरण पत्तबंधमज्झिमगो । गोच्छग पत्तट्ठवण मुहणंतग केसरि जहण्णो ॥८२०॥ जिणकप्पियाण एसो सेसाण वि णिग्गयाण एसेव । थेराण अतिरेगो मत्तो तह चोलपट्टो य ॥८२१॥ उक्कोस जहन्नो तु जो च्चिय जिणकप्पियाण सो चेव । मज्झिमए अतिरेगो मत्तो तह चोलपट्टो य ॥८२२॥ एसेव चोद्दसविहो चोलट्ठाणम्मि णवरि कमढं तु । अज्जाण इमो अण्णो ओहोवहि होति णायव्वो ॥८२३॥ ओगहणंतगपट्टो अद्धोरुग चलणिया य बोद्धव्वा । अब्भिंतर बाहिणियंसणी य तह कंचुए चेव ॥८२४॥ उक्कच्छिय वेकच्छिय संघाडी चेव खंधकरणी य । ओहोवहिम्मि एते अज्जाण पण्णवीसं तु ॥८२५॥ उक्कोसो अट्ठविहो मज्झिमओ होति तेरसविहो तु । चउहु जहन्नो सो च्चिय जो जिणकप्पे समक्खाओ ॥८२६॥ पच्छादतियं उग्गह णियंसणब्भंतरी य बाहिरिया । संघाडि खंधकरणी य अट्ठहा होति उक्कोसो ॥८२७॥ पत्ताबंधो पडला रयहरणं पादपुंछण चेव । मत्तग कमढग ओगाहणंते तह पट्टए चेव ॥८२८॥ अद्धोरुए चलणिया कंचुग ओक्कच्छि तह विकच्छी य एसो तु तेरसविहो मज्झिम उवही तु अज्जाणं ॥८२९॥

एसो तु ओहुउवहि एत्तो सेसो तु होतुवग्गहिओ । सथारपट्ट
मादी तु णेगहा होति णायव्वो ॥८३०॥ दुविहोवहीवि एसो जह
क्कम वण्णितो समासेणं । दारं एत्तो उ उवेसणयं वोच्छामि
आणुपुव्वीए ॥८३१॥ भिसगादिउवेसणय वासारत्ते उ पाणद-
यहेतु वेहासट्ठा घिप्पइ तं चिय सावंगपस्सवणं ॥८३२॥
विस्समणट्ठा थेराण घेप्पती । दारं । एत्तो वोच्छ सेज्जं तु ।
सेज्जा संथारो या एगट्ठं होति णायव्व ॥८३३॥ सव्वंगिया
व सिज्जा होति असव्वंगितो तु संथारो । एगंगिअ णेगंगी परि-
साडी अपरिसाडी य ॥८३४॥ एतेसिं सव्वेसिं अट्ठहिं दारेहिं
मग्गणा होति पिंडणिज्जुतिगमेणं णेयं जहसंभवं सव्वं । दारं ।
॥८३५॥ णिसियणहेतु णिसेज्जा रयहरणपमाणओ गहेयव्वा ।
किं पुण घिप्पइ सा तु भण्णति सुण कारणमिमेहिं ॥८३६॥
पुरिसे पुढवि ससरक्खे पच्छाकम्से तहेव अचियत्ते । बाउस-
परिहरणाए सथारणिसेज्जणुण्णाता ॥८३७॥ राजादी पव्वइओ
भूमीए अणंतरं णिवेसंतो । विप्परिणमेज्ज तेणं संथारणिसे-
ज्जणुण्णाता ॥८३८॥ मीससचित्तधराए अद्धाणादीसु मा वि-
राहणता । उण्हाए पुढवीए तेण णिसिज्जा य संथारो ॥८३९
॥ एमेव य ससरक्खे सच्चित्ते संतरं भवे जयणा । सागारिय
च इहरा धूलीउग्गुंडियसरीरो ॥८४०॥ कज्जेण गिहिणिसेज्जा-
गतस्स वत्थम्मि मइलिए गिहिणो । ओफुंसणधोवणादी का-
रेज्जा पच्छकम्म तु ॥८४१॥ अचितत्तं वा सि भवे धूलीउ-
ग्गुंडितपुते णिविट्ठम्मि । अहवा बाउसदोसा पप्फोडिंते धुवं
ते वा । दारं ॥८४२॥ ठाणं तिविहं भणितं उड्ढनिसीयण तुय-
ट्ट ठाण च । उड्ढ काउस्सग्गो णिसीयण णिवेट्ठ ठाण
च ॥८४३॥ होति तुयट्ट णिवण्णं पडिलेहपमज्जियाण काय
व्वं । सेज्जणिसेज्जाणं व ठाणं अहवावि ठाणं तु । दार ॥८४४
॥ लट्ठी आतपमाणा विलट्ठी चउरंगुलेण परिहीणा । दंडउ
बाहुपमाणो विदंड ओकच्छगपमाणो ॥८४५॥ दुट्ठपसुसाणसा-
वदविज्जलविसमेसु उदयमग्गेसु । लट्ठी सरीररक्खा तवसंजम-

साहिगा भणिता । दारं ॥८४६॥ चम्मपडितलिय-खल्लगवज्झादी होज्ज चम्मगहणं तु । अत्थुरणपादरक्खा फुडिए तह संधण-ट्ठादी ॥८४७॥ अरिसभगंदलकच्छू छप्पतिगित्तणाति अत्थु-रणगं तु । दुब्बलपाए चक्खू अद्धाणादीसु तलिया तु ॥८४८॥ फुडियविविच्चणहंगुलिरक्खट्ठा खल्लकोसगा होंति । वज्झा तु संधणट्ठा अद्धाणादीसु छिण्णा य । दारं ॥८४९॥ रज्जु-मयी पोत्तमयी कंबलमयि तह य दंडकडगमयी । पंचविहा चिलमीणि तु वण्णिता एस पुव्वं तु । दारं ॥८५०॥

उडुबद्धे रयहरणं वासावासासु पादलेहणिया । व-ड उंबरे पितिंखू तस्स अलम्भम्मि चिंचिणीया ॥८५१॥ उभओ णहसंठाणा सच्चित्ताचित्तकारणा मसिणा । सचि-त्तेगेण फुसे पासेणेगेण अच्चित्तं । दारं ॥८५२॥ कण्णाण सोहणं पुण कण्णाण मलेण संचिएणं तु । दुक्खेज्ज जस्स कण्णा न सुणेज्ज व सो तु गिण्हेज्जा । दारं ॥८५३॥ पविर लदंतो थेरो मित्यादीणं तु दंतलग्गाणं । लेवाड अरतिसीरि य रक्खट्ठा गिण्ह सोहणयं । दारं ॥८५४॥ अद्धाणोमा-दीसुं पिप्पलतो विकरणट्ठ कंदाणं । माणाहिगवत्थादी प-गासमुडभाणकरणट्ठा । दारं ॥८५५॥ जुण्णाण संधणट्ठा सूई णक्खखव्वणं तु कंटाणं । उद्धरणट्ठ णहाण य छेद-णट्ठेतुं गहेयव्वं । दारं ॥८५६॥ उच्चारमत्तगादी अण्णोऽवि य बहुविहुप्पगारो तु । ओवग्गाहिओ भणिओ उवग्गहट्ठा महाणेस्स ॥८५७॥ सव्वोऽवि एस उवघाय दोस परिव-ज्जिओ धरेयव्वो । बीसतिधा उवघातो तस्स इमो होति णायव्वो ॥८५८॥ उग्गम उप्पायण एसणा य पडिक्क-मणा य परिहरणा । अचियत्त वतीयारे तहेव परियट्ट-णा विहिया ॥८५९॥ उग्गमम्मि य अण्णाते पामिच्चे य प-ग्गहणे । तेरिच्छया हया चेव तदा तेणाहडेति या ॥८६०॥ अण्णाणोवहडे चेव मालोहड अरक्खिए । कते य कारिते चेव बंधणे य विराहणे ॥८६१॥ विवण्णकरणे चेव एमेता पडिव-

त्तिओ । एते पत्तेय उवघाता उवहिस्स तु वीसति ॥८६२॥ उग्गमेणं तु असुद्धं तहा उप्पायणेसणा । उवहिं उवहतं जाणे वोच्छामि परिकम्मणे ॥८६३॥ परिकम्मे चउभंगो कारणे विहि बीतिओ कारणे अविही । तइओ णिक्कारणम्मि य विही चउत्थ णिक्कारणेऽविही ॥८६४॥ गगारदंडी वेलतिग खीलगमादी य होति अविही उ । णिक्कारणम्मि तीय तु परिकम्मे तम्मि उवघातो ॥८६५॥ भाणस्स वि परिकम्मं णिस्सोयण तेव सिव्वणादी य । णिक्कारणम्मविहीए कुणमाणे होति उवघातो । दारं ॥८६६॥ अब्भिंतरं च बाहिं बाहिं अब्भिंतरं करेमाणो । परिभोगविवच्चासे उवघातो होति णायव्वो । दारं ॥८६७॥ णियगोवहिपरिभोगं समणुण्णाणं ण देति कज्जम्मि । जो भंडमच्छरीयत्तणेण उवहिस्स उवघातो ॥८६८॥ ततियारे पडिहारियवत्थं पादं च जो गहेऊणं । पुण्णेवि तम्मि काले अणपुच्छ धरेंत उवघातो ॥८६९॥ लोइय लोउत्तरियं परियट्टिय जो तु गिण्हती उवहीं । उग्गमदोस असुद्धं च उवहतं तं तु णायव्वं ॥८७०॥ अण्णाणमागतस्स तु जस्स उ उवहिस्स उग्गमो ण णज्जे । सोऊणं परिभुंजति उप्पायंते य णायम्मि । दारं ॥८७१॥ पामिच्चं उज्जुयगं उच्छिण्णं चेव होति णायव्वं । लोइय लोउत्तरियं तु उवहतं तं वियाणाहि ॥८७२॥ अण्णवहंते असंते दिण्णे साहुस्स अण्ण जदि वाहे । तं तु पवाहणदोसा उवही तू उवहतं जाणे ॥८७३॥ सुणएण वानरेण व जह खवगमादि हरितुमाणीतं । दिज्जंतमदिज्जं वा गेण्हंतं उवहतं जाणे ॥८७४॥ अण्णाणोवहतो खलु वत्थादि अकप्पिएण जो गहिओ । दारं । मालोहडो तु उवही ओलइओ जो तु वेहासा ॥८७५॥ अणरीक्खिउत्ति सुण्णं उवहिं मोत्तूण जो उ गच्छेज्जा । भिक्खादीणट्ठाए सोऽवि य उवहिस्स उवघातो । दारं ॥८७६॥ सयमेव करे उवही णिसेज्जाई सोऽवि ओहतो होति । दारं ॥ कारेइ व अण्णेणं उवघातो सोवि बोधव्वो ॥८७७॥

संधति भिण्ण अविहीभिण्ण च धरेति सोवि उवघातो । सुव्व- ण्ण च दुवण्णं करेज्ज मा तं तु हीरेज्जा ॥८७८॥ दुव्वण्णं च सुवण्णं विभूसहेउं तु जो करेज्जाहि ।दारं । उवहि उवघात एते अहवा अण्णेऽवि हेोंति ॥८७९॥ पंचट्ठ य पण्णरसा सोलस दस चेव होति ठाणाणि । चत्तारि एक्कगाइ बारस वीस च ठा- णाइ ॥८८०॥ दव्वे खेत्ते काले भावे पुरिसे य होति पंचेव । एए सि पंचण्हवि परूवणा होति कायव्वा ॥८८१॥ दव्वे अणाल अधुव च तहा अधारणिज्जं च । एतेसुं चउसुंपी उ पदेते भंग सोलस उ ॥८८२॥ अहवा सहुद्धणाइं खित्ते काले य अच्चियत्तं जं तु । भावे जहा गिलाणो भुंजे अगिलाण तह चेव ॥८८३॥ पुरि- से असहू तु जहा सहू वि परिभुंजते तहा उवहीं । रायादी पव्व- इओ अहवा पुरिसो हवेज्जाही ।दारं ॥८८४॥ अहवा गारवमुच्छा अचियत्तातिरित्त बाउसत्तं च । पंचेते उवहिम्मी समणेण सया ण कायव्वा ।दारं ॥८८५॥ जोगमकाउमहागडे जो गेण्हति अप्पसप- रिकम्मं वा । अहवा असागिऊणं अप्पं गिण्हं सपरिकम्मं ॥८८६॥ अप्पडिलेहिय गारवमुच्छाविभूसा य होति सत्तमए । अचियत्ते मा मे कोवी छिव्वतुत्ती होति अट्ठमए ।दारं ॥८८७॥ पण्णरसुग्ग- मदोसा अज्झोयरमीसजायमेगं तु ।दारं । उप्पायण सोलसगो एसणदोसा य दसगं तु ।दारं ॥८८८॥ संजोयणा पमाणे इंगाले चेव होति धूमे य । चत्तारि एक्कगा खलु एते ते होंति णा- यव्वा ।दारं ॥८८९॥ बारस ठाण इमे खलु वेदणमादी तु हों- ति छट्ठाणा । आयंकादी छच्चिय अधरण धरणा य उव- घातो ।दारं ॥८९०॥ वेयणवेयावच्चे इरियट्ठाए य संजम- ट्ठाए । तह पाणवत्तियाए छट्ठं पुण धम्मचिंताए ॥८९१॥ आयंके उवसग्गे तितिक्खता बंभचेरगुत्तीसु । पाणदयात- वहेउं सरीरवोच्छेयणट्ठाए ॥८९२॥ वीसं पुण पुव्वुत्ता ते चेव य उग्गमादिणो होंति । एते सव्वे मिलिया णउतिं खलु होंतिउ- वघाया ॥८९३॥ आसीतं ठाणसतं जस्स विसोहीए होति उव- लद्धं । सो जाणती विसोहीं उवघातं वावि तस्सेव ॥८९४॥

णउतिं उवघाता खलु तत्तियमेत्ताबि अणुग्घाताबि । एए दोण्णि वि मिलिता आसीतं होंति हाणसतं ॥८९५॥ एयं चिय आसीयं सयं तु जिणथेर अज्जउवहीहिं । गुणिते होइम सखा जहक्कमेणं तु हाणाणं ॥८९६॥ दो चेव सहस्साइं सट्ठसयं चेव जस्स उवलद्ध । सो जाणती विसोही उवघातं वावि जिणकप्पे ॥८९७॥ दो हाणसहस्साइं पंचेव सयाइं होंति वीसाइ । सो जाणती विसोहीं उवघात वावि थेराणं ॥८९८॥ चत्तारि सहस्साइं पंचेव सयाइं होंति पण्णाइ । सो जाणती विसोही उवघात चेव अज्जाणं ॥८९९॥ एसो उ सोलसविहो अजीवकप्पो समासतो भणितो । एत्तो भ मीसकप्पं वोच्छामि अहाणुपुव्वीए ॥९००॥ एत्तो छहि सोलसहिय दोहिं वि निप्फज्जती य जो कप्पो । दुगसंजोगादीओ सव्वो सो मीसओ कप्पो ॥९०१॥ पव्वावण मुंडावण सिक्खोवट्ठे य भुंज संवासे । एते छ णायव्वा आहारवहादि सोलसयं ॥९०२॥ दुगसंजोगाईया सचित्तअचित्तमीसकप्पाणं । पत्तेयमीसगा वि य णेयव्वा आणुपुव्वीए ॥९०३॥ पव्वावे मुंडावे च व्वावे चेव तह य सिक्खावे । पव्वावे उवट्ठावे पव्वावे चेव संभुंजे ॥९०४॥ पव्वावे संवासे एवं मुंडावणा दुचरिमेहिं । णेया दुगसंजोगा एवं सेसा वि संजोगा ॥९०५॥ ति चउ पण छक्क जोगा एते सचित्त दवियकप्पम्मि । पत्तेय संजोगा एत्तो अचित्त वोच्छामि ॥९०६॥ आहारे उवहिम्मि य आहारे तह उवस्सयमणए य । एव जा णखछेदणता आहारेण चारेज्जा ॥९०७॥ एव अवसेसासु वि उवधादीसु उवरि उवरिं तु । णेया दुगसंजोगा जा पच्छिम सूइणहच्छेदो ॥९०८॥ एमेव सेसगा वी तियगाईया वि सव्वसंजोगा । णेया जा सोलसगो एते पत्तेय अचित्ते ॥९०९॥ चित्तेतराण दोण्हवि एत्तो संजोगतो मुणेयव्वा । मीसगकप्पे णेया दुगमादी सव्वसंजोगा ॥९१०॥ पव्वावे आहारंपि देइ पव्वाविएवि उवहिं च । पव्वावे उवस्सयणं एवं णखछेयणं जाव ॥९११॥ एतेण कमेणेवं दुग तिगमादीसु सव्वसंजोगा । णेयव्वा जाव पच्छिम बावीसमो होइ संजोगो ॥९१२॥ एतेसिं सव्वेसिं संखाणयणम्मि आणणोवाओ । पत्तेयमीसगाण य इमो तु कमसो मुणेयव्वो ॥९१३॥ एगादेगुत्तरिया पदसखप-माणओ ठवेयव्वा । गुणगार भागहारा तेसिं हेट्ठा उ विवरिया । ठवणा ॥९१४॥ पढमं रूवं गुणए भागं व हरे ठवेज्ज जं लद्धं । तम्मि वि पडि-

रासितगुणित भाइए जं भवे लद्धं ॥९१५॥ एवं ठाणे ठाणे पडिरासिय गु-
णियभजिय लद्धाइं । एगाईसंजोगाण होंति संखप्पमाणाइं ॥९१६॥ एक्काई-
संजोगाण होंति एवं तु लक्खणं दिट्ठं । एते सव्वे मिलिता तेसट्ठिं होंति
संजोगा ॥९१७॥ एक्कगासंयोगादिसु उप्पज्जंते उ जत्तिया भंगा । तेसिं
संखाणयणे करणं तु इमं मुणेयव्वं ॥९१८॥ एक्कगासंजोगादिसु जत्ति-
यमित्ता हवंति ठाणाउ । तत्तियमेत्ता दुवगा ठावेयव्वा कमेणं तु ॥९१९॥
२।२।२।२।२।२॥ २।४।८।१६।३२।६४॥ पडिरासिय पडिरा-
सिय अण्णोण्णेणऽब्भसाहि ते दुयगा । जावंतिल्लं ठाणं गुणि एवं जा भवे
संखा ॥९२०॥ एक्कगसंजोगादिसु एक्केक्के भंगसंख जावइया । स च्चिय
एक्कादीहिं पुणरवि संजोग सगुणिता ।२।२।२।२।२।२ ॥९२१॥ पत्तेयं प-
त्तेयं एक्कगमादीण सव्वजोगाणं । सा होति भंगसंखा जहक्कमेणं मुणे-
यव्वा ॥९२२॥ कह भंग भवंतेत्थं भण्णति दिक्खेज्ज अहव बहुआउ ।
मुंडावणादि एवं दुगचउभंगादि चारणिया ॥९२३॥ पच्चयहेउं तहियं
पत्थारो होइ पत्थरेयव्वो । इमिणा उ लक्खणेणं तमहं वोच्छं समासेण
॥९२४॥ भंगपमाणायामो गुरुओ लहुओ य अक्खणिक्खेवो । मत्ता दुगु-
णादुगुणो पत्थारो होति णिक्खेवो ॥९२५॥ एव तू पत्थारिए पिच्छसु ए-
क्कादिए उ संजोगे । जे जत्थ उ णिवडंती पच्चक्खंते तहिं सव्वे ॥९२६॥
छक्कग सोलसगाणं जीवमजीवाण दोण्ह कप्पाणं । एक्कगजोगादीणं सं-
खमाणं इमं होति ॥९२७॥ छच्चेव य पण्णरसा वीसा पण्णरस छक्क
एक्को य । एक्कगासंजोगादी छव्विह सच्चित्तकप्पम्मि ॥९२८॥ सोलस
वीसं च सयं पंचेव सयाइं होंति सट्ठाइं । अट्ठारस वीसाइं तेयालं
अट्ठसट्ठाइं ॥९२९॥ अट्ठेव सहस्साइं अट्ठहियाइं अजीवछट्ठम्मि
एक्कारस य सहस्सा चत्तारि सया तहा चत्ता ॥९३०॥ बारस चेव
सहस्सा अट्ठेव सया उ सत्तरा होंति । अट्ठमसंजोगम्मि वि उक्कम-
तो एव जाणेक्को ॥९३१॥ सच्चित्तदवियकप्पो तेवट्ठी होंति सव्वसंजो-
गा । पंचसता पणतीसा पण्णट्ठि सहस्स अच्चित्ते ॥९३२॥ सच्चित्त-
अच्चित्ताणं एते भणिया तु सव्वसंजोगा । पत्तेयं पत्तेयं एत्तो मीसाण
वोच्छामि ॥९३३॥ अच्चित्तदव्वकप्पे संजोग पिहूपिहे ठवेऊणं । जि-
तकप्पे कमसंजोगगुणित तेसिं फलमिणं तु ॥९३४॥ छण्णउतिं सं-

जोगा दुगसंजोगम्मि मीसए कप्पे । सत्तसया वीसहिगा तियसंजोगाण बोधव्वा ॥९३५॥ तित्तीसं चेव सता सट्ठहिगा तू चउक्कसंजोगे । दस चेव सहस्साइं णववीसहिया य पंचमए ॥९३६॥ छत्ती(व्वी)स सहस्साइं दो चेव सताइं अट्ठ अहियराइं । अडयालं च सहस्सा अउयाला होंति सत्तमए ॥९३७॥ अट्ठाट्ठि सहस्साइं छच्चेव सयाइं होंति चत्तारि । सत्तत्तरिं सहस्सा दो चेव सया भवे वीसा ॥९३८॥ एमेव उक्कमेण वि णवमाउ परेण हुंति बोधव्वा । छण्हंती जा सोले छच्चेव पदा मुणेयव्वा ॥९३९॥ एवं पण्णरस य (वीस य) वीसइण पण्णरस छक्क एक्केणं । पत्तेयं पत्तेयं गुणिएणं रासिणो मुणसु ॥९४०॥ दोण्णि सया चत्ताला अट्ठारसया य होंति णायव्वा । अट्ठ सहस्सा चउसय तातिए मीसम्मि संजोगा ॥९४१॥ सत्तावीस सहस्सा तिण्णि सता चेव होंति णायव्वा । पण्णट्ठि सहस्साइं पंचसया वीस अहिया य ॥९४२॥ एक्कं च सयसहस्सं वीस सहस्सा सयं च बीसहियं । एक्कत्तरिं सहस्सा लक्खेक्को छस्सता चेव ॥९४३॥ एक्कं च सतसहस्सं तेणउइ सहस्स तहय पण्णासा । उक्कमतो सत्तेव य ठाणाइं ततो य पण्णरस ॥९४४॥ तिण्णि सता तू वीसा दोण्णि सहस्साइं चउसयजुयाइं । एक्कारस य सहस्सा दोण्णि सता चेव णायव्वा ॥९४५॥ छत्तीस सहस्साइं चउरो य सता हवंति णायव्वा । सत्तासीइ सहस्सा तिण्णि सता चेव सट्ठहिता ॥९४६॥ एक्कं च सतसहस्सं सट्ठि सहस्सा सयं च सट्ठी य । दो लक्खा अडवीसा सहस्स अट्ठेव य सयाइं ॥९४७॥ दो चेव सयसहस्सा सत्तावण्णं भवे सहस्साइं । चउरो सय अट्ठसए ठाणा सत्तंतिमे वीसा ॥९४८॥ जह पढमे तह पंचमे जह बीए तह चउत्थए रासी । एक्कगगुणकारे पुण सोलसमादी तु जावेक्को ॥९४९॥ अचित्तदविए कप्पे संजोगा सव्वपिंडिता काउं । जितकप्पेक्कादीहिं गुणिते फलरासिणो मुणसु ॥९५०॥

तिण्णेव य सतसहस्सा ठाणसहस्सा हवंति तेणउति । दो य सया य दसहिता एक्कगसंजोगसंगुणिता ॥९५१॥ णव चेव सयसहस्सा तेसीति सहस्स तहय पणुवीसा । बियसंजोग चउक्के वि एत्तिया चेव णायव्वा ॥९५२॥ सत्तसय दस सहस्सा तेरस लक्खा य तियगसंजोगे । पंच य पढमसरिच्छा अचित्तपिंडो उ अंतिमए ॥९५३॥ जिय-

पिंडेणं पिंडो अजीविकप्पस्स संगुणो णियमा । सो होति दव्वपिंडो तस्स उ संखा इमा होति ॥९५४॥ ईयालसतसहस्सा अट्ठावीस भवे सहस्साइं । सत्तसया पचसहिया ठाणाण मीसकप्पंमि ॥९५५॥ जियअजियमीसगाणं कप्पाणण्णो वि भगसजोगा । पत्तेयमीसगा वि य णेयव्वा आणुपुव्वीए ॥९५६॥ पव्वावेक्को एक्कं एक्को अणेगा अणेग एक्कं च । णेगाणेगे य तहा चउभंगा एव एक्केक्के ॥९५७॥ एव एक्कं एक्कसि एक्कमणेगे ऽवि एत्थ वि तहेव । चउभंगो णेयव्वो एक्केक्के छण्ह तु पदाणं ॥९५८॥ एक्केक्कसि पव्वावे मुंडावेक्कं तु एक्कसिं चेव । एत्थ उ दुग संजोगो चउभंगो होति णायव्वो ॥९५९॥ एवं दुतितिय-चउपंच-छक्कजोएहिं जत्तिया जे तू । संजोगा भंगाया ते सव्वे होंति णेयव्वा ॥९६०॥ पव्वावे मुंडेगं पव्वावेगं च मुंडणेगे य । णेगो एक्कं च तहा णेगाणेगे य एमेव ॥९६१॥ एमेव सेसगावी दुगतिग-चउपंच-छक्क-संजोगा । बुद्धीए ऽणुगंतव्वा सव्वेवि जहक्कमेणं तु ॥९६२॥ अच्चित्ते बिय एवं एक्को एक्कस्स देति आहारं । एवं उवहीमादिसु सव्वेसु वि होंति चउभंगा ॥९६३॥ दुगमादी संजोगा एत्थंपि तहेव हुंति विण्णेया । एमेवेक्को एक्कसिं आहारादीणि देज्जाहि ॥९६४॥ एवं दुगमादीया णेया एत्थंपि सव्वसंजोगा । एवं ता अच्चित्ते मीसेऽवि य बुद्धिए जोए ॥९६५॥ (एक्को पव्वावेक्कं आहारादी य देति एत्थवि तहेव । संजोगा णेयव्वा जावतिया संभवे तत्थ) एसो तु दवियकप्पो तिविहो वि समासतो समक्खाओ । एत्तो समासतोऽहं वोच्छामी खित्तकप्पं तु ॥९६६॥ जं देवलोगसरिसं खित्तं णिप्पच्चवाइयं जं च । एसो तु खेत्तकप्पो देसा खलु अद्धछव्वीसं ॥९६७॥ रायगिह मगह चंपा अंगा तह तामलित्ति वंगा य । कंचणपुरं कलिंगा वाणारसि चेव कासी य ॥९६८॥ साएय कोसला गजपुरं च कुरु सोरियं कुसट्टा य । कंपिल्लं पंचाला अहिछत्ता जंगला चेव ॥९६९॥ बारवती य सुरट्ठा मिहिल विदेहा य वच्छ कोसंबी । णंदिपुरं संदिब्भा भद्दिलपुरमेव मलया य ॥९७०॥ वयराड वच्छ वरणा अच्छा तह मत्तियावति दसण्णा । सोत्तियमती य चेती वीतिभयं सिंधुसोवीरा ॥९७१॥ महुरा य सूरसेणा पावा भंगी य मासपुरि वट्टा । सावत्थी य कुणाला कोडीवरिसं च लाढा य ॥९७२॥ सेयविया वि य णगरी केततिअद्धं च आरियं भ-

णितं । जत्थुप्पत्ति जिणाणं चक्कीणं रामकण्हाणं ॥९७३॥ एतेसु विहरियव्वं खेत्तेसुं साहुभाविएसुं तु । जत्थ य गुणा इमे तू खेमाईया मुणेयव्वा ॥९७४॥ खेमो सिवो सुभिक्खो अप्पप्पाणो उवस्सयमणुण्णो । एसो तु खेत्तकप्पो (पासंडुस्सेदमुक्को) गामणगरपट्टणाइण्णो ॥९७५॥ खेमो डमरविरहितो रोगासिवविरहितो सिवो होति । पउरण्णपाणदेसो होइ सुभिक्खो मुणेयव्वो । दारं ॥९७६॥ जलुगा-संखणगा-मूइंगपिसुगसमगादिविरहितो जो तु । सो होति अप्पपाणो अप्प अभावम्मि थेवे य । दारं ॥९७७॥ समभूमि-रेणुवज्जिय-रितुक्खमोवस्सया मणुण्णाओ । गामणगरा वि य बहू पाउग्गा सायकप्पस्स ॥९७८॥ सज्जणजणो य भद्दो जहियं च मणुण्णसाहुजोणीओ । तारिसए खेत्तंमी समणुण्णातो विहारो तु । दारं ॥९७९॥ खेमो य सिवो य तहा खेमो सुभिक्खो य एव संजोगा । णेयव्व धसु पदेसुं सत्तसु वा आणुपुव्वीए ॥९८०॥ अहवोदयग्गिसावदतक्कर-वालभयविवज्जिओ रम्मो । णिरवेक्खोवि वि य जहियं समणगुणविदू य जत्थ जणो ॥९८१॥ एताणि चेव खेमाइयाणि आरियखेत्तसहियाणि । पुव्वभणियाणि जाणि तु ताइं खलु सत्त उ हवंति ॥९८२॥ णाणस्स दसणस्स य चरणस्स य जत्थ णत्थि उवघातो । एसो तु खेत्तकप्पो जहिय च अणायणा णत्थि ॥९८३॥ उदगभयवुज्झणादी जह कोकण-सिंधु-तामलित्तादी । णत्थि जहिं अग्गिभय निरग्गिसाहम्मियगिहा वा ॥९८४॥ जहिय च सावयभयं सीहादीण ण विज्जए देसे । जहियं च णत्थि चोरा देहुवही-पंथमोसादी ॥९८५॥ वाला उ सप्प गोणसमादी ।दार। बोहिगभिय च णत्थि जहिं । मणसो समाहिकारो सो रम्मो होति णायव्वो ॥९८६॥ सूरो अणण्णगम्मो जत्थ णरिंदो तहिं सुहविहारं । साहुगुणे य वियाणति कुणति य साहूण जो रक्ख ।दार ॥९८७॥ अहिरण्णसुवण्णेते छज्जीवणिकायसंजमे णिरता । जाणति जणो य एवं जत्थ तु साहूण गुणणिहसं ।दार ॥९८८॥ सज्झाओ जहि सुज्झति ।दारं। कुदिट्ठागिण्णो ण या वि जो होति ण एसप. इत्थी सोही य जत्थ तहियं णिवासो तु ।दार ॥९८९॥ जहितं च अणायतणा न संति के पुण अणातणा भणिया । साहम्मिभिन्नचित्तामूलुत्तरदोसपडिसेवी ॥९९०॥ एतेहिं जो देसो आइण्णो तह य अन्नतित्थीहिं । मसहीहाइमादी पुलिंददेसा अणायतणा ॥९९१॥ एतारिसम्मि खेत्ते अप्पडिब-

द्रेण विहरियव्वं तु । आलंबणाइ केइ तु इमाणि काउं ण विहरंति ॥९९२॥ वसही संथारो भत्त पाण वत्थे पडिग्गहे सेहा । सड्ढा य पुव्वसंथुय अ- ब्भुट्ठंते य पडिबंधो ॥९९३॥ फासुया एसणिज्जा य णिवाया य रितु- क्खमा । एरिसा साहुपाउग्गा वसही दुल्लभऽण्णहिं । दारं ॥९९४॥ एमेव य संथारा कंबलदब्भादिवत्थुनिप्फन्ना । सयणासणा य जहियं सुलभा जोग्गा य साहूण । दारं ॥९९५॥ भत्तं सुलभमणुण्णं च एरि- सं णत्थि अण्णहिं तत्थ । जंगिय- भंगियमादी जं तु सुलभा अन्नहिं वत्था ॥९९६॥ पडिग्गहगावि य सुलभा सेहा यण्णत्थ णत्थि खेत्तम्मि । अण्णत्थ दुल्लभा तू तेणा तु एत्थ बहुगुणं तु । दारं ॥९९७॥ सड्ढा आहारा- दी दिंति य जोग्गाणि सपुत्ता चेव । पुरपच्छ दिट्ठभद्दा य अण्णहिं ण- त्थि एरिसगा । दारं ॥९९८॥ उडुबद्ध - मासकप्पेण विहारो तं ण सद्दह इ- मेहिं । संजमआतविराहण वच्चंते गाम अणुगामं ॥९९९॥ णाणादीण य हाणी जोग्गा खेत्त तु मग्गमाणाणं । खेत्ताओवि य खेत्त संकमणे धुवमसज्झाओ ॥१०००॥

जे णीयत्ते दोसा मासंते परिवसेण ते चेव । एवं मासविहारे भ- णंतो बहुविहे दोसे ॥१००१॥ णो सद्दहति विहार तेण तु ण विहरेति त- स्स आणादी । मासोवरिं च लहुओ णीयावासे य जे दोसा ॥१००२॥ ते सो पावति सव्वे एतेहुालंबणेहिं अच्छंतो । किं एगतेणेव ण विसेसो भण्णती सुणसु ॥१००३॥ णिक्कारणम्मि एवं पडिबंधो कारणम्मि णिद्दो- सो । ते चेव अजयणाए पुणो वि सो पावती दोसे ॥१००४॥ काणि पुण का- रणाइं जेहिं चिट्ठेज्ज एगठाणम्मि । भण्णति पुव्वुद्दिट्ठा जे खेमसिवादिया दारा ॥१००५॥ तेसिं चिय पडिवक्खा अक्खेम असिव तहय दुब्भिक्खं । बहु- पाणुवस्सओ वा असणुण्णो जो तु दयमादी ॥१००६॥ एतेहिं कारणेहिं एगट्ठा- णम्मि अच्छमाणा उ । जदि जयण ण कुव्वती तेच्चिय सियादिया दोसा ॥ १००७॥ का पुण जयणा तहियं भण्णति तेहिं कारणेहिं उ ठितस्स । अ- ण्णउवस्सयभिक्खादिया तु जयणा मुणेयव्वा ॥१००८॥ अक्खेममादिएसु वि अक्खेमेसुं तु कारणवसेणं । चिट्ठताण तू तहियं इमा तु जयणा मुणेयव्वा ॥१००९॥ अक्खेमे वि संवट्टं गावि आसयंती उ । अक्खेमं च अण्णत्थ तहिं खेमं तो ण णिग्गच्छे । दारं ॥१०१०॥ जइ अ- सिवं तु बहिद्धा ताहे अच्छंति ते तहिं चेव । दुब्भिक्खे वि ण णीतिय

य अहवा सव्वत्थ दुब्भिक्खम्मि ॥१०११॥ दुब्भिक्खे जयणा तहियं अ-
च्छंते वावि जयण तह चेव । बहुपाणे आउत्ता संकमंते तु जयणाए
॥१०१२॥ उवस्सएवि आउत्ता कुडमुहभूतं निवावि लवसंते । अण्णाए
वसहीए होंति पमज्जंति य अभिक्खं । दारं ॥१०१३॥ जा जत्थ जयण
जुज्जति असणुण्णे उवस्सयम्मि तं कुज्जा । कयलरसोइणमादी दुग्गंधे
गंधपविकिरंतो । दारं ॥१०१४॥ उदगभए पलगामे पत्ते च वसही तहिं
तु गिण्हंते । अग्गिभए मालबद्धे हुस्सियलत्तम्मि व वसंति ॥१०१५॥
रोगबहुले अ पुच्छा णिवज्जए चोरिकिण्णि ण तु वेइते । सत्थेण
वावि गच्छे हायंति व जत्थ निरवायं । दारं ॥१०१६॥ जहियं सावयदोसा
तहियं एगाणितो ण गच्छेज्जा । गेण्हे वसहिं च गुत्तं गामस्स तु म-
ज्झयारम्मि । दारं ॥१०१७॥ विज्जामंतादीहिं वाले णीणेति रातो णवि
गच्छे । दारं । रायं य पण्णवेंती साहुगुणमजाणमाणं तु ॥१०१८॥
जत्थ जणो णावि जाणति साहुगुणे तहिं कहेंते साहुगुणे । दारं ।
परिभोग अकालम्मी राति कुव्वंति सज्झायं । दारं ॥१०१९॥ दूरेण कु-
लिंगीए वज्जेंती । दारं । [illegible] य पव्वतए । कुनदी झाणे वसिताइया
य वज्जेंति चरणदड्ढा ॥१०२०॥ वज्जेज्ज अणायतणा पासत्थादीणं चेव ज-
त्थ उवघातो । एवं जइकंमते तं करेज्ज जयणा [illegible] । दारं ।
॥१०२१॥ एसो तु खेत्तकप्पो उस्सग्गववायसंजुतो भणिओ । एत्तो उ
कालकप्पं वोच्छामि अहक्कमेण तु ॥१०२२॥ कालं पज्जोसवणा वुड्ढा-
वास परिहारकप्पे य । उस्सग्गपडिक्कमणे कितिकम्मे चेव पडिलेहा
॥१०२३॥ सज्झायझाणभिक्खे भत्तविचारे तहेव सज्झाए । णिक्खम-
मणे य पवेसे एसा खलु कालकप्पविही ॥१०२४॥ पुव्वं तु मासक-
प्पो पज्जोसवणा जो णिसीहणामम्मि । णवरि तु इहं वसणा वण्णिज्ज-
ति मास अतिरेगे ॥१०२५॥

मासातीते वसतो वसतीए तहिं चेव मासलहुं । तह भि-
क्खायरियाए संथारे तह विहारे य ॥१०२६॥ परिभाडी सपारे सव्वे-
सेतेसु होंति मासलहु । चत्तारि य उवघाता सपाणे असरिसभाडेम्मि
॥१०२७॥ पंचेते मासिया खलु चाउम्मास च भिक्खिय सव्वेते । णव-
मासे मासातीए उडुबद्धे संवसंतस्स । दारं ॥१०२८॥ तहिया तु वास

तीते वसतीए सेस होंति ते चेव । भिक्खायरियादिसु जे भणिता मासतीतम्मि ।दारं ॥१०२९॥ असिवादी उ एसा कालदुवे वण्णिता भणितव्वा । एत्तो पज्जोसवणासमायारिं पवक्खामि ॥१०३०॥ पज्जोसु वासजोग्गं बहिया अच्छंति ता मुदिक्खंता । जे अंतरा उ गिण्हे तस्स य तेसिं सेनीणं ॥१०३१॥ अह पुण वच्चंताण वासाजोग्गा तु अंतरावास । आसन्नउड्डुरगामे ण पडुच्चति एगवसहीय ॥१०३२॥ अणोण्णसुदिहताणं बहुवो सागारिया ण तीरंति । परिहरितुं ताहे व ज्जे गुरु सागरियं णवरि एक्कं ॥१०३३॥ अविसेस समायारी पज्जोसवणाए वण्णिय णिसीहे । सच्चेव णिरवसेसा इमम्मि दारम्मि णायव्वा ॥१०३४॥ वुड्ढस्स तु जो वासो वड्ढी व गतो तु कारणेण तु । एसो तु वुड्ढवासो तस्स तु कालो इमो होति ॥१०३५॥ अंतोमुहुत्तकालं जहण्णमुक्कोस पुव्वकोडी तु । मोत्तु गिहिपरियाग जं जस्स व आउग तित्थे ॥१०३६॥ मरणे अंतमुहुत्तो देसूणा पुव्वकोडि कह होज्जा १। जो तरुणो च्चिय समणो असमत्थो विहरितु जातो ॥१०३७॥ कदा - विज्जा चरियं लाघवेण तवस्सी तत्तो तवो देसितो सिद्धि सग्गो । अह्वाबिहिं संजम पालइत्ता दीहाउसो वुड्ढवासस्स कालो ॥१०३८॥ विज्जा तु बारसंगं करणं तस्स गहणं मुणेयव्वं । सुत्तं बार समाओ तन्नियमेत्ता य अत्थे वि ।दार ॥१०३९॥ घित्तु सुत्तत्थाइ बार समा देसदंसण च कत । चरियं अंतेगदइं लाघविएण तु तिविहेण ॥१०४०॥ उवकरण सरीरिंदिय एवं तिविह तु लाघवं होति । उवकरणऽरत्तदुट्ठो धरेति ण य गिण्हए अहियं ॥१०४१॥ संघयणधितीजुत्तो ओकसो ण तु थूरदेहसारीरो । दारं । वरिसादिओ तवस्सी । दार । चउत्थमादी तवो चिन्नो ॥१०४२॥ कुव्वंतेण अछित्ति णाणादी देसिओत्ति मोक्खपहो । दार । सुत्तत्थुवदेसेणं मजोसिय संजमेणं च । दारं ॥१०४३॥ काऊण अवोछित्तिं बारस वासाइं णिच्चमुज्जुत्तो । दीहाउतो तु सूरी पडिवज्जेब्भुज्जयविहारं ॥१०४४॥ अब्भुज्जयमचयंतो अगीयमीसो व गच्छपडिबद्धो । अच्छाते जुण्णमहल्लो कारणतो वावि अन्नोवि ॥१०४५॥ जंघाबले व खीणे गेलण्णे सहायतो व दोबल्ले । अहवावि उत्तमट्ठे णिप्फत्ती चेव तरुणाण ॥१०४६॥ खेत्ताणं च अलंभे कयसंलेहे व तरुणपरिकम्मे । एतेहिं

कारणेहिं वुड्ढावासं वियाणाहि ॥१०४७॥ केवतियं तु वयंतो खेत्तं कालेण वेडुरितुं अरिहो । केवतियं अणरिहो (अचयंतो) बलहीणो वुड्ढवासी तु ॥१०४८॥ दुन्नि वि दाऊण दुवे सुत्तं दाऊण सुत्तवज्जं च । एव दिवड्ढखेत्तं अणुकंपादीसु वी जतणा ॥१०४९॥ दोण्णिवि सुत्तत्थाइ दुवेत्ति जे जंति गाउए दोन्नि । जाव तु भिक्खावेला एस तु सपरक्कमो थेरो ॥१०५०॥

एसेव अदाऊण अत्थं अहवा अदातु दोण्णि वि तु । दो गाउयाइं दोण्णी तुण्णाए भिक्खवेलाए ॥१०५१॥ एवं दिवड्ढमेग च गाउयं तिन्नि होंति दुक्केक्के । गमया तु मुणेयव्वा विहरण अरिहो स थेरो दु ॥१०५२॥ एस सपरक्कमो तू जो पुण दाऊण उभयसुत्तं वा । गच्छेज्ज अद्धगाउय सपरक्कमो होति एसोवि ॥१०५३॥ सव्वेते विहरंती एतेसु दुगाउयं दिवड्ढं वा । जे जंति गाउयं चिय तिण्हं पेतेम्मि वुड्ढाणं ॥१०५४॥ जेवि य गाउयमद्धं उभयं सुत्तं च दातु गच्छंति । तेसणुकंपा तु इमा कायव्वा होति तिविहाउ ॥१०५५॥ विस्सामणा उवकरणे भत्ते पाणे अ लंबणे चेव । तं च विजाणति कालं गंतुं वा एति जो जत्थ ॥१०५६॥ जयणा सुद्धालभे पणगादी सा तु होति णायव्वा । अपरक्कमं तु थेरं एत्तो वोच्छं समासेणं ॥१०५७॥ खेत्त तु अद्धगाउय कालेणं जाव होति दिवसो उ । खेत्तेण य कालेण य जाणसु अपरक्कमं थेरं ॥१०५८॥ अण्णो जस्स ण जायति दोसो देहस्स जाव मज्झण्हो । सो विहरति सेसो पुण अच्छति मा दोण्हुवि किलेसो ॥१०५९॥ भमो वा पित्तमुच्छा वा उद्धसासो व खुब्भति । गतिविरिए वा संतम्मि इरमादी ण रीयति ॥१०६०॥ गच्छपरिमाणतो तू सहायगा तस्स होंति कायव्वा । सत्तेव जहण्णेणं तेण परं होंति णेगावि ॥१०६१॥ चउभागतिभागद्धे सव्वेसिं गच्छतो परीमाणं । संतासंत असंती वुड्ढावास वियाणाहि ॥१०६२॥ अट्ठावीसं जहण्णेण उक्कोसेण सतग्गसो । गच्छं गच्छं समासज्ज चउभागादी विभायए ॥१०६३॥ जइ होंति अट्ठवीसं चउहा गच्छो उ तो विभज्जति तु । सत्त उ चउभागेणं ते दिज्जंती सहाया उ ॥१०६४॥ पुण्णम्मि मासे तो णिंती सत्त अण्णे उवेंति उ । एव अतिंति णिंति य मास मासम्मि सत्त उ ॥१०६५॥ एवं दोसा ण होंती तु उवट्ठावणादि जे भवे । तेणं

तु अट्ठवीसिआए चउभागा विभज्जिता ॥१०६६॥ अट्ठावीस ऊणा दुट्ठासतीए ऊ ते हवेज्जाहि । संता असंता अगीया पाला वुड्ढा अ जोगा वा ॥१०६७॥ संतासंतीए पुज्जाते नातेया तेण तेणिणदुणिणको भागा उ विभइयव्वा इगवीसा चोद्दसनवहं ॥१०६८॥ गे मदाए अ हंती भिक्ख वक्को य गोगहए उवहि । गेर दुवे गीणो समत्थ अगणो मोलेन्न(भिक्ख)मादीसु ॥१०६९॥ वुड्ढावासे जयणा खेत्ते काले वसहीए संथारे । खित्तम्मि गावगामादी हाणी जावेक्कभागो तु ॥१०७०॥ धीरा कालच्छेदं करेंति अपरक्कमा तहिं थेरा । काल तु अविवरीयं करेंति तिविहा तहिं जयणा ॥१०७१॥ कालच्छेदो मास अगणा सिद्धी तु भिक्खमादीणि । अट्ठसु उडुबद्धेसुं चउमासे सेक्कवाग्गास ॥ १०७२॥ कालं अविवरीयं उडुबद्धे वासवासिय ण करे वासावासे य तहा उडुबद्धं वावि ण करेंति ॥१०७३॥ तिविहजयणोत्ति इणमो तिविहणुकंपा तु होइ वुड्ढस्स । जह कायव्वा इणमो नमहं वो च्छं समासेणं ॥१०७४॥ आहारे जयणा वुत्ता तस्स जोगे र णए । णियया मउया चेव छवेताणेसणादिसु । कालदारं गतं ॥ १०७५ ॥

कोणिट्टपक्कआमे पिंडघरे चेव तह य दारुघरे । कडगो कडगतणघरे वोच्चत्थे होंति चउ गुरुगा ॥१०७६॥ कोट्टिमघरे वसंते भत्तिन्नम्मि ण उज्झए तेणं । कोणिट्टगादिगाउण रक्खइ य णिवात वसही तु ॥१०७७॥ वसहि णिवेसण साही दूरागयणम्मि जे उ पाउग्गो । असती य पडिहारिं मंगलकरणम्मि णीणेति । वसहीति दारं गत ॥१०७८॥ वसही य अट्ठासंथड चंपगपट्टो व चम्मरुक्खो वा । थिरमउओ संथारो असतीय णिवेसणा हाणे ॥१०७९॥ असतीइ साहि वाग्ड(उग) सग्गामे चेव तह य परगामे । कोसद्ध जोयणा दी बत्तीस जोयणा जाव ॥१०८०॥ थिर मउओ अपडिहारी घेत्तव्वो तस्स असति पडिहारी । पिउपज्जयादिफलगं मंगलबुद्धी घरे जं तु ॥१०८१॥ कोइ गिहत्था तं उस्सवादि अतिंति ण परिभुंजंति । तं पणइणा तु णिहिंति होंति य एऊसइ मंगलं ॥१०८२॥ देज्जह नवर छणम्मि अद्दियमाहेत पुणोवि णेज्जाह । तं घेत्तूणं फलगं उस्सव-

देवसम्मि पेसंति ॥१०८३॥ पुण्णंमि ओमेणंती अण्णस्स व वुड्ढ
वासिणो देंति । भेन्नूण कुडुकन्सं आगच्छति चतुलहू सेसे ॥१०८४॥
पडिच्छति मिलंतो वा सयं मिलाणो वि नत्थ वि तह । दारं । भावि
य कुलेसु अच्छंति अनुगए [illegible] दोसा । दारं ॥१०८५॥ ओमादी
तवसा वा अच्छंते दुक्कालोवि एमेव । दारं । पडिच्छम रोगम्मि पडि
चरगा वावि [illegible] ॥१०८६॥ तरुणाण णिक्खन्ती अन्तरे चेव
होति णायव्वो कालियसुय पेहिइगाए नेति कालोऽयमुक्कोसो
॥१०८७॥ संवच्छरं व झरए बारसवासाइ कालियसुयस्स । सोतस्स
य दिट्ठिवाए एसो उक्कोसतो कालो ॥१०८८॥ बारसवासे गहियं
तु कालियं झरति वरिसमेगं तु । गेलन्न दूताबाते गहुण झरणं
दसं दुवे य ॥१०८९॥ गहणझरण कालियसुते पुव्वगते जदि एत्तिओ
कालो । आतरकप्पगामे कालच्छेदो तु कतरेसिं ॥१०९०॥ माया
रकप्पणामं [illegible] नत्थ मासमुदुबद्धे । वासासु चउम्मास एसो
कालो तु कतरेसिं ॥१०९१॥ भणिओ थेरेण समाणेणं कारण-
जातेण एनिओ कालो । सज्जाणं पणगा पुण णवगणगाहण तु से-
साण ॥१०९२॥ णेम्मवणदठा एतेसिं चेव एयं तु कारणज्जायं । जेहि
उ गुणेहिं जुत्ता देज्जंते ते इमे होंति ॥१०९३॥ जे णिण्हुउ धारयिउं च
जोग्गा, थेराण ते देंति विइज्जए तु । णिप्पडंति तदट्ठाणेहिया सुद्धेण
केच्चं च थेरस्स करेंति सव्व ॥१०९४॥ आयज्ज खेत्तकालं बहु
पाउग्गा ण संति खेत्ताउ । णिच्च च विभत्ताणं सच्छंदादी बहू दोसा
। दारं ॥ १०९५ ॥ जइ चेव उत्तिमदट्ठे कतसंलेहस्स हाति एमेव । दारं
[illegible] पुण रोगविमुक्के बत्तीसवइट्ठो । दारं ॥१०९६॥ वुड्ढावा-
सातीए कालादी तेण उग्गहो तिविहो । आलंबणे विसुद्धो उग्गहो तक्क-
ज्जि वोच्छेओ ॥१०९७॥ जं कारण वुड्ढिगतो वासो नहिं कारणे अतीय-
म्मि । मतिपडिभग्गा जे उ आयरिए उग्गहो णत्थि ॥१०९८॥ दुविहो वि
कालतीते सासे चउम्मास उग्गहे छिण्णे । सच्चित्तादी छिण्णो आलं-
बणे तम्मि छिण्णम्मि ॥१०९९॥ कारणसमत्ति पुरओ जो अच्छति
उग्गहे नहिं होति । सच्चित्तादी तिविहं ण तस्स तोहियं इम णातं
॥११००॥ भगवासकुच्छिपूरो उग्गहपडिसेहियम्मि जो कालो गडु होति

उग्गहो से कालदुगे वा अणुण्णाओ ॥११०१॥ जह णाम कोइ पुरिसो घा- ओ आकासकुच्छि पविच्छे । ण हु होति सोवे तित्तो अमुत्तता उवणओ एवं ॥११०२॥ कालदुवेत्ति अणुण्णा गिम्हाए जत्थ चरममासो कओ । अण्णक्खेत्त सतीए तत्थट्ठियाणोग्गहो होति ॥११०३॥ एमेव वासतीते द- सराया तिण्णि जाव उक्कोसो । वासणिमित्तट्ठिताणं उग्गहो छम्मास उक्कोसो ॥११०४॥ तक्कज्जसमत्तीए वि रायदुट्ठपरचक्क असिवादी । एतेहिं कारणेहिं तु उग्गहो होति तीते वि ॥११०५॥ एतेसु उग्गहेसु आभव्वणभव्वचि(चि)त्त भणिए सा । अयमण्णो तु पगारो आभव्व- मणाभवंते य ॥११०६॥ सुहसीलणुकंपातट्ठिए य संबंधिसवगेलण्णे । सच्चित्ते सभिहाए पइट्ठिए धारणादिमासु ॥११०७॥ तणुयंपि णेच्छ- ए दुक्खं सुहं वा कंखती सदा । सुहसीलो एस अक्खाओ साता- गारवणिस्सितो ॥११०८॥ सुहसीलयाए सेहं कोई पेसेज्ज अण्णसा- हूणं । पलिमंथं मण्णंतो दुक्खं खू सारवेउं जे ॥११०९॥ असहाय- स्स व देज्जा कोई अणुकंपयाए सेहं तु । आयरहीण व कोई पेसि- ज्जा धम्मसद्धाए ॥१११०॥ दिज्जा सिणेहओ वा संबंधी अस्स कोइ स- च्चित्तं । समगो सयं व होज्जा समगस्स व पेसवेज्जाहि ॥११११॥ देह व गिलाणगस्सा वेयावच्चट्ठताए असहाए । अहवा सयं गिलाणो अच- एंतो सारवेउं जे ॥१११२॥ पेसितस्स उ असिहो सभिहो आसि पुणज- स्स पेसिओ तस्स । एवं असंधरेणावि पेसियओ जह गिलाणेणं ॥ १११३॥ कह दातु पुणो मग्गति जम्हा सो अप्पभू तु णाणस्स । त- म्हा तस्सायरिओ मग्गति सेज्झंतियादी वा ॥१११४॥ अहवा जाहे सयं चिय सो सेहो जाव होति गीयत्थो । तो जाणति आभव्वो अहयं पु- व्विल्लयाणं तु । दारं ॥१११५॥ उडुवासवुड्ढवासे एसो भणितो तु कालकप्पविही । परियायकालकप्पं एत्तो वोच्छं समासेण ॥१११६॥ को राइणितो होती? को वावी होति ओमराइणिओ?। भण्णति सु- णासु विसेसं रायणिय ओमराइण ॥१११७॥ संजमसेढीअंतो जो उ ठितो सो भवे हु रायणिओ । जो बाहिं सो ओमो एयं अतिसेसितो जाणे॥ १११८॥ तम्हा छउमत्थाणं जो पुव्वं ठावितो वएसु तु । सो होति राय- णिओ जो पच्छा सो भवे ओमो ॥१११९॥ सामइयसंजयाणवि सामा-

इय जस्स पुव्वमुच्चारेयं । सो होती रायणिओ इतरो ओमो मुणेयव्वो ॥ परियागकप्पेत्ति गतं ॥११२०॥ अद्दुस्सास अहुत्तो काउस्सग्गो उ होत बोधव्वो । अट्ठसहस्सुक्कोसो अहुवा संवच्छरं वाबि ॥ दारं ॥११२१॥ पडिकमण देसिय राइय पक्खिय चउमासे तहुय वरिसे य । एतेसि चवक्खाण पुव्व आवस्सए भणित ॥११२२॥ कितिकम्म कायव्व काहे कति वावि होतऽहोरत्ते ?। एतेसि णाणत्तं वोच्छामि अहाणुपुव्वीए ॥११२३॥ पडिकमणे सज्झाए काउस्सग्गावरहु पाहुणाए । आलोयण संवरणे उत्तिमट्ठे य वंदणयं ॥११२४॥ तत्थ य पडिकमणे किइकम्मा तिण्णि होति सज्झाए । पुव्वण्हे अवरण्हे किइकम्मा चोद्दस हवंति ॥११२५॥

सुत्तग्गमे जिणाणं पढिलेहुणियाए आढवणकाले । थेरानुग्गायंमी उवाहेण सो तुल्लेयव्वो ॥ दारं ॥११२६॥ पढमचरिमासु नियमा सज्झाओ पोरुसीसु दियराओ । झाणं तु अत्थपोरुसि भिक्खचरिया तु दिवसस्स ॥ दारं ॥११२७॥ ततियाए पोरुसीए भिक्खग्गहणं तु होति कालव्वं । सेसं च पमाणादी होइ इम तू समासेणं ॥११२८॥ पत्ताले काले आवस्सए य सज्झाए य उवकरणे । मत्तगकाउस्सग्गे तस्स य जोगो सपडिवक्खो ॥११२९॥ भत्तट्ठीण वि भोइ जइ भणित तेण होइ एत्थवि । एक्कं वेलं भत्त तीतं च ण कप्पते भोत्तुं ॥ दारं ॥११३०॥ कालस्स पडिक्कमितुं मज्झण्हे ताहे होति गंतव्व । वीयारं भोत्तूण व सेस अकालो उ वीयारे ॥ दारं ॥११३१॥ चउ संझासु ण कप्पति सज्झाओ तासिं तु कायव्व । पुव्वावरासु दोसु वि काउस्सग्गादिहत्त झाति ॥११३२॥ दिणमज्झाए भिक्खं जाव अभत्तादिहतो तु जो साहू । राओ मज्झिमाओ णिद्दामोक्खं करेंती उ ॥११३३॥ णिक्खमणं खलु सरए पाउसकाले पवेसु पुव्वुत्तो । एसो तु कालकप्पो भावे कप्पं अतो वोच्छं ॥ दारं ॥११३४॥ दंसण णाण चरित्ते तव पवयण पंचसमिति तीहि गुत्तो । इतरागदोस णिम्मम समदमणियमादिहओ णिच्चं ॥११३५॥ णेगूहियबलवीरितो परक्कमति जो जहुत्तमाउत्तो । अत्तट्ठकरणजुत्तो गुणभावणा भाविणक्कंपो ॥ एयाओ दारगाहाओ ॥११३६॥ सिद्धीहि कुलिंगीण य देववीहिं जस्स तू भावो । दंसणविगलो जायति दस्सणमरादेय तेर॥११३७॥

णाण दुवालसंगं तं चेव य पवयणं तु संघो वा । गहणंमि उज्जुत्तो या रतो व्व तह वच्छलो यावि ॥११३८॥ चरणे निच्चुज्जुत्तो मूलगुणेसुं सउत्तरगुणेसुं । ण य अतियार कुणती पच्छित्तेण व सोहिकातं ॥११३९॥ नवबारसंगजुत्तो समितीसहितो तिगुत्तिगुत्तो य । रागद्दोसणिहंता णिम्ममो णियते सरीरेवि ॥११४०॥ कोहं जिणाति खमाए मद्दवमादीहिं सेस कलुसेऽवि । दमणियमा दोवेक्कं इंदियणोइंदिया होंति ॥ दारं ॥११४१॥ णाणादिएहिं अणिगूहितो तु कम्मस्स णिज्जरट्ठाए । उज्जमति परक्कमती धडइत्ति य होंति एगट्ठा ॥११४२॥ जइ सुत्ते णिद्दिट्ठो तह कुव्वति जो तु अप्पमाएंतो । सो तु जहुत्तो साहू जूणं मतिमं वियाणेज्जा ॥११४३॥ अत्तट्ठा मोक्खट्ठा ण उ इहलोगादि हेउगं कुणति । करणं जोगतिएणं जयणाजुत्तो त्ति अववादे ॥११४४॥ मूलगुण उत्तरे या भावणपणवीस अणिच्चयादी य । मेत्ती-पमोय-कारुण-मज्झत्थादीहिं णिक्कपो । दारं ॥११४५॥ एसो उ भावकप्पो अहवा णाणादितो पुणो तिविहो । दंसणपढमं भण्णति णाणचरित्ता तदायत्ता ॥११४६॥ तो दंसणस्स चेव तु जेहिं पदेहिं तु होति उवघातो । ताइं इमाति वोच्छं णिक्खमणादीणि तु कमेण ॥११४७॥ णिक्खमण गमणभुंजण सहियवयणे य एक्कवायणिए । दसणणाणाभिगमे रायकुमारे गणहरे य ॥११४८॥ णिक्खमणे वेतसं अधोलहाएत्तुणा ततो भगवं इरिसए वि ण दिक्खे णेक्खते जेण साहूण ॥११४९॥ पूजा सत्कारस्सी तेण पवत्तंति कीस वावि जाणंतो । तारिसए णिक्खंतो जेणुदितो होति सक्कारो ॥११५०॥

णाहु एवं वत्तव्वं सो च्चिय भगवं तु जाणए एवं । णाहु भाणुपभा तीरइ सज्जोयपहाहिं अतिसइतुं ॥११५१॥ गमणे तुरियं साहू गच्छंती अहो सुदिट्ठभिक्खूणं । सणियं वयंति णेवं वत्तव्वेव तु भावेज्जा ॥११५२॥ ते लोगरंजणट्ठा सणियं गच्छे ण धम्मसड्ढाए । ण य जुगपेहाए खलु विवरीयं साहुणो भावो ॥११५३॥ जं वि कहिंचि सतुरितं तं पि य गेलन्नमादेवाज्जेसु । गच्छंती तु सुविहिता बहुतरमायं मुणेऊणं ॥११५४॥ भुंजंते चित्तकम्मट्ठितावि सक्कादि बोडियादी य । ण तहा साहु एवं भासंते दंसणविरोही ॥११५५॥ कुक्कुडताए मोणं करेंति जणरंजणट्ठताए उ । भावेयव्वं एवं साधू पुण णिज्जरट्ठाए ।

॥११५६॥ जं पि य भासंति जती तंपि य कज्जंमि थोव जयणाए । इम सुंच चिरहउ वा गुरुमादीणं च पाउग्गं । दारं ॥११५७॥ सक्कयपाठो गुरुगोदियाण एसा तु देविकी भासा । समणाण पागयं तु पभासाए उवणिबद्धं ॥११५८॥ तत्थ वि मोदियवयण सद्दिया चेव णवरि जाणंति । सव्वेसऽणुग्गहट्ठा इतरं पंचालवुड्ढादी ॥११५९॥ दिट्ठंतो सिणपल्लीणिवाणकरणेण होति कायव्वो । एगेण कतो अगडो वाबे ससोवाण बितिएणं ॥११६०॥ ततिएण तलाग तू तत्थऽगडे केयघडियमादीहिं । तीरंति उवभोत्तुं जे बितियं दुपदाण अभिगम्मं ॥११६१॥ दुप्पदचउप्पदमादी सव्वेसिं तलाग होति अभिगम्मं । इय सव्वऽणुग्गहत्थं सुत्तं गहितं गणहरेहि ॥११६२॥ सव्वत्थ वेदसत्थं चरणे करणे य एगवादणियं । विवरीयं समणाणं भावेंतो दंसणविराही ॥११६३॥ तत्थ वि भावेयव्वं सो च्चिय अत्थो तु होति सव्वासिं । सामुद्दसेंधवादी जह लवणसहाव सव्वे वि ॥ दारं ॥११६४॥ दंसणपभावगाति अहवा णाणं अहिज्जमाणं तु । अन्नदहपरदहा वा जह लंभे जेण्हइ पणहाणी ॥११६५॥ भिक्खु त्ति जं पदम्मी भणितं जं वा वि तं णिमित्तेणं । गच्छंतो किं सेवे ? असद्दहंतो अणाराही ॥ दारं ॥११६६॥ पव्वज्ज अप्पपंचम रायसुतस्सा तु दाइगभएणं । राया उ समणुजाणति अंते पडिणीतो सो तेणं ॥११६७॥ तत्थ वि य फासुभोती सुत्तत्थाइ करेंति अच्छंति । जणइत्तु सुतेक्केक्कं अमूढलक्खासु इत्थीसु ॥११६८॥ ते रज्जेसु ठाविय पुणरवि गच्छंति गुरुसमीवं तु । आलोइयणिस्सल्ला कतपच्चक्खाणा तो तेसिं ॥११६९॥ संकप्पियाणि पुव्विं आयरियादीपदाणि गुरुणा तु । पच्छागताण ताण य तद्दिवसं चेव दिण्णाति ॥११७०॥ परियायम्मि णिरुद्धे ज दिण्णतगं तु जो ण सद्दहति । सुहुसमुदितस्स जं वा कीरति तू रायपुत्तस्स ॥११७१॥ तत्थ वि भावेज्जेवं पलिकडाइ तु तेहिं थेराणं । रायसुतादिक्खितेण य उब्भावण पवयणे होति ॥११७२॥ असहुस्स जं च कीरति अज्जसमुद्दस्स चेव गुरुणो तु । एयं असद्दहंते विराहणा दंसणे होति ॥११७३॥ तत्थ वि भावेयव्वं जेणायत्तं कुलं तु तं रक्खे । अण्णस्स वि कायव्वं गिलाणगस्सेस उवदेसो ॥११७४॥ इति एस समासेणं दंसणकप्पो उ आहितो एवं । दारं । एत्तो तु णाणकप्पं वोच्छामि अहाणुपुव्वीए ॥११७५॥ सुत्तुद्देसे वायण पडिपुच्छ परियट्ट अणुपेहा । आयरियउवज्झाया अह होति तु सुत्तकु-

पविट्ठी ॥११७६॥ आयारमादिकातु सुयं तु जं होइ दिट्ठिवादो तु । अंगाणंग-
पविट्ठं कालियमुक्कालियं चेव ॥११७७॥ तं पुण सव्वं पि भवे सवादसमुद्दि-
यं व णिज्जूढं । पत्तेयबुद्धभासित अहव समत्तीय हेज्जाहि ॥११७८॥ सस-
मयवादं संवादमाइ जह कोसिगोयभिज्झाती । पण्णवणादसकालिय-जी-
वाभिगमादि णिज्जूढं ॥११७९॥ पत्तेयबुद्धभासिय इसिभासियमादिगा मुणेय-
व्वं । केवलणाणसमत्तीय भासिता चोद्दस उ पुव्वा ॥११८०॥ एतं सुतं तु
जं जत्थ सिक्खितं जेण जह तु जोगेणं । तं तह चिय दायव्व एसो खलु
अज्झयणकप्पो ॥११८१॥ एयं पुण सुतणाणं जायणजोग्गं तु जारिसं होति ।
तं वोच्छामी अहुणा सुत्तस्स य लक्खणं जं तु ॥११८२॥ जित परिजितं
अमिलित अविच्चामेलित अवाविद्धं । घोस णिकाइय हीहेय सुविस-
मियहेउसब्भाव ॥११८३॥ फुड विसद सुद्धवंजण पद अक्खर संधिका-
रणमपूणं । पदपयणुलोम णिउनसुत्ते त्ति सुत्तकप्पो ॥११८४॥ णिपुणं
विपुलं सुद्ध णिकाइय अत्थतो सुपरिसुद्ध । हितणिस्सेसकरं बुद्धिव-
इढणं फलमुदारजुत ॥११८५॥ सगणाम व जित खलु परिजिय हेट्ठु-
वरितो उवरितो हेट्ठा । मिलिते उ धण्णपात विच्चामेलो उ अण्णोण्णं
॥११८६॥ अज्झयणुद्देसाणं सुत्ते मीसेति कोलियपयस वा । त चेव य
हेट्ठुवरि वाविद्धे आवलीपात ॥११८७॥ घोस उदत्तादीया णिकाइय-
ऽक्खेव सिद्धिपरिसुद्ध । ईहेत मय मतदि विचारेत एव णेव सी ॥
११८८॥ साहुम्मय-वेहुम्मय हेतूहि मग्गिओ तु सब्भावो । जस्स तु
सुत्तस्स भवे तं होति सुदिट्ठसब्भाव ॥११८९॥ णिस्संदिद्ध फुड खलु
सजुत्त वावि पुव्वमवरेण । विसद अणिगूढत्थं वंजणसुद्धं स,उच्चारं
॥११९०॥ अत्थुवलद्धी जत्थ उ त होति पद तु अक्खरा वण्णा । संधी
संबंधो खलु सुत्ता सुत्तस्स जो होति ॥११९१॥ एतेहि पूणमहित पा-
दा तु सिलोगमादिणा होति । गज्जंमि य पदसमा अणुलोम जण्ण
पडिलोमं ॥११९२॥ पुव्विल्लपरिल्लेण ज ण विरुज्झति तु त तह
तहियं । अत्थेण जोइय तु णिउणमेतारिस होति ॥११९३॥ णय-हे-
तु-वादभंगिय गणितादी अत्थओ य णिउण तु । बितियन्नत्थं विपुलं
सुगादविायणाहिं वा ॥११९४॥ सुद्धं तु सुगाहीतं अलियादीदोसवज्जितं
वावि । अत्थे णिकाइयं खलु णिकाइयं अहव बधेणं ॥११९५॥ अवि-

सुत्तो अक्खरेहिं जस्सत्थो तह य समयमविरुद्धो । तं अत्थतो विसुद्धं हिंतं तु इहलोयपरलोये ॥११९६॥ अहियं नेयकरं तू णिस्सेसकरं तयं मुणेयव्वं । उप्पत्तीमादीण य बुद्धीण निबंधणं जं तु ॥११९७॥ तस्स फलं तु उदारं अव्वाबाहं अणोवमं सोक्खं । इमो तु सुत्तकप्पो (दारं) एत्तो वोच्छामि उद्देसं ॥११९८॥ उद्दिसियव्व उवट्ठिते अणुवट्ठिते उद्दिसंते चउलहुगा । अणालोइए वि लहुगा तम्हा आलोइ उद्दिसणा ॥११९९॥ आलोयणा य विणए खेत्तदिसाभिग्गहे य काले य । रिक्खगुणसंपदा वि य अभिवाहारे य अट्ठमए ॥१२००॥ अण्णगणागत पुच्छे केवइयसहायगा गुरूणं तु ? । एवं पुट्ठो सो वि य वदेज्ज एगादिय इमे उ ॥१२०१॥ एगे अपरिणते या अप्पाहारे य थेरए । गिलाणे बहुरोगे य मंदधम्मे य पाहुडे ॥१२०२॥ एतारिसं विउसज्ज आगते सोहि होति पुव्वुत्ता । आयारकप्पणासे सीसपडिच्छे य आयरिए ॥१२०३॥ एयदोसविमुक्कं तु आगता लोइए पडिच्छति तु । आलोयणा तु एसा सेसा दारा जहा वासे ॥१२०४॥ णवरिं तु कालदारं गुणदारं चेव इसिभासियसं । अंगसुयक्खंधाणं उद्देसो सुक्कपक्खम्मि ॥१२०५॥ पण्णतिमहाकप्पसुयादि सरदे सुभिक्खकालम्मि । णेमित्तियादि पुच्छिय उद्दिसणा होति कायव्वा ॥१२०६॥ सेसं कालविहाणं पुव्वुत्तं तं तु होति णायव्वं । दारं । केहिं गुणेहिं जुत्तस्स उ उद्दिसियव्वं ? इमे सुणसु ॥१२०७॥ अव्वोच्छित्तीसंवेगविणयउववेयवज्जभीरुस्स । पुव्वण्हे जोगसमुद्दिट्ठस्स उद्देसणाकप्पो । दारं ॥१२०८॥ वाइगवाइज्जंते गुणा उ वायणविहिं च वोच्छामि । वायणवादिज्जंते गुणाण दारा इमे होंति ॥१२०९॥ अप्पणो य दढा रक्खा विपुलो य तहाऽऽगमो । सुयणाणस्स य पूजा जिणाण छिद्देय दुच्छुत्तो ॥१२१०॥ उम्मग्गं वच्चंतो अप्पा रक्खेज्जते तु णियमेणं । मुण्डादिदइंतेणं सुतवावलोत्तओगेणं । दारं ॥१२११॥ उवउत्तस्स तदट्ठे णिज्जरलाभो तवो य विउलो य । इंदियपणिही य तहा पसत्थझाणोवओगो य ॥१२१२॥ जं अण्णाणी कम्मं खवेति बहुयाहिं वासकोडीहिं । तं णाणी तिहिं गुत्तो खवेइ उस्सासमेत्तेणं ॥१२१३॥ बारसविहम्मि वि तवे सब्भिंतरबाहिरे कुसलदिट्ठे । णवि अत्थि णवि य होही सज्झायसमं तवोकम्मं । दारं ॥१२१४॥ सुयणाणुव-

देसेणं वाएंतेणं व गेण्हणेण च । सुतपूजा होति कया तं च जितं होति वायंते ॥१२१५॥ सुतभत्ताए य पुणो सुतोवएसेण य वट्टमाणेणं । वाएंतमहिज्जंते आणा उ कया जिणिंदाण । दारं ॥१२१६॥ सुयणाणुवदेसेणं वायंतो गेण्हंतो य पंतेहिं । ण चइज्जती छलेउं वंतरमादीहिं देवेहिं । दारं ॥ १२१७ ॥ वायणगुणा तु एते समासतो वण्णिता मए कमसो । वायणविहिं तु एत्तो वोच्छामि अहाणुपुव्वीए ॥१२१८॥ अत्ताण परिस पुरिसं हितऽणिस्सिय परिजितं जितं काले । दिट्ठत्थं कुडवंजण णिव्वावण णिव्वहणसुद्धं ॥१२१९॥ नवुसी गंधियपुत्तो रण्णो रयणघरिए दओभासे । देवीआभरणविही दिट्ठंता होंति आयरिए ॥१२२०॥ अत्ताणं तु तुलेती सत्तो मि ण वत्ति वायणं दातुं । जाणेज्जा पुरिसे वि य जो घेत्तुं जत्तियं तरती ॥१२२१॥ बहुयं घेत्तु समत्थे बहु देंती अप्प गेण्हते अप्पं । विच्चामेलणदोसो अतिबहुते तस्स दिज्जंते । दारं ॥१२२२॥ परिणाम अपरिणामा अतिपरिणामा य तिविह पुरिसा उ । णाऊणं छेदसुतं परिणामगे होति दायव्वं । दारं ॥१२२३॥ इहपरलोगे य हितं । दारं । अणिस्सियं जं तु णिज्जरट्ठाए । ण तु वाइ गारवेणं आहारादी व्वट्ठाए । दारं ॥१२२४॥ उक्काइतोवइयं परिजियं तु जिय एव अगुणयंते वि । दार । कालेत्ति कालियादी कालो जो जस्स तं तहियं ॥ १२२५ ॥ जस्स वि जाणति अत्थं दिट्ठत्थं तं तु भण्णती सुत्तं । दारं । कुडवियडवंजण तू वयणविसुद्ध मुणेयव्वं । दारं ॥ १२२६॥ तं होती णिव्ववणं जो वाएंतो तु कडादि उवघा(प्पा)ए। णिव्वहणसुत्तमेयं जो अविभत्तो उ णिव्वहति ॥१२२७॥ तउसारामे तउसे पुव्वं ण पलोए आगते कइ(ह)ए । जाव पलोए ताव तु केइ विपरिणत अप्पहिं गेण्हे ॥ १२२८ ॥ एवं जो आयरिओ पुट्ठो संतो वि चिंतयति अत्थं । विप्परिणमिउं तस्स तु सीसा वच्चंति अण्णत्थ ॥ १२२९ ॥ जइ मुल्लअणाभागी आरामी सो तहिं तु संवुत्तो । तह णिज्जरअणभागी आयरिओ होति एव तु ॥१२३०॥ जेण पुण पुव्वदिट्ठा तउसा आरामिएण होंति तहिं सो देति लहुं तउसे मुल्लस्स य होति आभागी ॥१२३१॥ एवं आयरिएणं जेणत्थो पुव्वि चिंतिओ होति । सो वाएति लहुं लहुं णिज्जरभागी य हो एव । दारं ॥१२३२॥ एमेव गंधिपुत्ते जाणमजाणे य गंधभाले तु । आभागी अणाभागी उवसंघारो वि य तहेव । दारं ॥१२३३॥ सोणियणिक्खे

हत्थी तंतुयमच्छेण गहिओ जलमज्झे । सिरिघरिओ दओभासं भणिओ ण वि जाणे कत्थ कओ ? ॥१२३४॥ जा मग्गति ता हत्थी पडिओ रण्णा विणासितो घरिओ । बितिओ भणितो दिण्णम्मि तक्खणा मोचिते पूया ।दारं ॥१२३५॥ एमेवायरियम्मि वि उवसंघारो तहेव कायव्वो । चिंतणसमचाकरणे णिज्जरलाभे अलाभे य ।दारं ॥१२३६॥ रण्णो दो देवीओ पेस्सवल्ली वल्लभी य पडायंति । पेस्सवल्ली हारावे आभरणे वल्लभीए उ ॥१२३७॥ जह चेडी आभरण आवासे तह इमं पि णायव्वं । उवसंघारो मह विय आयरिए होति कायव्वो ।दारं ॥१२३८॥ एवं ता वाएंतो भणितो अहुणा पडिच्छगं वोच्छं । जारिसगुणेहिं जुत्तो वाएयव्वो तु सो होति ॥१२३९॥ अणुरत्तो भत्तिगतो अतिंतिणो अचवलो अलुद्धो य । अव्वक्खित्ताऽऽउत्तो कालण्णू पंजलिउडो य ॥१२४०॥ संविग्गो मद्दविओ अमुत्ती अणुयत्तती विसेसण्णू । उज्जुत्तमपरितंतो इच्छितमत्थं लभति साधू ॥१२४१॥ जो तु अवाइज्जंतो ण रुज्झ(रूस)ती जह ममं ण वाएइ । सो होई अणुरत्तो ।दारं । भत्ती पुण होइ सेवा उ । दारं ॥१२४२॥ मज्झ न देइ त्ति न जो तिंबुरुकट्ठं व तडतडे दिवसं । न य आहाराईसु तदभावो अतिंतिणो एसो। दारं ॥१२४३॥ गइट्ठाणभावभासाइएहि नवि कुणइ चंचलत्तं तु । गणगणिओ न भवे अचंचलो सो मुणेयव्वो ।दारं ॥१२४४॥ आहारादुक्कोसं जो लद्धूण तय न अत्तदहे । एस न लुद्धो (दारं) वक्खेवया तु महादिविसएसु ॥१२४५॥ लीहालेहुगमादी जो य पढंतो ण करेति वक्खेवं । अव्वक्खित्तो एसो आउत्तो अणण्णमणसो उ ।दारं ॥१२४६॥ आहारादीकाले कालण्णू होति उवणयतो उ ।दारं । सुत्तत्थे गिण्हंतो कुण(इ) अंजलि पंजलिकडो उ ॥१२४७॥ संविग्गो दव्वे मिगो भावे मूलुत्तरेसु तु जयंतो ।दारं। मद्दविओ जो अमाणी ।दारं। अमुई विस्समणे वि जो ण मुए ।दारं ॥१२४८॥ आगारइंगितेहि णाउ हियइच्छितं उवणेहेति । गुरुवयणं चऽणुलोमे एसो अणुवत्तओ णामं ।दारं ॥१२४९॥ जाणति तु जो विसेसं हिताहितादीण सो विसेसण्णू । णवि होति णिव्विसेसो समचंदणलोट्ठचिक्खल्लो ।दारं ॥१२५०॥

उज्जुत्तो उ अणलस्सो (दारं) अपरितंतो तु थूलभद्द इव ।दारं। सुत्तत्थणिज्जराओ मोक्खो वा इच्छियत्थो तु ।दारं ॥१२५१॥ पुच्छणकप्पो अहुणा जाति पुच्छेज्ज संकियादि तु । तानिं भण्णति इणमो अहक्कमं आणु-

पुव्वीए ॥१२५२॥ पदमक्खरसुद्देसं संधी सुत्तत्थतदुभय चेव । पोस णि-
काइत ईहित सुविसमिगीतहेतुसब्भाव ॥१२५३॥ पदमादी जा घोसो सुत्तत्था
होंति एते सव्वेवि । दारं । हिययम्मि णिकाएउं पुच्छति उ णिकाइयं
एव । दार ॥१२५४॥ पुव्वावरेण ईहित एय मए एव होति ण व होति?
।दार । हेतूहिं कारणेहि न सुविसमोगाय एव तु मए त्ति । दारं ॥ १२५५ ॥
सब्भावो अत्थो खलु संदिद्धाइ तु पुच्छते नाति । दारं । एयाइं चियक-
मसो परियट्टे चेव अणुपेहे । दारं ॥ १२५६ ॥ अट्ठण्ण तु अईयव्वं केरि-
सयाण समीवे समणेणं ॥ आयरियउवज्झायाण नमह वोच्छं समासेणं
॥१२५७॥ उग्गम उप्पायण एसणाए णिरवेक्खो णीयपडिसेवी । सुत्ते
अदिट्ठसारो आयरिओ ण कप्पती सो तु ॥१२५८॥ उग्गम उप्पायण
एसणाइ सावेक्खो णितियपरिवज्जी । सुत्तम्मि दिट्ठसारो आयरिओ
कप्पती सो उ ॥१२५९॥ सुत्तस्स सारो अत्थो सो दिट्ठो जेण होति बु-
द्धीए । सो होति दिट्ठसारो आयरिओ तू मुणेयव्वो ॥१२६०॥ एमेव उ-
वज्झाओ गुणेहिं जुत्तो तु होति णायव्वो । एतेसिं तु सकासे सुत्तत्था
होंति घेत्तव्वा ॥१२६१॥ आयरियउवज्झाया णाणुण्णाया जेणेहिं सिव्वदहा
। णाणे चरणे जोयावग त्ति तो ते अणुण्णाता । दार ॥ १२६२ ॥ एसो तु
णाणकप्पो जहक्कमं वण्णितो समासेणं । एत्तो चरित्तकप्पं वोच्छामि अहा-
णुपुव्वीए ॥१२६३॥ जम्हा चरिज्जते तू चरियं वा तेण तो चरित्तं तु ।
ते पुण अप्पडिसेवे सुद्धमसुद्धं तु पडिसेवे ॥१२६४॥ पडिसेवणा तु दुविहा
दप्पे कप्पे य होंति णायव्वा । एतेसिं तु विभासा जह भणिय णिसीहणा-
मम्मि ॥ १२६५ ॥ एसो चरित्तकप्पो छव्विहकप्पो य एस अक्खाओ । स-
त्तविहकप्पमेत्तो वोच्छामि अहक्कमेण तु ॥ १२६६ ॥ ठितमट्ठितजिणे थेरे लिं-
गे उवही तहेव संभोगे । एसो तु सत्तकप्पो णेयव्वो आणुपुव्वीए ॥१२६७
॥ ठियमट्ठितकप्पाणं होति विसेसो इमो मुणेयव्वो । पुरपच्छिमाण य ठिओ
अट्ठिओ पुण मज्झिमजिणाणं ॥१२६८॥ कतिठाणेहि ठितो खलु ठितकप्पो
होति तू मुणेयव्वो ? । कइहि उ अट्ठितकप्पो ? ठिताट्ठितो होति बोधव्वो
॥ १२६९ ॥ दसठाणट्ठितो कप्पो पुरिमस्स य पच्छिमस्स य जिणस्स । क-
तरे दस ठाणा तू ? भण्णति आचेलगाइ इमे ॥ १२७० ॥ आचेलुक्कुद्देसिय
सेज्जातर रायपिंड कितिकम्मे । वत जेट्ठ पडिक्कमणे मास पज्जोसव-

णकप्पो ॥१२०१॥ एतेहिं दसहिं ठितो ठितकप्पो होति तू मुणेयव्वो। दसं
। चउहिं ठितो छहिं अठितो अठितकप्पो पुण इमेहिं ॥१२०२॥ सेज्जा-
तरपिंडे या कितिकम्मे चेव जाउजामे य । राइणिय पुरिसजेट्ठे चउसु
ति एतेसु होति ठितो ॥१२०३॥ आचेलुक्कुद्देसिय णिवपिंडे चेव तह य
पडिक्कमणे । मासं पज्जोसवणा छप्पेते अणवट्ठिता कप्पा ॥१२०४॥
दुविहो होति अचेलो संताचेलो असंतचेलो य । तित्थकर असंतचेला
संताचेला भवे सेसा । दारं ॥१२०५॥ दुविहो होति अचेलो पडिमाचे-
लो तहा परिजुण्णो । पडिमाचेलो दुविहो सावेक्खो चेव णिरवेक्खो ॥
१२०६॥ णिग्गिणो अचोलपट्टो णिरविक्खो सो भवे अचेलो उ । णिगि-
णो सचोलपट्टो साविक्खो सो पुण अचेलो ॥१२०७॥ णिग्गतवसणो
णिवसणो अवसणो अचेलो य अकडिपट्टो य । पडिमाचेलस्सेए नामा
एगट्ठिया होंति ॥१२०८॥ उग्गम उप्पायण एसणाए जदि होंति अपरिसु-
द्धाइं । मोल्लगरुयाणि ताणि तु अपरिजुण्णाइं चेलाणि ॥१२०९॥ उग्ग-
मउप्पायणएसणाए जदि होंति सुपरिसुद्धाइं । मोल्ललहुयाणि ताणि उ
परिजुण्णाइं तु चेलाइं ॥१२१०॥ एतो सामज्जाइं चेलाइं संजमोवघातीणि ।
वज्जेन्ता विहरंतो होइ अचेलो अपरिजुण्णो ॥१२११॥ णिग्गहियरागदोसो अण-
वज्जेहिं अहापरिजुण्णेहिं । अप्पेहि वि विहरंतो होति अचेलो उ परिजुण्णो ॥१२१२॥
णिकवइतलिंगभेदे गुरुगा कप्पइ य कारणज्जाते । गेलन्न-रोग-लोए सरीरवे-
ज्जो य किरिजत्ते ॥१२१३॥ अभिवे ओमोदरिए रायदुट्ठे पवादिदुट्ठे वा ।
आगाढे अण्णलिंगं कालक्खेवो व गमणं वा ॥ अचेलाने गत ॥१२१४॥ साली-
घतगुलगोरसणवेसु वल्लीफलेसु जातेसु । दाणट्ठकरणसड्ढा आहाकम्मे
णिमंतणता ॥१२१५॥ आहा अहे य कम्मे आयाहम्मे य अत्तकम्मे य । तं पुण
आहाकम्मं णायव्वं कप्पती कस्स ? ॥१२१६॥ संघस्स पुरिमपच्छिमसमणाणं
तह य चेव समणीणं । चतुरो उवस्सगाणं पच्चक्खाणाणमायसणं ॥१२१७॥
संघस्स मज्झिमे पच्छिमे य समणाण तह य समणीण । चतुरो पडिस्सताणं
पच्छा सयणायणासणा ॥१२१८॥ उज्जु य जड्डा सव्वे पुरिमा चरिमा य व-
क्कजड्डा तु । तम्हा तेसिं सव्वस्सगाढह कारणं पडिकुट्ठं ॥१२१९॥ अस-
गतजडा मज्झिमसाहू तह चेव ते परिणमंति । कप्पाकप्प दंसिय तेसिं व-
ज्झं य पडिकुट्ठं ॥१२२०॥ पुरिमाण दुव्विसोज्झो चरिमाण दुरणुपालओ

कप्पो । मज्झो विसुद्धचरणो एव कप्पो पुगतव्वो ॥१२९३॥ आयरिए अभिसेगे भिक्खुम्मि गिलाणगम्मि भयणा तु । निक्खुत्तो अडविपवेस च परियट्टे तओ गहणं ॥१२९४॥ असिवे ओमोदरिए रायदुट्ठे पवादिदुट्ठे वा । अद्धाणे गेलन्ने आहाकम्म तु जयणाए ॥१२९५॥ जदि सव्वे गीतत्था ताहे आलोयणागहे भणिता । अह होंति मीसगजणो पायच्छित्त तवोकम्म ॥१२९४॥ चउरो चउत्थभत्ते आयामेगासणे य पुरिमड्ढे । णिव्वितित दायव्व सत च पुव्वोगहं कुज्जा ॥१२९५॥ सघस्सोहविभागो समणा समणी य कुलगणस्सेव । कडीमिह हिते ण कप्पते आहेतकप्पे जमुद्दिस्स ॥१२९६॥ आयरिए अभिसेगे भिक्खुम्मि गिलाणगम्मि भयणा तु । अडविपवेसे असती तियपरियट्टे ततो गहण ॥१२९७॥ तित्थगरपडिकुट्ठो आणा अण्णाय उग्गमो ण सुज्झे । अविमुत्ति अलाघवया दुल्लभसेज्जा विउच्छेदो ॥१२९८॥ दुविहे गेलन्नम्मि णिमतणा दव्वदुल्लभे असिवे । ओमोयरिय पदोसे भए य गहण अणुण्णाय ॥१२९९॥ तिक्खुत्तो सक्खेत्ते चउद्दिसिं जोयणम्मि कडजोगी । दव्वस्स य दुल्लभता सागारियसेवणा दव्वे ।दारं॥१३००

मुइए मुद्धाभिसित्ते मुदितो जो होति जोणिसुद्धो तु । अभिसित्तो य परेहिं सयं व भरहो जहा राया ॥१३०१॥ ईसरतलवरमाडंबिएहिं सेट्ठीहि सत्थवाहेहिं । णितेहि अतितेहि य वाघातो होति साहुस्स ॥१३०२॥ लोभे एसणघाते संका तेणे चरित्तभेदे य । इच्छंतमणिच्छंते चाउम्मासा भवे गुरुगा ॥१३०३॥ अण्णे वि होंति दोसा आइण्णे गुम्मरयण इत्थीए । तोण्णक्खराए पवेसो तिरिक्खमणुया भवे दुट्ठा ॥१३०४॥ दुविहे गेलन्नम्मि वि णिमंतणा दव्वदुल्लभे असिवे । ओमोदरिया पओसे भए य गहण अणुण्णातं ।दार॥१३०५॥ पढम अब्भुट्ठाणं कितिकम्म अज्जसेवियमुदारं । कायव्व कस्स व केण वावि काहे व कतिक्खुत्तो ॥१३०६॥ विणओ सासणे मूलं विणीओ संजओ भवे । विणया उ विप्पमुक्कस्स कओ धम्मो कओ तवो (वि॰आ॰३४-६८) । गाहा (ओ॰ १२२१) ॥१३०७॥ जम्हा विणयति कम्मं अट्ठविहं चाउरंतमुक्खाए । तम्हा उ वयंति विऊ विणउत्ति विलीनसंसारा । गाहा (ओ॰ १२२२) ॥१३०८॥ पुव्वामेव य विणओ (गाहा) ॥१३०९॥

आयारविणयकप्प गुणदीवणा अत्तसोहि उजुभावो । अज्जव मद्दव लाघव तुट्ठी पल्हायकरण च ॥१३१०॥ लहुओ गुरुओ मासो लहुगा गुरुगा भवे चउम्मासा । खुड्डग भिक्खू वसभे आयरिए अदु व विवरीय ॥१३११॥ जदिसुत्तो जदिवेल णिक्खमए णिक्खमित्तु वादेति । तातेसुत्तो तं वेलं स-व्वे गुरुणो समुट्ठंति ॥१३१२॥ वसहीय भिन्नमासो काइयभूमीय मासियं लहुयं । चत्तारि य सुक्किलया ओगाहुं तस्स बहियाए ॥१३१३॥ भिक्खू वसभायरिया अज्जा उवासगा य इत्थीओ । वादी राया संघो राया संघो उभयओ वि ॥१३१४॥ लहुओ गुरुओ मासो लहुगा गुरुगा भवे चउम्मासा । छम्मासा लहुगुरुगा छेदो मूल तह दुग च ॥१३१५॥ वंदण चिति किइ-कम्मं पूयाकम्म च विणयकम्मं च । कायव्वं कस्स व केण वा वि का-हे व कइखुत्तो (आ० नि० ११९०) ॥१३१६॥ कति ओणयं कइसिरं कइहिं च आवस्सएहि परिसुद्धं । कइदोसविप्पमुक्कं किइकम्मं कीस कीरइ वा ॥ गाहा ॥ (आ० नि० ११११) ॥१३१७॥ सेढी समतीताणं कितिकम्मं जे य होंति सेढिगता । सेढीयबाहिराण कितिकम्म होति भइयव्वं ॥१३१८॥ आयरि-यउवज्झाए पवित्ति पत्तेयबुद्ध पुव्वधरे । केवलणाणधरम्मि य कायव्वं णिज्जरट्ठाए ॥१३१९॥ सेढीठाणे सीमाकज्जे चत्तारि बाहिरा होंति । सेढीठाणे दुगभेदपाय चत्तारि वीभइया ॥१३२०॥ पत्तेयबुद्ध जिणकप्पि-या य सुद्धपरिहारिया अहालंदा । एते चउरो दुगदुगभेया कज्जेसु बा-हिरगा ॥१३२१॥ अंतो वि होति भयणा ओमे आवण्ण संजती सेहे । बा-हिंपि होति भयणा अतिबालग वायए सीसे ॥१३२२॥ छेदहरट्ठाणहितो वि दु पावयणि गणहितट्ठाए अवरम्मि । कडजोगी ज(म)न्निसेवति आदि णियंठो व सो पुज्जो ॥१३२३॥ संकिण्णवराहपदे अणाणुतावी य होति अवराहे । उत्तरगुणपडिसेवी आलंबणवज्जिओ वज्जो ॥१३२४॥ गच्छप-रिरक्खणट्ठा अणागतं आउवायकुसलस्स । एसा गणाहिपतिणो सुह-सीलगवेसणा भणिता ॥१३२५॥ दुविहे कितिकम्मम्मी वाउलिया मो णि-सद्ध बुद्धीया । आदिपडिसेधियम्मी उवरिं आलोअणा बहुला ॥१३२६॥ मुक्कधुरा-संपागड-सेवी चरणकरणपब्भट्ठे । लिंगावसेसमित्ते, जं की-रइ तं पुणो वोच्छं । गाहा (आ० नि० ११३४) ॥१३२७॥ वायाए णमु-क्कारो हत्थुस्सेहो य सीसनमण च । संपुच्छणाच्छणं छोभवंदण वंदणं

वावि । गाहा (आ० नि० ११३५)॥१३२८॥ एताति अकुव्वंतो जहारिहं अ-
रिहदेसिए मग्गे । न भवइ पवयणभत्ती, अभत्तिमंतादओ दोसा ।
गाहा (आ० नि० ११४७)॥१३२९॥ परियाव महादुक्खे मुच्छामुच्छे य कि-
च्छपाणे य । किच्छुस्सासे य तहा समोहते चेव कालगते ॥१३३०॥
चत्तारि छच्च लहु गुरु छेदो मूलं च होति बोधव्वं । अणवट्ठप्पे य तहा
पावति पारंचियं ठाणं ॥१३३१॥ परियाग परिस पुरिसं खेत्तं काला-
गमं च णातूणं, कारणजाते जाते कितिकम्म होति कातव्वं ॥१३३२॥
दंसण णाण चरित्त तव विणयं जत्थ जित्तियं जाणे । जिणपण्णत्तं भत्तिए
पूअए तं तहाभाव ॥१३३३॥ सावज्जजोगविरति त्ति संजमो तेण होति
एगविहो, रागद्दोस निरोहो त्ति तेण दुविहो मुणेयव्वो ॥१३३४॥ मणव-
यणकायजोगाण णिरोहो तेण होति तिविहो तु । कोहमाणमायलोभजओ
त्ति चउहा मुणेयव्वो ॥१३३५॥ पंचवयं इंदियाणि य ते पंचह आराति-
विरति छक्काया । वय-काय-अकप्पादी अट्ठारसहा मुणेयव्वो ॥१३३६॥
जोगे करणे सन्ना इंदिय भोम्मादि समणधम्मे य । अट्ठारससीलंगसहस्स
संजमो होइ णायव्वो ॥ १३३७॥ कितिकम्मं पि य दुविहं अब्भुट्ठाणं तहे-
व वंदणयं । समणेहि य समणीहि य जहक्कम होति कायव्वं॥१३३८
सव्वाहि संजतीहि कितिकम्मं संजताण कायव्वं । पुरिसुत्तरिओ धम्मो
सव्वजिणाण पि तित्थम्मि ॥ दारं ॥१३३९॥ पंचज्जामो धम्मो पुरिम-
स्स य पच्छिमस्स य जिणस्स । मज्झिमयाण जिणाणं चाउज्जामो भ-
वे धम्मो ॥१३४०॥ पुरिमाण दुव्विसोज्झो चरिमाणं दुरणुपालओ कप्पो ।
मज्झिमयाण जिणाणं सुविसोज्झो सुरणुपालो य ॥ १३४१॥ पुव्वं तु उव-
ट्ठविओ जस्स वा सामाइयं कयं पुव्वं । सो होती जेट्ठो खलु जो प-
च्छा सो कणिट्ठो तु ॥१३४२॥ पुव्वोवट्ठो जेट्ठो होई जो एत्थ होति पु-
च्छा तु । उवट्ठावणा तु कतिहिं ठाणेहिं ? इमा भवे दसहा ॥१३४३॥ ततो
पारंचिता वुत्ता अणवट्ठप्पाति तिण्णि तु । दंसणम्मि य वंतंमि चरित्तंमि
य केवले ॥१३४४॥ अदुवा चियत्तकिच्चे जीवकायं समारभे । सेहे द-
समे वुत्ते जस्सुवट्ठावणा भणिता ॥१३४५॥ अहवा पारंचेक्को अणवट्ठपोय
होति एक्को तु । दंसणवंतो ततिओ चरित्ते य चउत्थओ होति ॥१३४६॥
पंचमो चियत्तकिच्चो सेहो छट्ठो य होति बोद्धव्वो । एसो य छव्वि-

हो खलु चउव्विहो वा इमो अण्णो ॥ १३४७ ॥ दंसणम्मि य वंतम्मि चरित्त-
म्मि य केवले । चियत्तकिच्चे सेहे य उवट्ठप्पा तु आहिया ॥ १३४८ ॥
दंसण चरित्तवंते पच्चयणावट्टतो वि पडिसेवति । ते जेण सवंती तु एवं
एसा भवे चतुरो ॥ १३४९ ॥ दंसणवंते य तहा जीवणिकाया य जो स-
मारभती । उट्ठावणाए भयणा एतेसिं होति दोण्हंपि ॥ १३५० ॥
अणाभोएण मिच्छत्त संकंते सम्मत्तं पुणरागते । तमेव
तस्स पच्छित्त ज सम्मं पडिवज्जती ॥ १३५१ ॥ आभोगेण उ मिच्छत्त
संकंते सम्मत्त पुणरागते । जिणथेराण आणाए मूलच्छेज्जं तु कारए
॥ १३५२ ॥ छण्हं जीवणिकायाण अप्पज्झो तु विराहतो । तिविहेण प-
डिक्कंते मूलच्छेज्ज तु कारए ॥ १३५३ ॥ छण्हं जीवणिकायाण अणप्प-
ज्झो तु विराहतो । आलोइय-पडिक्कंतो सुद्धो हवति सजतो ॥ १३५४ ॥
जीवणिकायारंभे दंसणवंते य भणिय पच्छित्तं । न देइ सुत्तविहिणा अ-
न्नह देंते इमे दोसा ॥ १३५५ ॥ अपच्छित्ते य पच्छित्त पच्छित्ते अतिम-
त्तया । धम्मस्सासायणा तिव्वा मग्गस्स य विराहणा ॥ १३५६ ॥ उ-
स्सुत्तं ववहरंतो कम्म बधति चिक्कणं । संसार च पवड्ढेति मोह-
णिज्जं च कुव्वति ॥ १३५७ ॥ उम्मग्गदेसणाए मग्ग विपडिवादए । पर
मोहेण रंजंतो महामोह पकुव्वति ॥ दारं ॥ १३५८ ॥ सपडिक्कमणो धम्मो
पुरिमस्स य पच्छिमस्स य जिणस्स । मज्झिमयाण जिणाण कारणजाए
पडिक्कमण ॥ दारं ॥ १३५९ ॥ दुविहो य मासकप्पो जिणकप्पो चेव थविर-
कप्पो य । एक्केक्को य दुविहो अट्ठितकप्पो य ठितकप्पो ॥ दारं ॥ १३६०
पज्जोसवणाकप्पो होति ठितो अट्ठितो य थेराण । एमेव जिणाण वी कप्पो
ठितमट्ठितो होति ॥ १३६१ ॥ चाउम्मासुक्कोसो सत्तरि राइंदिया जहण्णेणं ।
ठितमट्ठितमेगतरे कारणवच्चासि तऽण्णतरे ॥ दारं ॥ १३६२ ॥ ठितमट्ठितो
तु कप्पो एसो मे (भे) वण्णिओ समासेण । अह एत्तो जिणकप्पं वो-
च्छामि अहाणुपुव्वीए ॥ १३६३ ॥ गच्छम्मि य णिम्माया धीरा जे मुणितसव्व-
परमत्था । अग्गह अभिग्गहे वा उवेंति जिणकप्पियविहारं ॥ १३६४ ॥ णव
पुव्वि जहण्णेण उक्कोसेण तु दस असंपुण्णा । चोद्दसपुव्वी लिंग तेण
तु जिणकप्प ण पवज्जे ॥ १३६५ ॥ वइरोसभसंघयणा । दारं । सुत्तत्थो
होति परमत्थो । संसारसभावो वा णाओ तो मुणितपरमत्थो ॥ १३६६ ॥

दोहुग्गहु पिंतियादी पडिमाऽभिग्गहुण भत्तपाणस्स । दोहिं तु उवरिमाहिं गेण्हं ते वत्थपाताइं ॥६७॥ दव्वादभिग्गहा पुण रयणावलिमादिगा व बोधव्वा । एत्तेसु विदित्तभावा उवेंति जिणकप्पियविहारं ॥ दारं ॥ १२६८ ॥ परिणाम जोग सोही उवहिविवेगो य गणणिक्खेवो य । सेज्जासंथारविसोहणं च विगतीविवेगं च ॥१२६९॥ गणहरठवणं च तहा अणुसट्ठी चेव तह य खामणं । सामायारी य तहा वत्तव्वा होंति जिणकप्पे ॥१२७०॥ अणुपालिओ य दीहो परियाओ वायणा वि मे दिण्णा । अब्भुज्जयाण दोण्हं उवेमि कतरं णु १ परिणामो ॥दारं ॥ १२७१ ॥ सोहिणिमित्तं जोगाण भावणा सा इमा तु पंचविहा । तव सत्त सुतेगत्ते बले य तह पंचमा होति ॥१२७२॥ एतेसिं तु विभासा उवरिं भण्णिहिति मासकप्पम्मि । दारं । सेसाइं दाराइं वोच्छामि समासतो कमसो ॥१२७३॥ पुव्वुवहिस्स विवेगं काउं गेण्हति अहागडं उवहिं । अभिगहियएसणाहिं उप्पादेउं सयं चेव ॥दारं ॥१२७४॥ गणणिक्खेवं करेती जो जहिं ठाणट्ठितो तु पुव्वम्मि । तं तत्थेव ठवेती गणिणिक्खेवं च इत्तरियं ॥ १२७५ ॥ सेज्जाए अपरिभुत्ते ठायति तहियं तु एगदेसम्मि । दारं । संथारं उप्पादे अहाकडं एसणविसुद्धं ॥ दारं ॥१२७६॥ विगतीओ य ण गेण्हति गेण्हति भत्तं च सो अलेवाडं । दारं । इय भाविउ हु जाहे ताहे ठवती गणहरं तु ॥१२७७॥ गणहर गुणसंजण्णं वामे पासम्मि ठावइत्ताणं । चुण्णाति धुहति सीसे सच्चित्तादी य अणुजाणे ॥ दारं ॥ १२७८ ॥ ठावेऊण गणहरं आमंतेऊण तो गणं सव्वं । तिविहेण खमावेती सबालवुड्ढाउलं गच्छं ॥१२७९॥ संवेगजणियहासा सुत्तत्थविसारता पयणुकम्मा । चिंतेंति गणं धीरा णिंता वि हु ते जिणाणाए ॥१२८०॥ णिद्धमहुराति सेसं पल्लोगहितं गुरूण अणुरूवं । अणुसट्ठिं देंति तहिं गणाहिवतिणो गणस्सेवं ॥१२८१॥ तवणियमसंपउत्ता आवस्सगझाणजोगमल्लीणा । संजोगविप्पओगे अभिगंखा जे समत्थाणं ॥ १२८२ ॥ सुप्पत्ते णिसिरंतेहिं गणो वी चिंतिओ भवति सो उ । दारं । णिद्धाए दिट्ठीए आलोए तं गणं सव्वं ॥ दारं ॥१२८३ वायाए महुराए आसासे । दारं । अपरिसेसणिस्सेसं । दारं । गुरुअणुरूव नहुरिहं सबालवुड्ढाति राइणिए ॥ दारं ॥१२८४॥ तवो होति बारसविहो दुह णियमो इंदिओ य णोइंदी । आवास समायारी बोधव्वा चक्कवाला उ । दारं ॥ १२८५ ॥ सुत्तत्थझाणजोगे अल्लीणा तेसु होह जुत्ताउ । सव्वे वि

य संजोगा णियमा उ य विप्पओगंता ॥ दारं ॥१३८६॥ तहु उवही उप्पाय-
ण दव्वादीया अभिग्गहा जे तु । सति सामत्थे तेसु वि मा हु पमायं क
रेज्जाऽणु ॥१३८७॥ अहवा अभिग्गहा तू कुणंति जिणा य जे समत्था ॥
।दारं। एवं सासेत्तु गणं ताहे गणहारि अप्पाहे ॥१३८८॥ गणसंगहुव
ग्गहरक्खणे तुमं मा हु काहिसि पमादं । हितकप्पो हु जिणाण गणध
रपरिवाडिया गच्छे ॥१३८९॥ मज्जाररसियसरिसोवमं तुम मा हु काहि
सि विहारं । मा णासेहिसि दोण्णि वि अप्पाणं चेव गच्छं च ॥१३९०॥
वड्ढतओ विहारो जिणपण्णत्तो दुवालसंगम्मि । जह जिणकप्पियपरिहा-
रियाण सेसाण वि तहेव ॥१३९१॥ परिवड्ढमाण सड्ढो जह जिण-
कप्पो तहा करेज्जासी । अकरेतमप्पणा तू ण हवे अण्णं इमं णाउ
॥१३९२॥ जो सगिहं तु पलित्त अलसो हु न विज्झवे पमाएणं । सो
न वि सद्दहियव्वो परघरदाहप्पसमणम्मि ॥१३९३॥ णाणं अहिज्जिऊण
जिणवयणं दंसणेण रोएन्ता । ण चएति जो धरेतुं अप्पाण गणं ण गण-
हारी ॥१३९४॥ णाणं अहिज्जिऊणं जिणवयणं दंसणेण रोएन्ता । चाए-
ति जो धरेतु अप्पाण गण स गणहारी ॥१३९५॥ णाणं अहिज्जिऊणं
जिणवयणं दंसणेण रोएन्ता । ण चएति जो हवेउं अप्पाण गण ण ग-
णहारी ॥१३९६॥ णाण अहिज्जिऊणं जिणवयणं दंसणेण रोएन्ता । चा-
एति जो हवेउं अप्पाण गण स गणहारी ॥१३९७॥ णाणम्मि दंसणम्मि
रा तवे चरित्ते य समणसारम्मि । ण चएति जो हवेउं अप्पाण गणं
ण गणहारी ॥१३९८॥ णाणम्मि दंसणम्मि य तवे चरित्ते य समण-
सारम्मि । चाएति जो हवेउं अप्पाण गणं स गणहारी ॥ १३९९॥
एसा गणहरमेरा आयारत्थाण वण्णिता सुत्ते । लोगसुहाणुगताणं
अप्पच्छंदा जहिच्छाए ॥ १४००॥

लाइसुह सद्दादी विसया तेसिं तु जे भवे रत्ता । अ-
प्पच्छंदा ते उ विहारो ते सउणुण्णातो ॥१४०१॥ उग्गमउप्पायण-
एसणाउ चरित्तस्स रक्खणट्ठाए । पिंड उवहिं सेज्जं सोहेंतो होति
सचरित्ती ॥१४०२॥ सीताणेति विहारं सुहसीलत्तेण जो अबुद्धीओ
। सो णवरि लिंगधारी संजमसारेण णिस्सारो ॥१४०३॥ तित्थगरो
चउणाणी सुरमहितो सिज्झियव्वय धुवम्मि । अणिगूहियबलवीरिओ

तवोवहाणम्मि उज्जमंति ॥१४०४॥ किं पुण अवसेसेहिं दुक्खक्खयका-
रणा सुविहिएहिं । होति ण उज्जमियव्वं सपच्चवायम्मि माणुस्से ? ॥१४०५॥
संखित्ता वि य पवहे जह वड्ढति वित्थरेण पवहंती । उदधिं तेणं च
णदी तह सीलगुणेहि वड्ढाहि ॥१४०६॥ कुणमप्पमाय आवस्सएहिं सं-
जमतवोवहाणेहिं । णिस्सार माणुस्सं दुल्लभलाभं वियाणित्ता ॥१४०७॥
तिव्वकसायपरिणामा परपरिवादं च मा करेज्जाह । अच्चासायणविरता
होह सदा संजमरता य ॥१४०८॥ सुस्सूसगा गुरूणं चेइयभत्ता य विण-
यजुत्ता य । सज्झाए आउत्ता साहूण य वच्छला णिच्चं ॥१४०९॥ एस
अखंडियसीलो बहुस्सुतो य अपरोवतावी य । चरणगुणसुट्ठिय त्ति य ध-
ण्णाणायरीति घोसणगं ॥१४१०॥ बाढं ति भाणिऊणं एवं णे संतलं ति जं-
पंता । आणंदअंसुपादं मुंचंति गुणे सरंता से ॥१४११॥ कतरे गुणा उ तस्सा
जे सुसरंतेसु तस्स ते सीसा । भण्णति इणमो सुणसू ते भण्णंते समासे-
णं ॥१४१२॥ सव्वस्स दायगाणं समसुहदुक्खाण णिप्पकंपाणं । दुक्खं
खु विसहिउं जे चिरप्पवासो गुरूणं तु ॥१४१३॥ सीलड्ढ-गुणड्ढेहि
य बहुस्सुएहि य अपरोवतावीहिं । पवसंतेहिं सएहि य देसा ते खंडि-
या होंति ॥१४१४॥ अणुसट्ठिं दाऊणं ताहे पसत्थम्मि तिहिमुहुत्तम्मि ।
अहसण्णिहितं संघं असतिगणं तं समाहूय ॥१४१५॥ जिणवरपादस-
मीवे पडिवज्जे गणहराण व समीवे । चोद्दसपुव्वी तह चेतिए य असंती
य वडमादी ॥१४१६॥ धामावहारविजढा काउं गहणं व गाहणं चेव ।
सुत्तत्थझरियसारा गेण्हंति अभिग्गहे धीरा ॥१४१७॥ जिणकप्पियपाउग्गा अ-
भिग्गहा गेण्हती ण अण्णा तु । जिणकप्पो केरिसस्सा कप्पति पडिवज्जिउं ?
सुणसु ॥१४१८॥ कप्पे सुत्तत्थविसारयस्स संघयणविरियजुत्तस्स । एता-
रिसस्स कप्पति पडिवज्जिउ होति जिणकप्पो ॥१४१९॥ जिणकप्पे संघय-
णं भणितं पढम तु होति णियमेण । विरियं तु भण्णति धिती तीए जुत्तो व-
ज्जकुड्डसमो ॥१४२०॥ कोति पुण ण पडिवज्जे सो पुण णियमा उ कारणे-
हिं तु । काणि पुण कारणाणि य ? इमाइं ताइं णिसामेह ॥१४२१॥ दे-
हस्स दुब्बलत्तं आयरियाणं च दुल्लभपसादा । दारं । रोगपडिबंध ण स-
हति सीउण्हादी अ पडिभागी ॥१४२२॥ सुत्तत्थाणि वि घेत्तुं दुब्बलदेहो
उ तं ण चाएति । दारं । गुरूणं च अणणुकूलत्तणेण णाराहिओ सूरी

॥१४२३॥ आयरिया अपसन्ना सुत्तप्पसायं उ ते ण कुव्वंति । णाहीतं तेण सुतं जावइएणं तु पज्जत्तो ॥ दारं ॥१४२४॥ सोलसविहरोगाणं अ-हुवा गाढं अभिहुएणं तु । णाधीतं होज्ज सुतं ते य इमे वण्णिता रोगा ॥१४२५॥ कासे सासे जरे दाहे जोणिसूले भगंदरे । अरिसा अजीरए दिट्ठी मुद्धसूले अकारए ॥१४२६॥ अच्छीवेयण तह कण्णवेयणा कंडु कोढ दगउरं । एते ते सोलस वी समासतो वण्णिता रोगा ॥ दारं ॥ १४२७॥ अण्णो पडिबंधेणं गुरुकुलवासं ण चेव आवसती । तेणं णाहि-ज्जती ऊ के पुण पडिबंधिसे सुणसु ॥१४२८॥ सो गामो सा वइया तं भत्तं भद्दओ जणो जत्थ । एताइं संभरंतो गुरुकुलवासं ण रोएति ॥ १४२९ ॥ सक्कारो सम्माणो पूजइ मे भोइओ तहिं गामे । आयरिओ महत्तरओ ए-रिसता से तहिं सइठा ॥१४३०॥ सच्छंदुट्ठाणणिवज्जणस्स सच्छंदगहितभि-क्खस्स । सच्छंदजंपियस्स य मा मे सन्नू वि एगागी ॥ १४३१॥ एतेहिं ऊ अभागी सांताइणं ण देति तु उरं तु । तो णाहिज्जति सो ऊ गुरुकुलवा-सं असेवेंतो ॥१४३२॥ एतेहिं (ण) पडिवज्जे अणुसाहिं दारिधं परिसमत्तं । का पुण सामायारी जिणकप्पे होतिमा सा उ ॥१४३३॥ खेत्ते काल चरित्ते तित्थे परियाग आगमे वेदे । कप्पे लिंगे लेस्सा गणणे झाणे यऽभिग्ग-हे ॥१४३४॥ पव्वावण मुंडावण मणसा वण्णे वि से अणुग्घाता । कार-णणिप्पडिकम्मे भत्तं पंथो य ततियाए ॥१४३५॥ एसो जिणकप्पो ख-लु समासतो वण्णितो सविभवेणं । दारं । एत्तो उ थेरकप्पं समासओ से णिसामेहि ॥१४३६॥ तिविहम्मि संजमम्मि उ बोधव्वो होति थेरक-प्पो तु । सामइय-छेदपरिहारिए य तिविहम्मि पयम्मि ॥ १४३७॥ हि-य अट्ठिए व कप्पे सामाइयसंजमो मुणेयव्वो । छेदपरिहारिया पुण णियमा उ हवंति ठितकप्पे ॥१४३८॥ एतेसु थेरकप्पो जह जिणकप्पी-ण अग्गाहो दोसु । गहणं चऽभिग्गहाणं पंचहिं दोहिं च ण तह इहं ॥ १४३९॥ बाले वुड्ढे सेहे अगीतत्थे णाणदंसणप्पेही । दुब्बलसंघयण-म्मि य गच्छं पइ पेसणा भणिता ॥१४४०॥ जहसंभवं तु सेसा खेत्तादि विभासियव्व दारा तु । उवरिं तु मासकप्पो वित्थरतो विभजते तेसिं ॥ दारं ॥ १४४१॥ इति एस थेरकप्पो एत्तो वोच्छामि लिंगकप्पं तु । तहि-यं तु लिंगकप्पो इणमो जिणकप्पे भवती तु ॥ १४४२॥ रूढणहकक्ख-

णिगिणो मुंडो दुविहोवही जहण्णो सिं । एसो उ लिंगकप्पो णिव्वाघातेण णेयव्वो ॥१४४३॥ रयहरणं मुहपोत्ती संखेवेणं तु दुविह उवही तु । वाघातो विकितलिंगो अचिर पमेहे कडिपट्टो ॥१४४४॥ दुविहा अतिसेस वि य तेसिं इमे वण्णिता समासेणं । बाहिर अब्भिंतरगा तेसिं विसेसं पवक्खामि ॥१४४५॥ बाहिरगो सरीरस्सा अतिसेसो तेसिमो उ बोधव्वो । अच्छिद्दप णिपाया वइरोसभसंघयणधारी ॥१४४६॥ अब्भिंतरमतिसेसो इमो उ तेसिं समासतो भणिओ । उयही विव अक्खोभो सूरो इव तेयसा जुत्ता ॥१४४७॥ अव्वावण्णसरीरा वइरांधो ण भवते सरीरस्स । सव्वमवि ण कुच्छते सिं परिकम्मं ण वि य कुव्वंति ॥१४४८॥ पाणिपडिग्गहधारी एरिसंचा णियमसो मुणेयव्वा । अतिसेसा वोच्छामि अण्णेवि समासतो तेसिं ॥१४४९॥ दुविहो अतिसेस तेसिं णाणातिसओ तहेव सारीरो । णाणातिसओ ओहिमणपज्जव तदुभयं चेव ॥१४५०॥

आभिणिबोडियणाणं सुतणाणं चेव णाणमतिसेसो । तिन्नी अभिण्णवच्चा एसो सारीरमतिसेसो ॥१४५१॥ रयहरणं मुहपोत्ती अहणोवहि पणिपत्तयस्सेसो । उक्कोस तिण्णि कप्पा रयहरण मुहपोत्ति पणगेतं ॥१४५२॥ णवहा पडिगाहीणं जहण्णमुक्कोस होति बारसहा । तेसिं वेयाणिं चिय अतिरेगो पातणिज्जोगो ॥१४५३॥ उव्वट्टण घंसणमज्जणा य णहणयणदंतसोभाय । एते उवघाता खलु भवंति जिणलिंगकप्पस्स ॥१४५४॥ उव्वट्टणाइयातिं उवकरणं चेव थेरकप्पीणं । भइयव्वो लिंगकप्पो गेलण्णादीहिं कज्जेहिं ॥१४५५॥ कज्जम्मि गिलाणादिसु उवट्टणमाइया अणुण्णाया । दुगुणो चउग्गुणो वा कारणतो होति उवहीउ ॥१४५६॥ रूढणहु कक्खणियणो मुंडो दुविहोवही समासेणं । एसो तु लिंगकप्पो कारण विवच्चा सिलण्णतरो ॥१४५७॥ लोय खुरकत्तरी य व मुंडं तिविहं तु होति थेराणं । असिवादिकारणेहिं कुज्जविवज्जास लिंगस्स ॥१४५८॥ णिरुवहतलिंगभेदे गुरुगा कप्पति य कारणज्जाते । गेलण्णरोगलोए सरीरवेयावडियमादी ॥१४५९॥ वासत्ताणेणावि हु भेदो लिंगस्स तं अणुन्नातं । चाउम्मासुक्कोसं सत्तरि राइंदिय जह नं ॥१४६०॥ एयं तु दव्वलिंगं भावे समणत्तणं तु णायव्वं । को नु गुणो दव्वलिंगे ? भण्णति इणमो सुणसु वोच्छं ॥१४६१॥ सक्कार वंदण णमंसणा य पूजा कहणा य लिंगकप्पम्मि

। पत्तेय बुद्धमादी लिंगे छउमत्थ तो गहुणं ॥१४६२॥ वत्थासण सक्कारो वंदण अब्भुट्ठाणं तु णायव्वं । पणिवादो तु णमंसण संतगुणुक्कित्तणा पूया ॥१४६३॥ दट्ठूण दव्वलिंगं कुव्वंतेताणि इंदमादी वि । लिंगम्मि अविज्जंते ण णज्जती एस विरओत्ति ॥१४६४॥ कहेंतो समणलिंगेणं धम्मं तू समस्सतो भवे । अलिंगं बेंति तं कीस जाणंतो ण करे तुमं ? ॥१४६५॥ पत्तेयबुद्धो जाव उ गिहिलिंगी अहव अण्णलिंगी उ । देवा वि ता ण पूएंति मा पुज्जं होहिति कुलिंगं ॥१४६६॥ ण य णं पुच्छति कोती कोस्सिओ होति तुज्झ धम्मोत्ति । ण य सल्लिंगविहूणं छउमत्थो जाणे विरओत्ति ॥१४६७॥ एसो तु लिंगकप्पो अहुणा वोच्छामि उवहिकप्पं तु । जो जस्स भवे उवही जिणथेराणं जहाकमसो ॥१४६८॥ ओहे उवग्गहे या दुविहो उवही तु होति णायव्वो । ओहोवही तु तिण्हं ओवग्गहिओ भवे दोण्हं ॥१४६९॥ जिणकप्पे थेरकप्पे कप्पातीते य तिण्हुमोघो उ । थेराणमुवग्गहिओ साहूणं संजतीणं च ॥१४७०॥ बारस चोद्दस पणुवीस णव य एक्को य णिरुवही चेव । जिण थेर अज्ज-पत्तेयबुद्धतित्थकरतित्थकरे ॥१४७१॥ पाणीपडिग्गहीया पडिग्गहधारी य होंति जिणकप्पे । थेरा पडिग्गहधरा कप्पादीया तु भइयव्वा ॥१४७२॥ बियतियचउक्कपणए णव दस एक्कारसेव बारसगं । एते अट्ठ विकप्पा उवहिम्मिवि होंति जिणकप्पे ॥१४७३॥ अहवा दुगं च पणगं उवहिस्स तु होंति दोण्णि वि । विकप्पा पाणिपडिग्गहियाणं अपाउय सपाउयाणं च ॥१४७४॥ रयहरणं मुहपोत्ती एयं दुयगं अपाउयगाणं । रयहरणं मुहपोत्ती तिण्णि य पच्छाद इतरेसिं ॥१४७५॥ उग्गहधारीणं पि य दुविहो उवही समासतो होति । णवविह दुवालसविहो अपाउय सपाउयाणं च ॥१४७६॥ पत्तं पत्ताबंधो पातट्ठवणं च पातकेसरिया । पडलाइं रयत्ताणं च गोच्छओ पातणिज्जोगो ॥१४७७॥ रयहरणं मुहपोत्ती णवहा एसो अपाउअंगाणं । इयरेसिं एमेव य अतिरेगा तिण्णि पच्छागा ॥१४७८॥ एते चेव दुवालस मत्तउ अतिरेग चोलपट्टो य । एसो य चोद्दसविहो उवही खलु थेरकप्पम्मि ॥१४७९॥ अज्जाणं एमेव य चोलत्थाणम्मि णवरि कमढं तु । अतिरेग अंगलग्गा इमे तु अण्णे मुणेयव्वा ॥१४८०॥ उग्गह णंतग पट्टो अड्ढोरुग चलणिया य बोद्धव्वा । अब्भिंतर बाहिणियंसणी य तह कंचुए चेव ॥१४८१॥ उक्कच्छिय वेकच्छिय संघाडी चेव खंधकरणी य ।

ओहोवहिम्मि एते अज्जाणं पण्णवीसं तु ॥१४८२॥ सत्त्य पडिग्गहम्मि रयहरणं चेव होति मुहपोत्ती। एसो तु पव जेकप्पो उवही पत्तेयबुद्धाणं ॥१४८३॥ एगो तित्थगराणं णिक्खममाणाण होति उवही उ। तेण परं णिरूवहि ऊ जावज्जीवाए तित्थगरा ॥१४८४॥ जिणा बारसरूवाइं थेरा चोद्दसरूविणो। अज्जाणं पण्णवीसं तु अतो उड्ढं उवग्गहो ॥१४८५॥ एसो उवहीकप्पो समासतो वण्णिओ जहाकमसो। दारं। संभोगकप्पमहुणा समासतो मे णिसामेह ॥१४८६॥ संभोगपरूवणता सिरिघर सिवपाहुडे य संभुत्ते। दंसणणाणचरित्ते तवहेतुं उत्तरगुणेसु ॥१४८७॥ ओह अभिग्गह दाणग्गहणे अणुपालणाय उववाए। संवासम्मि य छट्ठे संभोगविही मुणेयव्वो ॥ परिहार गाहा ॥१४८८॥ उवहि सुय भत्तपाणे अंजलीपग्गहे इय। दावणा य निकाए य अब्भुट्ठाणेत्ति आवरे ॥८९॥ कितिकम्मस्स य करणे वेयावच्चकरणे इय। समोसरणसंनिसेज्जा कहाए य पबंधणा ॥१४९०॥ उग्गम उप्पाएसण विसेस परिकम्मणा य परिहरणा। संजोगविहिविभत्ता उवहिम्मि वि होंति छट्ठाणा ॥१४९१॥ वायण पुच्छण पडिपुच्छ चिंत परियट्टणा य कहणा य। संजोगविहिविभत्ता सुतट्ठाणे होंति छट्ठाणा ॥१४९२॥ उग्गमउप्पाएसण लोयण संभुंजणा णिसिरणा य। संजोगविहिविभत्ता य भत्तदाणे वि छट्ठाणा ॥१४९३॥ वंदिय पणमिय अंजलि गुरुआलोवे अभिग्गहि णिसेज्जा। संजोगविहिविभत्ता अंजलिकम्मे वि छट्ठाणा ॥१४९४॥ सेज्जोवहि आहारे सीसगणा अणुप्पयाण सज्झाए। संजोगविहिविभत्ता दावणाए वि छट्ठाणा ॥१४९५॥ सेज्जोवहि आहारे सीसगणाऽणुप्पदाण सज्झाए। संजोगविहिविभत्ता निमंतणाए वि छट्ठाणा ॥१४९६॥ अब्भुट्ठासण अंजलि किंकर अब्भासकरणसविभत्ती। संजोगविहिविभत्ता अब्भुट्ठाणे वि छट्ठाणा ॥१४९७॥ सुत्तत्थाम सिरोणय मुद्धाणं सुत्तवज्जियं चेव। संजोगविहिविभत्ता कितिकम्मे होंति छट्ठाणा ॥१४९८॥ आहार उवहिमत्तग अहिगरण विओसणा य सुयसहाए। संजोगविहिविभत्ता वेयावच्चे वि छट्ठाणा ॥१४९९॥ वास उडु अहालंदे पुडुत्तसाहारणोग्गहित्तिरिए। वुड्ढावासोसरणे छट्ठाणा होंति पविभत्ता ॥१५००॥ परियट्टणाणुओगे वागरणे परिच्छणा य आलोए। संजोगविहिविभत्ता सणिस-

सेज्जाए छट्ठाणा ॥१५०१॥ बादो जयमितंडा पइण्णयाऽणच्छिया कहा होति । संजोगविहिविभत्ता कहापबंधे य छट्ठाणा ॥१५०२॥ रागेणं दोसेणं अण्णाणाविरईयमिच्छत्ते । कोमामात्तोआसवदारेहिं तू रातीभोयण छट्ठेहिं ॥१५०३॥

अविरयस्स बावत्तरिविहो । एसा बावत्तरी दोहिं गुणिता रागदोसेहिं चोयालंसतं । अण्णाणातीहिं ॥२१६॥ कोहादीहिं ॥२८८॥ आसवदारेहिं ॥३६०॥ रातीभोयणछट्ठेहिं ॥४३२॥

बारस य चउव्वीसा छत्तीसा य अडयालमेव सट्ठी य । बावत्तरीउ एसो संजोयविही मुणेयव्वो ॥१५०४॥ बारस य चउव्वीसा छत्तीसऽडयालमेव सट्ठी य । बावत्तरी बिगुणिता चोयालसतं तु संजोगा ॥१५०५॥ बारस य चउव्वीसा छत्तीसऽडयाल चेव सट्ठी य । बावत्तरी छग्गुणिया चत्तारि सता उ बत्तीसा ॥१५०६॥ जस्सेते संजोगा उवलद्धा अत्थतो य विण्णाता । सो जाणती विसोही उवघायं चेव संभोगे ॥१५०७॥ जस्सेते संजोगा उवलद्धा अत्थतो य विण्णाता । णिज्जूहिउं समत्थो णिज्जूढे यावि परिहरिउं ॥१५०८॥ सरिकप्पे सरिछंदे तुल्लचरित्ते विसिट्ठतरए वा । आयत्ति भत्तपाणं सएण लाभेण वा तुस्से ॥१५०९॥ सरिकप्पे सरिछंदे तुल्लचरित्ते विसिट्ठतरए वा । साहूहिं संथवं कुज्ज णाणीहिं चरित्तगुत्तेहिं ॥१५१०॥ ठितकप्पम्मि दसविहे ठवणाकप्पे य दुविहमण्णतरे । उत्तरगुणकप्पम्मि य जो सरिकप्पो स संभोगो ॥१५११॥ सत्तविहकप्प एसो समासतो वण्णितो सविभवेणं । एत्तो दसविहकप्पं समासओ मे णिसामेहि ॥१५१२॥ सत्तविहो कप्पो समत्तो ॥

कप्पपकप्पाविकप्पे संकप्पुवकप्प तह य अणुकप्पे । उक्कप्पे य अकप्पे तहा दुकप्पे सुकप्पे य ॥१५१३॥ गच्छाओ णिग्गताणं जिणकप्पियमादियाण कप्पो तु । तं च समासेण अहं उक्त्तिंहामि इणमो तु ॥१५१४॥ पिंडेसण पाणेसण उग्गह उद्दिट्ठ भावणा चेव । बारस य भिक्खुपडिमा एवमादी भवे कप्पो ॥१५१५॥ पिंडेसण पाणेसण पंचुवरिमया सभिग्गहेगा य । लेवासु य अग्गहणं सेज्जोग्गह उवरिमा दोसु ॥१५१६॥ उद्दिट्ठिहत्ती डेट्ठा जिणकप्पविही तु जो समक्खाओ । खेत्ते काल चरित्ते इच्चाइ तहेव उ इहइंपि ॥१५१७॥ पणुवीस भावणाओ स-

दुव्वयाणं तु होति पंचण्हं । बारस अणिच्चतादी तवमुत्तादी य पंचेव ॥ १५१८॥ एताहिं भावणाहिं भावेंती ते उ णिच्चमप्पाणं । सव्वेवि गच्छणिग्गत वेरग्गपरायणा धीरा ॥ १५१९॥ बारस भिक्खूपडिमा आदिग्गहणेण लंदिया चेव । तह सुद्धपारिहारी सव्वोऽवेसो भवे कप्पो ॥ १५२०॥ णिच्छय णिराम णिम्मम णिरहंकार परमट्ठ दढजोगी । चत्तसरीर कसाया इंदियगामा य णिग्गहिया ॥१५२१॥ जं चऽण्ण एवमादी सव्वणयविहाण आगमविसुद्धं । कप्पो त्ति णाणदंसण चरित्तगुणभावहं जाणे ॥ १५२२ ॥ णिच्छयमतिणो णिच्छयणयदिट्ठता उदिट्ठंता तु ववहारे । अहुवा विणिच्छतो तू णाणादीयं भवे ततियं ॥ १५२३॥ णासंसइ इहलोयं परलोगं वा वि एस तु णिरासो । दारं । णिम्ममता तु ममत्तं ण करेती अवि य देहे वि ॥ १५२४॥ ण करेइ अहंकारं एरिसओ अहंति उत्तमगुणोघो । दारं । णेव्वाणं परमट्ठो तस्साहुणता तु दढजोगी ॥१५२५॥ णिप्पडिकम्मसरीरो चत्तसरीरो उ होति णायव्वो । णऽवणेतऽच्छिमलादि वि खंतिखमो उज्झियकसाओ ॥ १५२६ ॥ सोइंदियमादीसु य विसयपयारेसु सद्दमादीसु । ण उवेति रागदोसे इंदियगामा य णिग्गहिया । दारं ॥ १५२७॥ सव्वणया वी दुविहा णाणे करणे य होंति बोधव्वा । सव्वणयाणऽपेयं मतं तु जो सुट्ठितो चरणे ॥ १५२८॥ कप्पो णामं भण्णति जो आवहती हु णाणमादीणि । वुड्ढिं वा वि करेती सव्वो सो होति कप्पो तु ॥ १५२९॥ कप्पो उ एस भणितो अहुणा एत्तो पकप्प वोच्छामि । उस्सारकप्पमादी जहक्कमं आणुपुव्वीए ॥१५३०॥ उस्सारकप्प लोगाणुओग पढमाणुओग संगहणी । संभोग सिंगणाइय एवमादी पकप्पो तु ॥१५३१॥ आयारदिट्ठिवादत्थजाणए पुरिसकारणविहण्णू । संविग्गमपरितंतो अरिहति उस्सारणं काउं ॥१५३२॥ कारणे-अहिगते य पडिबद्धे संविग्गे य सत्तट्ठिए अवट्ठिए य पडिबुज्झी गुरु असुदी जोगकारए ॥१५३३॥ गच्छो य अलद्धिओ ओमाणं चेव अणाहियासो य । गिहिणो य मंदधम्मा सुद्धं च गवेसए उवहिं ॥ १५३४॥ एएहिं कारणेहिं उस्सारणारिहो उ बोधव्वो । दारं ॥ उस्सारो दिट्ठिवादे धम्मकही गंडियणिमित्तं ॥ १५३५॥ उस्सारकप्प एसो समासओ वण्णिओ मए एवं । लोगाणुओगमेत्तो वोच्छामि अहं समासेणं ॥

॥ १५३६ ॥ मेहावीसीसम्मी ओहामिय कालराज्जपेराणं । मज्झंतिएण अह सो खिंसंतेणं इमं भणितो ॥ १५३७ ॥ अतिबहुतं तेऽधीतं णय णातो तारिसो मुहुत्तो उ । जत्थ थिरो होति सेहो णिक्खंतो अहो ! उ बोदत्तं ॥ १५३८ ॥ तो एवं सउमच्छं भणितो अह गंतु सो पतिट्ठाणं । आजीविसकासंमी सिक्खति ताहे णिमित्तत्थं ॥ १५३९ ॥ अह तम्मि अ-ईयम्मी वड्ढेदह णिवेदह कण्णया(कया)ति । सातवाहणो णरिंदो पु-च्छइमा तिण्णि पुच्छाओ ॥ १५४० ॥ पसुलेंडि पढमताए बितिय स-मुद्दे वं केत्तियं उदयं ? । ततियाए पुच्छाए महुरा य पडेज्ज व ण व त्ति ? ॥ १५४१ ॥ पढमाए वामकडगं देति ताहे सतसहस्समुल्लं तु । बि-तियाए कुंडलं तू ततियाए वि कुंडलं बितियं ॥ १५४२ ॥ आजीविया उवट्ठि-त गुरुदक्खिण्णं तु एत अम्हं ति । तेहिं तयं तू गहितं इयरो चेल का-लकज्जं तु ॥ १५४३ ॥ णट्ठम्मि तु सुत्तस्सी अत्थम्मि अणट्ठे ताहे सो कुणति । लोगाणुजोगं च तहा पढमणुजोगं च दोऽवेते ॥ १५४४ ॥ बहुहा णि-मित्त तहियं पढमणुओगे य होंति चरियाइं । जिणचक्किदसाराणं पुव्व-भवाइं णिबद्धाइं ॥ १५४५ ॥ तो काऊणं तो सो पाडलिपुत्ते उवट्ठितो संघे । बेति कतं मे किंची अणुग्गहट्ठाए तं सुणसु ॥ १५४६ ॥ तो संघेण णि-संतं सोतूण य से पडिच्छितं तं तु । तो तं पइट्ठितं तू णयरम्मी कुसुम-णामम्मि ॥ १५४७ ॥ एमादीणं करणं गहणं णिज्जूहणा पकप्पो तु । संगहणीण य करणं अप्पाहाराण तु पकप्पो ॥ १५४८ ॥ संभोगो सं-गहुवग्गहट्ठता य वच्छल्लपीति बहुमाणो । साहारणकुलगणसंघट्ठवणा अणतिक्कमणमेव ॥ १५४९ ॥ सुत्तत्थतदुभयादीहिं संगहो उवग्गहो य भ-त्तादी । वच्छल्ल गुरुगिलाणे एवमादीसु जहकमसो ॥ १५५० ॥

एगत्थ भोयणेणं पीती भवतिक्कभाण जिमित त्ति । बहुमा-णं पिय कुव्वति सहायगत्तं च तेणेव ॥ १५५१ ॥ केई अलद्धिमंता ण ल-भंति सलद्धिया चिय लभंति । जं लद्धं सामण्णं संभोगमितो उ इच्छंति ॥ १५५२ ॥ कुलगणसंघत्थेरा मज्जायाओ ठवेंति हिंडंता । जह सकुले परि-ताणो णत्थी उवसंपया चेव ॥ १५५३ ॥ कुलगणसंघट्ठवणा आओ य क-ताओ तहिं तु थेरेहिं । कुलबहुमज्जाला विव ताओ य णतिक्कमिज्जं-ति ॥ १५५४ ॥ कज्जेसु सिंगभूतं कज्जं तू सिंगणाइयं होति । तं चेति-

साहुसंजति होज्जाहि सगच्छपरगच्छे ॥ संभोगकप्पो गतो ॥ १५५५ ॥ तं पुण होज्जाहि कतं कोति भणेज्जाहि संजते जति वा । मज्झेण दु वक्समरओ कहंति सो पुच्छितो आह ॥ १५५६ ॥ कीतो मे व पइट्ठो हाउं वा आणिओ धरेंतो वा । दारे वासे जातो अहवा राजा इव पलावी ॥ १५५७ ॥ अक्कमिऊणं घेत्तुं दासाणि करेउ अहव लोभेउं । वत्थासणमादीहिं तु तत्थ पमादो ण कायव्वो ॥ १५५८ ॥ गच्छस्स रक्खणट्ठ० । चारित्तट्ठिते अवस्स कायव्वं । इहरा तू मज्जाता गच्छस्स तु फेडिया होति ॥ १५५९ ॥ आणाए जिणिंदाणं अणुकंपाए य चरणजुत्ताणं । परगच्छे व सगच्छे सव्वपयत्तेण कायव्वं ॥ १५६० ॥ अणवत्थवारणट्ठा उच्छूढदिट्ठंवतो कुसीले वि । लिंगं अणुम्मुयंते जीवादिइयाऽबुद्धधम्मो य ॥ १५६१ ॥ अणुसट्ठी धम्मकहापण्णविओ जदि वा मुंचती पावो । ताहे अतीसतीए इमाइं कुज्जा तु करणाणि ॥ १५६२ ॥ अंतद्धाणी ओसोवणी य पासायकंप वेतालं । अभिओग थंभ संकम आवेसण वेयणकरी य ॥ १५६३ ॥ अंतद्धाणं काउं हरंति ओसोवणं च काऊणं । वेतालमुट्ठवेउं भेसंति तगं अमुचंतं ॥ १५६४ ॥ अभिओग वसीकरणं विज्जासंकामणं तु अण्णत्थ । थंभस्स कंपणं वा आवेसेतुं व भेसेंति ॥ १५६५ ॥ साहम्मियवच्छल्लं कुणमाणेणं तु एव कत होइ । अण्णे य गुणा उ इमे हवंति ते मे णिसामेह ॥ १५६६ ॥ मिच्छत्ता सम्मत्तं सम्मादिट्ठी चरित्तओ तंभे । चरित्तट्ठिते थिरत्तं भत्तणा य पभावणा तित्थे ॥ १५६७ ॥ तम्हा साहुणिमित्तं सव्वपयत्तेण एव कायव्वं । अहुणा चेतिणिमित्तं जं कायव्वं तगं वोच्छं ॥ १५६८ ॥ चोदेइ चेतियाणं खेत्तहिरण्णे व गामगावादी । लग्गंतस्स व जतिणो तिकरणसोही कहं णु भवे ? ॥ १५६९ ॥ भण्णति एत्थ विभासा जो एयाइं सयं विमग्गेज्जा । तस्स ण होती सोही अह कोति हरेज्ज एयाइं ॥ १५७० ॥ तत्थ करेंत उवेहं जा सा भणिता तु तिगरणविसोही । सा य ण होति अभत्ती य तस्स तम्हा णिवारेज्जा ॥ १५७१ ॥ सव्वत्थामेण तहिं संघेणं होति लग्गियव्वं तु । सचरित्तअचरित्तीण उ सव्वेसिं एव कज्जं तु ॥ १५७२ ॥ तत्थ पुण कयादि णिवो अण्णत्थ हवेज्ज तत्थ उ वयंतो । लिंगत्थेहिं समयं का मज्जादा भवे तहियं ? ॥ १५७३ ॥ भत्ते पाणे सयणासणे य सेज्जोवही य सज्झाए । वायणप-

डिच्छणासु य सुहसीले अन्नसंहारो ॥१५७४॥ जहियं तु सावयादी
कोति करेज्जाहि संघभत्तं तु । तहियं तु ण गेण्हेज्जा ण य वस उहि
एह सेज्जासु ॥१५७५॥ पाणगभत्तादीसु ण य संघाडो ण या वि से
सुत्ते । बोहिंति आसणे वि य ण जयंति एत्थ तु उवेसो ॥१५७६॥
सेज्जा वेवं उवहिं ण देंति गेण्हंति वा ण संघाडं । सज्झायं पि ण गि-
ण्हे ण पडिच्छे चोदए वावि ॥१५७७॥ सोसु राउलकज्जं उवदेसं वा
सुएज्जा इव एवं । अण्णत्थ उदासीणो एसो खलु भत्तसंथारो ॥
१५७८॥ परिवारं देंति तहिं राजकुले विण्णवेंति ते चेव । जदि वा
होज्ज समत्थो मंतेज्जा तो सयं चेव ॥१५७९॥ पुण चेइयवहादिसु उ-
ड्डवणचरित्तभंसरोहे वा । णित्थंबणो समत्थो ण करेति तहिं वि-
संभोगो ॥१५८०॥ कोई वहुबंधादी साहूण करेज्ज अहव देवकुले ।
पाडेज्ज पडिमभंगं च करेज्जा कोति पडिणीओ ॥१५८१॥ अहवा वि
णिमित्तं तू अकहेमाणो तु कोइ रूमेज्जा । णित्थंबणमविलायो ओ-
रसविज्जादिसु समत्थो ॥१५८२॥ जदि णेच्छति मोदेतुं समसंभोयं क-
रेंति तो समणं । परितावणादि जं ते पावेंती तं च पावइ य ॥१५८३॥
केवइय पुण कालं बंधादिगताण तेसि समणाणं । कायव्वं तु मति-
मता भण्णति इणमो णिसामेहु ॥१५८४॥ सज्झायसंपउत्ते चिरमवि
कायव्वमपरितंतेण । सज्झायविप्पहूणे अउवालंभं सतिं करणं ॥१५८५॥
जदि अवराहे गहितो भण्णति मोएमो जदि पुणो ण करे । एरिसग-
मब्भुवगते मोदेउं पच्चुवालंभे ॥१५८६॥ इहपरलोगं चइउं कुव्वंते-
तारिसाणि जे इहतिं । ते पावेंतेताइं परे य लोए दुहसताइं ॥१५८७॥
एवं उवालभेत्ता मोदेउं जदि पुणो करेमाणो । घेप्पेज्ज उदासीणं हवे-
ज्ज ते वाहि(रि)या समणा ॥१५८८॥ एवं तु समासेणं एस पक-
प्पो मए समक्खातो । घरं । एत्तो तु समासेणं वोच्छामि विकप्पमहु
णा उ ॥१५८९॥ अतिरेगं परिकम्मण लहु मंडुप्पायणा य बोधव्वा ।
एमादि विकप्पो तू तत्थ इतरेगो इमं होति ॥१५९०॥ एगेण अलेवकडे
कप्पो संघाडऽलेवग पकप्पो । तिप्पभिई तु विकप्पो सत्तगभोगो य उण-
दहाए ॥१५९१॥ पादेगेण अलेवं गेण्हे जिणकप्पिया तु सो कप्पो ।
थेराण दोण्णि पाया संघाडेणं व हिंडंति ॥१५९२॥ तत्थेगमडिगण्हइए

भत्त नेवाइगंपि गेण्हंति । एगत्थ दव मत्तग दोण्ह वी दित्तग पकप्पो ॥१५५२॥ तिप्पभिति हिंडंती णिक्कारण मत्तएसु वा गेण्हे । सो होति विकप्पो ऊ तत्थ य सोही इमा होति ॥१५५४॥ जदि भायणमावडुती ततिमासा जति दिणा उ आणेती । ताजइया चउमासा बितियाए सेवणा भणिया ॥१५५५॥ समणीण तिण्ह कप्पो चतुपंचण्हं भणितो पकप्पो उ । तेण परेण विकप्पो एत्तो उवहिं तु वोच्छामि ॥१५५६॥ तिण्णि तु भणिता कप्पा भतरंता विपतिणा पकप्पविही । उप्पायगवज्जाणं तिट्ठाणारोवणा भणिता ॥१५५७॥ गणणाए पमाणेण य उवहिपमाणं दुहा मुणेयव्वं । गणणाए जिणाणं तू एक्को दो तिन्नि वा कप्पा ॥१५५८॥ दो रयणी संडासो सोत्थीओ वावि होति आयामो । रुंदा दिवड्ढहत्थं एयपमाणप्पमाणं तू ॥१५५९॥ दो खोमिओण्णि एक्को थेराणं तिन्नि होंति गणणाए । आयामायपमाणा दुहत्थ अद्धं च विच्छिन्ना ॥१६००॥

एसो उ भवे कप्पो पकप्पो उ गिलाणए गुरूणं वा । चतुभत्त वा वि पाउण माणऽतिरित्तं च धारेज्जा ॥१६०१॥ कारणे पकप्पो होती विकप्पो णिक्कारणे मुणेयव्वो । उप्पायगो पवित्ती साततिरेगं धरेज्जाहि ॥१६०२॥ गणणाए पमाणेण व गच्छट्ठाए तु तं पमोत्तूणं । जो अन्नो अतिरेगं धरेइ सोधी तु तस्स इमा ॥१६०३॥ चाउम्मासुक्कोसो मासियमज्झो य पंच य जहण्णे । तिविहम्मि वि उवहिम्मि अतिरेगारोवणा भणिता ॥१६०४॥ अतिरेग उवहिदारं संखेवेणोदितं अह इआणिं । परिकम्मदार वोच्छं अप्परिकम्मो जिणाणुवही ॥१६०५॥ कारणविही पकप्पो थेराणं अविहिए विकप्पो उ । परिकम्मणा उ एसा अंडुप्पायं भतो वोच्छं ॥१६०६॥ गाहुग गहुणं गेज्झं जड्डासंखेणिसे तु णायव्वा । पुरिसे पडिमा उवही तिण्णि तिगा भावसुद्धाइं ॥१६०७॥ गाहुगो गीयत्थो खलु पुरिसो णियमेण होति णायव्वो । उद्दिट्ठमाइयाहिं गहुणं पडिमाहिं भणियं तु ॥८॥ घेत्तव्वो उवही खलु तिण्णत्ताहार उवहिसेज्जासि । तिण्णि वि तिविसुद्धाइं उग्गममादीहिं णियमेणं ॥१६०९॥ एगेण चेव गहुणं कप्पो दोहिं भवे पकप्पो तु । तिप्पभिति तु विकप्पो भत्ते पाणे तहा उवही ॥१६१०॥ आदितिएण

तु गहणं बितियट्ठाणम्मि अब्भणुण्णातं । हुंदि परिरक्खणिज्जो मु-
डाकरो सव्वसाहूणं ॥ १६११ ॥ आदित्ति होति कप्पो तिगतिग आहार उ-
वहि सेज्जाओ । गहणं तु होति तिविहं उग्गममादी तिगविसुद्धं ॥
१६१२ ॥ बितियट्ठाणपकप्पो तत्थ वि तिगसुद्धमेव घेत्तव्वं । असती
य अणुण्णातं पणहाणिए असुद्धं पि ॥ १६१२ ॥ केण पुण कारणेणं
गच्छे असुद्धं पि उग्गमादीहिं । घेप्पति ? भण्णति सुणसू कारणमि-
णमो समासेणं ॥ १६१४ ॥ रयणाकरो व्व जम्हा उ आगरो होति स-
व्वसोक्खाणं । णाणादीण य पभवो ततो उ मोक्खो उ तो रक्खे ॥
१६१५ ॥ आइण्णता महाणो कालो विसमो सपक्खओ दोसो । आ-
दितिगभंगगेणं गहणं भणितं पकप्पम्मि ॥ १६१६ ॥ तियतिक्कंत-
पमाणे अणुवासो चेव कारणनिमित्तं । परिकम्मण परिहरणे उवही
अतिरित्तगपमाणो ॥ १६१७ ॥ गच्छो सबालवुड्ढो गिलाणसेहादिए-
हिं आदिण्णो । एसो व महाणो तू तस्स तु दुलभं तिगविसुद्धं ॥ १६१८
॥ कालो विसमो दुब्भिक्खमादिदोसा सपक्खओ उ इमे । पासत्थादी
बहवे ओमाणंतो तओ होति ॥ १६१९ ॥ अहव असंविग्गावी जह महुरा-
कोट्टइल्लगा केइ । मायाए उग्गमती सड्ढा अविकोवि नवि जाणे
॥ १६२० ॥ एतेहिं कारणेहिं अलंभे आइतिगभंगगहणं तु । आदितिगमु-
ग्गमादी भंगो तू भंसणा होति ॥ १६२१ ॥ कारणतो तिविहंपी माणं तू
अतिक्कमेज्ज उ कदादि । किं पुण तिविहं माणं ? भण्णति इणमो णि-
सामेह ॥ १६२२ ॥ उवही पमाणपमाणं खेत्तपमाणं च कालमाणं च । ए-
तं तिविहपमाणं अतिक्कमो तेसिमो होति ॥ १६२३ ॥ अतिरेगपमाणेणं ति-
ण्ह परेणं पि णाम गेण्हेज्जा । खेत्तओ अतिक्कमो तू परतो वि दुगा-
उया मग्गे ॥ १६२४ ॥ कालपमाणातिक्कमे कुज्जा पाउरणगं अकालेवि ।
वसती कालातीतं असिवादणुवासणं एयं ॥ दारं ॥ १६२५ ॥ परिकम्मण
सविहीए बलियट्ठऽइदुब्बलंमि कुज्जाहि । दुल्लभलंभे सीतेण अहिओ
उण्णियं पंतो ॥ १६२६ ॥ अतिरित्तपमाणं वा धारिज्जति कारणेहिं एएहिं
। सो सव्वो पकप्पो तू णिक्कारणओ विकप्पो उ ॥ १६२७ ॥ संकप्पो उ
इदाणिं सो य पसत्थो य अप्पसत्थो य । एतेसिं दोण्हं पी परूवणा
होतिमा कमसो ॥ १६२८ ॥ दंसणनाणचरित्ते अणुपालण पत्थणा

रसत्थो उ । इंदियविसयकसाएसु अप्पसत्थो उ संकप्पो ॥१६२९॥
दंसणपभावकाइं सत्थाइं कहमहं अहिज्जेज्जा । जो चिंते(ई)यं ए-
सो संकप्पो दंसणे होति ॥ दारं ॥ १६३०॥ णाणातियारं ण करे क-
हं च णाणं अहं अहिज्जेज्जा । इति णाणे चारित्ते सुद्धचरित्तो क-
हं होज्जा ? ॥१६३१॥ उत्तर उत्तरिएहि व चारित्तगुणेहिं कह णु
विहरेज्जा । एसो उ चरित्तम्मी संकप्पो सत्थगो भणिओ ॥ दारं ॥
१६३२॥ सद्दादिइंदियत्थाण पत्थणा तह य रागगमणं तु । कोहादि
कसायाण य अज्झप्पं होति अपसत्थं ॥१६३३॥ एसो खलु संकप्पो
एत्तो वोच्छामहं तु उवकप्पं । उवकप्पती करेति उवणेइ व होंति
एगट्ठा ॥ १६३४॥ भत्तेण व पाणेण व उवकरणेण व उवग्गहं कु-
णति । उवकप्पति गुणधारी उवकप्पं तं वियाणाहि ॥ १६३५ ॥
खुहिओ पिवासिओ वा सीतभिभूतो व ण तरती पढिउं । त-
स्स करेति उवग्गह पसंत कुडुडस्स वा पूणा ॥ १६३६॥ जो
उप्पाए समाहि चउव्विह णाणदंसणे चरणे । तत्तो य तवसमाहिं
तस्स खमे णिज्जरा होइ ॥१६३७॥ भत्तेण व पाणेणं व उवक-
रणेण उवग्गाहियदेहो । जो कुणति सि समाहिं तस्सावरणं हुण
ति दाता ॥१६३८॥ भत्तस्स व पाणस्स व उवकरणस्स व उवग्ग-
हकरस्स । जो कुणति अंतरायं तस्सावरणं पवड्ढेति ॥ १६३९ ॥
एसुवकप्पो भणितो एत्तो वोच्छं अहं तु अणुकप्पं । अणुसद्दो तू
तहिय पच्छाभावे मुणेयव्वो ॥१६४०॥ णाणचरणड्ढयाणं पुव्वाय
रियाण अणुकिति कुणइ । अणुगच्छइ गणधारी अणुकप्पं तं विया-
णाहि ॥ १६४१॥ गुणसयसहस्सकलियाण गुणुत्तरतरं अभिलसंत-
णं । जे खेत्तकालभावा अणुज्ज जोगहाणी भवे ॥ १६४२॥ गुणस-
यकलिओ (स) जमो मोक्खो य गुणोत्तरो मुणेयव्वो । सामायारीहा-
णी तु जोगहाणी मुणेयव्वा ॥१६४३॥ खेत्ताणऽसती अद्धाण उच्चखे-
त्तम्मि काल दुब्भिक्खे । भावे गेलन्नादिसु सुद्धाभावे उ जदसुद्धं ॥
१६४४॥ गेण्हेज्जाहारादी णाणादीसु व उज्जमण कुज्जा । अणसणमसी
व तव अकरेमाणस्स साहुस्स ॥१६४५॥ एगंतणिज्जरा से जह भणिता
सासणे जिणवराणं । जोगणियत्तमतीणं सुद्धचित्ताणं तवो छेदो ॥१६४६॥

सुइसीलदुट्ठसीला तेसिं अप्फासु गेण्हमाणाणं । जं भावज्जे तहियं तवं च छेदं च तं पावे ॥१६४७॥ उक्कप्पो उ इदाणिं उड्ढं कप्पाओ होति उक्कप्पो । अहवावि छिन्नकप्पो उक्कप्पो अहवण भवेलो ॥१६४८॥ उग्गमउप्पायणएसणासु णिरवेक्खो कंदमूलफले । गिहिवेयावडियासु य उक्कप्पं तं वियाणाहि ॥१६४९॥ णामणि थंभणि लेसणि वेताली चेव अद्धवेताली । आदाणपाडणेसु य अण्णेसु य एवमादीसु ॥१६५०॥

तसएगिंदियमुच्छण संसेइमसच्छमरणमाहिओगे । रोद्दाऽऽहव्वणतह बंभदंडथंभे य अगणिस्स ॥१६५१॥ णामणि रुक्खफलाणं पडिमाणं देउलाण थूभादी । थंभणि पदमवि ण चलति लेसणि लेसेति अंगाई ॥१६५२॥ विणिहिट्ठाण य आणणि अहव णिलुक्कावणम्मि वेताली । उट्ठविऊण णिवातो तक्खण एसऽद्धवेताली ॥१६५३॥ गब्भाणं आदाणं करेति तह साडणं च गब्भाणं । अभिजोग वसीकरणे विज्जाजोगादिहिं कुणति ॥१६५४॥ विच्छिगमच्छिगभमरे मंडुक्के मच्छए तहा पक्खी । सम्मुच्छावेमादी जो जोणीपाहुडेणं च ॥१६५५॥ पसु उद्दवियं जागं आहव्वाण संत रोद्दकम्मे य । कोडादि बंभदंडो थंभणि अगणिस्स मंतेणं ॥१६५६॥ एमादि अकरणिज्जं णिक्कारणे जो करेति तू भिक्खू । सव्वो सो उक्कप्पो एत्तोऽकप्पं तु वोच्छामि ॥१६५७॥ णिक्किव णिरणुकंपो पुप्फफलाणं च साडणं कुणति । जं चण्ण एवमादी सव्वं तं जाणसु अकप्पं ॥१६५८॥ जो उ किवं ण करेती दुक्खसत्तेसुं तु सव्वसत्तेसु । णिरवेक्खो सीयादिसु पवत्तई णिक्किवो सो तु ॥१६५९॥ सइसा य पमाएण व परितावणमादि बिंदियादीणं । काऊण णाणुतप्पइ णिरणुकंपो हवइ एसो ॥१६६०॥ सत्तट्ठमट्ठाणेसू सट्ठाणा सेवणाए सट्ठाणं । गच्छागाढंमि उ कारणंमि बितियं भवे ठाणं ॥१६६१॥ सत्तट्ठमठाणाइं उक्कप्पो चेव तह अकप्पो य । ते णिक्कारणसेवी पावति सट्ठाणपच्छित्त ॥१६६२॥ पत्तंमि कारणे पुण रायदुट्ठादियम्मि आगाढे । जयणाए करेमाणो होति पकप्पो ठिति ट्ठाणे ॥१६६३॥ दंसणणाणचरित्ते तवविणए णिच्चकालपासत्थो । णिच्चं च णिंदिओ पवयणम्मि तं जाणसु दुकप्पं

॥ १६६४ ॥ दुकप्पविहारीणं एगंतासायणा य बंधो य । आसायणा य बं-
धेण चेव दीहो तु संसारो ॥ १६६५ ॥ दंसणणाणचरित्ते तवविणए णिच्च-
कालमुज्जुत्तो । णिच्चं पसंसिओ पवयणंमि तं जाणसु सुकप्पं ॥ १६६६ ॥
सुक्कप्पविहारीणं एगंताराहणा य मोक्खो य । आराहणाइ मोक्खेण चेव
छिण्णो य संसारो ॥ १६६७ ॥ दसकप्पो समत्तो ॥

वुत्तो दसविहकप्पो अहुणा वीसतिविहं तु वोच्छामि । तस्स
तु दारा इणमो संगहिया तीहिं गाहाहिं ॥ १६६८ ॥ कप्पेसु णामकप्पो
ठवणाकप्पो य दवियकप्पो य । खेत्ते काले कप्पो दंसणकप्पो य सु-
तकप्पो ॥ १६६९ ॥ अज्झयण चरित्तंमि य कप्पो उवही तहेव संभोगो
। आलोयण उवसंपद तहेव उद्देसणुण्णाए ॥ १६७० ॥ अद्धाणंमि य
कप्पो अणुवासो तह य होति ठितकप्पो । अट्ठियकप्पो य तहा जि-
णथेर अणुवालणा कप्पो ॥ १६७१ ॥ जो चेव दवियकप्पो छव्विहकप्पं-
मि होति वक्खाओ । सो सेव णिरवसेसो जो य विसेसोऽत्थ तं वो-
च्छं ॥ १६७२ ॥ एस पुण तिविहकप्पो अहव इमं भावकप्पमज्झयणं
। सव्वं वा सुतणाणं दायव्वं केरिसे होति ॥ १६७३ ॥ सुपरिच्छियगु-
णदोसे सीलघणादीहिं तू परिच्छाहिं । सुविसोहितमिच्छामले उंडियभो-
मादि णातेहिं ॥ १६७४ ॥ सव्वंपि य सुयणाणं सुत्तत्थो सद्दिउए ण तु ।
असद्दी । अह पुण को परमत्थो विसेसओ पवयणरहस्सं ? ॥ १६७५ ॥
पवयणरहुस्ससमेताणि चेव भण्णंति छेदसुत्ताणि । ताणि ण दायव्वाणिं
भण्णति सुत्तंमि को दोसो ? ॥ १६७६ ॥ अप्पं पि य तं बहुगं अरहस्स-
मपारधारए पुरिसे । दुग्गतगमाहणो विव जह वइरगहीरगादीया ॥ १६७७
॥ जह फेक्कमाहणेणं रच्छाए वइर हीरतो लद्धो । सो अण्णस्स दरि-
सिओ तेण वि अण्णस्स सो सिट्ठो ॥ १६७८ ॥ एवं परंपरेणं रण्णो कण्णं
गतो तु सो ताहे । ताहे दंडितो रण्णा हडो य सो वइरहीरो से ॥ १६७९
एवं अपरिणयस्सा किंची अववादकारणं सिट्ठं । सो कहयति अण्णेसि
परंपरेणं चरणणासो ॥ १६८० ॥ तम्हा परिच्छिऊणं देयं विहिसुत्तबद्धपे-
ढस्स । परिणामगस्स जतिणो ण तु देयं अपरिणामस्स ॥ १६८१ ॥
दवियकप्पो समहिगतो ण भणिय जं हेट्ठ तं भणामि त्ति । सो भ-
ण्णती विसेसो इणमो वोच्छं समासेणं ॥ १६८२ ॥ दव्वं तु गेण्हियव्वं

सुद्धं गवेसिय गवेसणा दुविहा । अविहीय विहीए या अविहीय इमं
सुणेयव्वं ॥१६८३॥ दव्वाणि जाणि काणिवि गहणं लोए उवेंति साहूणं ।
तेसिं तु संभवं मग्गमाणे ण तु साहते अत्थं ॥१६८४॥ अविहीय
दोस पिंडुवहिसेज्जसज्झायणिक्खमपवेसो । णवकडगदुयचउक्के एते
सव्वेण पावेंति ॥१६८५॥ साली तुंबीमादी आहारे फलिहमादि उवहिं-
मि । रुक्खा पुण सेज्जट्ठा एमाधिगमो हु साहूणं ॥१६८६॥ एताइं पु-
च्छिऊणं कत्थ पइण्णाणि ? तहिं तहिं गच्छे । अविहिगवेसण एसा जह भ-
णिया पिंडजुत्तीए ॥१६८७॥ आहारोवहिसेज्जाण णाणदव्वेहिं होंति णिप्फत्ती ।
वेसणमिरिय पिप्पलि अल्लगघततेल्लगुलमादी ॥१६८८॥ हिमवंते पिप्पली-
ओ मलए मरिचाण होंति णिप्फत्ती । हिंगुस्स रमढविसए जीरगमादी
य जो जत्थ ॥१६८९॥ मा अम्हं अट्ठाए गावो कीता हुटा व दूढा वा ।
फलमादी मा रुक्खो व रोवितो अम्ह अट्ठाए ॥१६९०॥ एमादि विमग्गंतो
पभट्ठं णाणादियाण परिहाणी । तह वत्थपातसेज्जाण मरेति सो अंतरा
चेव ॥१६९१॥ एवं सो हिंडंतो भत्तं पाणं च ठाणमुवहिं च । जह
उग्गमे उ कह वा सज्झायं कुणतु हिंडंतो ? ॥१६९२॥ जो णिक्खमणप-
वेसे कालो भणितो तु वासउडुबद्धो । दुचउक्कं उडुबद्धे विहारो हेमंतगि-
म्हासु ॥१६९३॥ णवमो वासावासे एसो कप्पो जिणेहिं पण्णत्तो । ए-
यस्स संखमाण वोच्छामि अहं समासेणं ॥१६९४॥ दोण्णि सया चत्ता-
ला उडुबद्धे एत्तिओ विहारो तु । वासासू पण्णासा पणगं पणगं हसति
एगं ॥१६९५॥ पुरपच्छिममज्झाणं सव्वेसिं एस काल वोच्छेओ । णिच्च
हिंडंतेणं विराहितो होति सो णियमा ॥१६९६॥ तम्हा खलु उप्पत्ती ण
एसियव्वा तु तेसि दव्वाणं । जस्सट्ठा णिप्फण्णं तं गंतुं एसते मतिवं ॥
१६९७॥ अतिबहुय दुल्लभं वा णातुं दव्वकुलदेसभावे य । पुच्छति सुद्ध-
मसुद्धं ताहे गहणं अगहणं वा ॥१६९८॥ अहवा पुट्ठो भणेज्जा समणादिक-
यं व अहव णिक्खित्तं । पक्खित्तं वावि भवे तत्थ उ दारा इमे होंति ॥१६९९॥
समणे समणी सावयसाविगसंबंधि इड्ढि मामाए । राया तेणे पक्खेवे या
णिक्खेवयं कुज्जा ॥१७००॥ दमए दूभगे भद्दे समणे छण्णे य तेणए ।
ण य णाम ण वत्तव्वं दुट्ठे रुट्ठे जहा नयणं ॥१७०१॥

एतेसिं दाराणं विभास भणिता जहा य कप्पंमि । सच्चेव

णिरवसेसा णायव्वा सव्वदव्वेसु ॥१७०२॥ जं पुण जत्थाइण्णं दव्वे खित्ते
य होज्ज काले य। तहियं का पुच्छा तू जह उज्जेणीए मंडेसु ॥१७०३॥
एमेव माह्मासे किसराए संखडीए का पुच्छा?। विच्छिण्णे व कुलंमी
बहुए दव्वंमि का पुच्छा?॥१७०४॥ तम्हा तु गहणकाले मूलगुणे चेव उ-
त्तरगुणे य। सोहेज्जा दव्वस्स तु ण मूलओ तस्स उप्पत्ती ॥१७०५॥
कीच्चे पामिच्चे छेज्जए य णिप्फत्तिओ य णिप्फण्णे। कज्जं णिप्फत्तिमयं
समाणिते होति णिप्फण्णं ॥१७०६॥ कंडितकीतादीया तंदुलमादी तु होज्ज
समणट्ठा। णेप्फत्ती सा तु भवे आयट्ठा फासुणिप्फण्णं ॥१७०७॥ तं हो-
ति कप्पणिज्जं जं पुण समणट्ठ होज्ज णिप्फण्णं। तं तु ण कप्पति ए-
त्थं च चोदओ चोदए इणमो ॥१७०८॥ णिप्फत्तिओ य णिप्फण्णओ य
गहणं तु होज्ज समणस्स। णिप्फत्तिओ असुद्धे कहं पु णिप्फण्णते
सोही?॥१७०९॥ एवं गवेसियव्वे किं एगट्ठाणगं परिच्चत्तं?। भण्ण-
ति अफासुदव्वे ण चेव गहणं तु साहूणं ॥१७१०॥ तो तेणं साहूणं
किं कज्जं होइति तू विगप्पेण। अण्णंपि य एगकुलेण हु आगतो स-
व्वदव्वाणं ॥१७११॥ तिकडुयमादीयाणं सव्वदव्वाण संभवेगकुले।
ताणि तु गवेसमाणे हाणी सच्चेव णाणादी ॥१७१२॥ तम्हुप्पयप्प
परिहर अप्पप्पविवज्जतो विवज्जाति हु। अप्पप्पं साहेंतो विवज्जाते ण तं
च साहेति ॥१७१३॥ णिप्फत्ती समणट्ठा समणट्ठा चेव जं तु होइ णि-
प्फन्नं। गहितं होज्ज जयंतेण तत्थ सोही कहं होति?॥१७१४॥ सुय-
णाणपमाणेण उ उवउत्तो उज्जुयं गवेसंतो। सुद्धो जदि वावण्णो समओ
इव सो असढभावो॥१७१५॥ जो पुण मुक्कधुराओ णिकज्जमो ज-
दि वि सोउ णावण्णो। तह वि य आवण्णो च्चिय आहाकम्मं प-
रिणओव्व ॥१७१६॥ एयस्स साहणट्ठं अहवा अण्णंपि भण्णए एत्थ।
कारगसुत्तं इणमो तमहं वोच्छं समासेणं ॥१७१७॥ अंगंमि वि बितिय-
ए ततियगंमि जे अत्थकुसल जिणदिट्ठा। एतेसु जुत्तजोगी विहरंतो
अहाउयं बु(जु)ज्झे ॥१७१८॥ अंगग्गाहणापढमं आयारो तस्स बितिय-
सुतखंधे। तस्स वि बीयज्झयणे उद्देसे तस्स ततियंमि ॥१७१९॥ ज-
त्थेयं सुत्तं खलु सेय उवस्से ण होज्ज सुलभो उ॥ अहवा वि तईए
सी अज्झयणंमी तइज्जंमि ॥१७२०॥ तस्स वि ततिउद्देसे आदीसुत्तंमि

जं समक्खायं । जदि सकम्मो असुद्धो ताहे जयणाए जुत्तो उ ॥ १३२१ ॥ देसूणंपि हु कोडि अच्छंतो सो विसुज्झती णियमा । तम्हा विसुद्धभावो सुज्झति णियमा जिणमयंमि ॥ १३२२ ॥ बाहिरकरणे जुत्तो उवओगमहिडेहओ सुतधराणं । जं दोस समावण्णो वि णाम जिणवयणतो सुद्धो ॥ १३२३ ॥ दव्वेण य भावेण य सुद्धमसुद्धे य होति चतुभंगो । ततिओ दोसु विसुद्धो चउत्थतो उभयउ असुद्धो ॥ १३२४ ॥ बितिओ भावविसुद्धो दव्वविसुद्धो य पढमओ होति । अहवा वि दोसकरणं दव्वे भावे य दुविहं तु ॥ १३२५ ॥ भावविसुद्धारहको दव्वतो सुद्धो य होतऽसुद्धो य । जे जिणदिट्ठा दोसा रागादी तेहि ण उ लिप्पे ॥ १३२६ ॥ एते सामण्णतरं कीयादी अणुवउत्तो जो गिण्हे । तट्ठाणगावराहे संवदिट्ठयमोवराहाण ॥ १३२७ ॥ आवण्णे सट्ठाण दिज्जति मह पुण बहु तु आवण्णो । तहियं किं दायव्वं ? भण्णति इणमो सुणह वोच्छं ॥ १३२८ ॥ तहियं किं दायव्वं ? तवो व छेदो तहेव मूलं वा । कस्सेदं भणितंमी भण्णति तु णिसीहणामंमि ॥ १३२९ ॥ वीसतिमे उद्देसे मास चउम्मास तह य छम्मासं । उग्घायमणुग्घात भणियं सव्व जहाकमसो ॥ १३३० ॥ एसो तु दवियकप्पो जहक्कम वण्णिओ समासेण । एत्तो उ खेत्तकप्प वोच्छामि गुरूवएसेणं ॥ १३३१ ॥ आदी छक्कणियत्ती तु वण्णिता जंमि जंमि खेत्तंमि । एतेसिं सण्णिकासे सालंबो मुणी वसे खेत्ते ॥ १३३२ ॥ छव्विहकप्पो आदी तह जारिसगा णिसेविया खेत्ता । अक्खेमअसिवमादी ण कप्पती तारिसे वासो ॥ १३३३ ॥ खेमादि अलभंतो पडिकुट्ठेहिं पि वसति जयणाए । दुयमादी संजोगा वक्खाण सण्णिकासस्स ॥ १३३४ ॥ अक्खेमे असिवंमि य असिवं वज्जे वसेज्ज अक्खेमे । तहिय उवहिविणासो असिवे पुण जीविणासो तु ॥ १३३५ ॥ एव ओमादीसु संजोगा तिगचउक्कमादीया । वसियव्व जेसु जहा तमहं वोच्छ समासेणं ॥ १३३६ ॥ कडजोगिसण्णिकासे बहुतरगा जत्थुवग्गहु जाणे । पोवत्तरियं च हाणि तत्थण्णयरे दुविहकाले ॥ १३३७ ॥ एतेसामण्णतरे आलंबणविरहिओ वसे खेत्ते । कालदुयावराहे संवदिट्ठयमोवराहाण ॥ १३३८ ॥ संवदिट्ठयावराहे तवो व छेदो तहेव मूल वा । आधारपकप्पे जं पमाणपमाण चरिमंमि ॥ दारं ॥ १३३९ ॥ एसो उ खेत्तकप्पो अहुणा वोच्छामि कालकप्प तु । आवाउत तु तीणि अणुपाले ताव सामत्था ॥ १३४० ॥

गीतसहाओ विहरे संविग्गेहिं व जयणजुत्तो उ । असती विमग्गमाणो खेत्ते काले इमं माण ॥१०४१॥ पंच व छ सत्त सत्ते अतिरेगं वा वि जोयणाण तु । गीतत्थपादमूलं परिमग्गेज्जा अपरितंतो ॥१०४२॥ एक्कं व दो व तिण्णि व उक्कोसं बारसेव वासाइं । गीतत्थपादमूलं परिमग्गेज्जा अपरितंतो ॥१०४३॥ पंच व छ सत्त सत्ते अतिरेगं वा वि जोयणाणं तु । संविग्गपादमूलं परिमग्गेज्जा अपरितंतो ॥१०४४॥ एक्कं व दो व तिण्णि व उक्कोसं बारसेव वासाइं । संविग्गपादमूलं परिमग्गेज्जा अपरितंतो ॥१०४५॥ संविग्गो गीयत्थो भंगचउक्के उ पढममुवसंपा । असती ततियबितिए चउत्थगं णो उ उवसंपे ॥१०४६॥ उक्कमओ खलु लहुगो चउरो लहुगा चउत्थभंगंमि । जस्सट्ठा उवसंपद तं णत्थि चउत्थभंगंमि ॥१०४७॥ एतेसिं तु अलंभे एगो पमावहारमकरेंतो । विहरेज्ज गुणसमिद्धो अणिदाणो आगमसहाओ ॥१०४८॥ कालंमि संकिलिट्ठे छक्कायदयावरो वि संविग्गो । जयजोगीण अलंभे पणगण्णतरेण संवासो ॥१०४९॥ पणगण्णतरं पासत्थमादिभंगो चउत्थए जयणा । जत्थ वसंती ते तू हाति तहिं वीसु वसहीए ॥१०५०॥

तेसिं णिवेदेऊण अह तत्थ ण होज्ज अण्णवसही उ । ण वहेज्ज वा उदंत वसेज्ज तो एक्कवसहीए ॥१०५१॥ अपरीभोगोगासे तत्थ ठितो तू पुणो वि य जएज्जा । आहारमादिएहिं इमेण विहिणा जहाकमसो ॥१०५२॥ आहारे उवहिंमि य गेलण्णागाढकारणे वा वि । धामावहारविजढो असती जुत्तो ततो गहणं ॥१०५३॥ आहार उवहिमादी उप्पादे अप्पणा विसुद्धं तु । असती सततलाभस्सा उ जो तेसि सातुपक्खीओ ॥१०५४॥ सो तु कुलाइ पुच्छिज्जते उ दाएति वा वि सो तेसिं । तहवी अलभंतो तू जतती पणहाणि जा लहुगा ॥१०५५॥ संविग्गपक्खसहिओ ताहे उप्पादएज्ज सुद्ध तु । असती पणहाणीए जइत्तु अप्पे पडिग्गहगा ॥१०५६॥ तह असती लब्भायणमाणीय गेण्हती तहिं चेव । णियगेवि पडिग्गहगे गेण्हति पासत्थपायाउ ॥दार॥ १०५७॥ उवहिं पुराणगहितं अप्पपरिभुत्तं तु गेण्हती तेसिं ॥ असती तएतरपी यदि य गिलाणो भवे तत्थ ॥१०५८॥ तत्थ वि जइज्ज एव अस-

ती सव्वंपि से करेजितरे। अहवा ते वि गिलाणा हवेज्ज ताहे करे सो वि ॥१०५९॥ एतत्थं अच्छिज्जति गच्छो अण्णोण्ण जं तु साहज्जं । कीरति ण पमाओ खलु तम्हा गेलण्णे कायव्वो ॥१०६०॥ दीहो व मडहुतो वा कम्मोदइओ हवेज्ज आतंको । मडहो अदिग्घरोगो तव्विवरीओ भवे इतरो ॥१०६१॥ कालचउक्कं वा खलु कायव्वं होति अप्पमत्तेणं । उडुबद्धे वासासु य दियराओ चउक्कमेत तु ॥१०६२॥ जिणवयणभासियंमी णिज्जर गेलण्णकारणे विउला । आतंकपउरताए कतपडिकइया जहण्णेणं ॥१०६३॥ जह भमरमहुयरिगणा णिवयंती कुसुमियंमि वणसंडे । इय होति णिवइयव्वं गेलण्णे कइयवजढेण ॥१०६४॥ सयमेव दिट्ठपाढी करेंति पुच्छत जाणगा वेज्ज । वेज्जाण अट्ठगा पुण णायव्वमिणं समासेण ॥१०६५॥ संविग्गमसंविग्गे दिट्ठत्थे लिंगि सावए सण्णी । अस्सण्णि सण्णि इतरे परतित्थियकुसलतेइच्छ ॥१०६६॥ पईदिणमलभमाणे वत्थु हवेयव्वगा भवे किंचि । तत्थ तु भणेज्ज कोती सुक्क तु हवे दवे दोसा ॥१०६७॥ समत्त पि सुक्क (क्क) तू अणिट्ठ च सुमहता । सुसारत्थ तग होति इतरे दोस अह इमे ॥१०६८॥ णिद्धोदए पणीए अपमज्जणपाण तक्कणायरणा । एते दोसा जम्हा तम्हा तु दव ण हावेज्जा ॥१०६९॥ भण्णति जेण कज्जं न हावेज्जा तहि तु जयणाए । आयकविवज्जासे चतुरो लहुगा य गुरुगा य ॥१०७०॥ ज सेवियं तु किंची गेलण्णे तं तु जो तु पउणो वि । आसेवते तु साधू रसगिद्धो सेलओ चेव ॥१०७१॥ तंबोलपत्तणातेण मा हु सेसा वि तू विणासिज्जा । णिज्जूहती तं तू मा अण्णो वी तहा कुज्जा ॥दार ॥१०७२॥ कालक्कमाहेगारे तू पतिए होतेमो वि तस्सरिसो । कालविकप्पज्जो वी असिवादीओ मुणेयव्वो ॥१०७३॥ असिवे ओमोदरिए रायदुट्ठे पवादिदुट्ठे वा । आगाढे अण्णलिंगे कालक्खेवो व गहणं वा ॥१०७४॥ असिवे जदि जतिपता लिंगविवेगेण तक्खण गच्छे । सव्वत्थ वा वि असिवे कालक्खेवो विवेगेण ॥१०७५॥ ओमेऽवेव कुज्जा पवादिदुट्ठेण बुद्धिण्ण णातं । तत्थ वि य अण्णलिंगं गिहिलिंग वा वि आसेज्जा ॥१०७६॥ एय चिय आगाढ अहवा देहस्स जा तु वावत्ती । णिव्विसयाणत्तीण व भत्तस्स णिसेहणा चेव ॥१०७७॥ एतेसामण्णतरं अणागाढालंबणो णिसेवेज्जा । तट्ठाणतावसाहे

संवदिट्यमोवराहा ॥१७७८॥ संवदिट्यावराहे नवो व छेदो तहेव मूलं च । आयारपकप्पे जं पमाणणिम्माण चरिमंमि ॥१७७९॥ एसो तु कालकप्पो एत्तो वोच्छामि दंसणे कप्प । सद्दहणलक्खणं तू जिणोवदिट्ठेसु भावेसु ॥१७८०॥ उवरतछक्कायस्स वि आयरियपरंपरागते अत्थे । आगाढकारणेसुं सद्दहसु णिसेवणं तत्थ ॥१७८१॥ छक्काए सद्दहिउं इणमण्ण पुणो वि सद्दहेयव्वं । आगाढमणागाढे आयरियव्वं तु जं तत्थ ॥१७८२॥ दव्वे खेत्ते काले भावे पुरिसे तिगिच्छ असहाए । एतेहिं कारणेहिं सत्तविह होंति आगाढ ॥१७८३॥ एगादीया वुड्ढी एगुत्तरिया य होंति दव्वाणं । ओमत्थगपरिहाणी दव्वागाढं वियाणाहि ॥१७८४॥ जंपेति पुणो वेज्जो सच्चित्तं दुल्लभं व दव्वं वा । अप्पाहिडंतो अच्छति उद्दिसिउं जाव सो होति ॥१७८५॥ जाहे उद्दिट्ठहाणी ताहे ओमत्थहाणिए भणति । अम्हे करेमो जोगं अलंभे इयरस्स किं कुणिमो ॥१७८६॥ एवं तु ठावयंता खेत्तं कालं व भावमासज्ज । ता जूहंती जाव तु लंभे तेसिं तु दव्वाणं ॥१७८७॥ जइ पुण लभेज्ज एतं असम्ममेतेहिं कज्ज दव्वेहिं । एतं दव्वागाढं तहिं जए पणगहाणीए ॥१७८८॥ खेत्तागाढं इणमो असती खेत्ताण मासजोग्गाणं । असिवं वा अण्णत्था णदीय वा होज्ज रुद्धा तु ॥१७८९॥ आयरियादि अगारग अहवा अण्णत्थ साविता होज्ज । अंतर जहिं च गम्मति वाला तह तेणसुभियं वा ॥१७९०॥ एतेहिं कारणेहिं खेत्तागाढंमि एरिसे पत्ते । अच्छंति असढभावा एगक्खेत्ते वि जयणाए ॥१७९१॥ कालस्स वा वि असती वासावासे वियारणा णत्थि । एतेहिं कारणेहिं कालागाढं वियाणाहि ॥१७९२॥ वासा जोग्गं खेत्तं पडिलेहेउं तु कालो ण पहुत्तो । वच्चंताण व अंतर वासं तू णिवडितुं पायं ॥१७९३॥ डहरं वंतरखेत्तं ताहे तं चेव पुव्वखेत्तं तु । गंतुं वसती वासं समतीते वीतदसराते ॥१७९४॥ अतिउक्कडं व दुक्खं अप्पा वा वेदणा भवे आउं । एतेहिं कारणेहिं भावागाढं वियाणाहि ॥१७९५॥ अच्चुक्कडसूलादी अहिडक्काई तु वेदणा अप्पा । तत्थऽगितावणादी देहच्छेदोवगाढादी ॥१७९६॥ जंमि विणट्ठे गच्छस्स विणासो तह य णाणचरणाणं । एतेहिं कारणेहिं पुरिसगा-

ठं वियाणाहि ॥ १७९७॥ तस्स तु सुद्दालभे जावज्जीवं पि होतऽसु-
द्देणं । कायव्वं तू णियमा पुरिसागाढ भवे एतं ॥ १७९८ ॥ जेण कु-
लं आयत्तं तं पुरिसं आयरेण रक्खेज्जा । ण हु तुंबंमि विणट्ठे
अरया साधारगा होंति ॥ १७९९ ॥ संजोगदिट्ठपाढी फासुग उवदेस-
णासु जो कुसलो । एतारिसस्स असती णायव्व निमित्तआगाढ ॥
॥ १८०० ॥

मज्जण तूलि विभासा असणे पाउरणए य पाणे य । केव
डियाण पयाणे अण्णइ चित्तो मिलाणो वा ॥ १८०१॥ होज्ज व सहायरहि-
तो अव्वत्ता वा वि अहव असमत्था । एय सहायागाढं तम्हा तु मुणी
ण विहरेज्जा ॥१८०२॥ जाणंति पवयणंमी पडिसेवा मूलउत्तरगुणेसु ।
ता सत्तसु सुद्देसू सुद्धमसुद्धा असुद्देसु ॥ १८०३ ॥ आगाढमणागाढे एवं जं
जत्थ होति करणिज्जं । तं तह सद्दहमाणो दंसणकप्पो हवति एसो ॥ १८०४॥
एसो दंसणकप्पो अहुणा सुतकप्पमो तु वोच्छामि । जे तत्थ होंति विधयो
अहिज्जए जेण वा विधिणा ॥ १८०५॥ दुविहंमि आगमंमी सुत्ते अत्थे य
जे जहिं भावा। सुत्तमसुत्तकडाणं पविभत्थरे ताण अत्थेणं ॥१८०६॥ विस्सातो
णाम सुत्तंमि गहिए अत्थो उ दिज्जती । सुत्ते अहिज्जियव्वे उ मज्जादा
तु इमा भवे ॥१८०७॥ पडिलेहेण काऊणं सज्झायं पट्ठवेतु वट्टादी ।
आयरियादिणिसेज्जं करेंति पच्छा य सज्झायं ॥१८०८॥ पोरुसि सा तं झा-
यं(काउं) चरिमाए पढियपत्तपडिलेहे । तहे तु अत्थपोरुसि इमेणा विहिणा
णा करेंती तु ॥१८०९॥ काउस्सग्गो वक्खेवणा य विकहा विसोत्तिया
पयतो । अब्भुट्ठाणे वा कालणाय अक्खेव साहस्सा ॥१८१०॥ अण्णो
विय सुतकप्पो सोयव्वं मंडलीय रायणिए । अणुओगधम्मलाए किति-
कम्म होति कायव्वं ॥१८११॥ वक्खातो सुतकप्पो एत्तो वोच्छामि अ-
ज्झयणकप्पं । दायव्व जेण विहिणा जग्गुणजुत्तस्स वा तं तु ॥१८१२॥
जोए परियाए अणरिहे य अरहे य विणयपडिवण्णे । सुत्तत्थतदुभ-
एसुं जे अज्झयणेसु अणुभागा ॥ १८१३॥ जस्सागाढो जोगो तं आ-
गाढेण चेव दायव्वं । अणगाढे अणगाढं एत्तो वोच्छामि परियागं
॥१८१४॥ जं संखपरीमाणं तेणेतं सुत्तंमि तिवरिसादीयं । तं तेणं
माणेण उद्दिसियव्वं भवे सुत्तं ॥१८१५॥ सुइंदियाविमाणपविभत्तिमा-

दे दीहे च्चिय तू पडियाए । ण वि देज्जती अणरिहे अणरिहे तू इमे होंति ॥१८१६॥ तिंतिणिए चलचित्ते गाणंगणिए य दुब्बलचरित्ते । आयरियपारिभासी वामावट्टे य पिसुणे य ॥१८१७॥ आदीअदिट्ठभावे अकडसामायारिए तरुणधम्मे । गव्वित पइण्ण णिण्हइ छेदसुते वज्जए अत्थं ॥१८१८॥ इहरो अकुलीणो च्चिय दुम्मेहो दमगमंदबुद्धि त्ति । अविअप्पलाभलद्धी सीसो परिभवइ आयरिए ॥१८१९॥ सोवि य सीसो दुविहो पव्वावियतो य सिक्खओ चेव । सो सिक्खतो वि तिविहो सुत्ते अत्थे तदुभए य ॥१८२०॥ एतेसिं अणरिहाणं जे पडिवक्खा तु होंति सव्वेसिं । परिणामगा य जे तू ते अरिहा होंति णायव्वा ॥१८२१॥ एतारिसे विणीते सुत्ते अत्थे य जत्तिया भेदा । अज्झयणुद्देसेसु य ते सव्वे अत्थेसिए देज्जा ॥१८२२॥ एसज्झयणे कप्पो एत्तो वोच्छं चरित्तकप्पं तु । जे तु विहाणचरित्ते वतेसु गुरुलाघवं चेव ॥१८२३॥ पचविहंमि चरित्तंमि वण्णिता जे जहि अणुभावा । एसो चरित्तकप्पो जहक्कमं होति विण्णेओ ॥१८२४॥ सामाइयादि पचहु अणुभागा तेसि जत्तिया भेदा वतपचगंमि कतरं भारियर लहुतर किं वा ॥१८२५॥ सव्वगुरुगी य हिंसा तीसे सारक्खणट्ठ सेसाणि । बंभव्वय च तत्तो तत्तो अदत्त मुस तत्तो ॥१८२६॥ सव्वलहुओ परिग्गहो सक्को वत्थादिगहणगहण । लोगे पुण गुरुगतरो सव्वेसि भवे तु सावादो ॥१८२७॥ काऊण वि संवरणं मुसवज्जाण तु सव्वभंगो वि । ण भवति पइण्णलोवो तेण मुस भारिय लोए ॥१८२८॥ जह तेणगा उ केती अचयंता मुसितु भिक्खुगविहार । णियडीया बेंति धम्म सुणेमु अह भिक्खुगो ते उ ॥१८२९॥ सोउ भिक्खुवताग गेण्हय काऊण भिक्खुए आह । अज्जप्पभिति अम्हे बुद्धो सत्था वत्ते देह ॥१८३०॥ मुसवज्जा घाएमो धारेमो गेण्हउ वते देह ॥ , वीसत्थभिक्खुगाणं मुसितु विहारं समादत्ता ॥१८३१॥ भिक्खू लवति तेणे घेत्तु सिक्खावयाणि मा भज्जो । भंजह लवंति तेणा ण हु पच्चक्खाय मुस अम्हे ॥१८३२॥ गुरुलाघवलक्खणं एवं तू सोहिकारणाभिहितं । एत्तोमि कारणंमि उ लहुरातर पुव्व सेवेज्जा ॥१८३३॥ काणि पुण कारणाणि जेसु तु पत्तेसु जयणपडिसेवा । भण्णइ ताणि इमाइं कित्ते हं भे समासेणं ॥१८३४॥ गच्छाणुकंपयाए आयरियगिलाण-

आवतीए य । पडिसेवा खलु भणिता एते खलु कारणा ते उ ॥ १८३५ ॥ बोहियतेणादीसुं गच्छस्सट्ठा णिसेवणा होति । आयरियाण व अट्ठा विभास-वित्थारओ एत्थं ॥ १८३६ ॥ णाउं तुंबविणासं अरगा णाहारगा ण एवं तु । आयरियस्स विणासे गच्छविणासो धुवं एवं ॥ १८३७ ॥ आगाढे गेलन्ने कं-दीति विभास आवती चउद्धा । दव्वावति खेत्तावति काले तह भावओ चेव ॥ १८३८ ॥ एतेहि कारणेहिं अपत्तेहिं तु जो तु सेवेज्जा । सुहसीलयाए जो उ आवज्जति ण वि य सुज्झति हु ॥ १८३९ ॥ जो पुण पत्ते कारणे जयणा आ-सेवणं करेज्जाहि । तस्स चरित्तविसुद्धी जह भणति जिणो हि तं इणमो ॥ ॥ १८४० ॥ गच्छाणुकंपयाए आयरियगिलाण आवदि विदिण्णे । जत्थेव य पडिसेहो सचरित्तासेवणा तत्थ ॥ १८४१ ॥ पुरिसस्स परिणामस्स य सपि-सगाणं तु जिणवरिंदाणं । आसेवणा य सचरित्तया य अत्थेण अणुगम्मो ॥ १८४२ ॥ वयभंगं पि करेंतो जह सचरित्ती कहं तु अत्थेणं । अणुगंतव्वं एतं भणाति आगाढकारणतो ॥ १८४३ ॥ जे के अवराहपदा किण्हा सुक्का ..वे पवयणंमि । णिघरिसपरिच्छणाए दुगहाणेणं मुणेयव्वा ॥ १८४४ ॥ पडिसेहोऽणुण्णा वा पायच्छित्ते य ओह णिच्छइए । ओहेण उ सहाणं अत्थविसेसेण वोगडियं ॥ १८४५ ॥ हिंसादवराहपदा किण्हे अणुघाति सुक्कित्ता नहुगा । णिघरिसपरिच्छणा खलु जह कणगं ताव णिहसेसु ॥ ॥ १८४६ ॥ एवं परिच्छिऊणं आयवयं गच्छमावली जं तु । णित्थारयंमि पत्ते जयणाए णिसेव सचरित्ती ॥ १८४७ ॥ दुट्ठाणा मूलुत्तर दप्पे अजए य होति पडिसेहो । कप्पे जयणाजुत्ता जो पुण णिक्कारणा सेवे ॥ १८४८ ॥ पायच्छित्तं पावति तं दुविहं ओहियं च णेच्छइयं । ओहं तु जमावण्णं तं दिज्जति तंमि सट्ठाणं ॥ १८४९ ॥ णिच्छइयं अत्थेणं वीमंसित्ता उ दिज्जती जं तु । एयं अत्थविसेसं वोकडियं छव्विहं इणमो ॥ १८५० ॥

कस्स कहं कहिं तं वा कदिया णु कम्मि केच्चिरं होति । छट्ठाणपदविभत्तं अत्थपदं होति वोगडियं ॥ १८५१ ॥ कस्सति गीतागीतस्स वा वि कह जयणा अजयणाए वा । कहिं अद्धाण वसंते कदियाणु सुभिक्खदुब्भिक्खे ॥ १८५२ ॥ अहवा दिवराओ वा कम्हि ज्जी कम्मो व इतरे वा । कम्हि व पुरिमज्जाते आयरियादीण अ-

ण्णतरे ॥१८५३॥ केचिर कालंवासे खलु केवइकालं व मेविय होज्जा । एव हद्दा एय सुद्धासुद्धे मसोढेतरे ॥१८५४॥ संघयणधितिजुत्तां सहूण असहुं तु दिज्जए नत्थ । असहू ओधिरादीणि दिज्जदि चाएति जं वोढुं ॥१८५५॥ सोतूण कप्पियपदं करेति आलंबणं मतिविहूणो । रहस्सं च अणरहस्सं करेति मतिसूयओ पुरिसो ॥१८५६॥ गाइदट्ठाणविमुक्को अकप्पियं जो तु सेवते भिक्खू । तं तस्स कप्पितपदं भणितोहिए चरणभेदो ॥१८५७॥ एसो चरित्तकप्पो एत्तो वोच्छामि उवहिकप्पं तु । सो पुण पुव्वाभिहितो ओहुवग्गह जुत्तओ चेव ॥१८५८॥ जो तु विसेसो एत्थं तं पवदे इइं अहं तु वक्खामि । सुद्धुग्गमादीएहिं धारेयव्वो जहाकमसो ॥१८५९॥ फासुयमफासुए यावि जाणए या अजाणए । ओहोवहुवग्गहिते धारणा कस्स केच्चिरं ॥१८६०॥ जदि फासुवही कारणे गहिओ तू जाणएण तो धारे । जो जुण्णो अजुण्णो विहु अट्ठपकुव्वे छुब्भति हु ॥१८६१॥ फासुगे अजाणएणं कारणगहिओ धरेज्जते ताव । जावण्णो उप्पण्णो ताहे तु विगिंचए तं तु ॥१८६२॥ अह पुण अफासुओ तू जाणगगहिओ तु कारणे होज्जा । जदि गीतत्था सव्वे तो धारेंती तु जा जिण्णो ॥१८६३॥ अगीतविमिस्सेहिं अणुप्पण्णंमि तं विगिंचंति । अह पुण अफासुओ तू कारणगहितो अगतेणं ॥१८६४॥ उप्पण्णे उप्पण्णे अण्णंमि विगिंचती तु सो ताहे । एवं चतुभंगेणं धारणता वा परिट्ठवणा ॥१८६५॥ सो पुण दुविहो उवही वत्थं पातं च होति बोधव्वं । वत्थं तु बहुविहाणं पाता पुण दो अणुण्णाता ॥१८६६॥ चोदेती पंचण्हं किण्ण वि एगो पडिग्गहो होति । तो दो एक्केक्कस्स तु भण्णति ण पडुप्पए एवं ॥१८६७॥ तो चउतिण्ह दुवण्हं अहवा एक्केक्कतस्स एक्केक्कं । भण्णति पाहुणगादिसु ताहे किं काहितेक्केणं ॥१८६८॥ अप्पापरो पत्तणं जीवणिकाया य चत्त होतेवं । वारत्तगादिदट्ठंतो तम्हा दो दो तु घेत्तव्वा ॥१८६९॥ भणति जदेवं तेणं जिणकप्पी एगपातओ कम्हा ? । भण्णति कारणमिणमो सुणसू जेणेगपादो तु ॥१८७०॥ संगाहियकुच्छि जसपगहिय अप्पाहारे चियत्तदेहे य । णाऽण्णेऽणावाए णातिनिक्कुद्दे होतिभागं ॥१८७१॥ तिवली अभिण्ण-

वच्चो कंकमाडुणी य संगहियकुच्छी । जोयणमवि गच्छेज्जा सण्णा-
डो थंडिलस्सऽसती ॥ १८७२ ॥ जसकारि वयणस्सा जेण अजसो
होति तं तु ण करेति । पग्गहियएसणाहिय ण यावि सुलभो से आ-
हारो ॥ १८७३ ॥ जदि विय हु कुच्छिपूरं नभोते करती अहुस्स काल-
स्स । तंपि य से विद्धंसति तत्तकाडिल्ले व जह बिंदु ॥ १८७४ ॥ ते-
णाप्पं वच्चं से ता गच्छंति जाव सारियं णत्थि । ण य वाहा उप्पज्ज-
ति चत्तं च सरीरगं तेणं ॥ १८७५ ॥ णासण्णं जाति थंडिल्लं णावातं णि-
यमेण तु । णिच्छिण्णं दूरमोगाढं सव्वदोस विवज्जियं ॥ १८७६ ॥ णिविसि
प्पिपडिग्गहगा वोसिरितुं णेयसो तु णिल्लेवे । एतेण कारणेणं जिण-
कप्पिउ एगपातो तु ॥ १८७७ ॥ पातदुगस्स तु गहणे कारणमेतं स
मासतोऽभिहितं । अहुणा तू चोदयंती किं घेप्पति वत्थमतिरेगं ?
॥ १८७८ ॥ कि तीहिं ण पडुप्पेज्जा एक्केणाछादणा पकप्पंमि ? ।
गच्छो सकारणो त्ति य वोच्छेदकरो पसंगस्स ॥ १८७९ ॥ चोदेती किं
तिण्हं गहणं ऊणेहिं जं ण संथरती । भणती एक्केणावि हु संथर-
ति पुणाहु तो सूरी ॥ १८८० ॥ छादणतो णासणतो ऊणेण कता भ-
वे पकप्पस्स । मा हु पसंगविवड्ढी ऊणऽहितं तेण धारेति ॥ १८८१ ॥
गच्छो सकारणोत्ती गिलाण वुड्ढे य बालमसहादी । तेसट्ठा अतिरेगं
घेप्पति मा होज्ज दुलभंति ॥ १८८२ ॥ सीतादितावियाणं मा हू णाणा-
दियाण परिहाणी । होज्जाहि तेण गेण्हति संथरती जावदीएणं ॥
१८८३ ॥ जदि एयविप्पहूणा तवणियमगुणा भवे णिरवसेसा । आहार-
मादियाणं को णाम परिग्गहं कुज्जा ॥ १८८४ ॥ पंचमवतोवघातो चो-
देती वत्थमादिगहणम्मि । एगव्वतोवघाए घातो पंचण्ह वि वताणं ॥ १८८५ ॥
एवं तु चोदियंमी बेति गुरू ण उ परिग्गहो सो तु । संजमगुणोवकारा
उवधाति परिग्गहो होति ॥ १८८६ ॥ जंमि परिग्गहियंमी तसथावरघा-
तणा पवत्तंति । गहणे गहिते धरणे सो णाम परिग्गहो होति ॥
१८८७ ॥ गहणे पुरकम्मादी गहिते पुण होंति पच्छकम्मादी । धरणे
अप्पडिलेहा कीरति मुच्छा त जा तत्थ ॥ १८८८ ॥ जंमि परिग्गहियं-
मी तसथावरसंजमा पवत्तंति । गहणे गहिते धरणे सो ऊ ण परि-
ग्गहो होति ॥ १८८९ ॥ रागादिविरहिओ तू आहारादीणि जं कुणति सेवां

। ण हु सो परिग्गहो तू तो किं गुरूमादिणं पूया ॥१८९०॥ कीरति आहारादीहिं ? भण्णति भणिता तु णियमओ सा तु । तित्थंकरेहिं चेव तु तेण उ सा कीरए तेसिं ॥१८९१॥ तो किं पूयाहेतुं पवत्तयंतीह तित्थगरतित्थं ?। अह कम्मक्खयहेतुं पुट्ठो एवं इमं आह ॥१८९२॥ आहारउवहिपूजादिकारणा ण तु पकूवितं तित्थं । णाणचरणाण अट्ठा तित्थं देसेंति तित्थकरा ॥१८९३॥ तित्थं चउहा संघो तस्स य देसेंति णाणमादीणि । तित्थगरणामगोत्तस्स खयट्ठा अवि य साभव्वा ॥१८९४॥ णाणे चरणे गुणकारगाणि आहारउवहिमादीणि । एतेण अणुण्णाता तहिं ठिताणं तु तो पूजा ॥१८९५॥ एसो उवहीकप्पो वण्णियओ वित्थरं पमोत्तूणं । संभोगकप्पमेत्तो वोच्छामि अहं समासेणं ॥१८९६॥ पुव्वभणितो विभागो संभोगविही य दोहिं ठाणेहिं । दोसु वि पसंगदोसा सेसे अतिरेगपण्णवए ॥१८९७॥ दसविह भत्तविहेहिं पुव्वुत्तेहिं दोहिं ठाणेहिं । दोसु वि पसंगदोसा ण भुंजए अण्णसंभोई ॥१८९८॥ जम्हा तु ण णज्जंती उग्गममादी उ जे भवे दोसा । एतेण अपरिभोगो अमणुण्णे होति बोधव्वो ॥१८९९॥ जं तत्थ ण पत्तं तू तमहं वोच्छामि एतमतिरेगं । जे तु गुणा संभोगे ते वण्णेऽहं समासेणं ॥१९००॥

अणुकंपा संगहे चेव लाभालाभेऽवि दाहया । दावद्दवे य गेलन्ने कंतारे अंचिए गुरू ॥१९०१॥ बालादणुकंपणट्ठा असहू अतरंत संगहट्ठाए । केति सलद्धि अलद्धी तेसिं साहिज्जयट्ठाए ॥१९०२॥ उप्पन्ने अहिगरणे काहिंति विउसणं तु अविदाही । ण य गच्छे बहिभावो उप्परओऽहुंति परिभूतो ॥१९०३॥ मज्झं अणेक्कभाणो त्ति काउ मा एस पेच्छती पुव्विं । जत्थ उ कुले महल्ले लब्भति भिक्खा महल्लीओ ॥१९०४॥ तम्हा उ दवदवस्सा पुव्विं गच्छामह तु तं गेहं । एते उ परिहरिया दोसा हु भवंति संभोगे ॥१९०५॥ गेलण्णेण व एतस्स हिंडितुं आणियं तु अण्णेहिं । तो खाइ यऽसहुवग्गो कंतारे आणितसहूहिं ॥१९०६॥ एमेव अंचिए वी गुरू वि गेण्हति तु अण्णमण्णस्स । एक्को पुण परितम्मति बाहिरभावं व गच्छेज्जा ॥१९०७॥ एते उ एवमादी संभोगंमि उ गुणा भवंती उ । तम्हा खलु

कायव्वो संभोगो गुणण्णिएण समं ॥१९०८॥ एताइं ठाणाइं जो तु सहु होंतओ पमादेति । अण्णो आलोति नी घेत्तूण ज व तं केती ॥१९०९॥ सेसाणुपालणट्ठा तो तं उमंडली करेती उ । जदि आउट्टती जुज्जति ताहे मेलिज्जति पुणो वि ॥१९१०॥ अह पुण चोइज्जंतो बहुसो णाउट्टए उ तं दोसं । लति लाभलद्धिजुत्तो णिज्जूहती उ तं ताहे ॥१९११॥ अह मट्लाभलद्धी ण य जोगं जुज्जती अहत्थाम । सो हि खरंटेऊणं मेलिज्जइ मंडलीए तु ॥१९१२॥ किं कारण णिज्जूहणा जं गुणुत्तरधराणं । ण करेती वच्छल्लं तेण उ णिज्जूहणा तस्स ॥१९१३॥ एवं आयारएण उ जोगो सव्वस्स चेव गच्छस्स । वोढव्वो दिट्ठंतो गएण इत्थं इमो होति ॥१९१४॥ जह गयकुलसंभूओ गिरिकंदरविसमकडगदुग्गेसु । परिवहति अपरितंतो णियगसरीरुग्गते दंते ॥१९१५॥ तह पवयणभत्तिगओ साहम्मियवच्छलो असढभावो । परिवहति अपरितंतो खेत्तविसमकालदुग्गेसु ॥१९१६॥ जदि एक्कभाणजिमिता गिहिणो विय दीहमेत्तिया होंति । जिणवयण बहिब्भूता धम्मं पुण्णं अयाणंता ॥१९१७॥ किं पुण जगजीवसुहावहेण संभुंजिऊण समणेणं । सक्को हु एक्कमेक्को णीयओ विव रक्खितुं देहो ? ॥१९१८॥ केरिसयं संभुंजे केरिसयं वा वि तू ण संभुंजे । भन्नइ उग्गमसुद्धं भुंजे असुद्धं ण भुंजेज्जा ॥१९१९॥ चोदे आहारादी उग्गममादी असुद्ध मा भुंजे । जं पुण अपेहणादी कालादीहिं उवहयं तु ॥१९२०॥ तं पुण सुद्धोवहिणा मा समयं एक्कहिं तु बंधेज्जा । संघासेणं तस्स उ उवघातो मा हु सुद्धस्स ॥१९२१॥ भण्णाति सुद्धस्स जती संघासेण तु होति उवघातो । सुद्धेण असुद्धस्स वि पावति सुद्धी तक्कमएण ॥१९२२॥ अह उवघातो त्ति मतं संफासेण उ मता विसोही ते । णणु ते इच्छामेत्तं ण य इच्छामेत्तओ सिद्धी ॥१९२३॥ उवघातो विसोही वा णत्थिहं जीवस्स भावतो एसो । उवघातो विसोही वा परिणामवसेण जीवस्स ॥१९२४॥ तम्हेव पसत्थस्स उ परिणामस्स अह रक्खणट्ठाए । कीरति संभोगविही गच्छपसत्तीइ मा गच्छे ॥१९२५॥

संभोगाकप्पदारं एवं खलु वण्णितं मए एवं । आलोयणकप्पविहिं एत्तो वोच्छं समासेणं ॥१९२६॥ दुविहपडिसेवणाए

दोह्हाण दुयागताण ह्राणाणं । जस्से व तु अहिमुहतो आलोएज्जा त-
ददहाए ॥१९२७॥ दप्पिया कप्पिया चेव दुविहा पडिसेवणा । द-
प्पियाए उ दो ह्राणा मूले तह उत्तरे चेव ॥१९२८॥ कप्पियाए वि
एमेव दो ह्राणा उ वियाहिता । जयणा अजयणा चेव एक्केक्का य
वियाहिता ॥१९२९॥ जस्से व अभिमुहो त्ती जं चेव य कातु विहर-
ते पुरतो । आयरिय उवज्झाया तस्सेव उ तं तु आलोए ॥१९३०॥
अहवा ज जह सेवित मूलगुणे चेव उत्तरगुणे य । पाणतिवातादीसु य
वतेसु तं तं तह्रालोए ॥१९३१॥ अहवा मोक्खाभिमुहो मोक्खदहाए तु
अदहकम्माणं । अणलोइए ण मुंचति कम्हा इणमो णिसामेहि ॥१९३२
॥ जदि वि य तवगुणजुत्तो होति मणुस्सो अणुद्धरिय सल्लो । ण क-
रेति दुक्खमोक्खं सल्लुद्धरणे पि जतियव्वं ॥१९३३॥ तं पुण के-
रिसगस्स तु वियडेयव्वं तु ? जाणतो जो तु । अविजाणते ण कप्प-
ति अजाणतो जो अगीयत्थो ॥१९३४॥ पायच्छित्तमयाणंतो ह्राणे ह्राणे
अहाविहिं । आलोयणाए उवसंपयाए ण हु होति पाउग्गो ॥१९३५॥
किं कारणं ण याणति सोहिं साहुस्स सोहिकामस्स । ह्राणे ह्राणे पु-
ढवादिएसु मूलुत्तरे वावि ॥१९३६॥ पाणतिवातादीसु य कारणणिक्का-
रणे य जयणाए । आलोयण गुणदोसदरिसणेण हु होति पाउग्गो ॥
१९३७॥ गुण अणिगूहियमादी दोसा पुण गूहणादीया होंति । एते ण
याणे अगीतो तम्हा उ इमस्स णालोए ॥१९३८॥ पायच्छित्तं वि-
याणंतो ह्राणे ह्राणे जहाविहिं । आलोयणाए उवसंपयाए सो होति
पाउग्गो ॥१९३९॥ पडिसेवणातियारे दुविहे काले पबंधवोच्छेदो । ए-
क्केक्क छक्कएणं आलोयण मा पडिच्छाहि ॥१९४०॥ पडिसेवणा-
ऽतियारा दुविहा मूलगुण उत्तरगुणे य । पडिसेवणकालो वि य दुवि-
हो उडुबद्ध वासे य ॥१९४१॥ अव्वोच्छिण्णपबंधं तव्विवरीयं तु हो-
ति वोच्छिण्णं । वयछक्ककायछक्काकप्पादी छक्कमेक्केक्कं ॥१९४२॥
अकप्पादी छक्कमिणं अकप्प गिहिभायणं च पलियंको । तत्तो य
गिहिणिसेज्जा होति सिणाणं च सोभा य ॥१९४३॥ एतेसिं छक्का-
णं एक्केक्कं जं तु होति आवण्णो । तं तं आलोदे तहा पडिच्छे
या वि आयरिओ ॥१९४४॥ आलोयणववहारो संवासि पवासिया

उ अवराहा । संवासिया उ गच्छे पवासिया कारणगतस्स ॥ १९४५॥ अहवा जा अणवट्ठो ता संवासिं तु होंति अवराहा । पारंची पावासी पवसति गच्छा उ जेणं तु ॥ १९४६॥ पंचविहो सज्झाओ दाणगहणंमि भयिओ संवासो । पावासिए ण दिज्जति ण य गहणं होति कायव्वं ॥ १९४७॥ आवण्णगपरिहारिए अणवट्ठे चेव दोण्ह वेतेसिं । ण वि दिज्जति ण वि घेप्पति सेसाणं दाण गहणं च ॥ १९४८॥ आलोअणाए कप्पो एसो भणिओ मए समासेणं । उवसंपताए कप्पं एत्तो उ समासओ वोच्छं ॥ १९४९॥ दुविहंमि आगमंमि उ परूवणा चेव आयरणता य । पण्णवणगहण अणुपालणाए उवसंपदा होति ॥ १९५०॥

आगमहेउं उवसंपदा उ स य आगमो भवे दुविहो । सुत्तं अत्थो य तहा पारगते तत्थ उवसंपा ॥ १९५१॥ दो आयरिया पारगा कत्थउ उवसंपदा तहिं कुज्जा ? । जो णिउणतरं भासति अह णिउणं दो वि भासंति ॥ १९५२॥ सामायारी पडिलेहणादि जो तत्थ आयरावेति । दोसु वि समुज्जतेसू जो तहियं धम्मकहिओ उ ॥ १९५३॥ ता विय हु सिक्खियव्वा सज्झायस्सेव जेण तं अंगं । दोसु वि धम्मकहीसु जो तहियं गाहगो होति ॥ १९५४॥ गाहणसत्तीजुत्तेसु दोसु वी कत्थ होइ उवसंपा । अतरंत असहुवग्गं विसेसओ जो उ पालेति ॥ १९५५॥ एतेसु विसिट्ठतरो अण्णाहिंतो ऽहिहोति उवसंपे । इतरो होति अजोग्गो जदि विय सो होति गीयत्थो ॥ १९५६॥ जे उ असंविग्गं पुण पण्णवणाकोविदो त्ति काउणं । उवसंपज्जति बालो तस्स इमे होंति दोसा उ ॥ १९५७॥ सीहमुहं वग्घमुहं उयहिं च पलित्तगं च जो पविसे । असिवं ओमोदरित धुवं सि अप्पा परिच्चत्तो ॥ १९५८॥ तह चरणकरणहीणे पासत्थे जो उ पविसते भिक्खू । जयमाणे उ पज्जहिउं सो ठाणे परिचयति तिण्णि ॥ १९५९॥ एमेव अहाछंदे कुसील ओसन्नमेव संसत्ते । जं तिण्णि परिचयंती णाण तह दंसण चरित्तं ॥ १९६०॥ क पुण उवसपज्जे ? तत्थ इमे गच्छ होंति चत्तारि । एगो देति लएइ य बितिओ देती ण गेण्हति तु ॥ १९६१॥ ततिओ ण देति गेण्हति ण य देति ण गेण्हती चउत्थो उ । पढमे उवसंपज्जइ सेसा उ तओ णऽणुण्णाया ॥ १९६२॥ बितिए णिज्जरलाभं ण

लभति जेत्तणमादिकज्जेसु । ततिए गिलाण कारण अट्टवसट्टे मरणदोसा ॥ १९६३ ॥ दोण्णि वि चउत्थे दोसा होति अवत्थू य तेण सो तम्हा । पढमंमि जे गुणा खलु हवंति ते मे णिसामेह ॥ १९६४ ॥ भत्तोवहिसयणासण दाणग्गहणे य एक्कमेक्कस्स । हट्ठगिलाणे कल्लाविए व अणतिक्कमो जोऽन्न ॥ १९६५ ॥ जो पुण ते दूसेंतो करेति उवसंपदं असुद्धेसु । तिट्ठाणगाभिलासी हवइ तु वोसट्ठतिट्ठाणो ॥ १९६६ ॥ किं ण ठिओऽसि तहि चिय ? पुट्ठो जंपेति तस्सिमे दोसा । अपियसज्झायादी णत्थि य ते यावि जति तस्स ॥ १९६७ ॥ ज दोस आभासति तं दोसं अप्पणा समावज्जे । जो वि पडिच्छति तं तू सो वि य तं चेव आवज्जे ॥ १९६८ ॥ गच्छस्स जो उवसंपे असुद्धमावज्जती तगं सो तु । जो पुण पडिच्छमाणो अविणत्थियदीहि दोसेहि ॥ १९६९ ॥ दूसेउं ण पडिच्छति ण संति ते यावि तस्स जदि दोसा । ताहे जं सो वदती तं तं दोसं अप्पणा वज्जे ॥ १९७० ॥ जं च असुद्ध पडिच्छति रागेणं तस्स जे भवे दोसा । वोसट्ठतिगट्ठाणादि ते तु सो अप्पणा पावे ॥ १९७१ ॥ अरुहा अणरुहा उवसंपदा य भणिता तु होंति दोऽवेते । अयमण्णो तु अणरिहो सूरी उवसंपदाते तु ॥ १९७२ ॥ आहारे उवहिम्मि य पगासणा होति अणरिहस्सइट्ठे । एगंतणिज्जरट्ठी संविग्गजणंमि उद्देसो ॥ १९७३ ॥ आहार उवहिसेज्जा लभिहामी तेण संगहं कुणती । होहामि वा पगासो लोए ण उ णिज्जरट्ठाए ॥ १९७४ ॥ एए होंति अणरिहा तिंतिणिचलचित्तमादिणो जे य । अहवा वि मदसइट्ठे आकोइट्ठविकाइट्ठए वा वि ॥ १९७५ ॥

जो पुण इमेहि पंचहि ठाणेहि वादे सो भवे अरुहो । संगहुवग्गहणिज्जरसुतपज्जवजातऽवोच्छित्ती ॥ १९७६ ॥ तस्स पुण णिज्जरट्ठा वाइतस्स णियमेण सूरिस्स । आहारोवहिपूजा पगासणा चेव भवती तु ॥ १९७७ ॥ विणएणाहारादी उक्कोसा तस्स होंति दायव्वा । काले कल्लाणुरूवा जे वाति सभावआरूवा ॥ १९७८ ॥ उच्छूढकवीरो तू जइ वि य सो मंडलीय भुंजति तु । तह विय सत्तगगहणं सीसपडिच्छेहि कायव्वं ॥ १९७९ ॥ एस अणुधम्मता ऊ जह गोतमसामि सामिणो गेण्हे । हिंडतस्स पुण इमे तस्स उ दोसा भवंती उ ॥ १९८० ॥

वाते पित्ते गणालोए कायकिलेसे अचिंतता । मेढी अकारए वाते
गणचिंतानदिट्ट वादिणो ॥१९८१॥ एतेसिं दाराणं वक्खाणुवरिं बि-
तिज्जउद्देसे । ववहारे अभिणाहिती वित्थरत्तो इह समासेणं ॥
१९८२॥ भत्तीए तु गुणाणं पगासणा तस्स तेहिं कायव्वा । एता
विसो महप्पा उज्जुत्तो अणज्झकालीओ ॥१९८३॥ थामावहारविज-
ढो तवसंजमसुद्दिढओ जियकसाओ । बहुस्सुत बहुआगमिओ भ-
त्तीए पगासए एवं ॥दारं॥ १९८४॥ एसुवसंपदकप्पो वोच्छं उद्देस-
कप्पमहुणा उ । उद्दिसण वायण त्ति य पाढणया चेव एगट्ठा ॥
१९८५॥ सुत्तत्थतदुभयाइं पवायते ताव जाव संधाणं । बहुपच्च-
वायया‍ए विजढे भजियं तु संधाणं ॥१९८६॥ संधाणसंतगमणं
असिवादी पच्चवायणेगविहा । विजढेत्ती णिक्खित्ते जोगे भइओ
पुणुक्खेवो ॥१९८७॥ जति कारणेण केणति णिक्खित्तो तो सि
उक्खिव पुणो वि । अह दप्पा णिक्खित्तो तो ण उ उक्खप्पती
भुज्जो ॥१९८८॥ उद्दिट्ठंमि य अंगे सुतक्खंधंमि य तहेव अज्झ-
यणे । आयज्ज पुरिस कारण तिट्ठाणे होति पडिसेहो ॥१९८९॥
अंगादी उद्दिट्ठे पुरिसं दट्ठूण अपरिणामादी । अच्छति वसट्टरा-
दीहे अविणीयादी व णाऊणं ॥१९९०॥ ताहे णिक्खप्पति तू ति-
ट्ठाणे जं तु भणित पडिसेहो । तं सुत्तमत्थतदुभय एतेसिं तिण्णि प-
डिसेहो ॥१९९१॥ एसुद्देसणकप्पो अहुणा वोच्छं अणुण्णकप्पं तु । क-
म्ही काले गहणं वत्थादीणं अणुण्णातं ॥१९९२॥ वत्थं पादग्गहणे वा-
सावासेसु णिग्गमो सरदे । तिगपणगसत्तगदुगाउयंमि अप्पोदगं जा-
णे ॥१९९३॥ वत्थादीणं गहणं णाणुण्णातं तु होति वासासु । वासा-
तीय परेणं दुमासे अण्णे उ गेण्हंति ॥१९९४॥ तेसिं पुण णेंताणं स-
रदे जदि दोण्ह गाउयाणं तो । दगसंघट्टजहण्णेण तिन्नि पंचेव म-
ज्झिमगा ॥१९९५॥ सत्तेव उ उक्कोसा गिम्हंमी तिन्नि पंच हेमंते ।
वासासु य सत्त भवे परेण खेत्तं णणुण्णातं ॥१९९६॥ अप्पोदगत्ति
मग्गा जं तं रीयासु तीण्णतं पुव्विं । तं अद्धे जोयणे दगघट्टा जा-
व सत्तेव ॥१९९७॥ वत्थं पातग्गहणे फलसंथरणंमि पढमठाणंमि ।
एते वोलेक्कमसिम तू सट्ठाणावेक्खणा सुद्धी ॥१९९८॥ पढमं ठाणु-

स्सग्गो तेण तू जवस्सु होति खेत्तेसु । वत्थादीण गहणं तत्थेव य होति उ विहारो ॥ १९९९॥ णवट्ठाणातिक्कमे पुण भवई सट्ठाणतो विसुद्धो तु । किं पुण तं सट्ठाणं अववादो अस्सति तो होति ॥२०००॥

अववाएणं गहणं उस्सग्गो चेव होति सो लाहे । गिण्हं-तस्स तु कारणे सुद्धी तह चेव बोधव्वा ॥२००१॥ जह गेण्हं-तुस्सग्गो सुद्धी उवहिस्स एव बितिएणं । गेण्हंतस्स विसुद्धी सट्ठाणं एवमक्खायं ॥२००२॥ अहवा वि इमे अण्णे णव उ ठा-णा वियाहिता । दव्वादीयाउ इणमो वोच्छामि अणुपुव्वसो ॥२००३॥ दव्वे खेत्ते य काले य वसही भिक्खमंतरे । सज्झाइए गुरू जोगी एते ठाणा वियाहिता ॥२००४॥ दव्वाणाऽऽहारादीणि जादि तु सुलभाइं तंमि खेत्तंमि । खेत्त विच्छिन्नं खलु वत्तेत सुणेतगणस्स ॥२००५॥ वत्तण परियट्टंती सुणेंति अत्थं गणो तु बालादी । तस्स पडुच्चाति खेत्त आ-हारादीहिं संथरणं ॥२००६॥ काले ततियाए वेला वसही जोग्गा तु भिक्ख-सुलभंति । ण विगिट्ठमंतरा वि य सज्झाओ सुज्झति जहिं च ॥२००७॥ सुलभं आयरियाणं जोग्गा जोगीण सुलभ पाउग्गं । एते ते नव ठा-णा जहिं उस्सग्गेण गहणं तु ॥२००८॥ उस्सग्गेण विहारो संथरमा-णाण णवसु खेत्तेसु । तो सव्वुग्घादुवही णव पेल्ले यावि दगघट्टे ॥ २००९॥ णवि दूरे गच्छंती णवगस्स असंभवे बितियट्ठाणं । दगघट्टे अहुए वी पेल्ले दूरं पि गच्छेज्जा ॥२०१०॥

दुल्लभंमि वत्थपादे ऊणाहिएसुं पि णवसु गच्छेज्जा । एमेव वि-हारो वि हु खेत्ताणऽसती मुणेयव्वो ॥२०११॥ आलंबणे विसुद्धे दुगुणं तिगुणं चतुरगुण वा वि । खेत्तं कालातीय समणुण्णात पकप्प-मि ॥२०१२॥ एस अणुण्णाकप्पो अहुणा अद्धाणकप्प वोच्छामि । जेहि च कारणेहि अद्धाणं गम्मते इणमो ॥२०१३॥ असिवे ओ-मोदरिए रायदुट्ठे भए व आगाढे । देसुट्ठाणे अपरक्कमे य अ-द्धाणतो पणगं ॥२०१४॥ उट्ठरे सुभिक्खे अद्धाणपवज्जणं तु दप्पेणं । दिवसादी चउलहुगा चउगुरुगा कालगा होंति ॥२०१५॥ उग्गम उप्पादण एसणाए जे खलु विराहते ठाणे । तं णिप्फण्ण तस्स उ पायच्छित्त तु दायव्व ॥२०१६॥ पुढवी आऊ तेऊ चेव वाऊ वण

स्सांत तस्सा य । पातेसु पोरेसेसु य ज जोहे आरोवणा भणिता ॥ २०१७ ॥ लहुओ गुरुओ लहुया गुरुया चत्तारि छच्च लहुया य । छ-गुरु य छेदो मूल अणवट्ठप्पो य पारंची ॥ २०१८ ॥ असिवे ओमोदरिए रायदुट्ठे भए व आगाढे । गीतत्था मज्झत्था सत्थस्स गवेसणं कुज्जा ॥ २०१९ ॥ कालमकालो भोती णातूण य अहिवति अणुण्णवणा । भिक्खु-यमिच्छादिट्ठी धम्मकहाए णिमित्ते य ॥ २०२० ॥

सत्तुय समिए संखडि पत्थयणे खलु तहेव पोग्गलिए । ध-म्मकह णिमित्तेण वसहा पुण दव्वलिंगेण ॥ २०२१ ॥ सत्थे पंथे तेणे पंचविहो उग्गहो य दव्वाणं । सुन्नग्गामे दव्वग्गहणं जयणाए गीत-त्था ॥ २०२२ ॥ तुवरे फले य पत्ते गोसहिसे सूयरा य उत्थी य । आ-यवमणायवे छिय जयणाए जाणगो गहण ॥ २०२३ ॥ पिप्पलगसूति आरि गणवत्थच्चयणतलियपुडगवज्झे य । कत्तिय कत्तरि सिक्कग सं-वट्टग लाउए चेव ॥ २०२४ ॥ वातियपित्तियसिंभियगुलिगाण अगदस-प्पकोसे य । जं चऽण्णु वग्गहकरगा गेण्हड अद्धाणकप्पम्मि ॥ २०२५ ॥ सीहाणुगा य पुरतो वराभणू मग्गतो वसभणोंति । पंते नंपेर जंता धरेंति जा अद्धपज्जत्ती ॥ २०२६ ॥ दडियमिच्छादिट्ठीसमुदपाणिलारणं च णिव्विसए । सासुविसणिभद्दग वसभा पुण दव्वलिंगेणं ॥ २०२७ ॥ उवकरणचरित्ताणं विलोवणा सरीरतोयऽणागाढे । धम्मकहणिमित्तेणं पुलागकज्जेण आगाढे ॥ २०२८ ॥ असिवादिकारणेहिं अद्धाणपवज्ज-णं अणुण्णात । उवकरणपुव्वपडिलेहिएण सत्थेण गंतव्वं ॥ २०२९ ॥ वच्चंताण असहू कोती ण तरिज्ज गंतु पादेहिं । अपरक्कमो तु ताहे तत्थिय तु इमे वि मग्गेज्जा ॥ २०३० ॥

एगक्खुरे य दुक्खुरे दुपए आणुबंधि तह य अणुरंगा । अह भद्दएभिजायाति असती अणुसादिहमादीहिं ॥ २०३१ ॥ एगक्खुरा आ-साती दुक्खुरा उट्टादि दुपय जइडादी । अणुबंधि सकडादी अणु-रंग पिसी तु बोधव्वा ॥ २०३२ ॥ एतेसि पुव्वुत्तट्ठ खुरादि जा-तिसु सिद्धपुत्तादी । असती य खुड्डतो वा लिंगविवेगेण क-ड्ढंति तु ॥ २०३३ ॥ आवासियाम्मि सत्थे तस्सेव तगोपि अप्पे-णंति पुणो । अह भणंति गता संता अप्पेज्जाह त्ति मम एयं ॥

२०३४ ॥ ताहे पच्छकडादी चारेदी तेसि असतिउ खुड्डो लिंगविवेगं काउं चारेती जा गता हाणं ॥ २०३५ ॥ एवं दुब्बुसादीसु वि जयणा जा जत्थ सा तु कायव्वा । सुत्तत्थजाणएणं अप्पाबहुअं तु णायव्वं ॥ २०३६ ॥ एतेसामण्णतरं अणागाढालंबणो णिसेवेज्जा । तट्ठाणगावराहे संवट्टियमोऽवराहाणं ॥ २०३७ ॥ संवट्टियावराहे तवो व छेदो तहेव मूलं वा । आतारपकप्पे जं पमाणणिम्माणचरिमंमि ॥ २०३८ ॥ अद्धाणकप्पो एसो अहुणा अणुवासणाए कप्पं तु । वोच्छामि गुरुवदेसा अणुग्गहट्ठा सुविहियाणं ॥ २०३९ ॥ अणुवासंमि तु कप्पे पण्णवगा पडुच्च बहुविहा अत्था । अणुवासियाए पगतं सुद्धा य तहा असुद्धा य ॥ २०४० ॥

अणुवासत्थो बहुहा उडुवासे वसण अहव असिवादी । वुड्ढादीवासो वा अहवा अणुवसणमणुवासो ॥ २०४१ ॥ वसितं पुणो वि वसती अणुवासियवसहि सामइगी सण्णा । तीयहिगारो एत्थं सा होज्जा सुद्धऽसुद्धा वा ॥ २०४२ ॥ पट्ठीवंसादीहिं वंसगकडणादिएहिं तह चेव । होति असुद्धा वसही मूलगुणे उत्तरगुणे य ॥ २०४३ ॥ कालदुयातिरित्तं अविसुद्धासुं च तासु वसमाणो । पावति पायच्छित्तं मोत्तूणं कारणमिमेहिं ॥ २०४४ ॥ असिवे ओमोदरिए रायदुट्ठे भए व आगाढे । गेलन्ने उत्तिमट्ठे चरित्त सज्जातिए अंसती ॥ २०४५ ॥ वाहिं सव्वत्थ सिवं तत्थ सिवं तेण कालदुयगंमि । पुण्णे वि ण णिग्गच्छे अणुपच्छाभाव अणुवासी ॥ २०४६ ॥ आलंबणे विसुद्धे सुत्तदुतं परिहरे पयत्तेणं । आसज्ज तु परिभोगं भयणा पडिसेवसंकमणे ॥ २०४७ ॥ असिवादीहिं वसंते सुद्धाए वसहीए वसे साहू । सुद्धा वसतीए जवती विसोहि कोडीए पुव्वं तु ॥ २०४८ ॥ भयणत्तिय जं भणियं पुव्वप्पतरात्थ जे उ जे दोसा । ते ते पुव्वं सेवे संकमणेऽवी इमा भयणा ॥ २०४९ ॥ अप्पाबहु तुल्लेतुं जत्थ गुणा तू भवेज्ज बहुतरगा । गच्छं गच्छंताण व तं चेव तहिं करेज्जा उ ॥ २०५० ॥

असिवादिणिट्ठिए पुण पुव्वक्कमेण संकमे तत्तो । सत्थं तु पडिच्छंतो जइ अच्छे तत्थ सुद्धो उ ॥ २०५१ ॥ एतऽण्णतरचिट्ठूण अणुवासिय जे तु अणुवसे कप्पं । कालदुयावराहे संवट्टयमोऽवराहाणं

॥२०५२॥ सवदिरयावराहे तवो व छेदो तहेव मूल वा । आयारपक
पे जं पमाण-णिम्माणचरिमंमि ॥२०५३॥ अणुवासियाए कप्पो एमेसो
वण्णितो समासेणं । ठितकप्पसो तु तत्तो वोच्छामि गुरूवदेसेणं ॥२०५४॥
गच्छाणुकंपयाए सुत्तत्थविसारए य आयरिए । आगाढे पढमसंजतो ओव-
गाहिए पकप्पदुए ॥२०५५॥ गच्छो जदि हीरेज्जा आयरियं वा विवायए के-
ई । एरिसए आगाढे जस्स उ जा होति लद्धी उ ॥२०५६॥ सो तं न प-
मादेती पढमणियंठो पुलागलद्धीओ । गच्छोवग्गहहेउं कारण पकप्पडि-
अऽणुण्णा ॥२०५७॥ दुपए त्ति साहुसाहुणि तदट्ठहेउं तु एव मूलगुणे ।
भणिता सेवा एसा सीसो पुच्छति उ अह इणमो ॥२०५८॥ जह का-
रणंमि भणिया मूलगणेसुं तु एव पडिसेवा । तह होज्ज कारणंमी प-
डिसेवा उत्तरगुणे वि ॥२०५९॥ गुरुयतरएसु एवं मूलगुणेसुं तु ज-
दि भवेऽणुण्णा । उत्तरगुणेसु तत्तो लहुयतरेसुं ततोऽणुण्णा ॥२०६०॥
ठियकप्पेसो भणितो अहुणा वोच्छामि अट्ठियं कप्पं ।
संखेवपिंडियत्थं जह भणियमणंतणाणीहिं ॥२०६१॥ वत्थे पायग्गहणे
उक्कोसजहन्नगंमि अट्ठिओ तु । ठियमट्ठिते विसेसो पकवितो सं-
यकप्पंमि ॥२०६२॥ वत्थाणि य पाताणि य मज्झिमतित्थंकराण क-
प्पंमि । बहुमोल्लाण वि गेण्हति अट्ठियकप्पो समक्खाओ ॥२०६३॥
मोल्लगरूवं पि वत्थं अट्ठारसपणितरूवगा जहन्नं । एत्तो य स-
यसहस्सं उक्कोसमोल्लं तु णायव्वं ॥२०६४॥ ऊणगअट्ठारसगं
वत्थं पुणं साहुणो अणुण्णातं । एत्तो वतिरित्तं पुण णाणुण्णातं
भवे वत्थं ॥२०६५॥ जिणथेराणं कप्पं अहुणा वोच्छामि आणुपु-
व्वीए । जं जत्थ जहा निवयति समासओ तं तहा सुणसु ॥२०६६
॥ जिणथेराणं कप्पो जम्हा उ ट्ठितंमि अट्ठिए चेव । ठित अट्ठि-
तकप्पाणं जम्हा अंतग्गता एते ॥२०६७॥ जो तु विसेसो एत्थं तं तु
समासेण णवरि वक्खामि । जिणथेराणं कप्पे जिणकप्पे ता इमं
वोच्छं ॥२०६८॥ दुयसत्तए तियचउक्कगस्स अज्झयणगछेदेणं । अ-
वि होज्ज कालकरणं पुणरावत्ती ण वि य तेसिं ॥२०६९॥ पिंडे-
सणा उ सत्त उ हवंति पाणेसणा दु सत्तेए । वत्तु सेज्ज वत्थ
पाते तिण्णेते चउक्कगा होंति ॥२०७०॥

दोण्णाऽऽदिमा उ सत्तसु अवणेतुं सेस उवरिमा पंच । अड्ड ड्डोंति छेदे दो दो अवणो चउक्केसु ॥२०७१॥ गेण्हंति उवरिमासु तत्थ अवि घेत्तु अण्णतरियाए । ड्डेदिड्डल्लासु ण गेण्हति जदि वि करे कालकिरियं तु ॥२०७२॥ अणभिग्गहेण ण वि ता गेण्हेति विही उ एस जिणकप्पे । अहुणा उ थेरकप्पे वोच्छामि विहिं समासेणं ॥२०७३॥ गहणे चउव्विहंमि बितिए गहणं तु परमजत्तेणं । जं पाणबीयरहितं हवेज्ज तरमाणए सोही ॥२०७४॥ गहणं चउव्विहं पी वत्थं पातं च सेज्जआहारो । एतेसिं असतीए गहणं पढमं तु बीयस्स ॥२०७५॥ बितियं पातं भण्णति किं कारण तस्स गहण पढमं तु । तेण वि ण बोडियपडिमा गिहि भायणभोगो हाणी य ॥२०७६॥ अहवा चउव्विहं तू असणादी तत्थ होज्ज गहणं तु । तत्थ तु बितिय पाणं तस्स तु गहणं पढमताए ॥२०७७॥ असतीय फासुयस्सा तसमसहिए कंद बीयसहिए वा । किं कारण तेण विणा आसुं पाणक्खतो होज्जा ॥२०७८॥ तरमाणो गेण्हती सुद्धं अतरो पेल्ले तह संथारे । संथरंतो तु गेण्हंतो पावति सद्दाणपच्छित्तं ॥२०७९॥ सत्त दुए दसए वा अणेगहाणेण वा भत्ते गहणं । एत्तो लिंगातिरित्तं गच्छे गहणं तु भइयव्वं ॥२०८०॥

पिंडेसण पाणेसण सत्त दुगे तं तु होति णायव्वं । दसगं एसणदोसा णेगट्ठाणुग्गमे दोसा ॥२०८१॥ एत्तो लिंगातिरित्तं उग्गमउप्पायणेसणासुद्धं । भजियंति कप्पति ती तस्सऽसतीए असुद्धं पि ॥२०८२॥ एसो तु थेरकप्पो वोच्छं अणुवालणाए कप्पं तु । णुवालिंति सुविहिता गच्छं विहिणा उ जेणं तु ॥२०८३॥ परियट्टी परियट्टंतओ य दुविहो पुणो वि एक्केक्को । उवसग्गखेत्तकाला वसेण अज्जाण परिवट्टी ॥२०८४॥ परियट्टियव्वयं खलु परियट्टी चेव होति एगदुहं । समणा समणीओ वा दुविहं परीयट्टियव्वं तु ॥२०८५॥ समणपरियट्ट दुविहो आयरिओ बीयओ उवज्झाओ । संजतिपरियट्टो पुण तिविहो तु पवत्तणी तइया ॥२०८६॥ समणिपरियट्टि दुविहा विहिपरियट्टी य अविहिए चेव । जतिणि

परियट्टीयव्वा णियमेणं कारणेणिमिणा ॥२०८७॥ ताओ बहूवसगा तेणादिदुस्संचराणि खेत्ताणि । कालवसेण य संपति जायति लोगस्स पंतत्तं ॥२०८८॥ तम्हा सव्वपयत्तेण रक्खियव्वा उ ताओ णियमेणं । ण वि सातिरा मोत्तव्वा मा होज्जा तासि तु विणासो ॥२०८९॥ संविग्गगीतपरिणतो तासिं परियट्टओ अणुन्नाओ । होति पुण अणरिहो खलु परियट्टी तू इमो तासिं ॥२०९०॥

अबहुस्सुते अगीयत्थे तरुणे मंदधम्मिए । कंदप्पि सीतपदट्ठाए अनिहो दाणे य गहणे य ॥२०९१॥ बहुस्सुतगीत जहण्णो आवास्सगमादि जाव आयारो । ते अग्गीत ऽबहुस्सुत तिण्ह समाणावतो तरुणो ॥२०९२॥ जो उज्जोगं ण कुणति चरणे सो होति मंदधम्मो तु । अणिहुयउल्लावादी सरीरकुविओ य कंदप्पी ॥२०९३॥ णिक्कारणे अणट्ठा संजतिवसही तु वच्चए जो तु । णिक्कारणमविहीए जो देती गेण्हती वावि ॥२०९४॥ एयारिसो तु अज्जाणं परियट्टी तु ण कप्पति । कारणेहिं इमेहिं तू गस्मति अज्जाणुवस्सयं ॥२०९५॥ उवस्सए य गेलण्णे उवही संघपाहुणे । सेहट्ठवणुद्देसे अणुण्णा भंडणे गणे ॥२०९६॥ अणप्पज्झ अगणी आऊ वीयारे पुत्तसंगमे । संलेहुण वोसिरणे वोसट्ठाणे हिते तहिं ॥२०९७॥ अरिहो अणरिहो यावि परियट्टी एवमाहिओ । अहुणा पवत्तिणी तासिं अजोग्गा तु इमा भवे ॥२०९८॥ वासग्गामविहारेसु वीयारादेकदीहिया । अजुत्तोवहि अणाउत्ता अप्पछंदा य काहिता ॥२०९९॥ पडिणीयं थद्ध सुहसीला णिहिवेयावच्चंकारित्ता । संसत्त हवियभत्ता य बाउसी अप्पणट्ठिया ॥२१००॥ अणायतणगवेसा य छण्णंगाणं पलोइया । जा यऽण्ण एवमादी य अज्जा सा णाणुकड्ढिया ॥२१०१॥ आहारे उवहिंमि य गतीए सयणासणे सरीरे य । भासाए बाउस्माणं जा जहिं आरोवणा भणिता ॥२१०२॥ वासावासं वसति तु एक्किक्या तह य गामऽणुग्गामं । दूइज्जती वियारं विहारभिक्खादि एक्का य ॥२१०३॥ दीहं करेति गोयरदोच्चभुक्करस्सगाणि सगंती । चित्तवियादिणियंसण अजुत्तउवही भवति एसा ॥२१०४॥ इरियाभासेसणादाणणि-

कक्खेवे णिसिरणे अणाउत्ता । अणापुच्छाए गच्छति जत्थिच्छाए य सच्छदा ॥ २१०५ ॥ गेहेसु गिहत्थाणं गतूण कहा कहेति काहीया । तरुणादि अहिपडंते अणुजाणति जा तु सा पडिणी ॥ २१०६ ॥ पच्छा जच्चादिमयादिएहिं सुहसीलदुट्ठसीला ति । सिव्वणबंधणमादिसु वेदावच्च गिहीण करे ॥ २१०७ ॥ उक्कसा-वत्थपत्तादिएहि ममत्तभावसंसत्ता । अहवा वि गिहत्थेसुं पाउ-रणादीसु अभिसत्ती ॥ २१०८ ॥ भत्तं वा पाणं वा णिक्खिवती वाउस्सा उ जा धुवति । अभिक्खं तु हत्थपादे कक्खंतरगुज्झ-मादीणि ॥ २१०९ ॥ सणिणाहिसंणिचए चेव कुणति जा अप्पणो अ-णट्ठाए । अप्पं वा वि अणट्ठा संचयं जा य करणं तु ॥ २११० ॥

जंतादिसाला तह वट्टकोट्ट एमेव सोल हाणाणि । जा ग-च्छति एतेसुं अणायतणगवेसिता सा तु ॥ २१११ ॥ गुज्झगाणि पलो-ए अप्पणो अहवावि जा तु पुरिसाणं । उक्कोसगमाहारं एसति उवहिं च उक्कोसं ॥ २११२ ॥ गच्छति सविलासगती सयणि-ज्जं सतूलिय सबिब्बोय । उवट्टेति सरीरं सिणाणमादी व जा कुणति ॥ २११३ ॥ भसुहुक्खेवादीहिं सविकारं भासती य सवि-लासं । एमादि अणरिहा तू पच्छित्तं वा वि सट्ठाणं ॥ २११४ ॥ तत्थ पुण ताव इणमो पच्छित्तं भन्नए समासेणं । दोंतगधरेतगा-ण अगीतसादीण दोण्हु पि ॥ २११५ ॥ अबहुस्सुते अगीतत्थे णिसि-रिज्ज गणं तु अहव धारेज्जा । तद्देवसियं तस्स तु मासा चत्तारि भारियया ॥ २११६ ॥ सत्तरत्तं तवो होति ततो छेदो पहावती । छेदेणं छिन्नपरियाए ततो मूलं तओ दुगं ॥ २११७ ॥ एक्केक्कं सत्तदिणे दातुं तवे ऽतिच्छिए ततो छेदो । जत्तो तवो आरद्धो पण-गादिकडो व जहिं कोति ॥ २११८ ॥ तुल्ला चेव य ठाणा तवछेदा-णं भवंति दोण्हु पि । पणगादि पणगवड्ढी दोण्हु वि छम्मासनि-ट्ठवणा ॥ २११९ ॥ किं कारण ण कप्पति गणहरो अबहुस्सुतो अगी-तत्थो । भण्णति सो पच्छित्तं जयणं च ण जाणए कातुं ॥ २१२० ॥ दिट्ठंतो णट्टेणं अजाणमाणेण जाणएणं च । कायव्वो एत्थ इ-णमो परूवणा तस्सिमा होति ॥ २१२१ ॥

सेयंमि अहिणवंमि य सरसंचारण कुहुरणासु च । कुणति वि-वच्चासं खलु जह णट्टमसिक्खितो णट्टो ॥२१२२॥ तह कु-णति विवच्चासं अगीतो सव्वकरणजोगेसुं । सुत्तत्थजाणंतो णा-णे तह दंसण चरित्ते ॥२१२३॥ जह णट्ट गीतवाइयविजाणतो जुंजए सम्मं तालं । सुत्तं तु विजाणतो तह कुणती सम्मकरणं तु ॥२१२४॥ किं पुण सो न वि जाणइ जं कुणती सव्वहिं वि-वच्चासं । भण्णति सुणसू इणमो जं कुणती सो विवच्चासं ॥२१२५॥ ठाण णिसीय तुयट्टण पेहण पप्फोडणे तहा सयणे । भासासुद्धग्गहणे जे अण्णे पत्तेनिया ठाणा ॥२१२६॥ उवदि-सिउ ण वि याणति समायारिं तु ठाणमादीयं । अज्जावि जा अगीता ण जाणए सावि तह चेव ॥२१२७॥ अप्पछंदेओ लुद्धो परिभूतो य पत्थिओ । बहुलोहुमोहुसण्णो अज्जावग्गो दुरणुक-इढो ॥२१२८॥ पाएणमप्पछंदा महग्घदाणेण लोभित अकिच्चं । कुव्वंति छगलिया विव परिभूताओ य सव्वस्स ।दार॥२१२९॥ संसादिपेसिया विव संजतिवग्गो हु पत्थणिज्जो तु । धिज्जा-इयदिट्ठीसु बहुसुं बहुमोहसन्नाओ ॥२१३०॥

मज्जायविप्पहूणे मज्जायाए य सपउत्तंमि । पडिसेहे अणुण्णा य मग्गधर विलोमता चतुरो ॥२१३१॥ जम्हा तु दुप-रियट्टो अज्जावग्गो उ तेण पडिसेहो । परियट्टणे अज्जाणं मज्जा-या विप्पहूणस्स ॥२१३२॥ मज्जायसंपउत्तो अज्जापरियट्टओ अ-णुण्णाओ । परियट्टए अजोग्गे उवदिट्ठए चतुगुरु सोही ॥२१३३॥ मग्गधरो आयरिओ सो पुण सिढिलेइ जो तु मज्जातं । तस्सु-वदेसो कीरति मज्जायाए दढो होति ॥२१३४॥ उपदेसस्सार पडि-सारणा य तेण पर तिण्णि माससहू । छंदे अवट्टमाणं अप्पछंदं वि-वज्जए ॥२१३५॥ दिट्ठंता य इमेसिं पढमा मासलहुगादि दिज्जंति । छगाणोल्लपट्टकंचण अवराहे सूरिसु कमेणं ॥२१३६॥ आयरणे उवदेसो अकप्पपडिसेवणे य उवदेसो । विग्गहादिपमाएसु य मा वट्टह एस उवदेसो ॥२१३७॥ णिद्दाइपमादाइसु सइ तु खलियस्स सारणा होति । णणु कहित ते पमादा मा सीदसु तेसु जाणतो ॥२१३८॥

नद्दिवसं बीए वा सीदंतो वुच्चए पुणो तइयं । अण्णं वेल ण सज्झं भिक्खण्णादीहिं संसत्तं ॥२१३९॥ फुडरुक्खे अचियत्तं गोणो तु दिओ व मा हु पेलेज्जा । सज्झं अतो ण भण्णति एसणचित्तं ततो सारे ॥२१४०॥

भण्णति दिण्णुवदेसो तुज्झं बितियं च सारितऽम्हेहिं । एगवराहे ते सढो बितिय पुण ते ण विसहामो ॥२१४१॥ ताहे पुणोऽवराहे कयंमि पच्छित्तं देंति मासलहुं । भण्णइ य सुणेहेत्थं दिट्ठंतं तेणएणं तु ॥२१४२॥ गोणादिहरणगहिओ मुक्को य पुणो सहोढ संगहितो । उल्लोल्लछगणहारी ण मुच्चती जायमाणो वि ॥२१४३॥ पुणरवि कतावराहे मासलहुं चेव देति से सोही । भण्णति घट्टिज्जंतं चुक्कत्थं दुदह तह तुमंपि ॥२१४४॥ पुणरवि अवरद्धंमी मासो च्चिय तेसि दिज्जते दंडो । पाणो सो संवत्तो अतिकंचियकुंकुमं ततियं ॥२१४५॥ तेण पर णिच्छुभणं कुलगणथेरादि तस्स कुव्वंति । अयमण्णो वी णीयमो भण्णति तू जस्सिमे दोसा ॥२१४६॥ अप्पछंदियलुद्धं गिलाणं दुपडिजग्गगं वामं सगव्वितं गच्छा संवासो वि ण कप्पति ॥२१४७॥ उम्मग्गदेसणाए संतस्स य छायणाए मग्गस्स । मग्गधर उवालंभे मासा० चत्तारि भारियया ॥२१४८॥ आयरियाणं छंदे ण वट्टती अप्पछंदिओ सो उ । आहारादुक्कोसं लद्धं अत्तदिह लुद्धो तु ॥२१४९॥ जो तु गिलाणो अपत्थं मग्गति सो होति दुपडिजग्गो तु । हायसु भणितो वच्चति वच्चति य हाति वामो सो ॥२१५०॥

जच्चादिमादिएहिं करेति गव्वं तु परिभवति अण्णं । णाणादीया मग्गो परुवणा अण्णहा तेसिं ॥२१५१॥ णाणादिसु सीदंतो ण सुद्धमग्गं तु जो परुवेइ । एसो मग्गच्छेदो वड्ढयती दीहसंसारं ॥२१५२॥ एतेसिं तु विवेगो मग्गधरा खलु कुलादिया थेरा । तेहिं उवलद्धाणं उवदिहताणं गुरू चतुरो (मासा) ॥२१५३॥ बालाणं वुड्ढाणं भिक्खुमादीण चेव सव्वेसिं । संखेवेण महत्थो उवदेसो कीरई इणमो ॥२१५४॥ कप्पे सुत्तत्थ

विसारएण पामावहारविजढेण । भत्तादिलंभऽलंभे सक्कारजढेण होयव्वं ॥ २१५५॥ कप्पोंति थेरकप्पे सुत्तत्थविसारएण साहूण । सव्वत्थेसू सबलं ण गूहियव्वं समत्थेण ॥ २१५६ ॥ आहारमादिएहिं ददहुं धीयारमादिपुज्जंते । साहू अपुज्जमाणे ण एव मणसा विचिंतेज्जा ॥ २१५७॥ पूइज्जंती अजथा वयं तु सव्वण्णु मग्ग मोदिण्णा । हा कह णु ण पुज्जामो ण करे मणदुक्कडं एवं ॥ २१५८ ॥ सक्कारपुरक्कारे परीसहे तू अहियासिओ एव । जूरंते णऽहियासिओ तम्हा सुमणेण होयव्व ॥ २१५९ ॥ वीसइविहकप्पो तू एसो खलु वण्णितो समासेण । बायालकप्पमहुणा गुरूवएसेण वोच्छामि ॥ २१६०॥

दव्वे भावे तदुभयकरणे वेरमणमेव साहारे । णिक्खेस अंतर णयंतरे य हित अदिहते चेव ॥ २१६१ ॥ ठाण जिण थेर पज्जुसणमेव सुत्ते चरित्तमज्झयणे । उद्देस वायण पडिच्छणा य परियट्टऽणुप्पेहा ॥ २१६२ ॥ जातमजाते विगणसचिण्णे संधाणमेव चयणे य । उववाय णिसीहि या ववहारे खेत्तकाले य ॥ २१६३ ॥ उवही संभोगे लिंगाकप्प पडिसेवणा य अणुवासे । अणुपालणा अणुन्ना ठवणाकप्पे य बोधव्वे ॥ २१६४ ॥ एतेसिं तु पदाणं पत्तेय परूवण पवक्खामि । तहियं तु दव्वकप्पो इणमो तु समासतो होति ॥ २१६५ ॥ पचण्ह असणादीण पणुवीसाति हि भवे विसोहीउ । अहवा वि चउद्दसिया एत्तो तिगवड्ढिया कोडी ॥ २१६६ ॥ असण पाणं वत्थं पात सेज्जा य पंच एतेसिं । सुद्धी पणवीसातिया उग्गम तह एसणाए य ॥ २१६७ । सुतणाणपमाणेण उ गहियमसुद्धे वि होइ सुद्धो उ । अहवा वि तु छद्दसया सोलस उप्पायणा दोसा ॥ २१६८ । एएसि सव्वेसि हणपयणाकिणादिणवहिं कोडीहिं । कतकारितणुमोदित एसा तिगवड्ढिता कोडी ॥ २१६९ ॥ दसणणाणचरित्ते तव पवयणसच्च समिति तिहिं गुत्तो । हतरागदोसणिम्ममसमदमणियमद्दितो णिच्चं ॥ २१७० ॥

तदुभयकप्पो अहुणा एत्ते च्चिय दव्वभावकप्पाउ । दो-

ण्णि वि मिलिया एते तदुभयकप्पो इमो मो य ॥२१७१॥ आहारे अट्ठविहे सेज्जोवहि पंचपचगविसोही । दंसणचरित्तगुत्तो तवस- मितिगुणेहि सोहेति ॥२१७२॥ असणादीतो चउहा उवकारि चउ- व्विहो य तस्सेव । एसदट्ठविहाहारो नल्लवगा तस्सिमा होंति ॥२१७३॥ असणं तु ओदणादी तदुवकारी उ सविकुसणादी । पाणं तु पाणमेव तु कप्पूरादी तु उवकारी ॥२१७४॥ खाइम फ- लाइयं तू सुत्ता(एदा)दी होंति तदुवकारी तु । साइम तंबोलादं चु- ण्णादी तदुवकारी तु ॥२१७५॥ एवं आहारादी उग्गमउप्पायणेस- णासुद्धं । उप्पाए दंसणादीहि जुत्तो अहवा तदट्ठाए ॥२१७६॥ विर ती य अविरती या विरयाविरती य तिविहकरणं तु । एक्केकं होति दुहा ओहे य अभिग्गहे चेव ॥२१७७॥ विरती करणं ओहे पंचेव महव्वता भवती तु । होति अभिग्गहकरणं पिंडविसुद्धादि ऽणेगविहं ॥२१७८॥ अहवा ओहे संजमो विभागतो होति सत्तर- सभेदो । अविरति असंजमोहे अट्ठारस अभिग्गहे इणमो ॥ २१७९॥ पाणतिवाते मोसे अदत्त मेहुण परिग्गहे चेव । कोह माण मायलोभे पेज्जे दोसे तहा कलहे ॥२१८०॥

अब्भक्खाणे पेसुण्ण अरतिरइ चेव मायमोसे य । मिच्छा- दंसणसल्ले अट्ठारस अभिग्गहे इम ॥२१८१॥ विरताविरतीए पुण ओहेणं अणुव्वता भवे पंच । उत्तरगुणा अभिग्गह हवंति सिक्खावता सत्त ॥२१८२॥ एत्थं पुण अहिगारो विरतीकरणेण होति दुविहेणं । जइ तेसु अतीयारो ण होति तह उ पयतियव्वं ॥ २१८३॥ उज्जामरक्खियाण महव्वताण कतो हवंते पीला । भण्णति आहारादीहि तिहिं पीडा होतऽसुद्धेहिं ॥२१८४॥ उज्जम उज्जोयो ख- लु एतेणं रक्खियाण तु वयाण । पीला उवघातो खलु भवति कहं पुच्छती सीसो ॥२१८५॥ भण्णति आहारोवहिसेज्जा एतेहि तिहिं असुद्धेहि । उग्गमदोसादीहि तु पीला संजायति वयाण ॥२१८६॥ तम्हा उ उग्गमादीहि विसुद्धाहारमादिया कज्जा । वेरमणकप्प एसो एत्तो साहारण वोच्छं ॥२१८७॥ सेज्जुवहिस्साय आहारमेव साहार तह य अणुकंपा । आदिपणगं तु तुल्लं भइयं अणुसासणाए तु ॥

२१८८॥ सेज्जुवहिज्झाय आहार पसिद्धा एते होंति चत्तारि । साहारणकप्पो पुण मूलगुणा उत्तरगुणा य ॥२१८९॥ साहारण त्ति किं पुण सेज्जादुप्पादगाण सव्वेसिं । सामन्नगुणा ते ऊ त-म्हा साहारणं जाण ॥२१९०॥

आदिपणगं तु तुल्लं ति जाण सेज्जाति जाव साहारं । छेयमहियाण दोण्ह वि एते खलु होंति तुल्ला तु ॥२१९१॥ अहवादिपणग मूलगुण पंचेते होंति दोण्ह तुल्ला तु । समणा-ण व समणीण व तम्हा साहारणं जाणे ॥२१९२॥ भइयमणु-सासणं ती अणुकंपणुसासणात्ति एगट्ठा । कोइ कदाइ अणि-उणो ण तरति अणुसासण काउं ॥२१९३॥ सुहुभारियत्तणेणं हो-ति विसुद्धो य अंतरप्पा से । तस्स वि होंति वताइं पंच वि साहा-रणाइं तु ॥२१९४॥ आणा तित्थगराणं सामण्णा संजताण स-व्वेसिं । सुहुमे वि तप्पमाए अणुसासणयं कुणाति जो तु ॥२१९५॥ तेण अणुकंपिता णिच्छएण जम्हाऽणुसासिहतो होंति । तसाऽणुसट्ठ-ऽणुकंपा एगट्ठा होंति णायव्वा ॥२१९६॥ साहारकप्प एसो अ-हुणा वोच्छामि णिव्विसणकप्पं । जह णिव्विसंति समणा सम्मं तु गुरूवएसेण ॥२१९७॥ णाणं च दंसणं वा तहा चरित्तं च स-मितिगुत्तीओ । एक्कासीतिपदेहि णिव्विस णिव्वेसणाकप्पो ॥२१९८॥ छव्विह कप्पादीया बायालंता उ पंचवी एते । मेलिणा उ भवंती एक्कासीतिं भवे भेदा ॥२१९९॥ णवरं छव्विहकप्पे वीसइकप्पे य णामठवणाओ । मोत्तुं सेसा सव्वे एक्कासीतिं तु मेलीणा ॥ २२०० ॥

एते सव्वे सम्मं णिव्विसमाणस्स णिव्विसणकप्पो । ए-तेसिं पुण कतरो महड्ढितो होति सव्वेसिं ॥२२०१॥ सव्वे वि हु च-रणविसोहिकारगा तह वि अत्थि हु विसेसो । सद्दहणाऽऽचरणाए भ-इतं पुण पालणाए तु ॥२२०२॥ सद्दहणाकप्पो या आयरणा चेव दो पहाणतरा । अहवा सद्दहणा च्चिय सद्दहितुं जो ण आयरति ॥ २२०३ ॥ भइयमणुपालण त्ति य सद्दहिऊणं पि ण तरती कोई । अणुपालेतुं अज्जा तम्हा खलु सो ण पव्वावे ॥ २२०४ ॥ णि-

ख्रिसणकप्पो एसो एत्तो वोच्छामि अंतराकप्पं । संखेव पिंडियत्थं गुरूवएसं जहा कमसो ॥२२०५॥ पंचट्ठाणासंखा बारसगं चेव तिण्णि वि तियाणं । अज्झत्थणाणकरणट्ठयाए सो अंतराकप्पो ॥२२०६॥ सामादि संजतादी पचइ चरणं तु तेसि एक्केक्कं । संजमठाणमसंखा एक्केक्के तत्थ ठाणंमि ॥२२०७॥ होंति अणंता चारित्तपज्जवा ताणऽसंखगुणियाणि । एक्कं संजमकंडग कंडगसंखा य छट्ठाणा ॥२२०८॥ छट्ठाणाऽसंखेज्जा संजमसेढी तु होति बोधव्वा । सामाइय-छेदसंजमठाणा गंतुं असंखेज्जा ॥२२०९॥ परिहारि-संजमठाणा ताहे तगंति ते वि तु असंखा । गंतूण होंति छिन्ना ताहे तत्तो पुणो परतो ॥२२१०॥

वड्ढंति जा असंखा सामाइ-छेदसंजमट्ठाणा । सामादि-छेदठाणा ताहे छिन्ना हवंती उ ॥२२११॥ तो सुहुमरागठाणा ते वि असंखेज्ज गंतु वोच्छिन्ना । तस्स अपच्छिमठाणं अणंतगुणवड्ढितं णियमा ॥२२१२॥ एक्कं परमविसुद्धं होति अहक्खायसंजमट्ठाणं । पचमयक्ख ति गतं बारसग बारपडिमाओ ॥२२१३॥ सुद्धपरिहारचतुरो अणुपरिहारी वि णवमकप्पहितो । एते तिण्णितिया खलु एतेसिं एक्कमेक्कस्स ॥२२१४॥ अंतरसंजमठाणा होंति असंखा तु तेसि सव्वेसिं । होंति दुविहा तु सोही करणे अज्झत्थतो चेव ॥२२१५॥ ता दोवी कायव्वा णाणट्ठाए सुतोवउत्तेणं । एसो अंतरकप्पो णयकप्पमियाणि वोच्छामि ॥२२१६॥ सव्वेसिं पि णयाणं आदेसणयंतरं पि सट्ठाणे । एस णयंतरकप्पो पुव्वगतविसालमादीसु ॥२२१७॥ सव्वे वि णेगमादी आदिस्सति जो णयो तु स[ा]देसो । णयतो अण्णो वि णओ णयंतरं होति णातव्वं ॥२२१८॥ सट्ठाणे सट्ठाणे सव्वे बलिया हवंति संविसते । एसो णयकप्पो तू पुव्वगतंमी समक्खाओ ॥२२१९॥ उप्पाद पुव्व विसाल त आदि काउं सव्वपुव्वेसु । भणितो उ णयविभागो एत्थ चोदेति अह सीसो ॥२२२०॥

कम्हा कालियसुत्ते ण णया तु समोयरंति हु कह वा ।

णयविगल होंति साहुण मोक्खस्स तु भण्णति सुणाहि ॥ २२२१ ॥ णयवज्जिओ वि हु अलं दुक्खक्खयकारओ जतिजणस्स । चरणकरणाणुओगो तेण उ पठमं कतं दारं ॥ २२२२॥ आयारपकप्पधरो कप्पव्ववहारधारतो अज्जो । णयसुत्तवज्जिओ वि हु गणपरियट्टी अणुण्णाओ ॥ २२२३॥ पच्छित्तकरण अणुपालणा य भणिता उ कप्पववहारे । एतेण अत्थधारी गणधारी जो चरणधारी ॥ २२२४॥ अज्जो त्ती आमंतण णिद्देसे वा णयस्स सुत्ताइं । जाति तु दिट्ठवाते पच्छित्तं दिज्जते तहु उ ॥ २२२५॥ तेहिं विणा वि जाणति आयारपकप्पधारओ जम्हा । तम्हा तु अणुण्णातो गणपरियट्टी तु सो णियमा ॥ २२२६॥ करणाणुपालयाणं तु पज्जवकसिणं समासओ णायं । करणाणुपालणदुतं पज्जवकसिणं भवे तिविहं ॥ २२२७॥ दुतिपण छक्कणयंतरेसु सोलस हवंति ठाणाइं । करणट्ठाणं पसत्था करणट्ठाणा उ अपसत्था ॥ २२२८॥ एयाइं ठाणाइं दोहिं वि गाहाहिं जाइं भणिताइं । तेसि परूवणमिणमो समासतो होति बोधव्वं ॥ २२२९॥ करणं तु किया होति पडिलेहणमादि समायारी तु । तं पालिज्जति णाणेण तं च दुविहं मुणेयव्वं ॥ २२३० ॥

पज्जवकसिणसमासो पज्जवकसिणं तु चोद्दस तु पुव्वा । सामाइयं पकप्पो होति समासो मुणेयव्वो ॥ २२३१॥ पज्जवकसिणं तिविहं सुत्ते अत्थे व तदुभए चेव । एमेव समासो वि हु तेहिं पालिज्जए चरणं ॥ २२३२॥ तस्स णएहिं मग्गण ते उ समासेण होंति दुविहा तु । दव्वट्ठिपज्जवट्ठिय णया उ अविसेसियविसिट्ठा ॥ २२३३॥ वण्णादि समुदियं तू दव्वट्ठी दव्वमिच्छते णियमा । तं चेव पज्जवणओ दव्वाइविसेसियं इच्छे ॥ २२३४॥ अहवा वि तिण्णि वि णया दव्वट्ठित पज्जवट्ठित गुणट्ठी । पज्जायविसेस च्चिय सुहुमतरागा गुणा होंति ॥ २२३५॥ एगगुणकालगादिसु परिसंखगुणट्ठितो तु णायव्वो । दव्वाओ गुणाणन्ने गुणा विसेसत्ति एगट्ठा ॥ २२३६॥ आदिल्ला तिण्णि णया एक्को बितिओ य होति उज्जुसुओ । सद्दादितिण्णि वेक्को तिन्नि

णया होंति एवं वा ॥२२३७॥ अहवा वि णिगमसंगहववहारुज्जुसुए होंति चतुरेते सद्दणय तिण्णि एक्को पंच णया होंति एवं तु ॥२२३८॥ अहवा वि होज्ज छक्कं णेगमो संगाहिगो असंगाही । संगाहिगो संगहं तू ववहारपविट्ठ असंगाही ॥२२३९॥ तम्हा तु संगहणओ ववहारो चेव होंति उज्जुसुत्तो । सद्दो य समभिरूढो एवंभूतो य छक्क णया ॥२२४०॥

एते पुण सव्वे वी दुग तिग पण छक्क मेलिया संता । सोलस नयंतराइं समासओ होंति एयाइं ॥२२४१॥ जदि कुणति दवियकप्पं एतेहिं णयतरेहिं तु विसुद्धं । करणट्ठाणपसत्था ते खलु होंति मुणेयव्वा ॥२२४२॥ अकरेंते अपसत्था कप्पे स णयंतरे समक्खाओ । कप्पे ठितमट्ठिए पुण वोच्छामऽहुणा समासेणं ॥२२४३॥ संघयणवज्जिओ विहु दुक्खक्खयकारओ पणगजाओ । संघयणसमग्गस्स वि अजातचतुरो अमोक्खाए ॥२२४४॥ पंच उ महव्वताइं पणगं तेसिं तु जो करे पयत्त । जाओ जो णिप्फण्णो अजातो णियमा अणिप्फण्णो ॥२२४५॥ ठियमट्ठिए व कप्पे संघयणेणावि जो विहीणो तु । सो कुणति दुक्खमोक्खं जो पुण ण करे पयत्तं तु ॥२२४६॥ पंचसु महव्वतेसुं संघतणेणं तु जदि वि संपण्णो । सो चतुगतिसंसारे भमती ण य पावती मोक्खं ॥२२४७॥ अहुणा उ ठाणकप्पो उद्दट्ठाणादिओ मुणेयव्वो । ठियकप्प संजतस्स विऽणुण्णाओ अट्ठितस्सा वि ॥२२४८॥ एवं जिणकप्पो विहु ठियकप्पे अट्ठिए यऽणुण्णाओ । एमेव थेरकप्पो ठितमट्ठिते होतिऽणुणातो ॥२२४९॥ पज्जूसवणाकप्पो सुत्ते कप्पो तहा चरित्ते य । अज्झयणुद्देसंमि य कप्पो तह वायणाए य ॥२२५०॥

कप्पो पडिच्छणाए परियट्टऽणुपेहणाए कप्पो य । ठितमट्ठिएसु दोसु वि एते सव्वे भवे कप्पा ॥२२५१॥ जातमजाओ अहुणा दोण्णि वि एते समं तु वच्चंति । जातं णिप्फण्णं ति य एगट्ठं होति णायव्वं ॥२२५२॥ जातमजातं करणं जाते करणे गती तिहा छिण्णा । अज्जाते करणंमि उ अण्णतरीतं गती जाइ ॥२२५३॥ जायं खलु णिप्फण्णं सुत्तेणऽत्थेण तदुभएणं च । चर-

णे य संजुत्त वतिरित्तं होति अज्जातं ॥२२५४॥ जातकरणेण छि
ण्णा णरगतिरिक्ख गती उ दोण्णि भवे । अहवा तिरा उ छिण्णा ण-
रगतिरिक्खामणुस्सगती ॥२२५५॥ देवेसु वि तिण्णि गती छिण्णा वे-
माणिएसु उववत्ती । चउसु वि गतीसु गरहोति अत्तजातमि अजातकर
णेण ॥२२५६॥ एसो जातमजाते कप्पोऽभिहितो इदाणि वक्खा-
मि । आइण्णमणाइण्णो कप्प तु गुरूवदेसेण ॥२२५७॥ आहा-
रवाउवते [illegible] [illegible] खेत्तकालवजगाते । आइण्णे आइण्णं,
[illegible] [illegible] ॥२२५८॥ आहारचतुक्क खलु अणा-
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] । कत्थ आयरणा तू तस्स तु जं जत्थ
[illegible] ॥२२५९॥ सिंधुते सिंधूतेसद् दाति पुण उत्तरावहा
[illegible] । [illegible] दक्खिणेसु छुमादी खेत्तमाइण्ण ॥२२६०॥
कारे दुब्भिक्खादिसु पत्तवमादी तु सव्वमाइण्ण । उ-
वगरणे आइण्णं [illegible] अतो समासेण ॥२२६१॥ सिंधू आउ-
त्तियाइ काल कप्पा सुरदहोवसरांसि । दुगुल्लादि पुंडवद्धणि मरह-
ट्टेसु [illegible] जलपूवा ॥२२६२॥ एव जत्थाइण्णं तहियं तू कप्पती
तु आयरितु । इत्तरस्स कारणासी फासणागहणं च परिभोगो ॥
२२६३॥ आइण्णे चतुवग्गो ण य पीताकारओ पवयणस्स । ण य
मइलणा पवयणे नाइण्ण आयरे कप्पं ॥२२६४॥ आहार उवहि-
सेज्जा सेहा चतुवग्गो होति णायव्वो । पवयणपीलुवघातो पि-
सियाइ मज्जपाइ त्ति ॥२२६५॥ चोदेइ का मइलणा ? भण्णति प-
डिसेहियाणि जं सेवे । सा होति मइलणा तू जो पुण सुपरिदिट्ठओ
चरणे ॥२२६६॥ तण्णातु सत्ताहोति वण्णेति गुणेहि एस जुत्तो त्ति
। सुदढुकरे अप्पहित जो पुण करणे अजुत्तो उ ॥२२६७॥ त द-
ट्ठु संदेहो उप्पज्जति किण्ण एस सच्छंदो ? । आओ ण उवएसो
एरिसओ देसिओ समए ॥२२६८॥ आह जिणकप्पियाण वि आ-
इण्ण किंचि अत्थि अह णत्थि ? । भण्णति ण अत्थी किं पुण आ-
यरे जिणकप्पिताइण्ण ॥२२६९॥ आहार उवहिदेहे निरवेक्खो णवरि
णिज्जरापेही । सघयणवीरियजुत्तो आइण्णं आयरति कप्प ॥२२७०॥
दंसण णाण चरित्ते तवे य तह भावणासु समितीसु ।

छण्ह पि तिप्पगारं सद्दहे संधाण साहणता ॥२२७१॥ सद्दह-ति सम्मदंसण आयरति परूवणं च कुणमाणो । सधाणकप्प एसो एवं सेसाण वी णेयं ॥२२७२॥ सधाणकप्प एसो भणितो तु समासतो जिणक्खातो । संखेवसमुद्दिट्ठं एत्तो वोच्छं चरणकप्पं ॥२२७३॥ आहारउवहिसेज्जा तिकरणसोहीए जाहिं परितत्तो । पग्गहितविहाराओ तो चवती विसयपडिबद्धो ॥२२७४॥ कोति विसेसं बुज्झति पसत्थठाणा अहं परिब्भट्ठो । अंधत्तेण कोई ण बुज्झए मदधम्मत्ता ॥२२७५॥ दव्वे भावे अंधो दव्वे चक्खूहिं भावे ओसण्णो । संविग्गत्तं ण रोयति णितियाण पहाणमिच्छंतो ॥२२७६॥ जुत्तो जुत्तविहारी तं चेव पसंसते सुलभबोही । ओसण्णविहारं पुण पसंसए दीहसंसारी ॥२२७७॥ आहारोवहिसेज्जा णीयावासे वि तिकरणऽविसोही । तह भावंधा केई इमं पहाणं ति घोसंति ॥२२७८॥ णीयादि विहारंमि वि जदि कुणती णिग्गहं कसायाणं । तस्स हु भवते सिद्धी अवितहसुत्ते भणियमेयं ॥२२७९॥ बहुमोहे वि हु पुव्विं विहरित्ता संवुडे कुणति कालं । सो सिज्झति अवि य इमे पुरिसज्जाता भवे चतुरो ॥२२८०॥

णाणेणं संपन्नो णो तु चरित्तेण एत्थ चतुभंगो । तेणेसेव पहाणो एवं भासंति णिद्धम्मा ॥२२८१॥ तम्हा तु ण एताइ कुज्जा आलंबणाइं मतिमं तु । कुज्जा हि पसत्थाइं इमाइ आलंबणाइ तु ॥२२८२॥ तित्थगराणं चरितं चरितं कसिणंगपारगाण च । जो जाणति सद्दहती ओसण्णं सो ण रोएति ॥२२८३॥ धुवसिज्झितव्वगंमि वि तित्थगरो जदि तवंमि उज्जमति । किं पुण तव-उज्जोगो अवसेसेहिं ण कायव्वो ॥२२८४॥ चोद्दसपुव्वी कसिणंगपारगा तेसिं जो उ उज्जोगो । तं जो जाणति सो खलु संविग्गविहारसद्दहतो ॥२२८५॥ एमादी आलंबण को संविग्गं न रोएति । को पुण ओसण्णत्तं रोएती? भण्णती इमो तु ॥२२८६॥ सुत्तत्थतदुभए अकडजोगि ओसण्णयरोयओ होज्जा । अहवा दुग्गहियत्थो अहवा वी मंदधम्मत्ता ॥२२८७॥ अण्णाणि

यऽकडजोगी दुग्गाहियस्थो तु जो ण अववादो । गाहिओ ण वि उ-
स्सग्गो गाहिते वा मंदधम्मो उ ॥२२८८॥ सो रोए ओसण्णो इ-
त्ति एसो वण्णिओ चरणकप्पो । उववादकप्पमहुणा वोच्छामि ज-
हक्कमेणं तु ॥२२८९॥ पंचहिं ठाणेहिं वियट्टिऊण संविग्गस-
इढ्याजुत्तो । अब्भुज्जत विहारं उवेइ उववायकप्पो सो ॥२२९०॥
उववयणं उववाओ पासत्थादी य पंच ठाणा तु । तेसु
विविहं तु वट्टित्तो वियट्टिओ होति णायव्वो ॥२२९१॥ संवेग-
समावण्णो पच्छा उ उवेति उज्जयविहारं । एस उववायकप्पो णि-
सीहकप्पं अतो वोच्छं ॥२२९२॥ चतुहा णिसीहकप्पो सद्दहणऽणु-
पालणा गहणसोही । सद्दहणा वि य दुविहा ओहेणिसीहे विभा-
गे य ॥२२९३॥ ओहे त्ति हत्थकम्मं कुणमाणे रागमूलिया दोसा ।
गेण्हणमादि विभागे अहवोघो होति उस्सग्गो ॥२२९४॥ अववादो
तु विभागो सव्वेऽपेतं तु सद्दहंतस्स । सद्दहणाए कप्पो होइ अ-
कप्पो पुण इमो हु ॥२२९५॥ मिच्छत्तस्सुदएणं ओसण्णविहारता-
ए सद्दहणा । गणहरमेरं ओहं ण सद्दहती जो णिसीहं तु ॥२२९६
॥ ओसण्णाण विहारं सद्दहती सुविहिताण गणमेरं । ण तु सद्द-
हती जो खलु एस अकप्पो तु सद्दहणे ॥२२९७॥ जाणि भणिताणि
सुत्ते पुव्वावरबाहिताणि वीसाए । ताणि अणुपालयंतो सव्वाणि णि-
सीहकप्पो तु ॥२२९८॥ सुत्तत्थतदुभयाणं गहणं बहुमाणविणय-
मच्छेरं । चोद्दसपुव्विणिबद्धे पकप्पगाहियंमि गणधारी ॥२२९९॥
तिविहो य पकप्पधरो सुत्ते अत्थे य तदुभए चेव । सुत्तधरमोत्तु
तइओ बितिओ वा होति गणधारी ॥२३००॥
तिगपणग पणग छक्कं अट्ठग णवगं च जस्स उवत्त-
द्ध । ठवणाकरणं दाणं च सो हु सोही वियाणाहि ॥२३०१॥ णा-
णादीणं तियगं पणगं ववहारो होति पंचविहो । वितियपणगं पं-
च वता छक्कं पुण होति छक्काया ॥२३०२॥ आलोयणारिहगु-
णे अट्ठ तु अहवा विसोहि अट्ठविहा । आलोयणादीयं मूलं ते
जाणती जो तु ॥२३०३॥ आलोयणमादीयं अणवट्ठं तं तु णवविहं
होति । पारंचित तमहवा दसविह होती चसद्देणं ॥२३०४॥ ठवणा

सेवण करण सफला मासा करेन्तु जो जाणे । सो होति दाण अ-रिहो नव्विवरीतो अणरिहो तु ॥२२०५॥ किह पुण त दायव्व पायच्छित्तं तु पुच्छए सीसो । भण्णति इमेण विहिणा दायव्वं तं जहाकमसो ॥२२०६॥ ओहेण तु सद्दहाण ,सद्दहाणविभाग-ता पविस्थारो । पच्छित्त पुरिसहेतू किंति ण सत्ती चरणमा-दी ॥२२०७॥ ओहे सद्दहाणं ति य जह चउगुरु होति रायपिं-डंमि । सद्दहाणविभागे पुण ईसरमाई मुणेयव्वो ॥२२०८॥ जह वा करकम्मामि य ओहेणं होति मासगुरुय तु । होति विभाग-पसगो दिट्ठादीओ मुणेयव्वो ॥२२०९॥ पुरिसज्जात णातु च दिज्जए जं च जारिसं वत्थु । गुरुमादिबलिय दुब्बलहुदड्ढगिला-णादि जं जोग्गं ॥२२१०॥

हेउ कारण णिक्कारणे य जयणादिसेवियं जह उ । चोदे-ति किं णिमित्त पच्छित्तं दिज्जते सुणसु ॥२२११॥ पायच्छित्ते अ-संतंमि चरित्तं तु न चिट्ठए । चरित्तमि असंतंमि तित्थे णो सच-रित्तया ॥२२१२॥ तित्थंमि असंतंमी णेव्वाणं तु ण गच्छती । णे-व्वाणंमि असंतंमि सव्वा दिक्खा निरत्थिया ॥२२१३॥ एवं णि-सीहकप्पो चउहा तू वण्णितो समासेणं । ववहारकप्पमहुणा गुरुव-एसेण वोच्छामि ॥२२१४॥ ववहारे कोति भिक्खू सच्चित्तणिवायणि-द्दमहुरेहि । ववहरती ववहार वितह सो संघमज्झंमि ॥२२१५॥ को-इ बहुस्सुय भिक्खू अपुव्वणगरंमि कोंचि ववहारं । णाएणं छिंदि-त्ता वत्थव्वेहि पमाणकतो ॥२२१६॥ अह पच्छा सच्चित्तं खुड्डाई तस्स केणई दिण्णं । वसही पाउरणं वा नवऽह्रहु पक्खं ववहरेउ ॥२२१७॥ घयतिल्लादी पिंड खंडगुलादीहि वा वि संगहितो । स-व्वाहिं एहिं ताहे ववहरए पक्खवातेण ॥२२१८॥ दुट्ठववहारिए-णं को तु णिसेहेज्ज तो वदे संघो । एतदट्ठा संघमेलो कीरति इणमो य सयत्तो ॥२२१९॥ अण्णो तहिं तु गीओ संघसमत्थि ति-णिण वाराओ । उच्चारे सिद्धपुत्तो तत्थ य मेरा इमा होति ॥२२२०॥

घुट्ठंमि संघसद्दे धूलीजंघो वि जो ण एज्जाहि । कुलगा-णसंघसमाए लग्गति गुरुए व चउमासे ॥२२२१॥ जं काहिंति अ-

कज्जं न पावति मति बले अगच्छंतो । अण्णाइया व ओहावणादेसे
मि च न कुज्जा ॥२३२२॥ सोऊण संघसद्द धूलिजंघे वि होति
आगमणं । धूलीजंघणिमित्त ववहारो उवट्ठितो होति ॥२३२३॥
सोऊण संघसद्द धूलीजंघो उ आगतो संतो । वितह ववहरमाणे सा
हु समएण वारेइ ॥२३२४॥ णिद्ध महुरं णिवात कितिकम्म विजा-
णएसु जंपंतो । सच्चित्ते खेत्तमीसे अत्थधर णिहरेउ दिसहरणं ॥
२३२५॥ भिक्खू य मुसावादी ववहारे तइयगंमि उद्देसे । सुत्तं उ-
च्चारेती अह बहुपक्खा इमं होति ॥२३२६॥ रागेण व दोसेण
व पक्खग्गाहणंमि एक्कमिक्कस्स । कज्जंमि कीरमाणे किं अ-
च्छति संघमज्झत्थो ॥२३२७॥ रागेण व दोसेण व पक्खग्गाहणेण
एक्कमेक्कस्स । कज्जंमि कीरमाणे अण्णो वि भणेतु ता कोइ ॥
२३२८॥ कुलगणसंघट्ठवणा इह ण याणामि देसिओ मि अहं ।
अण्णेण वि ता केणति कप्पति इह जंपितु किंचि ॥२३२९॥ संघेण अ-
णुण्णाए अह जपति सो तहि गुणसमिद्धो । ववहारणीतिकुसलो अ-
णुमाणंतो तयं संघं ॥२३३०॥

सघो महाणुभावो अहं च वेदेसिओ इहं भंते । सच्चसमिति
ण जाणे न मे सच्च समासेमि ॥२३३१॥ देसे देसे ठवणा अण्णा
अण्णा य होति समितीय । गीतत्थेहऽभिण्णातं वेदेसिओऽहं ण जा-
णामि ॥२३३२॥ अणुमाणेत्ता एवं ताहे अणुण्णाए जंपए इणमो ।
परिसा ववहारीया य इमे गुणे तू समासेण ॥२३३३॥ परिसा व-
वहारी या मज्झत्था रागदोसणिहुया य । जदि होंति दो वि पक्खा व-
वहरित णो सुह होति ॥२३३४॥ तुब्भे वऽवधम्मेण जदि उ ववहारि-
णो तु जपेज्जा । पूणा तुम्हे मण्णह मज्झं सव्विक्कवयणं ति ॥२३३५
॥ सेसा तु मुसावादी सच्चपरिब्भट्ठगा तु कि सव्वे । भण्णति सु-
णेह एत्थ भूतत्थमिणं समासेणं ॥२३३६॥ ओसण्णचरणकरणे
सच्चव्ववहारता दुसद्दहिया । चरणकरणं जहंतो सच्चव्ववहार-
न पि जहे ॥२३३७॥ जहिया अणेण चत्त अप्पणयं णाणदंसणचरि-
त्तं । तइया तस्स परेसु अणुकंपा णत्थि जीवेसु ॥२३३८॥ भवसयस-
हस्सदुल्लहं जिणवयणं भावओ जहंतस्स । जस्स ण जायं दुक्खं न

तस्स दुक्खं परे दुहिए ॥२२३९॥ आयारे वट्टंतो आयरपक्खवणो असंकियओ। आयारपरिब्भट्ठो सुद्धचरणदेसणे भइओ ॥२२४०॥

तित्थगरे भगवंते जगजीवबियाणए तिलोगगुरू। जो न करेइ पमाणं न सो पमाणं सुतधराणं ॥२२४१॥ तित्थगरे भगवंते जगजीवबियाणए तिलोगगुरू। जो उ करेति पमाणं सो उ पमाणं सुयधराणं ॥२२४२॥ संघो गुणसंघातो संघो य विमोयओ य कम्माणं। रागद्दोसविमुक्को होति समो सव्वसाहूणं ॥२२४३॥ परिणामियबुद्धीए उववेओ होति समणसंघो तु। कज्जे णिच्छितकारी सुपरिच्छितकारओ संघो ॥२२४४॥ एक्कसि दुवे व तिण्णि व पेसविए ण एइ परिभवेणं तु। आणातिक्कमणिज्जूहणा तु आउट्टववहारो ॥२२४५॥ आसासो वीसासो सीतघरसमो य होति मा भाती। अम्मापीतिसमाणो संघो सरणं तु सव्वेसिं ॥२२४६॥ सीसो पडिच्छओ वा आयरिओ वा ण सोग्गतिं णेति। जे सच्चकरणजोगा ते संसारा विमोएंति ॥२२४७॥ सीसो पडिच्छओ वा आयरिओ वावि ते इहं लोगं। जे सच्चकरणजोगा ते संसारा विमोएंति ॥२२४८॥ सीसो पडिच्छओ वा कुलगणसंघा ण सोग्गतिं णेति। जे सच्चकरणजोगा ते संसारा विमोएंति ॥२२४९॥ सीसो पडिच्छओ वा कुलगणसंघो व एति इहलोए। जे सच्चकरणजोगा ते संसारा विमोएंति ॥२२५०॥

सीसे कुलिच्चए गणिच्चए व संघिच्चए च समदरिसी। ववहारसंथवेसु य सो सीतघरोवमो संघो ॥२२५१॥ गिहिसंघातं जहितुं संजमसंघातत समुवगम्स। णाणचरणसंघातं संघाएंतो हवति संघो ॥२२५२॥ णाणचरणसंघातं रागद्दोसेहिं जो वि संघाते। सो संघाए अबुहो गिहिसंघातम्मि अप्पाणं ॥२२५३॥ णाणचरणसंघातं रागद्दोसेहिं जो वि संघाए। सो भमिही संसारं चतुरंतं तं अणवयग्गं ॥२२५४॥ दुक्खेण लभति बोहिं बुद्धो वि य ण लभते चरित्तं तु। उम्मग्गदेसणाए तित्थगरासायणाए य ॥२२५५॥ उम्मग्गदेसणाए संतस्स य छायणाए मग्गस्स। बंधंति कम्मरयमलं जरमरणमणंतगं घोरं ॥२२५६॥ पंचविहं उवसंपद णा

ऊणं खेत्तकालपव्वज्ज । तो संघमज्झयारे ववहरियव्वं अणिस्सा-णं ॥२२५७॥ णिदरिसणं तत्थ इमे नगरा णगरी य सोलसाय-रिया । अण्णायणायकारी वत्थऽव्ववहारी अट्ठ इमे ॥२२५८॥ मा किन्ते कंकडुयं कुणिम पक्कुत्तरं च नच्चाइं । बहिरं च गुंठ-समण अंबिलसमणं च निद्धम्मं ॥२२५९॥ कंकडुओ विव मासो सिद्धिं ण उवेति तस्सं ववहारो । कुणिमणिहो व ण सुज्झति दुच्छेज्जो एव बितियस्स ॥२२६०॥

पक्कुल्लाव भयातो कज्जंपि ण सेसत उदीरेति । पादेणं आउत्तिय उत्तर सोवाहणेण तु ॥२२६१॥ सेसथयते कज्ज नच्चादी णीरस विवऽसणेत्ति । कहिते कज्जो संते बहिरो व भणाति ण सु-त मे ॥२२६२॥ मरहट्टहलाडपुच्छा केरिसया लाड गुंठ । साहिस्सं । पावारभंडिधुभणं दसियागणण पुणो दाणं ॥२२६३॥ गुंठादि ए-वमादीहिं हरति मोहेत्तु ते तु ववहार । अंबफरुसेहिं अप्पो ण णेति सिद्धिं च ववहारो ॥२२६४॥ एते अकज्जकारी नगराए आ-सि तंमि उ जुगंमि । जेहि कया ववहारा खोडिज्जंतऽण्णरज्जेसु ॥ ॥२२६५॥ इहलोगंमि अकित्ती परलोगे दुग्गती धुवा तेसिं अण-णाए जिणिंदाणं जे ववहार य ववहरति ॥२२६६॥ बत्तीस तु स-हस्सा गच्छो उक्कोसओ य उसभंमि । बहुगाच्छबंगाहकरा इत्ति-यमित्ताण जत्थ संथरणं ॥२२६७॥ कित्तेहु पूसमित्तं धीर सिवको-ट्ठहीति य भज्जास । मरहुण्णागं धम्मण्णागं खंदिलगोविंददत्तं च ॥ २२६८॥ एते उ कज्जकारी नगराए आसि तंमि उ जुगंमि । जेहिं कता ववहारा अक्खोभा अण्णरज्जेसु ॥२२६९॥ इहलोगंमि य कित्ती परलोए सुगती धुवा तेसिं । आणाए जिणिंदाणं जे व-वहार ववहरंति ॥२२७०॥

तहिय पुण केरिसएण तोयव्व तु होति समणेण । भण्णाति सुणसू इणमो जारिसएण तु श्रोतव्व ॥२२७१॥ पारय-णो सम्मत्ते थिरपरिवाडी पुणो वि संविग्गो । जो निग्गतो विदिण्णो गुरूहि सो होति ववहारी ॥२२७२॥ मूलपारायण पढम बितियं बहुभेतिमं । ततियं च णिरवसेसं जदि सुज्झति गाहगो ॥२२७३॥

सुत्तत्थो खलु पढमो बितिओ णिज्जुत्तिमीसिओ भणिओ । त.ओ
य णिरवसेसो एस विही होति अणुओगो ॥२३७४॥ पडिणीय मं-
दधम्मो जो णिग्गओ अप्पणो सकम्मेहिं । ण हु होति सो पमाणं
असमत्तो देसणिग्गमणे ॥२३७५॥ आयरियादेसाऽवारिएण सत्थे
गुणगुणितसारिएण । तो संघमज्झयारे ववहरियव्वं भणिस्साए
॥२३७६॥ आयरिय अणादेसा वारिएण सच्छंदबुद्धिरइएणं ।
सचित्तखित्तमीसे जो ववहरती ण सो धन्नो ॥२३७७॥ सो अ-
भिमुहेति कुद्धो ससारकडिल्लगंमि अप्पाणं । उम्मग्गदेसणाए
तित्थगरासायणाए य ॥२३७८॥ उम्मग्गदेसणाए संतस्स छाय-
णाए मग्गस्स । उम्मग्गदेसगस्सा भासा चत्तारि भारियया ॥२३७९
॥ परिवार वुड्ढधम्मकहु वादि खमए तहेव गेमित्ती । विज्जा
राइणिया इड्ढिगारवो अट्ठहा होति ॥२३८०॥

एमादिगारवेहिं अक्कोविया जे तु तत्थ भासेज्जा । ते व-
त्तव्वा इणमो ण तुज्झभागो इहं वोत्तुं ॥२३८१॥ बहुपरिवारो भ-
ण्णइ जयपरिवारेण होज्ज कज्जं तु । तद परिवारं देज्जसु वु-
ड्ढो पुण भण्णई इणमो ॥२३८२॥ लोगेण जत्थ समयं ववहार-
गयं तु तत्थ होज्जाहि । तत्थ तुमं जंपेज्जसु धम्मकही भणति
इमं तु ॥२३८३॥ जहियं धम्मकहाए कज्जं तहियं तुम भणेज्जा-
सि । वादी जत्थ तु वादिप्पओयणं तत्थ भासेज्जा ॥२३८४॥ ख-
मगो भण्णति इणमो देवयकज्जं जहिं भवेज्जाहि । असिवादिका-
रणेहिं तत्थ तुम तं करेज्जासि ॥२३८५॥ विज्जासिद्धो भण्णति
विज्जाए जत्थ संघकज्जंमि । कज्जं होज्ज करेज्जसु राइणिओ
भण्णति इमं तु ॥२३८६॥ वेले कितिकम्मस्स उ अणुवट्टंताण
वंदणं अम्हं । कुज्जाहि तुमं गंतुं इह पुण गीयस्स विसओ तु
॥२३८७॥ ण हु गारवेण सक्का ववहरितुं संघमज्झयारंमि । णा-
सेति अगीयत्थो अप्पाणं चेव गच्छं च ॥२३८८॥ णासेइ अ-
गीयत्थो चतुरंगं सव्वलोगसारंगं । णट्ठंमि उ चतुरंगे ण हु
सुलभं होति चतुरंगं ॥२३८९॥ थिरपरिवाडीहिं बहुस्सुएहिं सं-
विग्गणिस्सिय करेहिं । कज्जंमि भासियव्वं अणुओगो गंधहत्थीहिं

॥२३९०॥ माटी य मुसावादी बितियं ततियं वयं च लोवेति । मायी च पावजीवी असुतीलित्ते कणगदंडे ॥२३९१॥ आभवते पच्छित्ते ववहारो समासतो भवे दुविहो । दोसु य पणगं पणगं आभव्वंते अहीकारो ॥२३९२॥ सच्चितो अच्चित्तो य मीसओ खेत्तकालणिप्फण्णो । पंचविहो ववहारो आभव्वंतो तु णायव्वो ॥२३९३॥ सेहंमि तु सच्चित्तो अच्चित्तो हवति वत्थमादी उ । मीसो सभंडगाणं खेत्तंमि तु गाममादीहिं ॥२३९४॥ णगर दसखित्ते पुण वसहीए तत्थ मग्गणा होंति । काले उडुवासासु य आभवणा होंति णायव्वा ॥२३९५॥ अहुणाऽऽभवंतमण्णो उवसंपयखेत्तकालपव्वज्जा । णाऊण संघमज्झे ववहरियव्वं अणिस्साणं ॥२३९६॥ सुत सुह दुक्खे खेत्ते मग्गे विणए य पचहा होंति । सव्वावि य एयाओ सुयणाणमणुप्पवत्तीओ ॥२३९७॥ जत्थ तु सुत्तोवसंपद तत्थ तु सव्वा हवंति एयाओ । अहवा सुत्तोवदिट्ठा ण तु सेच्छाए हवंतेधा ॥२३९८॥ गुरुसीसपडिच्छाणं तिण्ह वि को कस्स किंचुवकरेति । वेयावच्च गमागम काले चिंतादि दव्वे य ॥२३९९॥ सीसो आयरियस्स तु वेयावच्चं तु कुणति जा जीयं । जहिं गच्छति तहिं वच्चति पेसेइ व जत्थ तहिं जाति

॥ २४००॥ ०००॥०•०॥ ००००॥

कज्ज समाणइत्ता एती तहि व सव्वमप्पेति । कायवुवग्गहो तु णाणादीएहिं गुरुणावि ॥२४०१॥ दव्वे सच्चित्तादी लाभो सीसस्स जो तहिं होति । सो वि य जावज्जीवं सव्वो गुरुणो तु आभवति ॥२४०२॥ कुणती पाडिच्छो वि तु वेयावच्चं तु असणमादीहिं । वच्चइ य पमाणेणं कालेणं रोयती जाव ॥२४०३॥ गेण्हइ वा जाव सुतं ता कुणती सव्वमेव पाडिच्छो । एत्तो दव्वे वोच्छं जं आभवती तु पाडिच्छो ॥२४०४॥ जं होति णालबद्धं अभिसंधारेंतगं तग एति । संदेसदिण्णगं वा णामे चिंधे य काले य ॥२४०५॥ वल्लीऽणंतर संतर अणंतरा छज्जणा इमे होंति । माया पिया य भाया भगिणी पुत्तो य धूया य ॥२४०६॥ मालुं माया य पिता भाता भगिणी य एव पितुणो वि । भाउं

भगिणीणाऽवच्चा धूता पुत्ताण वि तहेव परंपरवल्लि एसा ॥२४०७॥ जदि एतमिधारेंती पडिच्छगं ते पडिच्छगस्सेव । अह णो अभिधारेंती सुतगुरुणो तो उ आभव्वा ॥२४०८॥ संगारो पुव्वकओ पच्छा पाडिच्छओ तु सो जाओ । तेण णिवेदेयव्वं उवदिट्ठया पुव्वसेहा मे ॥२४०९॥ एवतिएहिं दिणेहिं तुज्झ सगासं अवस्स एहामो । संगारो एव कतो चिंधाणि य तेसिं चिंधेइ ॥२४१०॥

कालेण य चिंधेहिं य अविसंवादीहिं तस्स गुरुणिहरा । कालंमि विसंवादिए पुच्छिज्जति किं ण आओ सि ॥२४११॥ संगारियदिवसेहिं जदि गेलण्णादि दीवयति तो तु । तस्सेव अह तु भावो विपरिणतो पच्छ पुण जातो ॥२४१२॥ तो होति गुरुस्सेव तु एवं सुतसंपदाए भणितं तु । सुहदुक्खुवसंपण्णे एत्तो लाभं पवक्खामि ॥२४१३॥ वट्टसु मम सुहदुक्खे अहमवि तुज्झं तु एवमुवसंपे पुरपच्छसंथुया ऊ सो लभती जे य बावीसं ॥२४१४॥ सुहदुक्खसंपदेसा एत्तो खेत्तोवसंपदं वोच्छं । खेत्तोग्गहो सकोसं वाघाए वा अकोसं तु ॥२४१५॥ पत्ते उग्गह साहारणे य वासे तहेव उडुबद्धे । सव्वदिसासु सकोसं णिव्वाघातेण पत्ते उ ॥२४१६॥ अडविजलतेणसावदवाघाते एगदुगतिचतुरुं वा । होज्ज अकोसो उग्गहो अधुणा साहारणं वोच्छं ॥२४१७॥ साहारण होज्जाही पडिलेहुण पुव्वपच्छणिग्गमणे । पुव्वं पच्छा पत्ते आयरिए वसभ अज्जासु ॥२४१८॥ दुगमादीगच्छाणं पडिलेहगणिग्गताण समगं तु । पत्ता खेत्तं एसो पढमभंगो मुणेयव्वो ॥२४१९॥ समगं णिग्गम एक्के पच्छा पत्ता य बितियओ भंगो । पच्छा णिग्गय पुव्वं पविट्ठा पच्छा य दुहतो वि ॥२४२०॥

पढमगभंगो जो खलु पुव्विं तु अणुण्णवेंति ते खेत्तं । समगं पुणऽणुविए सामण्णं होति दोण्हं पि ॥२४२१॥ बितियगभंगे दप्पेण पुव्विं पत्ता उ जदि णाऽणुण्णवंते । इयरेसि असढाण य अणुण्णवेंताण खेत्तं तु ॥२४२२॥ पुरणिग्गता कहं पुण पच्छा पत्ता उ ते हवेज्जाहि । गेलण्णखमगपारण वाघातो अंतर हवेज्जा ॥२४२३॥

गेलन्ने वाउलाणं तु खेत्तमण्णस्स णो दए । णेमित्तो खमओ
चेव तेण तस्स ण लब्भती ॥२४२४॥ अंतरवाघाएण पच्छा प-
त्ताण पुव्वि जे पत्ता । असढेहि अणुण्णवित पुव्वि पत्ताण
तं खेत्तं ॥२४२५॥ अह समगमणुण्णविए काउ पमादं पि तो उ
साहारं । एवं तु बितियभंगो अहुणा तइयंमि वोच्छामि ॥२४२६॥
पच्छावि पत्थियाणं सभावसिग्घगतिणो भवे खेत्तं । एमेव य
आसण्णे दूरट्ठाणा व पत्ताण ॥२४२७॥ भंगे चउत्थगंमी पुव्वा-
णुण्णाए असढभावाण । पढमभंगसरिच्छा आभवणा तत्थ णाय-
व्वा ॥२४२८॥ पुव्वगाहिओ वि उग्गहो होति गिलाणादइताए ज-
हियव्वो । अह होज्जा संथरणं कालक्खेवो दुपक्खे वि ॥२४२९॥
पुव्वट्ठितखेत्तीणं जदि आगच्छे गिलाणइत्तऽण्णे । जदि दोण्ह
असंथरणा तो णिग्गमो खेत्तियाणं तु ॥२४३०॥

अह दोण्ह वि संथरणं दोण्णि वि अच्छंति जा गिलाणो
उ । एते य दोण्णि पक्खा अहवा समणा य समणीओ ॥
२४३१॥ गिलाण उवही किच्चा भत्तोवहि लुद्धताऽविहिगहिते
॥ पेल्लंती परखेत्तं साहुमियतेणिया तिविहा ॥२४३२॥ उवही णि-
यडी माया गिलाणणिस्साए विज्जमाणे वि । छड्डेन्तु एंति खेत्ते
भत्तोवहिलुद्धताए उ ॥२४३३॥ लब्भंति सुंदराइं गिलाणणियडीए एं-
ति तो तत्थ । इतरे वि गिलाणो त्ती काउं तओ णेंति खेत्ताउ ॥
२४३४॥ तेसुं तु णिग्गएसुं सच्चित्तादी उ तिविहं जं गेण्हे । तं
तेसिं होति तेण्णं पच्छित्तं चेव तिविहं तु ॥२४३५॥ जे पुण अ-
संथरंता एंति तहिं तेसिमा भवे मेरा । आयरियवसभअज्जाण
चेव वोच्छं समासेणं ॥२४३६॥ अच्छंति संथरे सव्वे वसभो णी-
ती असंथरे । जत्थ तुल्ला भवे दोवि तत्थिमा होति मग्गणा ॥२४३७
॥ णिप्फण्णतरुणसेहे जुंगितपादच्छिण्णासकरकण्णा । एमेव संजती-
ण णवरं वुड्ढीसु णाणत्तं ॥२४३८॥ परिवार अणिप्फण्णो अच्छंति
णिप्फण्णतो तु णिग्गच्छे । अच्छंति वुड्ढ तरुणा य णिंति सेहे अ-
सेहिल्ले ॥२४३९॥ अच्छंति जुंगिया णिंतियरे अहव जुंगिता
दोवि । तत्थाइल्ला अच्छे अच्छे समणीण तरुणीओ ॥२४४०॥

समणाण य समणीण य अच्छंती संजतीओ णियमेणं । जेण बहुपच्चवाता अणुकंपा तेण समणीणं ॥२४४१॥ संथारे भत्तमेत्तुदहा तस्स लाभंमि अप्पभू । जुंगियमादीएसु य वयंति खेत्तीण ते जेसिं ॥२४४२॥ दुयमादीगच्छाणं खेत्ते साहारणंमि वसियव्वे । अप्पत्तिय पडिसेहुत्ताए मेरा इमा तत्थ ॥२४४३॥ अत्थि बहुवसभगामा कुदेसणगरोवमा सुहविहारा । बहुगच्छुवग्गहकरा सीमच्छेदेण वसियव्वं ॥२४४४॥ आयरिय उवज्झाया दुहिं तिहिं सहिया तु पंचओ गच्छो । एव तु गच्छा तिण्णि उडुबद्धे संथरे जत्थ ॥२४४५॥ वासासुं तिचउजुता आयरिय उवज्झ सत्तओ गच्छो । एव तु गच्छा तिण्णि तु वासासुं संथरे जत्थ ॥२४४६॥ कालदुयंमि वि एवं जहण्णयं होति वासखेत्तं तु । बत्तीसं तु सहस्सा गच्छो उक्कोस उसभम्मि ॥२४४७॥ बहुगच्छुवग्गहकरा एत्तियमेत्ताण जत्थ संथरणं । ऊणा अणुवग्गहिता सीमच्छेदं अतो वोच्छं ॥२४४८॥ तुब्भंऽत्तो मह बाहिं तुज्झ सचित्तं ममेतरं वावि । आगंतुय वत्थव्वा थीपुरिसकुलेसु व विसेसो ॥२४४९॥ सेसे सकोसजोयण मूलणिबंधे अणुम्मुयंतेणं । सच्चित्ते अच्चित्ते मीसे विय दिण्णकालंमि ॥२४५०॥

सेसत्ती णिस्साहारणंमि मूलखेत्तं अणुम्मुयंतेणं । होति सकोसं जोयण दिसविदिसासुं तु सव्वत्तो ॥२४५१॥ एवं खेत्तओ एसो कालओ उडुबद्धे होति मासो तु । वासासु चउम्मासो एवति कालो विदिण्णो तु ॥२४५२॥ एवति कालविदिण्णं पुण्णे णिक्कारणंमि तेण परं । ण तु उग्गहो विदिण्णो मोत्तूणं कारणमिमेहिं ॥२४५३॥ असिवादिकारणेहिं दुविहऽतिरेगे वि उग्गहो होति । जा कारणं तु हिण्णं तेण परं उग्गहो ण भवे ॥२४५४॥ जदि होति खेत्तकप्पो असती खेत्ताण होज्ज बहुगावि । खेत्तेण य कालेण य सव्वस्स वि उग्गहो णगरे ॥२४५५॥ संति लंभे खेत्ताणं जोग्गाणं जो तु जत्थ संथरति । सो तहितं संचिक्खे खेत्ताण असती पुण बहुंवि ॥२४५६॥ एगत्थ उ गामादिसु जहियं तू संथरंति तहिं अच्छे । सव्वेसिं तहिं उग्गहो सा-

हारण होंति जह णगरे ॥२४५७॥ एसा खेत्तुवसंपद पुरपच्छासंथुए त
भति एत्थ। तह मित्तवयंसा या जं च लभे सुत्तोवसंपन्नो
॥२४५८॥ मग्गोवसंपदाए मग्गं देसेति जाव सो तस्स। त
भती दिट्ठाभट्ठादि जो य लाभो पुरिल्लाणं ॥२४५९॥ विण
ओवसंपदा पुण कुव्वति विणयं तु जो तु रायणिए। सव्वं त
स्साभवती जो उ उवट्ठायती तस्स ॥२४६०॥

उवसंपद इच्चेसा पंचविहा वण्णिता समासेणं। खेत्तंमि परे म
से णिक्खामिओ जो तु होज्जाहि ॥२४६१॥ काले उडु वासं वा वसि उ
णं णिग्गताण जो अण्णो। पढमबितियदिवसेसु णिक्खामे कालओ
एसो ॥२४६२॥ इच्चेसो पंचविहो ववहारो आभवंतिओ णामं। पच्छि
त्ते ववहारो जह दसमुद्देस ववहारे ॥२४६३॥ अहुणा तु खेत्तकाला ते
वि तु तत्थेव भणित ववहारे। जं तत्थ उ तस्सेसं तमहं वोच्छं स
मासेणं ॥२४६४॥ दुविहे विहारकाले तिविहा सोही उ उवहिभत्ताणं
। दिण्णे जतंत सोही अविदिण्णदठाए आवण्णे ॥२४६५॥ उडुबद्धे
वासासु य विहारकालो य होंति दुविहेसो। उग्गम उप्पायणा ए
सणा य एसा तिविह सोही ॥२४६६॥ उडुबद्ध मास वासासु हों
ति चतुरो विदिण्णकालो तु। एत्थ जयंता जदि वि तु आवज्जे
तह वि सुद्धा तु ॥२४६७॥ मासो चतुमासा पुण संवसमाणा तु त
त्थ अतिरित्ते। लग्गंति जयंता वि हु किमु अजयंता उ किं चण्णं
॥२४६८॥ उडुबद्ध वासवासं अणुवसमाणो असुद्धभत्तुवही। आ
यरियप्पमाणा गुणप्पमाणं च समणाणं ॥२४६९॥ उग्गममादीदो
सा असेवमाणो वि सो तु आवण्णो। जम्हा दोसायतणं उवंमि
पावेत्तु संवसति ॥२४७०॥

कत्थेयं भणियंति य भण्णति आयरिएण किमा
यारे। आयारपकप्पे तू आयारिं भवंतु आयारी ॥२४७१॥ जे भिक्खू
णितियवासं वसइत्ती एत्थ भणिय सुत्तंमि। एयं पमाण उभ
ये अतिरित्ते या वि जे दोसा ॥२४७२॥ जदि पुण चहिता हाणी
तहिं वड्ढि गुणाण तत्थ अच्छंति। के पुण गुणादि भणिता
भण्णति णाणादिया होंति ॥२४७३॥ कालातीते दोसा द

खवक्खओ होति अच्छमाणाण । तम्हा उ ण चिट्ठेज्जा अतिरित्त दुविहकालंमि ॥२४७४॥ णिद्दयअणुकंपाए गिहिणं तो णाम ण नस्सहा तुब्भे । भण्णति ण होति एवं मा साधूण चरणभेदो ॥२४७५॥ चोदेनाहारादिसु सुज्झे तेसू वि णाम ज तीए । तत्थ ण चिट्ठह तण्णाम णिद्दयत्तेण गहियाण ॥२४७६॥ मा पाविहिंति धम्मं गिहिणो साहूण फासुदाणेण । इय णिद्दयता अहवा इहलोगणुकंपता तेसिं ॥२४७७॥ मा रज्जक्खओ होही अणुवासे णिच्च साधुदाणेणं । इय अणुकंपिहलोए भण्णति ण तु एवमादीहि ॥२४७८॥ मा होज्ज चरणभेदो पुण्णातीतंमि सवसताणं । अतिचिरसवासेण सिणेहमादीहिं दोसेहिं ॥२४७९॥ एसो उ कालकप्पो एव वक्खाणिओ समासेण । अहुणा हु उवहिकप्पं गुरूवदेसेण वोच्छामि ॥२४८०॥

उवगिण्हति उवकारं करेति उवहीयतेण उवही तु । किं कारणं तु उवही उद्दिसिओ भण्णती सुणसु ॥२४८१॥ जीवाणऽणुग्गहट्ठा एवं खलु वण्णितो इह तित्थे । कालणऽणुग्गहुपदं पडिणीयपदे अभावो तु ॥२४८२॥ रसयादणुकंपट्ठा अगणिमादीण चेव रक्खट्ठा । असहूणऽणुकंपट्ठा य उवहीगहण जिणा बेंति ॥२४८३॥ आह जहणुग्गहट्ठा वत्थादीगहण देसियं समये । तो असहूणं कम्हा धीपरिभोगो णऽणुण्णाओ ॥२४८३॥ भण्णति पवित्ति कम्हिइ वि कम्हिवि पुण होति अपवित्ती उ । रज्जपडिणीयत्ता मेहुणमादीण णाऽणुण्णा ॥२४८४॥ णाणचरणादिहत्ताण उवग्गहं कुणति णाणचरणाण । आहार उवहि सेज्जा तेण उ उवहित्तण बेंति ॥२४८५॥ जस्स पुणोवहिगहिता उवघायकरी तु तस्स उवघातो । कहं उवघाय करेती अतिरित्त गहो य मुच्छा य ॥२४८६॥ सधरमाणो गेण्हति अतिरित्त उवहि जो भवे समणो । वण्णादिजुते मुच्छति इट्ठाहारे धुवस्सेव ॥२४८७॥ एतेसु अणिट्ठेसु य जो दुस्सति से करेति उवघात । णाणादीण तिण्हं तम्हा ते वज्जिए हेतू ॥२४८८॥ जो जत्थ जदा जहियं उवही परिभोगओ अणुण्णाओ । सो तस्स अणतिचारो अणणु-

ण्णाए चरणभेदो ॥२४८९॥ जह सिंधूओ कप्पो ओराला उण्णि-
या अणुण्णाया । पिमियादीण य गहणं खीरादीणं चऽणुण्णातं
॥ २४९०॥

अतिहिमदेसे य तहा कारणियगयाण सिसिरकालंमि ।
परिभुंजंताण य को विवाद चरणे अणुवघातो ॥२४९१॥ लाडवि-
सयादिएसुं एतेसिं चेव भोत्तु पडिसेहो । पडिसिद्धे परिभोगं कु-
णमाणो भंजती चरणं ॥२४९२॥ णाणंपि तु सो भिंदइ उवदेसं
जेण ण कुणती तस्स । जं णाण पुव्वदसण दंसणभेदो वि तो ते-
णं ॥२४९३॥ णिव्विदिक्खितमतरंतादिएसु कज्जेसु होति परिभो-
गो । समणुण्णाओ कसिणादियाण इहरा अणुवभोगो ॥२४९४
॥ एसो उ उवहिकप्पो अहुणा संभोगकप्प वोच्छामि । तस्स
पसाहणहेउं गाहासुत्तं इमं आह ॥२४९५॥ ण वि रागा ण
वि दोसा संभोगविही तु वण्णितो सुत्ते । णाणचरणादिहेता-
णं भणियं सुतणाणपुरिसेहिं ॥२४९६॥ रागेणं संभुंजति सि-
णेहओ तेहिं सद्धि मम पीती । जच्चादणुवसमेण व दोसे-
णेवं ण संभुंजे ॥२४९७॥ णाणचरणे रयाणं एसुवदेसो उ व-
ण्णितो सत्था । त गणहरेहिं गहितं तो ते सुतणाणपुरिसा उ
॥२४९८॥ किं कारणं अणुण्णा संभोगविही तु एस साहूणं ।
भन्नइ णाणाईणं परिवड्ढी एव होहिति तु ॥२४९९॥ अण्णोण्ण-
रस समासे णाणमहीहिंति जं च तं गहिता । होहिंति थिरा चर-
णे काहिंति गिलाणकिच्चं च ॥२५००॥

जदि संभोगगुणा ते ता सव्वे कीस ण परिभुंजन्ते ।
भण्णति सरिसऽहिगेहिं व संभोगो ण पुण हीणेहिं ॥२५०१॥
अत्थि पुण केइ पुरिसा लिंगं लिगेणं पमाय कुव्वंति । आहा-
र उवहिसेज्जा जत्तो संभुंजणावधो ॥२५०२॥ आहारादीतिय-
गं उग्गमगादी असुद्धगहणेणं । जे कुव्वति पमायं तेसिं स-
वासदोसेणं ॥२५०३॥ अणुमोदणपच्चिइओ सा बंधो होहिति
त्ति तेणं तु । ण वि कीरति संभोगो ते वि य चगीता वरं हों-
ता ॥२५०४॥ णणु रागदोसियत्तं संभुंजणे एगएगऽसंभोगे ।

भण्णति ण रागदोसा सुणसु जं कारणं एत्थं ॥२५०५॥ संभुजणा विसुद्धा उवग्गाहु कुणति णाणचरणाणं । संभुंजणा असुद्धा चरित्तभेदं विधाणाहि ॥२५०६॥ भोगेण पमाएणं तद्दोसाणं तु होति समणुण्णा । एव चरित्तभेदो किं पुण सो कुव्वति पमादं ॥२५०७॥ पूयारसपडिबद्धो सुद्ध असुद्धं करेति संभोगं । अहवा वि अजाणंतो संभोगविहीए गुणदोसे ॥२५०८॥ पूजाहेतु पमादी सेवति रसहेउगा च रससेवी । णाणादिसुद्धकप्पं कुणति असुद्ध तु सो एव ॥२५०९॥ बारस मूलपदा खलु संभोगविहीय वण्णिता सुत्ते । जत्तो पावादाणं भणितं दुट्ठाण उवेक्खेवो ॥२५१०॥

उवहिसुतभत्तपाणे अंजलीपग्गहे इय । दायणा य णिकाए य अब्भुट्ठाणे त्ति यावरे ॥२५११॥ कितिकम्मस्स य करणे वेतावच्चकरणे इय । समोसरण सन्निसेज्जा कहाए य पबंधणे ॥२५१२॥ एते बारसभेदा संभोगविहीय तू समक्खाता । पावादाण तेसु तु इमेहिं ठाणेहिं णायव्वं ॥२५१३॥ रागदोसाणुगतो जो संभोगं तु पालए पत्तं । सो दुट्ठो णायव्वो तसु वसेवो विसंभोगो ॥२५१४॥ अहवा वि इमेहिं त कारणेहि णियमा भवे विसंभोगो । संभोगविहि जो तू विवरीयं आयरेज्जाहि ॥२५१५॥ उवरिममज्झिमहेट्ठिम संभोगट्ठाणगा तिहा विभए । पडिसेहे पडिसेहो समणुण्णो होति समणुण्णो ॥२५१६॥ उवरिमए त्ति अहागड मज्झिमगा होंति अप्पपरिकम्मा । सपरिकम्मा हेट्ठिम संभोगविही तिहा एसो ॥२५१७॥ अहाकडा मिलति अहाकडेसु भत्तं च पाण तह धोवणं वा । अहाकडा गच्छति हेट्ठिमेसु ण हेट्ठिमा छुब्भ अहाकडेसु ॥२५१८॥ मज्झिमित्ता हेट्ठिमते छुब्भति ण तु हेट्ठिमा उवरिमेसु । एसो तिविहो तु भवे संभोगविही समासेण ॥२५१९॥ पडिसेहे पडिसेहो सपरिकम्म तु होति पडिबद्धं । तस्स पुणो पडिसेहो उवरिल्ले मेलगा जाउ ॥२५२०॥

पडिसेहो हेट्ठुवरि उवरिल्लो हेट्ठिमे अणुण्णातो ।

अह पडिसेहेहि अणुण्णा होंति इमा तू मुणेयव्वा ॥२५२१॥ जो पडिसिद्धं एयं आयरती तस्स होति पडिसेहो । पडिसेहो बिबेगोत्ती अवितहकरणे अणुण्णा उ ॥२५२२॥ केरिसएणं तु समं संभोगो तेसि होति कायव्वो । अहवा वि ण कायव्वो भण्णति इणमो णिसामेहि ॥२५२३॥ ण वि एस मंदधम्मे ण विहुत्थेसुं ण चेव अज्जासु । बावत्तरी विभत्तोऽवितरे पडिसेहणं जाणे ॥२५२४॥ दिज्जति घेप्पति य तहा केसिंची दिज्जए ण घेप्पति तु । णवि दिज्जति घेप्पति तू णवि दिज्जति णवि य घेप्पति तू ॥२५२५॥ संविग्गसंजयाणं दिज्जति घेप्पइ य पढमभंगो तु । संजतिवग्गे दिज्जति णवि घेप्पति कारणे बितिओ ॥२५२६॥ गिहिअण्णतित्थियाणं णवि दिज्जति घेप्पती उ णवरं च । णवि दिज्जति णवि घेप्पति पासत्थादीण सव्वेसिं ॥२५२७॥ बावत्तरी विभत्त त्ति एस बारसविहो तु संभोगो । छहिं गुणितो बावत्तरिं संभोगाणं मुणेयव्वा ॥२५२८॥ बावत्तरी तु एसा दुगतिगचउपंचछक्कसंगुणिता । जावइय होंति भेदा तेसु विसुद्धेसु संभोगो ॥२५२९॥ पडिसेहो असुद्धेसुं कप्पो संभोग एस वक्खाओ । अहुणा तु लिंगकप्पं वोच्छामि अहाणुपुव्वीए ॥२५३०॥

जो पुव्विं वक्खाओ जिणथेराणं तु दोण्ह वी कप्पो । रुट्ठ णाइकक्खमादी सो चेव इहं पि णायव्वो ॥२५३१॥ इति एसो लिंगकप्पो वोच्छं पडिसेवणाए कप्पं तु । जारिसयं सेविज्जति सुद्धमसुद्धं समासेणं ॥२५३२॥ गहणपरिभुंजणाए णिव्वाघाते तहेव वाघाते । वाघाते दुयगहणं णिव्वाघाते य तियगहणं ॥२५३३॥ पडिसेवणा उ दुविहा गहणे परिभुंजणे य णायव्वा । एक्केक्का वि य दुविहा णिव्वाघाते य वाघाते ॥२५३४॥ वाघातंमी सुद्धं गेण्हइ असुद्धं च एतदुयगहणं । परिभुंजती वि एवं णिव्वाघातंमि वोच्छामि ॥२५३५॥ उग्गममादीसुद्धं गेण्हति परिभुंजती य तियमेतं । अह को पुण वाघातो परूवणा तस्सिमा होति ॥२५३६॥ असिवे ओमोदरिए रायदुट्ठे भए व आगाढे । छक्कायदुगमुवादाय वाघाते

णिव्वघाते य ॥२५३७॥ सुद्धमसुद्धं व जहिं अहवा सच्चित्तमीसगं वा वि । एतेसिं दोण्हं तू वाघाते गहण भोगे य ॥२५३८॥ णिव्वाघाए छण्ह वि अच्चित्ताणं तु गहणकायाणं । गहियस्स य परिभोगो तस्सेव य होति कायव्वो ॥२५३९॥ परिभोगे वाघातो गहिते पच्छा तु होज्ज तं णातं । जह आहाकम्मं ती ताहे य तयं ण परिभुंजे ॥२५४०॥

वाघाते सेवंतो अकिच्चमेयं तु चिंतए साहू । होति तहा णिज्जरओ जो पुण दुणमो समायरति ॥२५४१॥ पूजारसपडिबद्धो ओसण्णाण च आणुयत्तीय । चरणाकरणं णिगूहति तं जाणऽणुयत्तियं समण ॥२५४२॥ पूजारसहेउं वा बेती जह किच्चमेव एयं तु । मा मे ण देहिति पुणो जह एसोऽकिच्चकारीत्ति ॥२५४३॥ अहवा ओसण्णाणं तु अणुयत्तीय बेति को दोसो । आहाकम्मादीसुं णवरं मा कीरउ सयं तु ॥२५४४॥ सो गूहति चरणादी एवं तुच्छं खु तस्स सामण्णं । तम्हा तु पकप्पेज्जा सुद्धं मग्गं तु किं चऽण्णं ॥२५४५॥ णिस्साणपदं पीहुति अणिस्स विहरंतयं ण रोएति । जं जाण मंदधम्मं इहलोगगवेसगं समणं ॥२५४६॥ अहवा उम्मग्गो खलु णिस्साणं तं तु पीहए जो तु । तस्स तु छेदसुतत्थं ण कहे दोसा इमे तहियं ॥२५४७॥ पंचमहव्वतभेदो छक्कायवहो य तेणऽणुण्णाओ । सुहसीलऽवियत्ताणं कहेइ जो पवयणरहस्सं ॥२५४८॥ पडिसेवकप्प एसो अहुणा वोच्छं अणुवासणाकप्पं । अणुवास मासकप्पो वासावासो इमेसिं तु ॥२५४९॥ जिण-थेर-अहालंदे परिहरिते अज्ज मासकप्पो उ । खेत्ते कालमुवस्सयपिंडग्गहणे य णाणत्तं ॥२५५०॥

एएसिं पंचण्ह वि अण्णोण्णस्स उ चतुपदेहिं तु । खेत्तादीहिं विसेसो जह तह वोच्छं समासेणं ॥२५५१॥ णत्थि उ खेत्तं जिणकप्पियाण उडुबद्ध मासकालो तु । वासासु चउमासा वसही अममत्त अपरिकम्मा ॥२५५२॥ पिंडो तु अलेवकडो गहणं तू एसणाडुवरिमाहिं । तत्थ वि काउमभिग्गहु पंचण्ह अण्णतरियाए ॥२५५३॥ थेराण अत्थि खेत्तं तु

उग्गहो जाव जोयण सकोसं । णगरे पुण वसहीए बिकाले उ-
डुबद्धि मासो तु ॥२५५४॥ उस्सग्गेणं भणिओ अववाएणं
तु होज्ज अहिओ वि । एमेव य वासासु वि चतुमासो हो-
ज्ज अहिओ वि ॥२५५५॥ असमत्त अपरिकम्मो उवस्सओ
एत्थ भंगा चउरो उ । उस्सग्गेणं पढमो तिण्णि उ सेसाववा-
देणं॥२५५६॥ भत्तं लेवकडं वाऽलेवकडं वा वि ते उ गिण्हंति । सत्तहि वि
एसणाहिं सावेक्खो गच्छवासो त्ति ॥२५५७॥ अहालंदियाण
गच्छे अप्पडिबद्धाण जह जिणाणं तु । णवरं कालविसेसो उ-
डुवासे पणगा चतुमासो ॥२५५८॥ गच्छे पडिबद्धाणं अहालं-
दीणं तु अह पुण विसेसो । उग्गहो जो तेसिं तू सो आय-
रियाण आभवति ॥२५५९॥ एगवसहीए पणगं छव्वीहीओ
व गाम कुव्वंति । दिवसे दिवसे अण्णं अडंति वीहीइ णि-
यमेणं ॥२५६०॥

परिहारविसुद्धीणं जहेव जिणकप्पियाण णवरं तु ।
आयंबिलं तु भत्तं गेण्हती वासकप्प च ॥२५६१॥ अज्जाण
परिग्गहियाण उग्गहो जो तु सो तु आयरिए । काले दो दो
मासा उडुबद्धे तासि कप्पो तु ॥२५६२॥ सेसं जह थेराणं
पिंडो य उवस्सओ य तह तासिं । सो सव्वो वि य दुवि-
हो जिणकप्पो थेरकप्पो य ॥२५६३॥ जिणकप्पि-अहालं-
दी-परिहारविसुद्धियाण जिणकप्पो । थेराणं अज्जाण य
बोधव्वो थेरकप्पो उ ॥२५६४॥ दुविहो य मासकप्पो जि-
णकप्पो चेव थेरकप्पो य । णिरणुग्गहो जि[illegible]णा थेराण
अणुग्गहपवत्तो ॥२५६५॥ उडुवास कालतीते जिणकप्पीणं
तु गुरुगा गुरुगा य । होंति दिणंमि दिणंमी थेराणं ते
च्चिय लहुओ ॥२५६६॥ तीस पदावराहे पुढो अणुवासि-
यं अणुवसंतो । जे जत्थ पदे दोसा ते तत्थयगो समावण्णे
॥२५६७॥ पण्णरसुग्गामदोसा दस एसणदोस एते पणुवीसं
। संजोयणादि पंच य एते तीसं तु अवराहा ॥२५६८॥
एतेहिं दोसेहिं जदि असंपत्ति जगाती तह वि । दिवसे दि-

वद्धे सो• खलु कालातीते वसतो तु ॥२५६९॥ वासावास-पमाणं आयारे उ व्वमाणित कप्पे । एयं अणुस्सुयंतो जाणसु अणुवासकप्पं तु ॥२५७०॥

आयारपकप्पंमी जह भणियं तीति संवसतो वि । इति अणुवासकप्पो नह संव•ामाणऽदोसा तु ॥२५७१॥ दुविहे विहारकाले वासावासे तहेव उडुबद्धे । मासातीते अणुवड्ढे वासातीते भवे उवही ॥२५७२॥ उडुबद्धिएसु अदइसु मासातीतेसु तत्थ वास ण तु कप्पे । घेत्तूणं उवही खलु वासातीतेसु कप्पति तू ॥२५७३॥ वासउडु अहालंदे इत्तिरि साहारणे पुडुते उग्गह संकमणं वा अण्णोण्णसकासऽहिज्जंते ॥२५७४ वासासु चउम्मासो उडुबद्धे मासो लंद पंच दिणा । इत्तिरिओ रुक्खमूले वीसमणट्ठा हिताणं तु ॥२५७५॥ साहारणा तु एते समदिट्ठताणं बहूण गच्छाणं । एक्केण परिग्गहिता सव्वे वोहित्तिया होंति ॥२५७६॥ संकमणण्णमण्णस्स सकासे जदि तु ते अहीयंते । सुत्तत्थतदुभयाइ संघे अहवावि पडिपुच्छे ॥२५७७॥ ते पुण मडलियाए आवलियाए व तं तु गेण्हेज्जा । मंडलियमहिज्जंते सच्चित्तादी तु जो लाभो ॥२५७८॥ सो तु परंपरएणं संकामति ताव जाव सट्ठाणं । जहियं पुण आवलिया तहियं पुण अंतरे हाति ॥२५७९॥ ते पुण हित एक्काए वसहीए अहव पुप्फकिण्णा तु । अहवा वि तु संकमणे दव्वम्मिसणमो विही अण्णो ॥२५८०॥

सुत्तत्थतदुभयविसारयाण थोवे अ संततीभेदे । संकमणदव्वमंडलि आवलियाकप्पअणुवासा ॥२५८१॥ पुव्वाट्ठिताण खेत्ते जदि आगच्छेज्ज अण्ण आयरिओ । बहुसुय बहुआगमिओ तस्स समासंमि जति खेत्ती ॥२५८२॥ केचि अहिज्जेज्जा ही थोवं खेत्तं च तं जदि हवेज्जा । ताहे असथरंता दोण्णि वि साहू विसज्जेंति ॥२५८३॥ अण्णोण्णस्स सगासे तेसि पिय तत्थ विज्जमाणाणं । आभवणा तह चेव य जह भणियमणंतरे सुत्ते ॥२५८४॥ एवं णिव्वाघाते मास चतुम्मासितो उ थेराणं । कप्पो कारणतो पुण

अणुवासो कारणं जाव ॥२५८५॥ एसऽणुवासणकप्पो अहुणा अणुपालणाए कप्पं तु । संखेव समुद्दिट्ठं वोच्छामि अहं समासेणं ॥२५८६॥ मोहतिगिच्छाए गते णट्ठे खेत्तादि अहव कालगते । आयरिए तंमि गणे पीलादीरक्खणट्ठाए ॥२५८७॥ को उ गणी ठवणिज्जो भण्णति जति तस्स कोति सीसो तु । सुत्तत्थतदुभएहिं णिम्माओ सो ठवेयव्वो ॥२५८८॥ असतीय तस्स ताहे ठावेयव्वा कमेणिमेणं तु । पव्वज्ज कुले णाणे खेत्ते सुहदुक्खिय सुतससीसे ॥२५८९॥ गुरुगरु गुरुणं तू वा गुरुसज्झिलओ व्व तस्स सीसो वा । पव्वज्ज एगपक्खी एमादी होइ णायव्वो ॥ २५९०॥

असतीए कुलिच्चो वी तस्सऽसतीए सुयएगपक्खीओ । खेत्ते उवसंपण्णो तस्सऽसतीए ठवेयव्वो ॥ २५९१॥ सुहदुक्खियस्स असती तस्सऽसतीए सुतोवसंपण्णो । एवं तु वियाण तहिं सीसंमि तु मग्गणा णत्थि ॥२५९२॥ पाडिच्छगणधरे पुण ठविए तहियं तु मग्गणा इणमो । सुत्तत्थमहिज्जंते अणहिज्जंते इमे विभागा ॥२५९३॥ साहारणं तु पढमे बितिए खेत्तंमि ततिए सुहदुक्खे । अणहिज्जंते सीसे सेसे एक्कारस विभागा ॥२५९४॥ पुव्वुद्दिट्ठगस्स उ ।१। पच्छुद्दिट्ठं पवायथंतस्स ।२। संवच्छरंमि पढमे पडिच्छए जं तु सच्चित्तं ॥२५९५॥ पुव्वं पच्छुद्दिट्ठे पडिच्छए जं तु होति सच्चित्तं । संवच्छरंमि बितिए तं सव्व पवायथंतस्स ॥ २५९६॥ पुव्वं पच्छुद्दिट्ठे सीसंमि तु जं तु होति सच्चित्तं । संवच्छरंमि पढमे तं सव्व गणस्स आभवति ।४। ॥२५९७॥ पुव्वुद्दिट्ठगणस्सा ।५। पच्छुद्दिट्ठं पवायथंतस्स ।६। संवच्छरंमि बितिए सीसंमि तु जं तु सच्चित्तं ॥२५९८॥ पुव्वं पच्छुद्दिट्ठे सीसंमि तु जं तु होति सच्चित्तं ।७। संवच्छरंमि ततिए तं सव्व पवायथंतस्स ॥२५९९॥ पुव्वुद्दिट्ठे गच्छे ।८। पच्छुद्दिट्ठं पवायथंतस्स ।९। संवच्छरंमि पढमे सिक्खिणिए जं तु सच्चित्तं ॥२६००॥

पुव्वं पच्छुद्दिट्ठे सिक्खिणिए जं तु होति सच्चित्तं ।

संवच्छरंमि बितिए तं सव्व पवायधंतस्स ।१०। ॥२६०१॥ पुव्वं पच्चुद्दिट्ठे पडिच्छियाए उ जं तु सच्चित्तं । संवच्छरंमि पढमे तं सव्व पवायधंतस्स ।११। ॥२६०२॥ खेत्तुवसंपायरिओ सुहदुक्खी चेव जति तु संहविओ । कुलगणसंघिच्चो वा तस्स इमो होंति उ विवेगो ।।२६०३।। संवच्छराणि दुण्णि उ सीसंमि पडिच्छयम्मि त-द्दिवसं । एवं कुलिच्च गणिच्चे संवच्छर संघ छम्मासा ॥२६०४॥ तत्थेव य णिम्माए अणिग्गए णिग्गए इमा मेरा । सकुले तिण्णि तियाइं गणदुग संवच्छरं संघे ॥२६०५॥ ओमादिकारणेहिं दुम्मेहुत्तेण वा ण णिम्मातो । काऊण कुलसमायं कुलथेरे वा उवट्ठेति ॥२६०६॥ णव हायणाइ ताहे कुलं तु सिक्खावए पयत्तेण । ण य किंचि तेसि गिण्हति गणो दुगं एग संघो उ ॥२६०७॥ एव तु दुवालसहिं समाहिं जदि तत्थ कोति णिम्मातो । ता णिंति अणिम्माए पुणो कुलादी उवट्ठाणा ॥२६०८॥ तेणेव कमेण तू पुणो समाओ हवंति बारस उ । णिम्माए विहरंती इहर कुलादी पुणोवट्ठा ॥२६०९॥ तहवि य बारसमाओ णिम्माओ सो सि गणधरो होति । तेण परमऽणिम्माते इमा विही होति तेसिं तु ॥२६१०॥

छत्तीसातिक्कंते पंचविहुवसंपदाए तो पच्छा । पत्तं उवसंपादे पव्वज्ज तु एगपक्खंमि ॥२६११॥ पव्वज्जाए सुतेण य चतुभंगो होति एगपक्खंमि । पुव्वाहितवीसरिए, पढमासति ततियभंगेणं ॥२६१२॥ सव्वस्स वि कायव्व णिच्छयओ किं कुलं व अकुलं वा । काले सभावममत्ते गारवलज्जाए काहिंति ॥२६१३॥ एसऽणुपालणकप्पो अहुणाऽणुण्णातो णंदिसुत्तेहिं । सिट्ठो अणुण्णकप्पो णवरेगट्ठाणि वोच्छामि ॥२६१४॥ किम-णुण्ण कस्सऽणुण्णा केवतिकालं पवत्तियाऽणुण्णा । आयरियत्त सुत्तं वा अणुण्णव्वइ जं तु साऽणुण्णा ॥२६१५॥ यस्स त्ति सीसस्स तु गुरुगुणजुत्तस्स होयऽणुण्णा उ । केवति काल पावेत्ती आदिकरेणुसभसेणस्स ॥२६१६॥ एगादिहयाणि तीय उ गोण्णाइं हवंति णामधेज्जाइं । वीस तु समासेणं वोच्छामि ताणिमाइं तु

॥२६१७॥ अणुण्णा उण्णमणा णमण णामणि ठवणा पभावणा वियारे । तदुभयहिय मज्जाता कप्पे मग्गे य णाए य ॥२६१८॥ संगह संवर णिज्जर थिरकरणमछेद जीत कुडिढपय पयपवरं चेव तहा वीसं अणुण्णाए णामाइं ॥२६१९॥ अणुण्णवइत्तऽणुण्णा उण्णामिय ऊसियं ति उण्णमणी । गिहिसाधूहिं णमिज्जति तम्हा ऊ होति णमण त्ति ॥२६२०॥

सुतधम्मचरणधम्मे णामयती जेण णामणी तम्हा । ठविओ आयरियत्ते जम्हा ऊ तेण ठवणं ति ॥२६२१। ठवितो गणाहिवत्ते होति पभू तेण पभवो सव्वेसिं णाणादीणं होती पभवो पभूइ त्ति एगट्ठा ॥२६२२॥ आयरियत्ते पभवितो तेण वियारो उ दिज्जाति गणे से । तदुभयहिय ति भण्णति इहपरलोगो य जेण हित ॥२६२३॥ गणधरमेर धरेती जम्हा ऊ तेण होति मज्जादा । करणिज्जो कप्पो त्ति य कप्पे गणकप्प समणेणं ॥२६२४॥ णाणादि मोक्खमग्गो सो तंमि हितो त्ति तो भवति मग्गो । जम्हा उ णायकारी णाओ वा एस तो णातो ॥२६२५॥ दव्वे भावे संगहो दव्वे आहारवत्थमादीहिं । भावे णाणादीहि तु संगिण्हति संगहो तेणं ॥२६२६॥ दुविहेण संवरेण इंदियणोइंदिएहिं जम्हा तु । अप्पाण गणं च तहा संवरयति संवरो तम्हा ॥२६२७॥ गणधारणनियताए कुणमाणो णिज्जरेइ कम्माइ । अण्णो य णिज्जरावे तम्हा तू णिज्जरा होति ॥२६२८॥ वातेरिता लता इव पकंपमाणाण तरुणमादीणं । होति थिरावट्ठंभो तकव्व थिरकरण तेणं तु ॥२६२९॥ जम्हा तु अवोच्छित्ती सो कुणती णाणचरणनादीणं । तम्हा खलु अच्छेदं गुणप्पसिद्धं हवति णामं ॥२६३०॥

तित्थकरेहिं कयमिणं गणधारीणं तु तेहिं सीसाणं । तत्तो परंपरेणं आयमिणं तेण जीयं तु ॥२६३१॥ वड्ढइ णाणचरणे गणं तु तम्हा उ तेण कुड्ढिपदं । पवर पहाणमेतं सव्वेसिं रायदेवाण ॥२६३२॥ इति एसऽणुण्णकप्पो जहाविही वण्णितो समासेणं । ठवणाकप्प एत्तो वोच्छामि अ-

हाणुपुव्वीए ॥२६३३॥ तिविहो ठवणाकप्पो कुले गणे चेव तह य संघे य। एतेसिं परूवणयं वोच्छामि अहाणुपुव्वीए ॥२६३४॥ कुलथेरेणं गणेण व जा मेरा ठाविता भवे णियमा। सो कुलठवणाकप्पो एव गणे होति संघे य ॥२६३५॥ केरिसया पुण थेरा कुलगणसंघाण होति तु पमाणं ?। भण्णति सुणसू इणमो जेहिं गुणेहिं तु ते जुत्ता ॥२६३६॥ कप्पाकप्पविहिण्णू सुत्तत्थविसारदा सुतरहुस्सा। जे चरणकरणजुत्ता ते सुद्धणयाण तु पमाणं ॥२६३७॥ कप्पाकप्पविहिण्णू सुत्तत्थविसारदा सुतरहुस्सा। जे चरणकरणहीणा ते सुद्धणताण भइयव्वा ॥२६३८॥ नेतव्वा खलु कज्जा असती चरणाहिहयाण थेराणं। हीणो वि सुयसमिद्धो मज्झत्थो होति तु पमाणं ॥२६३९॥ कह पुण ठाविज्जंते ते उ पमाणं तु तेसु ठाणेसु ?। कुलगणसंघा थेरा भण्णति इणमो णिसामेहि ॥२६४०॥

इच्छाकारणिउत्तो पियधम्मो तिण्ह कोइ एक्कतरो। सो होति तिगत्थेरो तिगचरित वियाणतो धीरो ॥२६४१॥ णातूण गुणसमिद्धं जोगं तु कुलादिथेरठाणस्स। कातूणिच्छाकारं कुलादिणो बेंति तो इणमो ॥२६४२॥ तुब्भे होह पमाणं कुलथेरा थेरठाणजोगं तु। एवं तु कुलादीहिं तिगथेरा तू ठविज्जंति ॥२६४३॥ तिगचरितं जाणइ त्ति चरितं मज्जातमेर एगट्ठा। तं तु तहाविहि जाणति तिण्हं पि कुलादिठाणाणं ॥२६४४॥ पासत्थोसण्ण-कुसीलठाणपरिरक्खतो दुपक्खे वि। सो होति तिगत्थेरो तिगथेरगुणेहिं उवउत्तो ॥२६४५॥ पासत्थादीठाणे ण वट्टती एस रक्खओ होति। अहवा सति सद्धाए पासत्थादी वि पालेति ॥२६४६॥ परिहुज्जंते रागादिरक्खितेे साहुसाहुणि दुपक्खे। अहवा अप्पाण परे तिगथेरो संघथेरो तु ॥२६४७॥ एसो तु तिगत्थेरो तिगथेरगुणेहिं होति संपण्णो। अहुणा वीसुं वीसुं कुलादिथेरे पवक्खामि ॥२६४८॥ चरणकरणे समग्गो जो जत्थ जदा कुलप्पहाणो तु। सो होति कुलत्थेरो कुलचरितवियाणओ

धीरो ॥२६४९॥ पासत्थोसण्णकुसीलट्ठाणपरिवज्जतो दुपक्खे वि । सो होति कुलत्थेरो कुलथेरगुणेहिं उववेदो ॥२६५०॥

चरणकरणे समग्गो जो जत्थ जदा गणप्पहाणो तु । सो होति गणत्थेरो गणचरियविधाणओ धीरो ॥२६५१॥ पासत्थोसण्णकुसीलट्ठाणपरिवज्जतो दुपक्खे वि । सो होति गणत्थेरो गणथेरगुणेहिं उववेतो ॥२६५२॥ चरणकरणे समग्गो जो जत्थ जदा जुगप्पहाणो तु । सो होति संघथेरो सीतघरसमो पुरिससीहो ॥ २६५३॥ एसो तु मूलसंघो आपुच्छण-गमणकरणकज्जेसु । हिल• सुहणिस्सेसकडो कुलगणसंघऽप्पणो चेव ॥२६५४॥ दंसणणाण-चरित्ते जा पुव्वपरूवणाऽऽयरणया य । एसो तु मूलसंघो तिविहा थेरा करणजुत्ता ॥२६५५॥ पुव्वं पि परूवेज्जा आयारादीसु वण्णितचरित्ते । तं सम्ममायरंतो हवति तु संघो तहा थेरो॥ २६५६॥ जो सो हीणचरित्तो अण्णस्सऽसतीत पुव्वभणितो तु । कुलथेरादि ठविज्जति तस्सुवदेसो इमो होति ॥२६५७॥ होज्ज वसणसंपत्तो सरीरमार्यकता असहुओ वा । चरणकरणे असत्तो सुद्धं मग्गं परूवेज्जा ॥२६५८॥ वसणं वाजीमादी सूलजरादी तु होइ आतंको । धितिसारीरबलेणं हीणो असहू मुणेयव्वो ॥२६५९॥ एतेहिं कारणेहिं अकप्पपडिसेवणं करंतो वि । सुद्धं मग्गं परूवे अप्पाण हिया अतो एत्तो ॥ २६६०॥

कप्पपणयस्स भेदा सोच्चा णच्चा तहेव घेत्तूणं । चरणकरणे विसुद्धे आयरणपरूवणं कुणहु ॥२६६१॥ आयरियसगासातो सोच्चा नच्चा य घेत्तुमत्थेणं । हितते ववत्थवेतुं आयरणपरूवणा कुज्जा ॥२६६२॥ कप्पपणगस्स भेदो परूविओ मोक्खसाहणट्ठाए । जं चरिऊण सुविहिता करेंति दुक्खक्खयं धीरा ॥२६६३॥ पंचविह-सुत्तकप्पाण विभासा वित्थरं पमोत्तूणं । गहिता सीसहियट्ठा अवोच्छित्तट्ठया चेव ॥२६६४॥

[गाहग्गेण पंचवीससयाइं चउहुत्तराइं २५७४

सिलोयग्गेणं बत्तीस सयाणि दसअट्ठसहियाइं]
सव्वसुयसमूहमयी वामकरग्गहियपोत्थया देवी ।
जक्खकुहंडीसहिया देंतु अविग्घं भणंताणं ॥

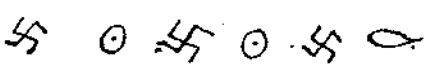

पूज्यपाद तपोमूर्ति - जैनाचार्य - श्रीमद्विजयकर्पूरसूरीश्वर - पट्टधर - हालारदेशोद्धारक - कविरत्न पूज्याचार्यदेव - श्रीमद्विजयामृतसूरीश्वर - विनेय - श्रीमदागमसंशोधक - विद्वद्वर्य गुरुदेव - पूज्यपन्न्यास श्रीजिनेन्द्रविजय - गणिवर्याणां आज्ञानुवर्ति - तपस्वि साध्वीश्रीमहेन्द्रप्रभाश्रियाः शिष्या - विदुषीरत्न - साध्वीश्रीसुरेन्द्रप्रभाश्रियाः शिष्या साध्वीस्वयम्प्रभाश्रिया लिपिकृतं श्री पञ्चकल्पसूत्रमिदं, परमोपकारी गुरुदेव कृपया श्रुतभक्तिगुरुभक्तिप्रेरितभावोल्लासेन

संशोधितं च परमोपकारी पूज्यपाद गुरुदेव पन्न्यासप्रवरश्रीजिनेन्द्रविजयगणिवरेण

वीर सं. २५०६ विक्रम सं. २०३६

आश्विनकृष्णातृतीयायां सूर्यवासरे श्रीजामनगर दिग्विजयप्लोट श्रीशान्तिभवनजोपाश्रय - मध्ये श्रीविमलनाथस्वामिप्रसादात् । शुभं भवतु श्री श्रमणसङ्घस्य ।

अर्हम्।

श्रुतकेवलिश्री भद्रबाहुस्वामिविरचितं

श्रीव्यवहारसूत्रम्।

अथ प्रथमोद्देशकः ॥

'१८२' भाष्ये पीठिकागाथाः, जे भिक्खू मासियं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अपलिउञ्चियं आलोएमाणस्स मासियं, पलिउंचियं आलोएमाणस्स दोमासियं '३२२' ॥सू. १॥ जे भिक्खू दोमासियं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा अपलिउञ्चिय (प्र. यं) आलोएमाणस्स दोमासियं, पलिउंचियथं आलोएमाणस्स तेमासियं ॥सू. २॥ जे भिक्खू तेमासियं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा अपलिउंचियथं आलोएमाणस्स तेमासियं, पलिउंचियथं आलोएमाणस्स चाउम्मासियं ॥सू. ३॥ जे भिक्खू चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा अपलिउंचियथं आलोएमाणस्स चाउम्मासियं, पलिउंचियथं आलोएमाणस्स पंचमासियं ॥सू. ४॥ जे भिक्खू पंचमासियं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा अपलिउंचियथं आलोएमाणस्स पंचमासियं, पलिउंचियथं आलोएमाणस्स छम्मासियं, तेण परं पलिउंचिए वा अपलिउंचिए वा ते चेव छम्मासा '३४३' ॥सू. ५॥ जे भिक्खू बहुसोवि मासियं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा अपलिउञ्चियं आलोएमाणस्स मासियं, पलिउंचियं आलोएमाणस्स दोमासियं ॥सू. ६॥ एवं जे भिक्खू बहुसोवि दोमासियं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा अपलिउञ्चियं आलोएमाणस्स दोमासियं, पलिउञ्चियं आलोएमाणस्स तेमासियं ॥सू. ७॥ जे भिक्खू बहुसोवि तेमासियं परिहारट्ठाणं पडिसेविऊण आलोएज्जा अपलिउञ्चियं आलोएमाणस्स तेमासियं, पलिउञ्चियं आलोएमाणस्स चाउम्मासियं ॥सू. ८॥ जे भिक्खू बहुसोवि चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं

पडिसेवित्ता आलोएज्जा अपलिउञ्चियं आलोएमाणस्स चाउम्मासियं, पलिउञ्चियं आलोएमाणस्स पञ्चमासियं॥सू.९॥ जे भिक्खू बहुसोवि पञ्चमासियं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा अपलिउञ्चियं आलोएमाणस्स पञ्चमासियं, पलिउञ्चियं आलोएमाणस्स छम्मासियं. तेण परं पलिउञ्चियं वा अपलिउञ्चियं वा ते चेव छम्मासा ॥सू.१०॥ जे भिक्खू मासियं वा दोमासियं वा तेमासियं वा चाउम्मासियं वा पञ्चमासियं वा एएसिं परिहारट्ठाणाणं अन्नयरं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा अपलिउञ्चिययं आलोएमाणस्स मासियं वा दोमासियं वा तेमासियं वा चाउम्मासियं वा पञ्चमासियं वा, पलिउंचिययं आलोएमाणस्स दोमासियं वा तेमासियं वा चाउम्मासियं वा पंचमासियं वा छम्मासियं वा, तेण परं पलिउंचिए वा अपलिउंचिए वा ते चेव छम्मासा॥सू.११॥ जे भिक्खू बहुसोवि मासियं वा दोमासियं वा तेमासियं वा चाउम्मासियं वा पंचमासियं वा एएसिं परिहारट्ठाणाणं अन्नयरं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अपलिउंचियं आलोएमाणस्स मासियं वा दोमासियं वा तेमासियं वा चाउम्मासियं वा पञ्चमासियं वा, पलिउञ्चियं आलोएमाणस्स दोमासियं वा तेमासियं वा चाउम्मासियं वा तेण परं पलिउञ्चिए वा अपलिउञ्चिए वा ते चेव छम्मासा '५३०'॥सू.१२॥ जे भिक्खू चाउम्मासियं वा साइरेगचाउम्मासियं वा पंचमासियं वा साइरेगपंचमासियं वा एएसिं परिहारट्ठाणाणं अन्नयरं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अपलिउंचिययं आलोएमाणस्स चाउम्मासियं वा साइरेगचाउम्मासियं वा पंचमासियं वा साइरेगपंचमासियं वा पलिउंचिययं आलोएमाणस्स पंचमासियं वा साइरेगपंचमासियं वा छम्मासियं वा, तेण परं पलिउंचिए वा अपलिउंचिए वा ते चेव छम्मासा॥सू.१३॥ जे भिक्खू बहुसोवि चाउम्मासियं वा ॥सू.१४॥ साइरेगचाउम्मासियं वा ॥सू.१५॥ पंचमासियं वा ॥सू.१६॥ साइरेगपंचमासियं वा॥सू.१७॥ एवं चेव भाणियव्वं जाव छम्मासा '५३५' ॥सू.१८॥ जे भिक्खू चाउम्मासियं वा साइरेगचाउम्मासियं वा पंचमासियं वा साइरेगपंचमासियं वा एएसिं परिहारट्ठाणाणं अन्नयरं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अपलिउंचिययं आलोएमाणस्स ठवणिज्जं ठवइत्ता करणिज्जं वेयावडियं, ठविएवि पडिसेवित्ता सेवि कसिणे तत्थेव आ-

रूहेयव्वे सिया, पुव्विं पडिसेवियं पुव्विं आलोइयं, पुव्विं पडिसेवियं पच्छा आलोइयं, पच्छा पडिसेवियं पुव्विं आलोइयं, पच्छा पडिसेवियं पच्छा आलोइयं, अपलिउंचिए अपलिउंचियं, अपलिउंचिए पलिउंचियं, पलिउंचिए अपलिउंचियं, पलिउंचिए पलिउंचियं, आलोएमाणस्स सव्वमेयं सकयं साहणियं जे एयाए पट्ठवणाए पट्ठविए निव्विसमाणे पडिसेवेइ सेवि कसिणे तत्थेव आरुहेयव्वे सिया ॥सू. १९॥ एवं बहुसोवि जे भिक्खू चाउम्मासियं वा साइरेगचाउम्मासियं वा पंचमासियं वा साइरेगपंचमासियं वा एएसिं परिहारट्ठाणाणं अण्णयरं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा पलिउंचियं आलोएमाणस्स ठवणिज्जं ठवइत्ता करणिज्जं वेयावडियं जाव पच्छा पडिसेवियं पच्छा आलोइयं जाव पलिउंचिए आलोएमाणस्स सव्वमेयं सकयं साहणियं आरुहेयव्वं सिया, एवं अपलिउंचिए'६०१'॥सू. २०॥ जे भिक्खू चाउम्मासियं वा जाव आलोएज्जा, पलिउंचियं आलोएमाणस्स जाव पलिउंचिए अपलिउंचियं, पलिउंचिए पलिउंचियं आलोएमाणस्स आरुहेयव्वे सिया ॥सू. २१॥ जे भिक्खू बहुसोवि चाउम्मासियं वा बहुसोवि साइरेगचाउम्मासियं वा जाव आरुहेयव्वे सिया '६२६'॥सू. २२॥ बहवे पारिहारिया बहवे अपारिहारिया इच्छेज्जा एगयओ अभिनिसेज्जं वा अभिनिसीहियं वा चेइत्तए नो णं कप्पइ थेरे अणापुच्छित्ता एगयओ अभिनिसेज्जं वा अभिनिसीहियं वा चेइत्तए, कप्पइ ण्हं से थेरे आपुच्छित्ता एगयओ अभिनिसेज्जं वा अभिनिसीहियं वा चेइत्तए, थेरा य ण्हं से वियरेज्जा एवं ण्हं कप्पइ एगयओ अभिनिसेज्जं वा अभिनिसीहियं वा चेइत्तए, थेरा य ण्हं से नो वियरेज्जा एवं ण्हं नो कप्पइ एगयओ अभिनिसेज्जं वा अभिनिसीहियं वा चेइत्तए, जो णं (णो) थेरेहिं अविइण्णं अभिनिसेज्जं वा अभिनिसीहियं वा चेएइ से सन्तरा छेए वा परिहारे वा '६१२'॥सू. २३॥ परिहारकप्पट्ठिए भिक्खू बहिया थेराणं वेयावडियाए गच्छेज्जा थेरा य से सरेज्जा कप्पइ से एगराइयाए पडिमाए जण्णं जण्णं दिसं अन्ने साहम्मिया विहरंति तण्णं तण्णं दिसं उवलित्तए, नो से कप्पइ तत्थ विहारवत्तियं वत्थए, कप्पइ से तत्थ कारणवत्तियं वत्थए तंसि च णं कारणंसि णिट्ठियंसि परो वएज्जा वसाहि अज्जो! एगरायं वा दुरायं वा

एवं से कप्पइ एगराय वा दुराय वा वत्थए, नो से कप्पइ एगरायाओ वा दुरायाओ वा परं वसित्तए, जो ण तत्थ एगरायाओ वा दुरायाओ वा परं वसइ से सन्तरा छेए वा परिहारे वा ॥सू.२४॥ परिहारकप्पट्ठिए भिक्खू बहिया थेराणं वेयावडियाए गच्छेज्जा, थेरा य से नो सरेज्जा, कप्पइ से निव्विसमाणस्स एगराइयाए पडिमाए जण्णं जण्णं दिसं जाव तत्थ एगरायाओ वा दुरायाओ परं वसइ से सन्तरा छेए वा परिहारे वा ॥सू.२५॥ परिहारकप्पट्ठिए भिक्खू बहिया थेराणं वेयावडियाए गच्छेज्जा थेरा य से सरेज्जा वा नो सरेज्जा वा कप्पइ से निव्विसमाणस्स एगराइयाए जाव छेए वा परिहारे वा ॥सू.२६॥ भिक्खू य गणाओ अवक्कम्म एगल्लविहारपडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरेज्जा, से य इच्छेज्जा दोच्चंपि तमेव गणं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, पुणो आलोएज्जा पुणो पडिक्कमेज्जा पुणो छेयपरिहारस्स उवट्ठाएज्जा ॥सू.२७॥ एवं गणावच्छेइए वा ॥सू.२८॥ एवं आयरिए ॥सू.२९॥ एवं उवज्झाए ॥सू.३०॥ भिक्खू य गणाओ अवक्कम्म पासत्थविहारं विहरेज्जा, से य इच्छेज्जा दोच्चंपि तमेव गणं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, अत्थि याइत्थ से पुणो आलोएज्जा पुणो पडिक्कमेज्जा पुणो छेयपरिहारस्स उवट्ठाएज्जा ॥सू.३१॥ एवं अहाछन्दो कुसीलो ओसन्नो संसत्तो '८११' ॥सू.३२॥ भिक्खू य गणाओ अवक्कम्म परपासंडपडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरेज्जा (परलिंगं च गेण्हेज्जा) से य इच्छेज्जा दोच्चंपि तमेव गणं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, नत्थि णं तस्स तप्पत्तियं केइ छेए वा परिहारे वा, नन्नत्थ एगाए आलोयणाए ॥सू.३३॥ भिक्खू य गणाओ अवक्कम्म ओहावेज्जा, से य इच्छेज्जा दोच्चंपि तमेव गणं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, नत्थि ण तस्स तप्पत्तियं केइ छेए वा परिहारे वा, नन्नत्थ एगाए सेहोवट्ठावणाए '९१४' ॥सू.३४॥ भिक्खू य अन्नयरं अकिच्चट्ठाणं पडिसेवित्ता इच्छेज्जा आलोएत्तए, जत्थेव अप्पणो आयरियउवज्झाए पासेज्जा कप्पइ से तस्संतिए आलोएत्तए वा पडिक्कमेत्तए वा निन्दित्तए वा गरहित्तए वा विउट्टित्तए वा विसोहित्तए वा अकरणयाए अब्भुट्ठेत्तए वा अहारिहं तवोकम्मं पायच्छित्तं पडिवज्जेत्तए वा १। नो चेव अप्पणो आयरियउवज्झाए पासेज्जा जत्थेव संभोइयं साहम्मियं बहुस्सुयं बज्झागमं पासेज्जा तस्संतिए कप्पइ से आलोएत्तए

वा जाव पडिवज्जेज्जए वा ३। नो चेव णं संभोइयं साहम्मियं बहुस्सुयं बज्झागमं पासेज्जा जत्थेव अन्नसंभोइयं साहम्मियं बहुस्सुयं बज्झागमं पासेज्जा कप्पइ से तस्संतिए आलोएत्तए वा जाव पडिवज्जेत्तए वा ३। नो चेव णं अन्नसंभोइयं साहम्मियं बहुस्सुयं बज्झागमं पासेज्जा जत्थेव सारूवियं बहुस्सुयं बज्झागमं पासेज्जा कप्पइ से तस्संतिए आलोएत्तए वा जाव पडिवज्जेत्तए वा ४। नो चेव णं सारूवियं बहुस्सुयं बज्झागमं पासेज्जा जत्थेव समणोवासगं पच्छाकडं बहुस्सुयं बज्झागमं पासेज्जा कप्पइ से तस्संतियं आलोएत्तए वा पडिक्कमेत्तए वा जाव पायच्छित्तं पडिवज्जेत्तए वा ५। नो चेव णं समणोवासगं पच्छाकडं बहुस्सुयं बज्झागमं पासेज्जा जत्थेव सम्मभावियाइं चेइयाइं पासेज्जा कप्पइ से तस्संतिए आलोएत्तए वा जाव पायच्छित्तं पडिवज्जित्तए वा ६। नो चेव णं सम्मभावियाइं चेइयाइं पासेज्जा बहिया गामस्स वा जाव संनिवेसस्स वा पाईणाभिमुहेण वा उदीणाभिमुहेण वा करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु कप्पइ से एवं वएत्तए-एवइया मे अवराहा एवइक्खुत्तो य अहं अवरद्धो, अरहंताणं सिद्धाणं अन्तिए आलोएज्जा पडिक्कमेज्जा निन्देज्जा जाव पायच्छित्तं पडिवज्जेज्जासि त्ति बेमि ७। ३३॥ सू. ३४॥ पढमो उद्देसओ ॥१॥

अथ द्वितीयोद्देशक:।

दो साहम्मिया एगयओ विहरंति, एगे तत्थ अन्नयरं अकिच्चट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा, ठवणिज्जं ठवइत्ता करणिज्जं वेयावडियं ॥ सू. १॥ दो साहम्मिया एगयओ विहरंति दोवि ते अन्नयरं अकिच्चट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा एगं तत्थ कप्पागं ठवइत्ता एगं निव्विसेज्जा, अह पच्छा से वि निव्विसेज्जा ॥ सू. २॥ बहवे साहम्मिया एगयओ विहरंति, एगे तत्थ अन्नयरं अकिच्चट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा, ठवणिज्जं ठवइत्ता करणिज्जं वेयावडियं ॥ सू. ३॥ बहवे साहम्मिया एगयओ विहरंति, सव्वेवि ते अन्नयरं अकिच्चट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा, एगं तत्थ कप्पागं ठवइत्ता अवसेसा निव्विसेज्जा, अह पच्छा सेऽवि निव्विसेज्जा ४०॥ सू. ४॥ परिहारकप्पट्ठिए भिक्खू गिलायमाणे अन्नयरं अकिच्चट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा १।

से य संथरेज्जा ठवणिज्जं ठवइत्ता करणिज्जं वेयावडियं २। से य नो संथरेज्जा अणुपरिहारिएणं करणिज्जं वेयावडियं ३। से य संते बले अणुपरिहारिएणं कीरमाणं वेयावडियं साइज्जेज्जा सेवि कसिणे तत्थेव आरुहेयव्वे सिया ४। '७२'॥सू. ५॥ परिहारकप्पट्ठियं भिक्खूं गिलायमाणं नो कप्पइ तस्स गणावच्छेइयस्स निज्जूहित्तए, अगिलाए तस्स करणिज्जं वेयावडियं जाव तओ रोगायङ्काओ विप्पमुक्को, तओ पच्छा तस्स अहालहुसए नामं ववहारे पट्ठवियव्वे सिया ॥सू. ६॥ अणवट्ठप्पं ॥सू. ७॥ पारञ्चियं भिक्खूं गिलायमाण जाव पट्ठवियव्वे सिया ॥सू. ८॥ खित्तचित्तं, दित्तचित्तं, जक्खाइट्ठं, उम्मायपत्तं, उवसग्गपत्तं, साहिगरणं, सपायच्छित्तं, भत्तपाणपडियाइक्खियं ॥सू. ९-१६॥ अट्ठजायं भिक्खुं जाव पट्ठवियव्वे सिया '२२६'॥सू. १७॥ अणवट्ठप्पं भिक्खुं अगिहिभूयं नो कप्पइ तस्स गणावच्छेइयस्स उवट्ठावित्तए ॥सू. १८॥ अणवट्ठप्पं भिक्खुं गिहिभूयं कप्पइ तस्स गणावच्छेइयस्स उवट्ठावित्तए ॥सू. १९॥ पारञ्चियं भिक्खुं अगिहिभूयं नो कप्पइ तस्स गणावच्छेइयस्स उवट्ठावित्तए ॥सू. २०॥ पारंचियं भिक्खुं गिहिभूय कप्पइ तस्स गणावच्छेइयस्स उवट्ठावित्तए ॥सू. २१॥ अणवट्ठप्पं भिक्खु अगिहिभूयं वा गिहिभूयं वा कप्पइ तस्स गणावच्छेइयस्स उवट्ठावित्तए जहा तस्स गणस्स पत्तियं सिया ॥सू. २२॥ पारंचिय भिक्खु अगिहिभूयं वा गिहिभूयं वा कप्पइ तस्स गणावच्छेइयस्स उवट्ठावित्तए जहा तस्स गणस्स पत्तियं सिया '२५८'॥सू. २३॥ दो साहम्मिया एगयओ विहरन्ति, एगे तत्थ अन्नयरं अकिच्चट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा 'अहं णं भन्ते! अमुगेण साहुणा सद्धिं इमंमि य इमंमि य कारणम्मि मेहुण-पडिसेवी' पच्चयहेउं च सयं पडिसेवियं भणति १। से तत्थ पुच्छियव्वे 'किं पडिसेवी अपडिसेवी?' से य वएज्जा 'पडिसेवी' परिहारपत्ते, से य वएज्जा 'नो पडिसेवी' नो परिहारपत्ते २। जं से पमाणं वयइ से पमाणओ घेत्तव्वे सिया, से किमाहु भन्ते!? सच्चपइन्ना ववहारा ३। '२७०'॥सू. २४॥ भिक्खू य गणाओ अवक्कम्म ओहाणुप्पेही गच्छेज्जा, से य आहच्च अणोहाइए से य इच्छेज्जा दोच्चंपि तमेव गणं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए १। तत्थ णं थेराणं इमेयारूवे विवाए समुप्पज्जित्था इमं णं अज्जो! जाणह किं पडिसेवि अपडिसेविं? २। से य पुच्छियव्वे 'किं पडिसेवी अपडिसेवी?' से य वएज्जा

'पडिसेवी' परिहारपत्ते, से य वएज्जा 'नो पडिसेवी' नो परिहारपत्ते १। जं से पमाणं वयइ से पमाणओ घेत्तव्वे, से किं एव माहु भन्ते ! १, सच्च-पइन्ना ववहारा ४।'२१९'॥सू.२५॥ एगपक्खियस्स भिक्खुस्स कप्पइ आयरियउवज्झायाणं इत्तरियं दिसं वा अणुदिसं वा उद्दिसित्तए वा धारि-त्तए वा जहा वा तस्स गणस्स पत्तियं सिया'२५५'॥सू.२६॥ बहवे परि-हारिया बहवे अपरिहारिया इच्छेज्जा एगयओ एगमासं वा दुमासं वा तिमासं वा चउमासं वा पंचमासं वा छम्मासं वा वत्थए, ते अन्नमन्नं संभुंजन्ति अन्नमन्नं नो संभुंजन्ति मासं, तओ पच्छा सव्वेवि एगयओ संभुंजन्ति'२६४'॥सू.२७॥ परिहारकप्पट्ठियस्स भिक्खुस्स नो कप्पइ असणं वा ४ दाउं वा अणुप्पदाउं वा, थेरा य णं वएज्जा-'इमं ता अज्जो! तुमं एएसिं देहि वा अणुप्पदेहि वा' एवं से कप्पइ दाउं वा अणुप्पदाउं वा, कप्पइ से लेवं अणुजाणावेत्तए 'अणुजाणह भन्ते! लेवाए' एवं से कप्पइ ले-वं समासेवेत्तए'३७२'॥सू.२८॥ परिहारकप्पट्ठिए भिक्खू सएणं पडिग्गहेणं बहिया अप्पणो वेयावडियाए गच्छेज्जा, थेरा य णं वएज्जा-'पडिग्गाहेहि अज्जो! अहंपि भोक्खामि वा पाहामि वा' एवं एहं से कप्पइ पडिग्गाहेत्तए १। तत्थ नो कप्पइ अपरिहारिएणं परिहारियस्स पडिग्गहंसि असणं वा ४ भोत्तए वा पायए वा, कप्पइ से सयंसि वा पडिग्गहंसि, सयंसि वा प-लासगंसि, सयंसि वा कमढगंसि, सयंसि वा खुव्वगंसि, सयंसि वा पाणिंसि उद्धट्टु उद्धट्टु भोत्तए वा पायए वा, एस कप्पे अपरिहारियस्स परिहा-रियाओ २। ॥सू.२९॥ परिहारकप्पट्ठिए भिक्खू थेराणं पडिग्गहेणं बहिया थेराणं वेयावडियाए गच्छेज्जा, थेरा य णं वएज्जा-'पडिग्गाहेहि अज्जो! तुमंपि पच्छा भोक्खसि वा पाहिसि वा' एवं से कप्पइ पडिग्गाहेत्तए १। तत्थ नो कप्पइ परिहारिएणं अपरिहारियस्स पडिग्गहंसि असणं वा ४ भो-त्तए वा पायए वा, कप्पइ से सयंसि पडिग्गहंसि वा, सयंसि पलासगंसि वा, सयंसि कमढगंसि वा, सयंसि खुव्वगंसि वा, सयंसि पाणिंसि वा, उद्धट्टु उद्धट्टु भोत्तए वा पायए वा, एस कप्पे परिहारियस्स अपरिहारियाओत्ति बेमि २।'३०८'॥सू.३०॥ बिइओ उद्देसओ ॥२॥

अथ तृतीयोद्देशकः।

भिक्खू य इच्छेज्जा गणं धारेत्तए, भगवं च से अपलि-

चिछन्ने एव नो से कप्पइ गणं धारेत्तए, नगवं च से पलिच्छिन्ने एवं से कप्पइ गणं धारेत्तए'२१०'॥सू.१॥ भिक्खू य इच्छेज्जा गणं धारेत्तए, नो से कप्पइ थेरे अणापुच्छित्ता गणं धारेत्तए, कप्पइ से थेरे आपुच्छित्ता गणं धारेत्तए १। थेरा य से वियरेज्जा एवं से कप्पइ गणं धारेत्तए, थेरा य से नो वियरेज्जा एवं से नो कप्पइ गणं धारेत्तए २। जण्णं थेरेहिं अविइण्णं गणं धारेज्जा से सन्तरा छेए वा परिहारे वा, जे ते साहम्मिया उट्ठाए विहरंति नत्थि णं तेसिं केइ छेए वा परिहारे वा ३'२१६'॥सू.२॥ तिवासपरियाए समणे निग्गंथे आयारकुसले संजमकुसले पवयणकुसले पन्नत्तिकुसले संगहकुसले उवग्गहकुसले अक्खय(क्खु)यायारे अभिन्नायारे असबलायारे असंकिलिट्ठायारचरित्ते बहुस्सुए बज्झागमे जहन्नेणं आयारपकप्पधरे कप्पइ (आयरि)उवज्झायत्ताए उद्दिसित्तए॥सू.३॥ सच्चेव णं से तिवासपरियाए समणे निग्गंथे नो आयारकुसले जाव नो उवग्गहकुसले खयायारे भिन्नायारे सबलायारे संकिलिट्ठायारचरित्ते अप्पसुए अप्पागमे नो कप्पइ आयरिउवज्झायत्ताए उद्दिसित्तए॥सू.४॥ एवं पंचवासपरियाए समणे निग्गंथे आयारकुसले जाव असंकिलिट्ठायारचरित्ते बहुस्सुये बज्झागमे जहन्नेणं दसाकप्पववहारधरे कप्पइ आयरियउवज्झायत्ताए उद्दिसित्तए॥सू.५॥ सच्चेव णं से पञ्चवासपरियाए समणे निग्गन्थे नो आयारकुसले जाव अप्पसुए अप्पागमे नो कप्पइ आयरियउवज्झायत्ताए उद्दिसित्तए॥सू.६॥ अट्ठवासपरियाए समणे निग्गन्थे आयारकुसले जाव जहन्नेणं ठाणसमवायधरे कप्पइ से आयरियत्ताए उवज्झायत्ताए पवत्तित्ताए थेरत्ताए गणित्ताए गणावच्छेइयत्ताए उद्दिसित्तए॥सू.७॥ सच्चेव णं से अट्ठवासपरियाए समणे निग्गन्थे नो आयारकुसले जाव नो कप्पइ आयरियत्ताए जाव गणावच्छेइयत्ताए उद्दिसित्तए'२८२'॥सू.८॥ निरुद्धपरियाए समणे निग्गन्थे कप्पइ तद्दिवसं आयरियउवज्झायत्ताए उद्दिसित्तए १। से किमाहु भंते!?, अत्थि णं थेराणं तहारूवाणि कुलाइं कडाणि पत्तियाणि थेज्जाणि वेसासियाणि संमयाणि सम्मुइकराणि अणुमयाणि बहुमयाणि भवन्ति २। तेहिं कडेहिं तेहिं पत्तिएहिं तेहिं थेज्जेहिं तेहिं वेसासिएहिं तेहिं संमएहिं तेहिं सम्मुइकरेहिं जं से निरुद्धपरियाए समणे निग्गन्थे कप्पइ

आयरियउवज्झायत्ताए उद्दिसित्तए तोद्देयसं ३,॥सू०९॥ निरुद्धविवासपरिया-
ए समणे निग्गन्थे कप्पइ आयरियउवज्झायत्ताए उद्दिसित्तए समुच्छेयक-
प्पंसि, तस्स णं आयारपकप्पस्स देसे अवट्ठिए अहिज्जिए भवइ, सेसे से य
'अहिज्जिस्सामि'त्ति अहिज्जेज्जा, एव से कप्पइ आयरियउवज्झायत्ताए
उद्दिसित्तए, से य 'अहिज्जिस्सामि'त्ति नो अहिज्जेज्जा एवं से नो कप्पइ आयरि-
यउवज्झायत्ताए उद्दिसित्तए'२१६'॥सू. १०॥ निग्गन्थस्स णं नवडहरतरुणस्स
आयरियउवज्झाए वीसुंभेज्जा, नो से कप्पइ अणायरियउवज्झायस्स होत्त-
ए, कप्पइ से पुव्विं आयरियं उद्दिसावेत्ता तओ पच्छा उवज्झायं, से किमा-
हु भंते !?, दुसंगहिए समणे निग्गंथे, तं जहा- आयरिएण य उवज्झाएण
य ॥सू. ११॥ निग्गन्थीए णं नवडहरतरुणियाए आयरियउवज्झाए पवत्तिणी
य विसुंभेज्जा १। नो से कप्पइ अणायरियउवज्झाइयाए अपवत्तिणीयाए
होत्तए, कप्पइ से पुव्विं आयरियं उद्दिसावेत्ता तओ पच्छा उवज्झायं उद्दिसि-
त्तए तओ पच्छा पवत्तिणिं उद्दिसित्तए २। से किमाहु भंते !?, तिसंगहिया
समणी निग्गन्थी, तं जहा - आयरिएणं उवज्झाएणं पवत्तिणीए य ३।'२३५'
॥सू. १२॥ भिक्खू य गणाओ अवक्कम्म मेहुणधम्मं पडिसेवेज्जा तिण्णि
संवच्छराणि तस्स तप्पत्तियं नो कप्पइ आयरियत्तं वा जाव गणावच्छेइ-
यत्तं वा उद्दिसित्तए वा धारेत्तए वा, तीहिं संवच्छरेहिं विइक्कन्तेहिं च-
उत्थगंसि संवच्छरंसि पट्ठियंसि ठियस्स उवसन्तस्स उवरयस्स पडि-
विरयस्स निव्विगारस्स एवं से कप्पइ आयरियत्तं वा जाव गणावच्छे-
यइत्तं वा उद्दिसित्तए वा धारेत्तए वा'२५१'॥सू.१३॥ गणावच्छेइए गणा-
वच्छेइयत्तं अनिक्खिवित्ता मेहुणधम्मं पडिसेवेज्जा जावज्जीवाए तस्स
तप्पत्तियं नो कप्पइ आयरियत्तं वा जाव गणावच्छेइयत्तं वा उद्दिसित्तए
वा धारेत्तए वा ॥सू. १४॥ गणावच्छेइए गणावच्छेइयत्तं निक्खिवित्ता मे-
हुणधम्मं पडिसेवेज्जा तिण्णि संवच्छराणि जाव गणावच्छेइयत्तं जाव
धारेत्तए वा ॥सू. १५॥ एवं आयरिए उवज्झाएवि दो आलावगा '२५६'
॥सू. १६-१७॥ भिक्खू य गणाओ अवक्कम्म ओहायइ तिण्णि संवच्छरा-
णि जाव धारेत्तए वा ॥सू. १८॥ गणावच्छेइए गणावच्छेइयत्तं अनिक्खिवित्ता
(निक्खिवित्ता) ओहाएज्जा जावज्जीवाए, निक्खिवित्ता तिण्णि संवच्छराइं जा-
व धारेत्तए वा ॥सू. १९-२०॥ एव आयरिए उवज्झाए वि '२८[illegible]'॥सू. २१-२२॥

भिक्खू य बहुस्सुए बज्झागमे बहुसो बहुआगाढागाढेसु कारणेसु माइमुसावाई असुई पावजीवी आवज्जीवाए तस्स तप्पत्तियं नो कप्पइ आयरियत्तं वा जाव गणावच्छेययत्तं वा उद्दिसित्तए वा धारेत्तए वा ॥सू. २३॥ एवं गणावच्छेइएवि जाव धारेत्तए वा ॥सू. २४॥ आयरियउवज्झाएवि ॥सू. २५॥ बहवे भिक्खुणो बहुस्सुया बज्झागमा बहुसो जाव जावज्जीवाए तेसिं तप्पत्तियं नो कप्पइ जाव उद्दिसित्तए वा धारेत्तए वा ॥सू. २६॥ एवं गणावच्छेइयावि जाव धारेत्तए वा ॥सू. २७॥ एवं आयरियउवज्झायावि, धारेत्तए वा ॥सू. २८॥ बहवे भिक्खुणो बहवे गणावच्छेइया बहवे आयरियउवज्झाया बहुस्सुया बज्झागमा बहुसो जाव आयरियत्तं वा उवज्झायत्तं वा पवत्तित्तं वा थेरत्तं वा गणधरत्तं वा गणावच्छेइयत्तं वा उद्दिसित्तए वा धारेत्तए वा त्तिबेमि '३६९' ॥२९॥ तइओ उद्देसओ ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थोद्देशकः।

नो कप्पइ आयरियउवज्झायस्स एगाणियस्स हेमन्तगिम्हासु चरित्तए (चरिए) ॥सू. १॥ कप्पइ आयरियउवज्झायस्स अप्पबीयस्स हेमन्तगिम्हासु चरित्तए ॥सू. २॥ नो कप्पइ गणावच्छेइयस्स अप्पबीयस्स हेमन्तगिम्हासु चरित्तए ॥सू. ३॥ कप्पइ गणावच्छेइयस्स अप्पतइयस्स हेमन्तगिम्हासु चरित्तए ॥सू. ४॥ नो कप्पइ आयरियउवज्झायस्स अप्पबिइयस्स वासावासं वत्थए ॥सू. ५॥ कप्पइ आयरियउवज्झायस्स अप्पतइयस्स वासावासं वत्थए ॥सू. ६॥ नो कप्पइ गणावच्छेइयस्स अप्पतइयस्स वासावासं वत्थए ॥सू. ७॥ कप्पइ गणावच्छेइयस्स अप्पचउत्थस्स वासावासं वत्थए '६५' ॥सू. ८॥ से गामंसि वा नगरंसि वा जाव संनिवेसंसि वा बहूणं आयरियउवज्झायाणं अप्पबिइयाणं बहूणं गणावच्छेइयाणं अप्पतइयाणं कप्पइ हेमन्तगिम्हासु वत्थए (चरित्तए) अन्नमन्नं निस्साए ॥सू. ९॥ से गामंसि वा जाव संनिवेसंसि वा बहूणं आयरियउवज्झायाणं अप्पतइयाणं बहूणं गणावच्छेइयाणं अप्पचउत्थाणं कप्पइ वासावासं वत्थए (चरित्तए) अन्नमन्नं निस्साए '१६२' ॥सू. १०॥ गामाणुगामं दूइज्जमाणो भिक्खू जं पुरओ कट्टु विहरेज्जा से आहच्च वीसुम्भेज्जा अत्थि या इत्थ अन्ने कोई उवसंपज्जणारिहे (कप्पइ) से उवसंपज्जियव्वे सिया १। नत्थि याइत्थ अन्ने

केइ उवसंपज्जणारिहे तस्स अप्पणो कप्पाए असंमत्ते कप्पइ से एगराइयाए
पडिमाए जण्णं जण्णं दिसं अन्ने साहम्मिया विहरंति तण्णं तण्णं दिसं उवलित्त-
ए २। नो से कप्पइ तत्थ विहारवत्तियं वत्थए कप्पइ से तत्थ कारणवत्तियं
वत्थए ३। तंसि च णं कारणंसि निट्ठियंसि परो वएज्जा. वसाहि अज्जो। एगरा-
यं वा दुरायं वा, एवं से कप्पइ एगरायं वा दुरायं वा वत्थए, नो से कप्पइ
एगरायाओ वा दुरायाओ वा परं वत्थए ४। जे तत्थ एगरायाओ वा दुरायाओ
वा परं वसइ से संतरा छेए वा परिहारे वा ५॥सू. ११॥ वासावासं पज्जोसविए
भिक्खू जाव छेए वा परिहारे वा २६१॥सू.१२॥ आयरियउवज्झाए गिलाय-
माणे अन्नयरं वएज्जा- अज्जो ममंसि णं कालगयंसि समाणंसि अयं समु-
क्कसियव्वे, से य समुक्कसणारिहे समुक्कसियव्वे, से य नो समुक्कसणारि-
हे नो समुक्कसियव्वे १। अत्थि या इत्थ अन्ने केइ समुक्कसणारिहे से समु-
क्कसियव्वे नत्थि या इत्थ अन्ने केइ समुक्कसणारिहे से चेव समुक्कसियव्वे
२। तंसि च णं समुक्किट्ठंसि परो वएज्जा- दुस्समुक्किट्ठं ते अज्जो! निक्खिवा-
हि, तस्स णं निक्खिवमाणस्स नत्थि केइ छेए वा परिहारे वा ३। जे तं साहम्मि-
या अहाकप्पेणं नो अब्भुट्ठा विहरंति अब्भुट्ठेंति सव्वेसिं तेसिं तप्पत्तियं
छेए वा परिहारे वा ४।'२३०'॥सू.१३॥ आयरियउवज्झाए ओहायमाणे अन्नय-
रं वएज्जा- अज्जो! ममए णं ओहावियंसि समाणंसि अयं समुक्कसियव्वे जाव
सव्वेसिं तेसिं तप्पत्तियं छेए वा परिहारे वा '२०३'॥सू.१४॥ आयरियउवज्झाए
सरमाणे परं चउरायपंचरायाओ कप्पागं भिक्खुं नो उवट्ठावेइ, कप्पाए अ-
त्थि याइं से केइ माणणिज्जे कप्पाए, नत्थि याइं से केइ छेए वा परिहारे वा,
नत्थि याइं से केइ माणणिज्जे कप्पाए से संतरा छेए वा परिहारे वा॥सू.
१५॥ आयरियउवज्झाए असरमाणे परं चउरायाओ वा पंचरायाओ कप्पागं
जाव छेए वा परिहारे वा॥सू.१६॥ आयरियउवज्झाए सरमाणे वा असरमा-
णे वा परं दसरायकप्पाओ कप्पागं भिक्खुं नो उवट्ठावेइ १। कप्पाए अत्थि
याइं से केइ माणणिज्जे कप्पाए नत्थि याइं से केइ छेए वा परिहारे वा,
२। नत्थि याइं से केइ माणणिज्जे कप्पाए संवच्छरं तस्स तप्पत्तियं नो
कप्पइ आयरियत्तं वा जाव गणावच्छेइयत्तं वा उद्दिसित्तए वा २,३।'३३५'
॥सू.१७॥ भिक्खू य गणाओ अवक्कम्म अन्नं गणं उवसंपज्जित्ताणं वि-
हरेज्जा, तं च केई साहम्मिए पासित्ता वएज्जा- कं अज्जो! उवसंपज्जित्ताणं

विहरसि ?' जे तत्थ सव्वराइणिए त वएज्जा - 'अह भंते! कस्स कप्पाए ?,' जे तत्थ बहुसुए त वएज्जा, 'ज वा से भगवं वक्खइ तस्स आणाउववायवयणनिद्देसे चिट्ठिस्सामि' '२४६' ॥सू. १८॥ बहवे साहम्मिया इच्छेज्जा एगयओ अभिनिचारियं चारित्तए, नो ण्हं कप्पइ थेरे अणापुच्छित्ता एगयओ अभिनिचारियं चरित्तए, कप्पइ ण्हं थेरे आपुच्छित्ता एगयओ अभिनिचारियं चरित्तए १। थेरा य से वियरेज्जा एवण्हं कप्पइ एगतओ अभिनिचारियं चरित्तए, थेरा य ण्हं नो वियरेज्जा एवं ण्हं नो कप्पइ एगयओ अभिनिचारियं चरित्तए २, जे तत्थ थेरेहिं अविइण्णे एगयओ अभिनिचारियं चरंति से संतरा छेए वा परिहारे वा ३॥सू.१९॥ चरियापविट्ठे भिक्खू जाव चउरायपंचरायाओ थेरे पासेज्जा सच्चेव आलोयणा सच्चेव पडिक्कमणा सच्चेव ओग्गहस्स पुव्वाणुन्नवणा चिट्ठइ, अहालन्दमवि ओग्गहे ॥सू.२०॥ चरियापविट्ठे भिक्खू पर चउरायपंचरायाओ थेरे पासेज्जा पुणो आलोएज्जा पुणो पडिक्कमेज्जा पुणो छेयपरिहारस्स उवट्ठाएज्जा १। भिक्खुभावस्स अट्ठाए दोच्चंपि ओग्गहे अणुन्नवेयव्वे सिया २। कप्पति से एवं वदित्तए - अणुजाणह भंते! मिओग्गहं अहालन्दं धुवं नितियं निच्छइयं जं वेउट्टियं, तओ पच्छा कायसंफासं ३॥सू.२१॥ चरियानियट्टे भिक्खू जाव कायसंफासं '४४७' ॥सू.२२-२३॥ दो साहम्मिया एगयओ विहरंति त जहा - सेहे य राइणिए य, तत्थ सेहतराए पलिच्छिन्ने राइणिए अपलिच्छिन्ने, तत्थ सेहतराए राइणिए उवसंपज्जियव्वे, भिक्खोववायं च दलयइ कप्पागं ॥सू.२४॥ दो साहम्मिया एगयओ विहरंति, त जहा - सेहे य राइणिए य, तत्थ राइणिए पलिच्छिन्ने सेहतराए अपलिच्छिन्ने, इच्छा राइणिए सेहतरागं उवसंपज्जेज्जा इच्छा नो उवसंपज्जेज्जा इच्छा भिक्खोववायं दलयइ कप्पागं इच्छा नो दलयइ कप्पागं '४६०' ॥सू.२५॥ दो भिक्खुणो एगयओ विहरंति, नो ण्हं कप्पइ अन्नमन्नस्स उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, कप्पइ ण्हं आहाराइणियाए अन्नमन्नं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए ॥सू. २६॥ एवं दो गणावच्छेइया ॥सू.२७॥ दो आयरियउवज्झाया ॥सू.२८॥ बहवे भिक्खुणो जाव विहरित्तए ॥सू.२९॥ बहवे गणावच्छेइया ॥सू.३०॥ एवं बहवे आयरियउवज्झाया ॥सू.३१॥ बहवे भिक्खुणो बहवे गणावच्छेइया बहवे आयरियउवज्झाया एगयओ विहरंति, नो ण्हं कप्पइ जाव विहरित्तए '५७४' ॥सू.३२॥ चउत्थो उद्देसओ ॥४॥

अथ पञ्चमो द्देशकः।

नो कप्पइ पवत्तिणीए अप्पबिइयाए हेमन्तगिम्हासु चारए ॥सू०१॥ कप्पइ पवत्तिणीए अप्पतइयाए हेमन्तगिम्हासु चारए ॥सू०२॥ नो कप्पइ गणावच्छेइणीए अप्पतइयाए हेमन्तगिम्हासु चारए ॥सू०३॥ कप्पइ गणावच्छेइणीए अप्पचउत्थीए हेमन्तगिम्हासु चारए ॥सू०४॥ नो कप्पइ पवत्तिणीए अप्पतइयाए वासावासं वत्थए ॥सू०५॥ कप्पइ पवत्तिणीए अप्पचउत्थीए वासावासं वत्थए ॥सू०६॥ नो कप्पइ गणावच्छेइणीए अप्पचउत्थीए वासावासं वत्थए ॥सू०७॥ कप्पइ गणावच्छेइणीए अप्पपंचमीए वासावासं वत्थए ॥सू०८॥ से गामंसि वा जाव संनिवेसंसि वा (रायहाणिंसि वा) बहूणं पवत्तिणीणं अप्पतइयाणं बहूणं गणावच्छेइणीणं अप्पचउत्थीणं कप्पइ हेमन्तगिम्हासु चारए अन्नमन्नं निसाए ॥सू०९॥ से गामंसि वा जाव संनिवेसंसि वा बहूणं पवत्तिणीणं अप्पचउत्थीणं बहूणं गणावच्छेइणीणं अप्पपञ्चमीणं कप्पइ वासावासं वत्थए अन्नमन्नं निसाए ॥सू०१०॥ गामाणुगामं दुइज्जमाणी निग्गन्थी य जं पुरओ काउं विहरेज्जा सा य आहच्च वीसुंभेज्जा अत्थि या इत्थ काइ अन्ना उवसंपज्जणारिहा, सा उवसंपज्जियव्वा, नत्थि या इत्थ काइ अन्ना उवसंपज्जणारिहा तीसे य अप्पणो कप्पाए असमत्ता एवं से कप्पइ एगराइयाए पडिमाए जण्णं जण्णं दिसं अन्नाओ साहम्मिणीओ विहरंति तण्णं तण्णं दिसं जाव छेए वा परिहारे वा ॥सू०११॥ वासावासं पज्जोसविया निग्गन्थी पुरओ काउं विहरेज्जा सा य आहच्च वीसुंभेज्जा अत्थि या इत्थ काइ अन्ना उवसंपज्जणारिहा सा उवसंपज्जियव्वा जाव वा छेए परिहारे वा ॥सू०१२॥ पवत्तिणी य गिलायमाणी अन्नयरं वएज्जा 'मए णं अज्जो! कालगयाए समाणीए इयं समुक्कसियव्वा' सा य समुक्कसणारिहा सा समुक्कसियव्वा सिया, सा य नो समुक्कसणारिहा नो समुक्कसियव्वा सिया १। अत्थि या इत्थ काइ अण्णा समुक्कसणारिहा सा समुक्कसियव्वा, नत्थि या इत्थ काइ अण्णा समुक्कसणारिहा सा

चेव समुक्कसियव्वा २। तंसि च णं समुक्किकट्ठंसि परा वएज्जा-दुस्सप्पक्किट्ठं ते अज्जो! निविस्सामि, तीसे णिक्खेवमाणीए णत्थि केइ छेए वा परिहारे वा ३। तं जाओ साहम्मिणीओ अहाकप्पेणं नो उवट्ठायंति तासिं सव्वासिं तप्पत्तियं छेए वा परिहारे वा ४॥सू.१३॥ पवत्तिणी य ओहायमाणी एगयरं वएज्जा-ममंसि णं अज्जो! ओहाइयंसि एसा समुक्कसियव्वा, समुक्कसणारिहा सा समुक्कसियव्वा सिया, सा य नो जाव छेए वा परिहारे वा '१'॥सू.१४॥ निग्गन्थस्स नवडहरतरुणगस्स आयारपकप्पे नामं अज्झयणे परिब्भट्ठे सिया १। से य पुच्छियव्वे 'केण ते कारणेणं अज्जो! आयारपकप्पे नामं अज्झयणे परिब्भट्ठे ? किं आबाहेणं उदाहु पमाएणं ?, से य वएज्जा-'नो आबाहेणं, पमाएणं' जावज्जीवाए तस्स तप्पत्तियं नो कप्पइ आयरियत्तं वा जाव गणावच्छेइयत्तं वा उद्दिसित्तए वा धारेत्तए वा २। से य वएज्जा-'आबाहेणं, नो पमाएणं' से य संठवेस्सामीति संठवेज्जा, एवं से कप्पइ आयरियत्तं वा जाव गणावच्छेइयत्तं वा उद्दिसित्तए वा धारेत्तए वा ३। से य संठवेस्सामीति नो संठवेज्जा एवं से नो कप्पइ आयरियत्तं वा जाव गणावच्छेइयत्तं वा उद्दिसित्तए वा धारेत्तए वा ४॥सू.१५॥ निग्गन्थीए णं नवडहरतरुणियाए आयारपकप्पे नामं अज्झयणे परिब्भट्ठे सिया १। सा य पुच्छियव्वा-'केण ते कारणेण अज्जो! आयारपकप्पे नामं अज्झयणे परिब्भट्ठे ?' किं आबाहेणं पमाएणं ?, सा य वएज्जा-'नो आबाहेणं, पमाएणं' जावज्जीवाए तीसे तप्पत्तियं नो कप्पइ पवत्तिणित्तं वा गणावच्छेइणियत्तं वा उद्दिसित्तए वा धारेत्तए वा २। सा य वएज्जा-'आबाहेणं, नो पमाएणं' सा य संठवेस्सामीति संठवेज्जा एवं से कप्पइ पवत्तिणीत्तं वा गणावच्छेइणियत्तं वा उद्दिसित्तए वा धारेत्तए वा ३। सा य संठवेस्सामीति नो संठवेज्जा, एवं से नो कप्पइ पवत्तिणीत्तं वा गणावच्छेइणियत्तं वा उद्दिसित्तए वा धारेत्तए वा ४॥सू.१६॥ थेराणं थेरभूमिपत्ताणं आयारपकप्पे नामं अज्झयणे परिब्भट्ठे सिया १। कप्पइ तेसिं संठवेत्ताण वा असंठवेत्ताण वा आयरियत्तं वा जाव गणावच्छेइयत्तं वा उद्दिसित्तए वा धारेत्तए वा [illegible]॥सू.१७॥ थेराणं थेरभूमिपत्ताणं आयारपकप्पे नामं अज्झयणे प-

.रिक्अट्ठे सिया १। कप्पइ तेसिं संनिसण्णाण वा तुयट्टाण वा उत्ताण-याण वा पासिल्लयाण वा आयारपकप्पे नामं अज्झयणे दोच्चंपि तच्चंपि पडिपुच्छित्तए वा पडिसारित्तए वा २।'४४'॥सू.१८॥ जे निग्गन्था य निग्गन्थीओ य संभोइया सिया १। नो ण्हं कप्पइ ताणिं अन्नमन्नस्स अंतिए आलोएत्तए २। अत्थि या इत्थ णं केइ आलोयणारिहे, कप्पइ से तेसिं अंतिए आलोएत्तए ३। नत्थि या इत्थ केइ आलोयणारिहे, एवं ण्हं कप्पइ अन्नमन्नस्स अंतिए आलोएत्तए ४।'७५'॥सू. १९॥ जे निग्गन्था य निग्गन्थीओ य संभोइया सिया १। नो तेसिं कप्पइ अन्नमन्नेण वेयावच्चं कारवेत्तए, अत्थि या इत्थ केइ वेयावच्चकरे कप्पइ ण्हं, तेणं वेयावच्चं करावेत्तए २। नत्थि याइ ण्हं इत्थ केइ वेयावच्चकरे एवं ण्हं कप्पइ अन्नमन्नेणं वेयावच्चं कारवेत्तए ३।'५०'॥सू.२०॥ निग्गन्थं च णं राओ वा वियाले वा दीहपट्ठो लूसेज्जा, इत्थी वा पुरिसस्स आमज्जेज्जा, पुरिसो वा इत्थीए आमज्जेज्जा १। एवं से कप्पइ, एवं से चिट्ठइ, परिहारं च से न पाउणइ, एस कप्पे थेरकप्पियाणं २। एवं से नो कप्पइ, एवं से नो चिट्ठइ, परिहारं च नो पाउणइ, एस कप्पे जिणकप्पियाणंति बेमि ३।'१४३'॥सू. २१॥ पंचमो उद्देसो ॥५॥

अथ षष्ठोद्देशकः।

भिक्खू य इच्छेज्जा नायविहिं एत्तए १, नो से कप्पइ थेरे अणापुच्छित्ता नायविहिं एत्तए, कप्पइ से थेरे आपुच्छित्ता नायविहिं एत्तए २। थेरा य से वियरेज्जा एवं से कप्पइ नायविहिं एत्तए, थेरा य से नो वियरेज्जा एवं से नो कप्पइ नायविहिं एत्तए ३। जं तत्थ थेरेहिं अविइण्णे नायविहिं एइ से सन्तरा छेए वा परिहारे वा ४। नो से कप्पइ अप्पसुयस्स अप्पागमस्स एगाणियस्स नायविहिं एत्तए ५। कप्पइ से जे तत्थ बहुस्सुए बब्भागमे तेण सद्धिं नायविहिं एत्तए ६। तत्थ से पुव्वागमणेण पुव्वाउत्ते चाउलोदणे पच्छाउत्ते भिलिंगसूवे, कप्पइ से चाउलोदणे पडिग्गाहेत्तए, नो से कप्पइ भिलिंगसूवे पडिग्गाहेत्तए ७। तत्थ पुव्वागमणेण पुव्वाउत्ते भिलिंगसूवे पच्छाउत्ते चाउलोदणे,

कप्पइ से भिलिंगसूवे पडिगाहित्तए, नो से कप्पइ चाउलोदणे पडिगाहित्तए ८। तत्थ से पुव्वागमणेणं दोवि पुव्वाउत्ताइं कप्पइ से दोवि पडिगाहित्तए ९। तत्थ से पुव्वागमणेणं दोवि पच्छाउत्ते नो से कप्पइ दोवि पडिगाहित्तए १०। जे से तत्थ पुव्वागमणेणं पुव्वाउत्ते से कप्पइ पडिगाहित्तए, जे से तत्थ पुव्वागमणेणं पच्छाउत्ते नो से कप्पइ पडिगाहित्तए ११।'७२'॥सू. १॥ आयरियउवज्झायस्स गणंसि पंच अइसेसा पन्नत्ता तं जहा - आयरियउवज्झाए अंतो उवस्सयस्स पाए निगिज्झिय२ पप्फोडेमाणे वा पमज्जेमाणे वा नाइक्कमइ १। आयरियउवज्झाए अंतो उवस्सयस्स उच्चारं वा पासवणं वा विगिंचमाणे वा विसोहेमाणे वा नाइक्कमइ २। आयरियउवज्झाए प्रभू इच्छा वेयावडियं करेज्जा इच्छा नो करेज्जा ३। आयरियउवज्झाए अंतो उवस्सयस्स (उवरए) एगरायं वा दुरायं वा वसमाणे नाइक्कमइ ४। आयरियउवज्झाए बाहिं उवस्सयस्स एगरायं वा दुरायं वा वसमाणे नाइक्कमइ ५। ॥सू. २॥ गणावच्छेइयस्स णं गणंसि दो अइसेसा पन्नत्ता, तं जहा - गणावच्छेइए अंतो उवस्सयस्स एगरायं वा दुरायं वा वसमाणे नाइक्कमइ १। गणावच्छेइए बाहिं उवस्सयस्स एगरायं वा दुरायं वा वसमाणे नो अइक्कमइ २।'२६९'॥सू. ३॥ से गामंसि वा जाव संनिवेसंसि वा एगवगडाए एगदुवाराए एगनिक्खमणपवेसाए नो कप्पइ बहूणं अगडसुयाणं एगयओ वत्थए १। अत्थि याइ णं केइ आयारपकप्पधरे नत्थि याइं णं केइ छेए वा परिहारे वा २। नत्थि याइ णं केइ आयारपकप्पधरे सव्वेसिं तेसिं तप्पत्तियं छेए वा परिहारे वा ३॥सू. ४॥ से गामंसि वा जाव संनिवेसंसि वा अभिनिव्वगडाए अभिनिदुवाराए अभिनिक्खमणपवेसणाए नो कप्पइ बहूणं अगडसुयाणं एगयओ वत्थए १। अत्थि याइ णं केइ आयारपकप्पधरे जे तप्पत्तियं रयणिं संवसइ नत्थि या इत्थं केइ छेए वा परिहारे वा २। नत्थि या इत्थ केइ आयारपकप्पधरे जे तप्पत्तियं रयणिं संवसइ सव्वेसिं तेसिं तप्पत्तियं छेए वा परिहारे वा ३।'२६८'॥सू. ५॥ से गामंसि वा जाव संनिवेसंसि वा अभिनिव्वगडाए अभिनिदुवाराए अभिनिक्खमणपवेसणाए नो कप्पइ बहुसुयस्स बब्भागमस्स एगाणियस्स भिक्खुस्स वत्थए किमंग पुण अप्पसुय-

स्स अप्पागमस्स भिक्खुस्स ॥सू. ६॥ से गामंसि वा जाव संणिवेसंसि वा एगवगडाए एगदुवाराए अभिनिक्खमणपवेसाए कप्पइ बहुस्सुयस्स बज्झागमस्स एगाणियस्स भिक्खुस्स वत्थए दुहओ कालं भिक्खुभावं पडिजागरमाणस्स '२५७'॥सू.७॥ जत्थ एए बहवे इत्थीओ अ पुरिसा अ पण्हायेन्ति तत्थ से समणे निग्गंथे अन्नयरंसि अचित्तंसि सोयंसि सुक्कपोग्गले निग्घाएमाणे हत्थकम्मपडिसेवणपत्ते आवज्जइ मासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं १। जत्थ एए बहवे इत्थीओ अ पुरिसा अ पण्हायेन्ति तत्थ से समणे निग्गंथे अन्नयरंसि अचित्तंसि सोयंसि सुक्कपोग्गले निग्घाएमाणे मेहुणपडिसेवणपत्ते आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं २। '२६७' ॥सू.८॥ नो कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा निग्गंथिं अण्णगणाओ आगयं खुयायारं सबलायारं भिन्नायारं संकिलिट्ठायारचरित्तं तस्स ठाणस्स अणालोयावेत्ता अपडिक्कमावेत्ता अनिन्दावेत्ता अगरहावेत्ता अविउट्टावेत्ता अविसोहावेत्ता अकरणाए अणब्भुट्ठावेत्ता अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं अपडिवज्जावेत्ता उवट्ठावेत्तए वा संभुञ्जित्तए वा संवसित्तए वा तीसे इत्तरियं दिसं वा अणुदिसं वा उद्दिसित्तए वा धारेत्तए वा २। ॥सू.९॥ कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा निग्गंथिं अन्नगणाओ आगयं खुयायारं सबलायारं भिन्नायारं संकिलिट्ठायारचरित्तं तस्स ठाणस्स आलोयावेत्ता पडिक्कमावेत्ता निन्दावेत्ता गरहावेत्ता विउट्टावेत्ता विसोहावेत्ता अकरणाए अब्भुट्ठावेत्ता अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं पडिवज्जावेत्ता उवट्ठावेत्तए वा जाव धारेत्तए वा '३८८'॥सू.१०॥ नो कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा निग्गंथं अन्नगणाओ आगयं खुयायारं सबलायारं भिन्नायारं संकिलिट्ठायारचरित्तं तस्स ठाणस्स अणालोयावेत्ता जाव उद्दिसित्तए वा धारेत्तए वा ॥सू.११॥ कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा निग्गंथं अण्णगणाओ आगयं खुयायारं सबलायारं भिन्नायारं संकिलिट्ठायारचरित्तं तस्स ठाणस्स आलोयावेत्ता जाव उद्दिसित्तए वा धारित्तए वा। त्तिबेमि ॥सू.१२॥ छट्ठो उद्देसओ ॥६॥

अथ सप्तमोद्देशकः।

जे निग्गन्था य निग्गन्थीओ य संभोइया सिया, नो कप्पइ निग्गन्थीणं निग्गन्थे अणापुच्छित्ता निग्गन्थिं अन्नगणाओ आगयं खुयायारं सबलायारं भिन्नायारं संकिलिट्ठायारचरित्तं तस्स ठाणस्स अणालोयावेत्ता जाव पायच्छित्तं नवोकम्मं अपडिवज्जावेत्ता पुच्छित्तए वा वाएत्तए वा उवट्ठावेत्तए वा संभुञ्जित्तए वा संवसित्तए वा तीसे इत्तरियं दिसं वा अणुदिसं वा उद्दिसित्तए वा धारेत्तए वा ॥सू॰१॥ जे निग्गन्था य निग्गन्थीओ य संभोइया सिया, कप्पइ निग्गन्थीणं निग्गन्थे आपुच्छित्ता निग्गन्थिं अन्नगणाओ आगयं खुयायारं सबलायारं भिन्नायारं संकिलिट्ठायारचरित्तं तस्स ठाणस्स आलोयावेत्ता पडिक्कमावेत्ता जाव उवट्ठावेत्तए वा संभुंजित्तए वा संवसित्तए वा तीसे इत्तरियं दिसं वा अणुदिसं वा उद्दिसित्तए वा धारित्तए वा ॥सू॰२॥ जे निग्गन्था य निग्गन्थीओ य संभोइया सिया १। कप्पइ निग्गन्थाणं निग्गन्थीओ य आपुच्छित्ता वा अणापुच्छित्ता वा निग्गन्थी अण्णगणाओ आगयं खुयायारं जाव तस्स ठाणस्स आलोयावेत्ता पडिक्कमावेत्ता जाव उवट्ठावित्तए वा संभुञ्जित्तए वा संवसित्तए वा तीसे इत्तरियं दिसं वा अणुदिसं वा उद्दिसित्तए वा धारेत्तए वा २। तं च निग्गन्थीओ नो इच्छेज्जा सय(सेव)मेव नियंठाणं जाव उवट्ठावेत्तए वा संभुञ्जित्तए वा संवसित्तए वा तीसे इत्तरियं दिसं वा अणुदिसं वा उद्दिसित्तए वा धारेत्तए वा ३।'४४'॥सू॰३॥ जे निग्गन्था य निग्गन्थीओ य संभोइया सिया १। नो एहं कप्पइ पारोक्खं पाडिएक्कं संभोइयं विसंभोगं करेत्तए, कप्पइ एहं पच्चक्खं पाडिएक्कं संभोइयं विसंभोगं करेत्तए २। जत्थेव ते अन्नमन्नं पासेज्जा तत्थेव एवं वएज्जा 'अहं'णं अज्जो! तुमाए सद्धिं इमम्मि य २ कारणम्मि पच्चक्खं पाडिएक्कं संभोगं विसंभोगं करेमि ३। से य पडितप्पेज्जा, एवं से नो कप्पइ पच्चक्खं पाडिएक्कं संभोइयं विसंभोगं करेत्तए, से य नो पडितप्पेज्जा एवं से कप्पइ पच्चक्खं पाडिएक्कं संभोइयं विसंभोगं करेत्तए ४।'८६'॥सू.४॥ जाओ निग्गन्थीओ वा निग्गन्था वा संभोइया सिया १। नो एहं कप्पइ निग्गन्थिं पच्चक्खं पाडिएक्कं संभोइयं विसंभोगं करेत्तए, कप्पइ एहं पारोक्खं पाडि-

एक्कं संभोइयं विसंभोगं करेत्तए २। जत्थेव ताओ अप्पणो आय-
रियउवज्झाए पासेज्जा तत्थेव एवं वएज्जा 'अहं णं भंते! अमुगीए
अज्जाए सद्धिं इमम्मि कारणम्मि पारोक्खं पाडिएक्कं संभोगं विसं-
भोगं करेमि ३। सा य से पडितप्पेज्जा एवं से नो कप्पइ पारोक्खं पा-
डिएक्कं संभोइयं विसंभोगं करेत्तए, सा य से नो पडितप्पेज्जा एवं से
कप्पइ पारोक्खं पाडिएक्कं संभोइयं विसंभोगं करेत्तए ४ '९४'॥सू.
५॥ नो कप्पइ निग्गन्थाणं निग्गन्थिं अप्पणो अट्ठाए पव्वावेत्तए वा मु-
ण्डावेत्तए वा सिक्खावेत्तए वा सेहावेत्तए वा उवट्ठावेत्तए वा संभुंजि-
त्तए वा संवसित्तए वा तीसे इत्तरियं दिसं वा अणुदिसं वा उद्दिसित्तए वा
धारेत्तए वा ॥सू. ६॥ कप्पइ निग्गन्थाणं निग्गन्थिं अन्नेसिं अट्ठाए प-
व्वावेत्तए वा मुण्डावेत्तए वा सिक्खावेत्तए वा सेहावेत्तए वा उवट्ठावेत्तए
वा संभुंजित्तए वा संवसित्तए वा तीसे इत्तरियं दिसं अणुदिसं वा उद्दिसि-
त्तए वा धारेत्तए वा '११८'॥सू. ७॥ नो कप्पइ निग्गन्थीणं निग्गन्थिं अप्प-
णो अट्ठाए पव्वावेत्तए वा मुंडावेत्तए वा जाव धारित्तए वा॥सू. ८॥
**कप्पइ निग्गंथीणं निग्गंथिं अट्ठाए पव्वावेत्तए वा जाव धारित्तए
वा ॥सू. ९॥** नो कप्पइ निग्गंथीणं विइकिट्ठियं दिसं वा अणुदिसं वा
उद्दिसित्तए वा धारेत्तए वा ॥सू. १०॥ कप्पइ निग्गंथाणं विइकिट्ठियं दि-
सं वा अणुदिसं वा उद्दिसित्तए वा धारेत्तए वा '१४४'॥सू. ११॥ नो क-
प्पइ निग्गंथाणं विइकिट्ठाइं पाहुडाइं विओसवेत्तए ॥सू. १२॥ कप्पइ
निग्गंथीणं विइकिट्ठाइं पाहुडाइं विओसवेत्तए '१७९'॥सू. १३॥ नो कप्प-
इ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा विइकिट्ठे काले सज्झायं उद्दिसित्तए
वा करेत्तए वा ॥सू. १४॥ कप्पइ निग्गंथीणं विइकिट्ठए काले स-
ज्झायं करेत्तए निग्गंथनिस्साए '२६४'॥सू. १५॥ नो कप्पइ निग्गं-
थाण वा निग्गंथीण वा असज्झाइए सज्झायं करेत्तए ॥सू. १६॥ कप्प-
इ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा सज्झाइए सज्झायं करेत्तए ॥सू. १७॥
नो कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा अप्पणो असज्झाइए सज्झा-
यं करेत्तए, कप्पइ ण्हं अन्नमन्नस्स वायणं दलइत्तए '३०'॥सू. १८॥
तिवासपरियाए समणे निग्गंथे तीसवासपरियायाए समणीए नि-
ग्गंथीए कप्पइ उवज्झायत्ताए उद्दिसित्तए ॥सू. १९॥ पञ्चवासपरि-

थाए समणे निग्गंथे सट्ठिवासपरियाए समणीए निग्गंथीए कप्पइ आयरियउवज्झायत्ताए उद्दिसित्तए '४१६'॥सू.२०॥ गामाणुगामं दूइज्जमाणे भिक्खू अ आहच्च वीसुंभेज्जा, तं च सरीरगं केइ साहम्मिया पासेज्जा, कप्पइ से तं सरीरगं मा सागारियमित्तिकट्टु तं सरीरगं एगंते अचित्ते बहुफासुए थंडिले पडिलेहित्ता पमज्जित्ता परिट्ठवेत्तए १। अत्थि या इत्थ केइ साहम्मियसंतिए उवगरणजाए परिहरणारिहे कप्पइ णं से सागारकडं गहाय दोच्चंपि ओग्गहं अणुन्नवेत्ता परिहारं परिहरेत्तए २'४७२'॥सू.२१॥ सागारिए उवस्सयं वक्कएणं पउंजेज्जा १। से अ वक्कइयं वएज्जा 'इमम्हि य इमम्हि य ओवासे समणा निग्गन्था परिवसंति १', से सागारिए परिहारिए २। से य नो वएज्जा, वक्कइए वएज्जा-इमम्मि य इमम्मि य ओवासे समणा निग्गन्था परिवसन्तु, से सागारिए पारिहारिए ३। दोवि ते वएज्जा-अयंसि २ ओवासे समणा निग्गन्था परिवसन्तु, दोवि ते सागारिया पारिहारिया ४॥सू.२२॥ सागारिए उवस्सयं विक्किणेज्जा १। से य कइयं वएज्जा-इमम्हि य इमम्हि य ओवासे समणा निग्गन्था परिवसन्ति, से सागारिए पारिहारिए २। से य नो एवं वएज्जा, कइए वएज्जा-अयंसि २ ओवासे समणा निग्गन्था परिवसन्तु, से सागारिए पारिहारिए ३। दोवि ते वएज्जा-अयंसि २ ओवासे समणा निग्गन्था परिवसन्तु, दोवि सागारिया पारिहारिया ४॥सू.२३॥ विहवधूया नायकुलधूयवासिणी सावियावि ओग्गहं अणुन्नवेयव्वा सिया किमङ्ग पुण तप्पिया वा भाया वा पुत्ते वा १, से य दोवि ओग्गहं ओगेण्हियव्वा ॥सू.२४॥ पहिएवि ओग्गहं अणुन्नवेयव्वे '५१७'॥सू.२५॥ से रज्जपरियट्टेसु संथडेसु अव्वोगडेसु अव्वोच्छिन्नेसु अपरपरिग्गहिएसु भिक्खुभावस्स अट्ठाए सच्चेव ओग्गहस्स पुव्वाणुन्नवणा चिट्ठइ अहालन्दमवि ओग्गहे ॥सू.२६॥ से य रज्जपरियट्टेसु असंथडेसु वोगडेसु वोच्छिन्नेसु परपरिग्गहिएसु भिक्खुभावस्स अट्ठाए दोच्चंपि ओग्गहे अणुन्नवेयव्वे सिया '५४५'॥सू.२७॥ सत्तमो उद्देसओ ॥

अथ अष्टमोद्देशकः।

गाहा॥ उडु पज्जोसविए ताए गहाए ताए पएसाए

ताए उवासन्तराए जमिणं सेज्जासंथारगं लभेज्जा तमिणं ममेव सिया १। थेरा य से अणुजाणेज्जा तस्सेव सिया २। थेरा य से नो अणुजाणेज्जा एवं से कप्पइ आहाराइणियाए सेज्जासंथारगं पडिग्गाहेत्तए ३॥सू.१॥ से य अहालहुसगं सेज्जासंथारगं गवेसेज्जा, जं चक्किया एगेणं हत्थेण ओगिज्झिय जाव एगाहं वा दुयाहं वा तियाहं वा अद्धाणं परिवहित्तए, एस मे वासावासासु भविस्सइ॥सू.२॥ से अहालहुसगं सेज्जासंथारगं गवेसेज्जा, जं चक्किया एगेणं हत्थेणं ओगिज्झिय जाव एगाहं वा दुयाहं वा तियाहं वा अद्धाणं परिवहित्तए, एस मे हेमन्तगिम्हासु भविस्सइ॥सू.३॥ से अहालहुसगं सेज्जासंथारगं जाएज्जा, जं चक्किया एगेणं हत्थेणं ओगिज्झिय जाव एगाहं वा दुयाहं वा तियाहं वा चउयाहं वा पंचयाहं वा दूरमवि अद्धाणं परिवहित्तए, एस मे वुड्ढावासासु भविस्सइ '१२'॥सू.४॥ थेराणं थेरभूमिपत्ताणं कप्पइ दंडए वा भंडए वा छत्तए वा मत्तए वा लट्ठिया वा (भिसिं वा) चेले वा (चेलचिलिमिलिया वा) चम्मे वा (चम्मकोसए वा) चम्मपलिच्छेयणए वा अविरहिए ओवासे ठवेत्ता गाहावइकुलं भत्ताए वा पाणाए वा (पिंडवायपडियाए) पविसित्तए वा निक्खमित्तए वा, कप्पइ से संनियट्टचारिस्स दोच्चंपि ओग्गहं अणुन्नवेत्ता परिहरित्तए '१२३'॥सू.५॥ नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा पाडिहारियं वा सागारियसंतियं वा सेज्जासंथारगं दोच्चंपि ओग्गहं अणणुन्नवेत्ता बहिया नीहरित्तए॥सू.६॥ कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गंथीण वा पाडिहारियं वा सागारियसंतियं वा सेज्जासंथारगं दोच्चंपि ओग्गहं अणुन्नवेत्ता बहिया नीहरित्तए॥सू.७॥ नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा पाडिहारियं वा सागारियसंतियं वा सेज्जासंथारगं पच्चप्पिणित्ता दोच्चंपि तमेव ओग्गहं अणणुन्नवेत्ता अहिट्ठित्तए॥सू.८॥ कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा पाडिहारियं वा सागारियसंतियं वा सेज्जासंथारगं पच्चप्पिणित्ता दोच्चंपि तमेव ओग्गहं अणुन्नवेत्ता अहिट्ठित्तए॥सू.९॥ नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा पुव्वामेव ओग्गहं ओगिण्हित्ता तओ पच्छा अणुन्नवेत्तए॥सू.१०॥ कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा पुव्वामेव ओग्गहं अणुन्नवेत्ता तओ पच्छा ओगिण्हित्तए १। अह पुण एवं

जाणेज्जा-इह खलु णिग्गन्थाण वा णिग्गन्थीण वा णो सुलभे पाडिहारिए सेज्जासंथारएत्तिकट्टु एवं ण्हं कप्पइ पुव्वामेव ओग्गहं ओगिण्हित्ता तओ पच्छा अणुन्नवेत्तए २। मा वहउ अज्जो ! बिइयं(वइ) अणुलोमेणं अणुलोमेयव्वे सिया ३।'१५३'॥सू. ११॥ णिग्गन्थस्स णं गाहावइकुलं पिण्डवायपडियाए अणुपविट्ठस्स अहालहुसए उवगरणजाए परिभट्ठे सिया १। तं च केई साहम्मिया पासेज्जा कप्पइ ण्हं से सागारकडं गहाय जत्थेव ते अन्नमन्नं पासेज्जा तत्थेव एवं वएज्जा-इमे ते अज्जो ! किं परिन्नाए ? से य वएज्जा-परिन्नाए, तस्सेव पडिणिज्जाएयव्वे सिया २। से य वएज्जा-णो परिन्नाए, तं णो अप्पणा परिभुञ्जेज्जा, णो अन्नमन्नस्स दावए, एगंते बहुफासुए पएसे परिट्ठवेयव्वे सिया ३॥सू. १२॥ णिग्गन्थस्स णं बहिया वियारभूमिं वा विहारभूमिं वा निक्खंतस्स अहालहुसए जाव परिट्ठवेयव्वे सिया ॥सू. १३॥ णिग्गन्थस्स णं गामाणुगामं दूइज्जमाणस्स अन्नयरे उवगरणजाए परिभट्ठे सिया १। तं च केई साहम्मिया पासेज्जा, कप्पइ से सागारकडं गहाय दूरमवि अद्धाणं परिवहित्तए २। जत्थेव अन्नमन्नं पासेज्जा तत्थेव जाव परिट्ठवेयव्वे सिया ३।'२१०'॥सू. १४॥ कप्पइ णिग्गन्थाण वा णिग्गन्थीण वा अइरेगपडिग्गहं अन्नमन्नस्स अट्ठाए दूरमवि अद्धाणं परिवहित्तए वा धारेत्तए वा परिग्गहित्तए १।'सो वा णं धारेस्सइ अहं वा णं धारेस्सामि अन्नो वा णं धारेस्सइ' णो से कप्पइ तं अणापुच्छियं अणामन्तिय अन्नमन्नेसिं दाउं वा अणुप्पयाउं वा २। कप्पइ से तं आपुच्छिय आमन्तिय अन्नमन्नेसिं दाउं वा अणुप्पयाउं वा ३।'३०७'॥सू. १५॥ अट्ठकुक्कुडिअण्डगप्पमाणमेत्ते कवले आहारं आहारेमाणे णिग्गन्थे अप्पाहारे १। दुवालसकुक्कुडिअण्डगप्पमाणमेत्ते कवले आहारं आहारेमाणे णिग्गन्थे अवड्ढोमोयरिया, सोलसकुक्कुडिअण्डगप्पमाणमेत्ते कवले आहारं आहारेमाणे णिग्गन्थे दुभागपत्ते, चउवीसं कुक्कुडिअण्डगप्पमाणमेत्ते कवले आहारं आहारेमाणे णिग्गन्थे तिभागपत्ते सिया ओमोयरिया, एगतीसं कुक्कुडिअण्डगप्पमाणमेत्ते कवले आहारं आहारेमाणे णिग्गन्थे किंचूणोमोयरिया, बत्तीसं कुक्कुडिअण्डगप्पमाणमेत्ते कवले आहारं आहारेमाणे णिग्गन्थे पमाणपत्ते, एत्तो एगेणवि कवलेणं ऊणगं आहारं आहारेमाणे समणे णिग्गन्थे णो पकामभोइत्ति वत्तव्वं सिया त्तिबेमि '२३०'॥सू. १६॥८॥

अट्ठमो उद्देसओ ॥८॥

अथ नवमोद्देशकः।

सागारियस्स आएसे अन्तो वगडाए भुञ्जइ निट्ठिए निसिट्ठे पाडिहारिए, तम्हा दावए नो से कप्पइ पडिगाहेत्तए ॥सू.१॥ सागारियस्स आएसे अंतो वगडाए भुञ्जइ निट्ठिए निसिट्ठे अपाडिहारिए तम्हा दावए एवं से कप्पइ पडिगाहेत्तए ॥सू.२॥ सागारियस्स आएसे बाहिं वगडाए भुञ्जइ निट्ठिए निसिट्ठे पाडिहारिए तम्हा दावए, नो से कप्पइ पडिगाहेत्तए ॥सू.३॥ सागारियस्स आएसे बाहिं वगडाए भुंजइ निट्ठिए निसट्ठे अपाडिहारिए तम्हा दावए एवं से कप्पइ पडिगाहेत्तए ॥सू.४॥ सागारियस्स दासेइ वा पे(बे)सेइ वा भयएइ वा भइण्णएइ वा अंतो वगडाए भुञ्जइ निट्ठिए निसिट्ठे पाडिहारिए, तम्हा दावए नो से **कप्पइ पडिगाहेत्तए** अंतो वगडाए भुञ्जइ निट्ठिए निसिट्ठे अपाडिहारिए तम्हा दावए एवं से कप्पइ **पडिगाहेत्तए** बाहिं वगडाए भुञ्जइ निट्ठिए निसिट्ठे पाडिहारिए तम्हा दावए, नो से कप्पइ पडिगाहेत्तए, **बाहिं** वगडाए भुंजइ निट्ठिए निसट्ठे अपाडिहारिए तम्हा दावए एवं से कप्पइ पडिगाहेत्तए ॥**सू.५-८**॥ सागारियस्स नायए सिया सागारियस्स एगवगडाए अंतो सागारियस्स एगपयाए सागारियं चोवजीवइ तम्हा दावए नो से कप्पइ पडिगाहेत्तए ॥सू.९॥ सागारियस्स नायए सिया सागारियस्स एगवगडाए अंतो सागारियस्स अभिनिपयाए सागारियं चोवजीवइ तम्हा दावए, नो से कप्पइ पडिगाहेत्तए ॥सू.१०॥ सागारियस्स नायए सिया सागारियस्स एगवगडाए बाहिं सागारियस्स एगपयाए सागारियं **चोवजीवइ** तम्हा दावए नो से कप्पइ पडिगाहेत्तए ॥**सू.११**॥ सागारियस्स नायए सिया सागारियस्स एगवगडाए बाहिं सागारियस्स अभिनिपयाए सागारियं चोवजीवइ तम्हा दावए नो से कप्पइ पडिगाहेत्तए ॥सू.१२॥ सागारियस्स नायए सिया सागारियस्स अभिनिव्वगडाए एगदुवाराए एगनिक्खमणपवेसाए अंतो सागारियस्स एगपयाए सागारियं चोवजीवइ तम्हा दावए नो से कप्पइ पडिगाहेत्तए ॥सू.१३॥ सागारियस्स नायए सिया सागारियस्स अभिनिव्वगडाए एगदुवाराए एगनिक्खमणपवे-

साए सागारियस्स अभिनिपयाए सागारियं चोवजीवइ तम्हा दावए नो
से कप्पइ पडिगाहेत्तए ॥सू.१४॥ सागारियस्स जायए सिया सागारियस्स
अभिनिव्वगडाए एगदुवाराए एगनिक्खमणपवेसाए बाहिं सागारियस्स
एगपयाए सागारियं चोवजीवइ तम्हा दावए नो से कप्पइ पडिगाहेत्तए
॥सू.१५॥ सागारियस्स जायए सिया सागारियस्स अभिनिव्वगडाए
एगदुवाराए एगनिक्खमणपवेसाए बाहिं सागारियस्स अभिनिपयाए
सागारियं चोवजीवइ तम्हा दावए नो से कप्पइ पडिगाहेत्तए'२०'॥सू.१६॥
सागारियस्स चक्कियासाला आहारणवक्कयपउत्ता तम्हा दावए नो से
कप्पइ पडिगाहेत्तए॥सू.१७॥ सागारियस्स चक्कियासाला निस्साहारण-
वक्कयपउत्ता तम्हा दावए एवं से कप्पइ पडिगाहेत्तए ॥सू.१८॥ सागारिय-
स्स गोलियसाला ॥सू.१९-२०॥ बोधियसाला, दोसियसाला, सोत्तियसा-
ला, बोडियसाला, गन्धियसाला, जहा एवं से कप्पइ पडिगाहेत्तए॥सू.२१-
३०॥ सागारियस्स सोडियसाला॥सू.३१-३२॥ सागारियस्स ओसहीओ
संथडाओ तम्हा दावए, नो से कप्पइ पडिगाहेत्तए ॥सू.३३॥ सागारिय-
स्स ओसहीओ असंथडाओ, तम्हा दावए, एवं से कप्पइ पडिगाहेत्तए
॥सू०३४॥ सागारियस्स अंबफला संथडाओ जाव तम्हा दावए, एवं से कप्पइ
पडिगाहेत्तए (सागारियनायए सिया सागारियस्स एगवगडाए एगदुवाराए
एगनिक्खमणपवेसाए सागारियस्स एगवथू, सागारियं च उवजीवइ,
तम्हा दावए नो से कप्पइ पडिगाहेत्तए ॥सू.३६-१॥ सागारियनायए सि-
या सागारियस्स एगवगडाए एगदुवाराए एगनिक्खमणपवेसाए सा-
गारियस्स अभिनिवथू सागारियं च उवजीवइ, तम्हा दावए, नो से
कप्पइ पडिगाहेत्तए ॥सू.३६-२॥ सागारियनायए सिया सागारियस्स
अभिनिव्वगडाए अभिनिदुवाराए अभिनिक्खमणपवेसाए सागारियस्स अ-
गवथू सागारियं च उवजीवइ, तम्हा दावए, नो से कप्पइ पडिगाहेत्तए
॥सू.३६-३॥ सागारियनायए सिया सागारियस्स अभिनिव्वगडाए अभि-
निदुवाराए अभिनिक्खमणपवेसाए सागारियस्स अभिनिवथू सागारियं च उ-
वजीवइ, तम्हा दावए, नो से कप्पइ पडिगाहेत्तए ॥सू.३६-४॥)'७४'॥सू.
३५-३६॥ सत्तसत्तमिया णं भिक्खुपडिमा णं एगूणपन्नाए राइंदिएहिं
एगेणं छन्नउएणं भिक्खासएणं अहासुत्तं अहाकप्पं अहामग्गं अहात-

च्चं अहासम्मं फासिया पालिया सोहिया तीरिया किट्टिया आणाए अणुपालिया भवइ ॥सू.३७॥ अट्ठअट्ठमिया णं भिक्खुपडिमा णं चउसट्ठीए राइंदिएहिं दोहि य अट्ठासीएहिं भिक्खासएहिं अहासुत्तं जाव अणुपालिया भवइ ॥सू.३८॥ नवनवमिया णं भिक्खुपडिमा णं एगासीएहिं राइंदिएहिं चउहि य पञ्चुत्तरेहिं भिक्खासएहिं अहासुत्तं जाव अणुपालिया भवइ ॥सू.३९॥ दसदसमिया णं भिक्खुपडिमा णं एगेणं राइंदियसएणं अद्धछट्ठेहि य भिक्खासएहिं अहासुत्तं जाव अणुपालिया भवइ '८५' ॥सू.४०॥ दो पडिमाओ पन्नत्ताओ, तं जहा- खुड्डिया चेव मोयपडिमा, महल्लिया चेव मोयपडिमा १। खुड्डियण्णं मोयपडिमं पडिवन्नस्स अणगारस्स कप्पइ से पढमसरयकालसमयंसि वा चरिमनिदाहकालसमयंसि वा, बहिया डाइयव्वा गामस्स वा जाव संनिवेसस्स वा वणंसि वा वणविदुग्गंसि वा पव्वयंसि वा पव्वयविदुग्गंसि वा २। भोच्चा आरुभइ चोद्दसमेणं पारेइ अभोच्चा आरुभइ सोलसमेणं पारेइ ३। जाए जाए मोए आइयव्वे दिया आगच्छइ दिया चेव आइयव्वे, राइं आगच्छइ नो आइयव्वे, सपाणे मत्ते आगच्छइ नो आइयव्वे, अपाणे मत्ते आगच्छइ आइयव्वे ४। एवं सबीए ससिणिद्धे ससरक्खे मत्ते आगच्छइ नो आइयव्वे ५। अबीए असिणिद्धे अससरक्खे मत्ते आगच्छइ आइयव्वे ६। जाए जाए मोए आइयव्वे तं अप्पं वा बहुए वा ७। एवं खलु सा खुड्डिया मोयपडिमा अहासुत्तं जाव अणुपालिया भवइ ८ ॥सू.४१॥ महल्लियण्णं मोयपडिमं पडिवन्नस्स अणगारस्स कप्पइ से पढमसरयकालंसि जाव पव्वयविदुग्गंसि वा १। भोच्चा आरुभइ सोलसमेणं पारेइ, अभोच्चा आरुभइ अट्ठारसमेणं पारेइ २। जाए जाए मोए आइयव्वे तहेव जाव दिया आगच्छइ ३ ॥सू.४२॥ संखादत्तियस्स णं भिक्खुस्स पडिग्गहधारिस्स गाहावइकुलं पिंडवायपडियाए अणुप्पविट्ठस्स जावतियं २ केइ अन्तो पडिग्गहंसि उवइत्तु दलएज्जा तावइयाओ दत्तीओ वत्तव्वं सिया १। तत्थ से केइ छप्पएण वा दूसएण वा वालएण वा अन्तो पडिग्गहंसि उच्चित्ता दलएज्जा सव्वावि णं सा एगा दत्ती वत्तव्वं सिया २। तत्थ से बहवे भुञ्जमाणा सव्वे ते सयं सयं पिण्डं साहणिय २ अन्तो पडिग्गहंसि उच्चित्ता दलएज्जा सव्वावि णं सा एगा दत्तीति वत्तव्वं सिया ३ ॥सू.४३॥ संखादत्तियस्स णं भि-

क्खुस्स पाणिपडिगाहियस्स जावइयं २ अन्तो पाणिंसि पडिगाहंसि उच्चिन्ना दलइज्जा ताबइयाउ वत्तव्वं सिया '११५'॥सू. ४४॥ तिविहे उवहडे पन्नत्ते, तं जहा-सुद्धोवहडे फलिओवहडे संसट्ठोवहडे॥सू. ४५॥ तिविहे ओग्गहिए पन्नत्ते, तं जहा-जं च ओगिण्हइ जं च साहरइ जं च आसगंसि पक्खिवइ, एगे एवमाहंसु, एगे पुण एवमाहंसु-दुविहे ओग्गहिए पन्नत्ते, तं जहा-जं च ओगिण्हइ जं च आसगंसि पक्खिवइ त्ति बेमि '१२८'॥सू.४६ ॥ नवमो उद्देसओ ॥९॥

अथ दशमोद्देशकः।

दो पडिमाओ पन्नत्ताओ, तं जहा-जवमज्झा य चन्दपडिमा, वइरमज्झा य चन्दपडिमा १। जवमज्झण्णं चन्दपडिमं पडिवन्नस्स अणगारस्स मासं निच्चं वोसट्ठकाए चियत्तदेहे जे केई परीसहोवसग्गा समुप्पज्जंति, तं जहा-दिव्वा वा माणुस्सगा वा तिरिक्खजोणिया वा, अणुलोमा वा पडिलोमा वा २। तत्थाणुलोमा वा ताव वंदेज्ज वा नमंसेज्ज वा सक्कारेज्ज वा सम्माणेज्ज वा कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासेज्ज वा ३। तत्थ पडिलोमा अन्नयरेणं दंडेण वा अट्ठिणा वा जोत्तेण वा वेत्तेण वा कसेण वा काए आउट्टेज्जा वा, ते सव्वे उप्पन्ने सम्मं सहेज्जा खमेज्जा तितिक्खेज्जा अहियासेज्जा ४। जवमज्झण्णं चंदपडिमं पडिवन्नस्स अणगारस्स सुक्कपक्खस्स से पाडिवए कप्पइ एगा दत्ती भोयणस्स पडिगाहेत्तए एगा पाणगस्स ५। सव्वेहिं दुप्पयचउप्पयाइएहिं आहारकंखीहिं सत्तेहिं पडिणियत्तेहिं अन्नायउञ्छं सुद्धोवहडं (निज्जुहित्ता बहवे समणमाहणअइहि-किवणवणीमगा), कप्पइ से एगस्स भुञ्जमाणस्स पडिगाहेत्तए, नो दोण्हं नो तिण्हं नो चउण्हं नो पञ्चण्हं नो गुव्विणीए नो बालवच्छाए नो दारगं पेज्जमाणीए ६। नो से कप्पइ अंतो एलुयस्स दोवि पाए साहट्टु दलमाणीए पडिगाहित्तए, नो से कप्पइ बाहिं एलुयस्स दोवि पाए साहट्टु दलमाणीए पडिगाहेत्तए ७। अह पुण एवं जाणेज्जा-एगं पायं अंतो किच्चा एगं पायं बाहिं किच्चा, एलुयं विक्खम्भइत्ता, एयाए एसणाए एसमाणे लब्भेज्जा आहारेज्जा, एयाए एसणाए एसमाणे नो लब्भेज्जा णो आहारेज्जा ८। बिइयाए से कप्पइ दोण्णि दत्तीओ भोयणस्स पडिगाहेत्तए दोण्णि पाणगस्स, सव्वेहिं दुप्प-

यचउप्पयाइएहिं आहारकंखीएहिं सत्तेहिं पडिनियत्तेहिं अण्णायं उंछं सुद्धोवहडं कप्पइ जाव नो आहारेज्जा ९। एवं तइयाए तिण्णि जाव पन्नरसीए पन्नरस १०। बहुलपक्खस्स पडिवए से कप्पंति चोद्दस जाव चोद्दसीए एक्का दत्ती भोयणस्स एक्का पाणस्स सव्वेहिं दुपयचउप्पय जाव नो आहारेज्जा अमावासाए से य अभत्तट्ठे भवइ ११। एवं खलु एसा जवमज्झचंदपडिमा अहासुत्तं अहाकप्पं जाव अणुपालिया भवति १२॥सू.१॥ वइरमज्झं णं चंदपडिमं पडिवन्नस्स अणगारस्स मासं निच्चं वोसट्ठकाए जाव अहियासेज्जा १। वइरमज्झं चंदपडिमं पडिवन्नस्स अणगारस्स बहुलपक्खस्स पडिवए कप्पइ पण्णरस दत्तीओ भोयणस्स पडिगाहेत्तए पण्णरस पाणगस्स, सव्वेहिं दुपयचउप्पय जाव नो आहारेज्जा २। बीयाए से कप्पइ चोद्दस, एवं पन्नरसीए एगा दत्ती ३। पडिवए से कप्पइ दो दत्तीओ, बीयाए तिन्नि जाव चउद्दसीए पण्णरस पुण्णिमाए अभत्तट्ठे भवइ ४। एवं खलु एसा वइरमज्झंचंदपडिमा अहासुत्तं अहाकप्पं जाव अणुपालिया भवइ ५।'५०'॥सू.२॥ पंचविहे ववहारे पन्नत्ते, तं जहा-आगमे सुए आणा धारणा जीए १। तत्थ आगमे सिया आगमेणं ववहारं पट्ठवियव्वे २। जो से तत्थ आगमे सिया, सुएणं ववहारे पट्ठवियव्वे सिया ३। जो से तत्थ सुए सिया, जहा से तत्थ आणा सिया, आणाए ववहारे पट्ठवेयव्वे सिया ४। जो से तत्थ आणा सिया, जहा से तत्थ धारणा सिया, धारणाए ववहारे पट्ठवेयव्वे सिया ५। णो से तत्थ धारणा सिया, जहा से तत्थ जीए सिया, जीएणं ववहारे पट्ठवेयव्वे सिया ६। एएहिं पंचहिं ववहारेहिं ववहारं पट्ठवेज्जा, तं जहा-आगमेण सुएणं आणाए धारणाए जीएणं ७। जहा २ आगमे सुए आणा धारणा जीए तहा २ ववहारं पट्ठविज्जा ८। से किमाहु भन्ते! ९ आगमबलिया समणा निग्गन्था ९। इच्चेइयं पंचविहं ववहारं जया २ जहिं २ जया २ तहिं २ अणिस्सिओवस्सियं ववहारं ववहारमाणे समणे निग्गन्थे आणाए आराहए भवति १०।'७१५'॥सू.३॥ चत्तारि पुरिसज्जाया पन्नत्ता, तं जहा-अट्ठकरे नामं एगे नो माणकरे, माणकरे नामं एगे नो अट्ठकरे, एगे अट्ठकरेवि माणकरेवि, एगे नो अट्ठकरे नो माणकरे '७२९'॥सू.४॥ चत्तारि पुरिसज्जाया पन्नत्ता, तं जहा- गणट्ठकरे नामं एगे नो माणकरे, माणकरे नामं एगे नो गणट्ठकरे, एगे गणट्ठकरेवि माणकरेवि, एगे नो गणट्ठकरे नो

जो माणकरे '७३३' ॥सू. ५॥ चत्तारि पुरिसज्जाया पन्नत्ता, तं जहा- गणसंगहकरे नामं एगे, नो माणकरे, माणकरे नामं एगे नो गणसंगहकरे, एगे गणसंगहकरेवि माणकरेवि, एगे नो गणसंगहकरे नो माणकरे, '७३५' ॥सू. ६॥ चत्तारि पुरिसज्जाया पन्नत्ता, तं जहा- गणसोहकरे नामं एगे नो माणकरे, माणकरे नामं एगे नो गणसोहकरे, एगे गणसोहकरेवि माणकरेवि, एगे नो गणसोहकरे नो माणकरे ॥सू. ७॥ चत्तारि पुरिसज्जाया पन्नत्ता, तं जहा- गणसोहिकरे नामं एगे नो माणकरे, माणकरे नामं एगे नो गणसोहिकरे, एगे गणसोहिकरेवि माणकरेवि, एगे नो गणसोहिकरे नो माणकरे '७३९' ॥सू. ८॥ चत्तारि पुरिसज्जाया पन्नत्ता, तं जहा- रूवं नामेगे जहइ नो धम्मं, धम्मं नामेगे जहइ नो रूवं, एगे रूवंपि जहइ धम्मंपि जहइ एगे नो रूवं जहइ नो धम्मं जहइ '७४३' ॥सू. ९॥ चत्तारि पुरिसज्जाया पन्नत्ता, तं जहा- धम्मं नामेगे जहइ नो गणसंठिइं, गणसंठिइं नामेगे जहइ नो धम्मं, एगे धम्मंपि जहइ गणसंठिइंपि जहइ, एगे नो धम्मं जहइ नो गणसंठिइं जहइ '७४७' ॥सू. १०॥ चत्तारि पुरिसज्जाया पन्नत्ता, तं जहा- पियधम्मे नामेगे नो दढधम्मे, दढधम्मे नामेगे नो पियधम्मे, एगे पियधम्मेवि दढधम्मेवि, एगे नो पियधम्मे नो दढधम्मे '७५१' ॥सू. ११॥ चत्तारि **आयरिया** पन्नत्ता, तं जहा- पव्वावणायरिए नामेगे नो उवट्ठावणायरिए, उवट्ठावणायरिए नामेगे नो पव्वावणायरिए, एगे पव्वावणायरिएवि उवट्ठावणायरिएवि, एगे नो पव्वावणायरिए नो उवट्ठावणायरिए, '७५६' ॥सू. १२॥ चत्तारि आयरिया पन्नत्ता, तं जहा- उद्देसणायरिए नामेगे णो वायणायरिए, वायणायरिए नामेगे नो उद्देसणायरिए, एगे उद्देसणायरिएवि वायणायरिएवि, एगे नो उद्देसणायरिए नो वायणायरिए, '७५७' ॥सू. १३॥ चत्तारि **अंतेवासी** पन्नत्ता, तं जहा- पव्वावणअंतेवासी नामेगे णो उवट्ठावणअंतेवासी, उवट्ठावणंतेवासी णामेगे णो पव्वावणअंतेवासी, एगे पव्वावणंतेवासी उवट्ठावणंतेवासी, एगे नो पव्वावणंतेवासी नो उवट्ठावणंतेवासी ॥सू. १४॥ चत्तारि अंतेवासी पन्नत्ता, तं जहा- उद्देसणंतेवासी नामेगे नो वायणंतेवासी, वायणंतेवासी नामेगे नो उद्देसणंतेवासी, एगे उद्देसणंतेवासीवि वायणंतेवासीवि एगे नो उद्देसणंतेवासी नो वायणंतेवासी '७५९' ॥सू. १५॥ तओ थेरभूमीओ पन्नत्ताओ,

तं जहा- जाइथेरे सुयथेरे परियायथेरे, सट्ठिवासजायए समणे निग्गन्थे जाइथेरे, ठाणसमवायधरे समणे निग्गन्थे सुयथेरे, वीसवासपरियाए समणे निग्गन्थे परियायथेरे '७६४' ॥सू.१६॥ तओ सेहभूमीओ पन्नत्ताओ, तं जहा- सत्तराइंदिया चाउम्मासिया छम्मासिया, छम्मासिया उक्कोसिया चाउम्मासिया मज्झिमिया सत्तराइन्दिया जहन्निया '८०७' ॥सू.१७॥ नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा खुड्डगं वा खुड्डियं वा ऊणट्ठवासजायं उवट्ठावेत्तए वा संभुञ्जित्तए वा ॥सू.१८॥ कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा खुड्डगं वा खुड्डियं वा साइरेगट्ठवासजायं उवट्ठावेत्तए वा संभुञ्जित्तए वा '८२४' ॥सू.१९॥ नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा खुड्डगस्स वा खुड्डियाए वा अवञ्जणजायस्स आयारपकप्पे नामं अज्झयणे उद्दिसित्तए॥सू.२०॥ कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा खुड्डगस्स वा खुड्डियाए वा वञ्जणजायस्स आयारपकप्पे नामं अज्झयणे उद्दिसित्तए '८७०' ॥सू.२१॥ तिवासपरियायस्स समणस्स निग्गन्थस्स कप्पइ **आयारपकप्पे नामं** अज्झयणे उद्दिसित्तए ॥सू.२२॥ चउवासपरियागस्स समणस्स निग्गन्थस्स कप्पइ सूयगडे नामं अङ्गे उद्दिसित्तए ॥सू.२३॥ पञ्चवासपरियायस्स समणस्स निग्गन्थस्स कप्पइ दसाकप्पववहारा णामं अज्झयणं उद्दिसित्तए ॥सू.२४॥ **अट्ठवास**परियायस्स समणस्स निग्गन्थस्स कप्पइ ठाणसमवाए नामं अङ्गे उद्दिसित्तए ॥सू.२५॥ दसवासपरियायस्स समणस्स निग्गन्थस्स कप्पइ वियाहे नामं अङ्गे उद्दिसित्तए ॥सू.२६॥ एक्कारसवासपरियायस्स समणस्स निग्गन्थस्स कप्पइ खुड्डिया विमाणपविभत्ती महल्लियविमाणपविभत्ती अङ्गचूलिया वग्ग(ङ्ग)चूलिया वियाहचूलिया नामं अज्झयणे उद्दिसित्तए ॥सू.२७॥ बारसवासपरियायस्स समणस्स निग्गन्थस्स कप्पइ अरुणोववाए वरुणोववाए गरुलोववाए (धरणोववाए) वेसमणोववाए वेलंधरोववाए नामं अज्झयणे उद्दिसित्तए ॥सू.२८॥ तेरसवासपरियायस्स समणस्स निग्गन्थस्स कप्पइ उट्ठाणसुए समुट्ठाणसुए देविंदोववाए नागपरियावणि(लि)या नामं अज्झयणे उद्दिसित्तए ॥सू.२९॥ चोद्दसवासपरियायस्स समणस्स निग्गन्थस्स कप्पइ सुमिणभावणा नामं अज्झयणे उद्दिसित्तए ॥सू.३०॥

पन्नरसवासपरियायस्स समणस्स निग्गन्थस्स कप्पइ चारणभावणा नामं अज्झयणे उद्दिसित्तए ॥सू. ३१॥ सोलसवासपरियायस्स समणस्स निग्गन्थस्स कप्पइ तेयनिसग्गं नाम अज्झयणमुद्दिसित्तए ॥सू. ३२॥ सत्तरसवासपरियायस्स समणस्स निग्गन्थस्स आसीविसभावणा नाम अज्झयणे उद्दिसित्तए ॥सू. ३३॥ अट्ठारसवासपरियायस्स समणस्स निग्गन्थस्स कप्पइ दिट्ठिविसभावणा नामं अज्झयणे उद्दिसित्तए ॥सू. ३४॥ एगूणवीसइवासपरियायस्स समणस्स निग्गन्थस्स कप्पइ दिट्ठिवाए नामं अङ्गे उद्दिसित्तए ॥सू. ३५॥ वीसवासपरियाए समणे निग्गन्थे सव्वसुयाणुवाई भवइ '८३८'॥ सू. ३६॥ दसविहे वेयावच्चे पन्नत्ते, तं जहा- आयरियवेयावच्चे उवज्झायवेयावच्चे थेरवेयावच्चे तवस्सिवेयावच्चे सेहवेयावच्चे गिलाणवेयावच्चे साहम्मियवेयावच्चे कुलवेयावच्चे गणवेयावच्चे सङ्घवेयावच्चे १। आयरियवेयावच्चं करेमाणे समणे निग्गन्थे महानिज्जरे महापज्जवसाणे भवइ, एवं जाव सङ्घवेयावच्चं करेमाणे समणे निग्गन्थे महानिज्जरे महापज्जवसाणे भवइ २। '८५०' ॥सू. ३७॥ दसमो उद्देसो ॥१०॥

॥ इति श्री व्यवहारच्छेदसूत्रम् ॥

॥ लिखितं श्री तपागच्छ गगनाङ्गण-दिनमणि-पन्न्यासप्रवर श्री वृद्धिविजय-गणिवर पादाम्बुज-भृङ्गायमान-पन्न्यास-श्रीमदाणंदविजय-गणिवर-चरणचन्द्रचकोर-मुनिप्रवर-श्रीहर्षविजय-मुनीन्द्राङ्घ्रि-सरसिरुह-मानस-राजहंस-तपोमूर्ति-जैनाचार्य-श्रीमद्विजय कर्पूरसूरीश्वर-पट्टधर-शासन-प्रतिवादीभकण्ठीरव-हालारदेशोद्धारक-कविरत्नाचार्यदेव-श्रीमद्विजयामृतसूरीश्वर-चञ्चच्चरणचञ्चरीक-विनेय-श्रीमदागम-संशोधक-विद्वद्वर्य-गुरुदेव-पन्न्यासप्रवर-श्री जिनेन्द्रविजय-गणिवर-कृपया, जामनगर प्लोट तपागच्छ शांतिभवन वीर सं० २५०५ वि० सं० २०३५ माघशुक्ल षष्ठ्यां शुक्रवासरे श्रीविमलनाथस्वामि-प्रसादात् ॥

अर्हम् ॥

श्रुतकेवलि श्री भद्रबाहु स्वामि प्रणीतं

श्रीदशाश्रुतस्कन्धसूत्रम्

अथ असमाधिस्थानाख्यं प्रथममध्ययनम् ।

नमो अरिहंताणं नमो सिद्धाणं नमो आयरियाणं नमो उवज्झायाणं नमो लोए सव्वसाहूणं । एसो पंचनमुक्कारो, सव्व पावप्पणासणो । मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ॥१॥ सुयं मे आउसंतेणं भगवया एवमक्खायं- सूत्रं १॥ इह खलु थेरेहिं भगवंतेहिं वीसं असमाहिट्ठाणा पन्नत्ता, कयरे खलु ते थेरेहिं भगवंतेहिं वीसं असमाहिट्ठाणा पन्नत्ता ? इमे खलु ते थेरेहिं भगवंतेहिं वीसं असमाहिट्ठाणा पन्नत्ता, तंजहा- दवदवचारी यावि भवति, अप्पमज्जियचारी यावि भवति, दुप्पमज्जियचारी यावि भवति, अतिरित्तसेज्जासणिए, रायणियपरिभासी, थेरोवघाइए, भूतोवघाइए, संजलणे, कोहणे, पिट्ठिमंसिए यावि भवति १०, अभिक्खणं अभिक्खणं ओधारित्ता, णवाइं अधिकरणाइं अणुप्पण्णाइं उप्पाइया यावि भवति, पुराणाइं अधिकरणाइं खामितविउसवितातइं उदीरित्ता, अकाले सज्झायकारी यावि भवति, ससरक्खपाणिपादे, सद्दकरे, झंझकरे, कलहकरे, सूरप्पमाणभोई, एसणाइ असमिए यावि भवति २०, एते थेरेहिं भगवंतेहिं वीसं असमाहिट्ठाणा पन्नत्तत्ति बेमि ॥ सू० २॥ पढमा दसा समत्ता ॥१॥

अथ शबलाख्यं द्वितीयमध्ययनम् ॥

सुयं मे आउसंतेणं भगवया एवमक्खायं - इह खलु थेरेहिं भगवंतेहिं एक्कवीसं सबला पन्नत्ता, कयरे खलु थेरेहिं भगवंतेहिं एक्कवीसं सबला पन्नत्ता? इमे खलु थेरेहिं भगवंतेहिं एक्कवीसं सबला पन्नत्ता, तं जहा- हत्थकम्मं करेमाणे सबले, मेहुणं पडिसेवेमाणे, राइभोयणं भुंजमाणे, आहाकम्मं भुंजमाणे, रायपिंडं भुंजमाणे, उद्देसियं कीयं पामिच्चं अच्छिज्जं अणिसिट्ठं आहट्टु दिज्जमाणं भुंजमाणे, अभिक्खणं २ पडियाइक्खित्ता भुंजमाणे, अंतो मासस्स तओ दगलेवे करेमाणे, अंतो छण्हं मासाणं गणाओ गणं संकममाणे, अंतो मासस्स तओ माइट्ठाणे करेमाणे १०, सागारियं पिंडं भुंजमाणे, आउट्टियाए पाणाइवायं करेमाणे, आउट्टियाए मुसावायं करेमाणे, आउट्टियाए अदिण्णादाणं गिण्हमाणे, आउट्टियाए अणंतरहियाए पुढवीए ठाणं वा सेज्जं वा निसीहियं वा चेतेमाणे, एवं ससिणिद्धाए पुढवीए, एवं ससरक्खाए, आउट्टियाए चित्तमंताए सिलाए, चित्तमंताए लेलुए, कोलावासंसि वा दारुए जीवपइट्ठिए सअंडे सपाणे सबीए सहरिए सउस्से सउत्तिंग-पणगदगमट्टिमक्कडसंताणए तहप्पगारं ठाणं वा सिज्जं वा निसीहियं वा चेतेमाणे, आउट्टियाए मूलभोयणं वा कंदभोयणं वा (खंधभोयणं वा) तया भोयणं वा पवालभोयणं वा पुप्फभोयणं वा फलभोयणं वा बीयभोयणं वा हरियभोयणं वा भुंजमाणे, अंतो संवच्छरस्स दस दगलेवे करेमाणे, अंतो संवच्छरस्स दस माइट्ठाणाइं करेमाणे, आउट्टियाए सीतोदगवग्घारियहत्थेण वा मत्तेण वा दव्वीए वा भायणेण वा असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पडिगाहेत्ता भुंजमाणे २१, एते खलु थेरेहिं भगवंतेहिं एक्कवीसं सबला पन्नत्त त्ति बेमि ॥ सू० ३॥ बिइया दसा समत्ता॥

अथ आशातनाख्यं तृतीयमध्ययनम् ॥

सुयं आउसंतेणं भगवया एवमक्खायं इह खलु थेरेहिं भगवंतेहिं तेत्तीसं आसायणाओ पन्नत्ताओ, कयरा खलु थेरेहिं भगवंतेहिं तेत्तीसं आसायणाओ पन्नत्ताओ ? इमाओ खलु ताओ थेरेहिं भगवंतेहिं तेत्तीसं आसायणाओ पन्नत्ताओ, तं जहा-सेहे रायणियस्स पुरओ गंता भवति आसायणा सेहस्स १, सेहे रायणियस्स सपक्खं (पक्खओ) गंता भवति आसायणा सेहस्स २, सेहे रायणियस्स आसन्नं गंता भवति आसायणा सेहस्स ३, एवं एएणं अभिलावेणं सेहे रायणियस्स पुरओ चिट्ठित्ता भवति आसायणा सेहस्स ४, सेहे रायणियस्स सपक्खं चिट्ठित्ता भवति आसायणा सेहस्स ५, सेहे रायणियस्स आसन्नं चिट्ठित्ता भवति आसायणा सेहस्स ६, सेहे रायणियस्स पुरओ निसीइत्ता भवति आसायणा सेहस्स ७, सेहे रायणियस्स सपक्खं निसीइत्ता भवति आसायणा सेहस्स ८, सेहे रायणियस्स आसन्नं निसीइत्ता भवति आसायणा सेहस्स ९, सेहे राइणिएण सद्धिं बहिया वियारभूमिं निक्खंते समाणे तत्थ पुव्वामेव सेहतराए आयामति पच्छा रायणिए आसायणा सेहस्स १०, सेहे राइणिएण सद्धिं बहिया विहारभूमिं वा वियारभूमिं वा निक्खंते समाणे तत्थ पुव्वामेव सेहतराए आलोएति पच्छा राइणिए आसायणा सेहस्स ११, केइ रायणियस्स पुव्वसंलवित्तए सिया तं पुव्वामेव सेहतराए आलवइ पच्छा राइणिए आसायणा सेहस्स १२, सेहे रायणियस्स राओ वा वियाले वा वाहरमाणस्स अज्जो ! के सुत्ते ? के जागरे ? तत्थ सेहे जागरमाणे राइणियस्स अपडिसुणित्ता भवति आसायणा सेहस्स १३, सेहे असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पडिग्गाहित्ता तं पुव्वामेव सेहतरागस्स आलोएति पच्छा राइणियस्स आसायणा सेहस्स १४, सेहे असणं वा० पडिग्गाहित्ता पुव्वामेव सेहतरागं पडिदंसेति पच्छा राइणियस्स आसायणा सेहस्स १५, सेहे असणं वा० पडिग्गाहित्ता पुव्वामेव सेहतरागं उवनिमंतेति पच्छा राइणिए आसायणा सेहस्स १६, सेहे राइणिएण सद्धिं असणं वा० पडिगाहित्ता तं राइणियं अणापुच्छित्ता जस्स २ इच्छति तस्स २ खद्धं २ दलयति आसायणा सेहस्स १७, सेहे राइणिएण सद्धिं असणं वा ४ आहारेमाणे तत्थ सेहे खद्धं २ डागं २ ऊसढं २ रसियं २ मणुण्णं २ मणामं २ निद्धं २ लुक्खं २ आहारित्ता भवति आसायणा सेहस्स १८, सेहे राइणियस्स वाहरमाणस्स अपडिसुणित्ता भवति आसायणा सेहस्स १९, सेहे राइणियस्स

वाहरमाणस्स तत्थगते चेव पडिसुणित्ता भवति आसायणा सेहस्स २०, सेहे राइणियं किंति वत्ता भवति आसायणा सेहस्स २१, सेहे राइणियं तुमंति वत्ता भवति आसायणा सेहस्स २२, सेहे राइणियं खद्धं २ वत्ता भवति आसायणा सेहस्स २३, सेहे राइणियं तज्जाएणं तज्जायं पडिभणित्ता भवति आसायणा सेहस्स २४ सेहे राइणियस्स कहं कहेमाणस्स इति एवं (त्ति) वत्ता (न) भवति आसायणा सेहस्स २५, सेहे राइणियस्स कहं कहेमाणस्स णो सुमरसित्ति वत्ता भवति आसातणा सेहस्स २६, सेहे राइणियस्स कहं कहेमाणस्स नो सुमणा (सुमणसे) भवति आसायणा सेहस्स २७, सेहे राइणियस्स कहं कहेमाणस्स परिसं भेत्ता भवति आसायणा सेहस्स २८, सेहे राइणियस्स कहं कहेमाणस्स कहं आच्छिंदित्ता भवति आसादणा सेहस्स २९, सेहे राइणियस्स कहं कहेमाणस्स तीसे परिसाए अणुट्ठिताए अभिन्नाए अवोच्छिन्नाए अव्वोगडाए दुच्चंपि तच्चंपि तमेव कहं कहेत्ता भवति आसादणा सेहस्स ३०, सेहे राइणियस्स सेज्जासंथारगं पाएणं संघट्टित्ता हत्थेणं अणणुण्ण(ना)वेत्ता गच्छति आसातणा सेहस्स ३१, सेहे राइणियस्स सेज्जासंथारए चिट्ठित्ता वा निसीइत्ता वा तुयट्टित्ता वा भवति आसादणा सेहस्स ३२, सेहे राइणियस्स उच्चासणंसि वा समासणंसि वा चिट्ठित्ता वा निसीइत्ता वा तुयट्टित्ता वा भवति आसादणा सेहस्स ३३, एताओ खलु ताओ थेरेहिं भगवंतेहिं तेत्तीसं आसायणाओ पण्णत्ताओत्ति बेमि ॥सू०४॥ तइया दसा सम्मत्ता ॥३॥

अथ गणिसम्पदाख्यं चतुर्थमध्ययनम्।

सुयं मे आउसंतेणं भगवया एवमक्खायं- इह खलु थेरेहिं भगवंतेहिं अट्ठविहा गणिसंपदा पण्णत्ता, कयरा खलु थेरेहिं भगवंतेहिं अट्ठविहा गणिसंपदा पण्णत्ता ? इमा खलु थेरेहिं भगवंतेहिं अट्ठविहा गणिसंपदा पण्णत्ता, तं जहा- आयारसंपया सुयसंपया सरीरसंपया वयणसंपया वायणासंपया मतिसंपया पओगसंपया संग-

हपरिण्णा णाम अट्ठमा ॥सू०५॥ से किं तं आयारसंपया ? २ चउ-
व्विहा पन्नत्ता, तं जहा संजमधुवजोगजुत्ते यावि भवति, असंपगहियप्पा-
(ज्जए), अणियतवित्ती, वुड्ढसीले यावि भवति से तं आयारसंपदा ॥
सू०६॥ से किं तं सुयसंपदा ? २ चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा- बहुसुत्ते या-
वि भवति, विचित्तसुत्ते, परिचितसुत्ते, घोसविसुद्धकारए यावि भवति,
से तं सुयसंपदा ॥सू०७॥ से किं तं सरीरसंपदा ? २ चउव्विहा पण्ण-
त्ता, तंजहा- आरोहपरिणाहसंपन्ने यावि भवति, अणोतप्पसरीरे, थिरसंघय-
णे, बहुपडिपुण्णेंदिए यावि भवति, से तं सरीरसंपदा ॥सू०८॥ से किं तं
वयणसंपदा ? २ चउव्विहा पन्नत्ता, तंजहा- आदिज्जवयणे यावि भवति, म-
हुरवयणे, अणिस्सियवयणे, फुडवयणे यावि भवति, सेत्तं वयणसंपदा
॥सू०९॥ से किं तं वायणासंपदा ? २ चउव्विहा पन्नत्ता, तंजहा- विजयं
उद्दिसति विजयं वाएति परिनिव्वाविय २ एति अत्थणिज्जावए यावि भवति
से तं वायणासंपदा ॥सू०१०॥ से किं तं मतिसंपदा ? २ चउव्विहा पन्नत्ता, तं
जहा- उग्गहमतिसंपदा ईहामतिसंपदा अवायमतिसंपदा धारणामतिसंपदा
१। से किं तं उग्गहमतिसंपदा ? २ छव्विहा पन्नत्ता, तंजहा- खिप्पं ओगिण्ह-
ति बहुं ओगिण्हति बहुविहं ओगिण्हति धुवं ओगिण्हति अणिस्सियं ओगि-
ण्हति असंदिद्धं ओगिण्हति, से तं उग्गहमती २। एवं ईहामतीवि, एवं अवाय-
मतीवि ३। से किं तं धारणामती ? २ छव्विहा पण्णत्ता, तंजहा- बहुं धरेति
बहुविहं धरेति पुराणं धरेति दुद्धरं धरेति अणिस्सियं धरेति असंदिद्धं
धरेति, से तं धारणामती, से तं मतिसंपदा ४॥सू०११॥ से किं तं पओगसं-
पदा ? २ चउव्विहा पन्नत्ता, तंजहा- आयं विदाय वादं पउंजित्ता भवति, परिसं
विदाय वादं पउंजित्ता भवति, खेत्तं विदाय वादं पउंजित्ता भवति, वत्थुं
विदाय वादं पउंजित्ता भवति, से तं पओगसंपदा ॥सू०१२॥ से किं तं
संगहपरिण्णासंपदा ? २ चउव्विहा पन्नत्ता, तंजहा- बहुजणपाउग्गत्ताए
वासावासासु खित्तं पडिलेहित्ता भवति, बहुजणपाओगत्ताए पाडिहारियं
पीढफलगसेज्जासंथारयं ओगिण्हित्ता भवति, कालेणं कालं समाणइत्ता
भवति, आहागुरु संपूइत्ता भवति, से तं संगहपरिण्णासंपदा ॥सू०१३॥
आयरियत्तो अंतेवासी इमाए चउव्विहाए विणयपडिवत्तीए विणइत्ता नि-

रिणन्त गच्छति, तंजहा- आयारविणएणं सुयविणएणं विक्खेवणावि-
णएणं दोसनिग्घायणाविणएण १। से किं तं आयारविणए ? २ चउव्विहे
पण्णत्ते, तंजहा- संजमसामायारी यावि भवति, तवसामायारी यावि भ-
वति, गणसामायारी यावि भवति, एगल्लविहारसामायारी यावि भवति
से तं आयारविणए २। से किं तं सुयविणए ? २ चउव्विहे पण्णत्ते, तंजहा
सुयं वाएति अत्थं वाएति हियं वाएति निस्सेसं वाएति, से तं सु-
यविणए ३। से किं तं विक्खेवणाविणए ? २ चउव्विहे पण्णत्ते, तंजहा-
अदिट्ठधम्मं दिट्ठपुव्वगत्ताए विणएत्ता भवति दिट्ठपुव्वगं साह-
म्मियत्ताए विणएत्ता भवति (दिट्ठपुव्वग सहेतुनं) चुयधम्माओ
धम्मे ठावित्ता भवति, तस्सेव धम्मस्स हियाए सुहाए खमाए
निस्से(य)साए आणुगामियत्ताए अब्भुट्ठेत्ता भवति, से तं विक्खे
वणाविणए ४। से किं तं दोसनिग्घायणाविणए ? २ चउव्विहे प
ण्णत्ते, तंजहा- कुद्धस्स कोहं विणइत्ता भवति, दुट्ठस्स दोसं
णिगिण्हित्ता भवति, कंखियस्स कंखं छिंदित्ता भवति, आया सु-
प्पणिधिती यावि भवति, से तं दोसनिग्घायणाविणए ५ ॥सू० ३४॥
तस्सेवं गुणजातीयस्स अंतेवासिस्स इमा चउव्विहा विणयपडिवत्ती
भवति, तंजहा- उवगरणउप्पायणता साहिल्लता वण्णसंजलणता
भारपच्चोरुहणता १। से किं तं उवगरणउप्पायणया ? २ चउव्विहा
पण्णत्ता, तंजहा- अणुप्पन्नाइं उवगरणाइं उप्पाएत्ता भवति, पोराणाइं
उवगरणाइं सारक्खित्ता संगोवित्ता भवति, परित्तं जाणित्ता पच्चुद्धरित्ता
भवति, अहाविहिं संविभइत्ता भवति, से तं उवगरणउप्पायणया २। से
किं तं साहिल्लया ? २ चउव्विहा पण्णत्ता, तंजहा- अणुलोमवइसहिते
यावि भवति, अणुलोमकायकिरियत्ता यावि भवति, पडिरूवकायसंफास-
णया यावि भवति, सव्वत्थेसु अपडिलोमया यावि भवति, से तं साहिल्लया
३। से किं तं वण्णसंजलणया ? २ चउव्विहा पण्णत्ता, तंजहा- अहातच्चाणं
वण्णवाई भवति, अवण्णवाइं पडिहणित्ता भवति, वण्णवाइं अणुवूहित्ता भ-
वति, आयवुड्ढसेवी यावि भवति, से तं वण्णसंजलणया ४। से किं तं भार-
पच्चोरुहणता ? २ चउव्विहा पण्णत्ता, तंजहा- असंगहियपरिजणं संगिण्हित्ता

(संगहिता) भवति, सेह आयारगोयर गाहित्ता भवति, साहम्मियस्स गिलायमाणस्स अहाथामं वेयावच्चे अब्भुट्ठित्ता भवति, साहम्मियाणं अधिकरणंसि उप्पण्णंसि तत्थ अणिस्सितोवस्सितो वसंतो अपक्खगाहए मज्झत्थभावभूते सम्मं ववहरमाणे तस्स अधिकरणस्स खामणविउसमणयाए सया समियं अब्भुट्ठित्ता भवति ५। कह नु साहम्मिया अप्पसद्दा अप्पझंझा अप्पकलहा अप्पकसाया अप्पतुमंतुमा संयमबहुला संवरबहुला समाहिबहुला अप्पमत्ता संजमेण तवसा अप्पाणं भावेमाणा एवं च णं विहरेज्जा, से तं भारपच्चोरुहणता ६। एसा खलु थेरेहिं भगवंतेहिं अट्ठविहा गणिसंपदा पण्णत्तत्ति बेमि ७॥ सू०१५॥

॥ चउत्था दसा समत्ता ॥ ४॥

अथ चित्तसमाधिस्थानाख्यं पञ्चममध्ययनम्।

सुयं मे आउसंतेणं भगवया एवमक्खायं- इह खलु थेरेहिं भगवंतेहिं दस चित्तसमाहिट्ठाणा पण्णत्ता कयरे खलु ते थेरेहिं जाव पण्णत्ता? इमे खलु ते दस चित्तसमाहिट्ठाणा पण्णत्ता, तंजहा- तेणं कालेणं तेणं समएणं वाणियगाम नामं नयरे होत्था एत्थ णं नगरवण्णओ भाणियव्वो १। तस्स णं वाणियगामनगरस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसिभाए दूइपलासे नामं चेइए होत्था, चेइयवण्णओ भाणियव्वो २। जियसत्तु राया तस्स धारिणी देवी, एवं सव्वं समोसरणं भाणियव्वं जाव पुढवीसिलापट्टए, सामी समोसढे, परिसा निग्गया, धम्मो कहिओ, परिसा पडिगया ३॥ सू०१६॥ अज्जोत्ति समणे भगवं महावीरे समणे निग्गंथे निग्गंथीओ य आमंतित्ता एवं वयासी इह खलु अज्जो! निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा ईरियासमियाणं भासासमियाणं एसणासमियाणं आयाणभंडमत्तनिक्खेवणासमियाणं उच्चारपासवण-खेलजल्ल-सिंघाण-पारिट्ठावणियासमियाणं मणसमियाणं वयणसमियाणं कायसमियाणं मणगुत्ताणं वयगुत्ताणं कायगुत्ताणं गुत्तिंदियाणं गुत्तबंभयारीणं आयट्ठीणं आयहियाणं आयजोईणं आयपरक्कमाणं पक्खियपोसहीए सुसमाहीपत्ताणं झियायमाणाणं इमाइं दस

चित्तसमाहिट्ठाणाइं असमुप्पण्णपुव्वाइं समुप्पज्जिज्जा, तं जहा- धम्मचिंता वा से असमुप्पन्नपुव्वा समुप्पज्जेज्जा सव्वं धम्मं जाणित्तए १। सुमिणदंसणे वा से असमुप्पण्णपुव्वे समुप्पज्जेज्जा अहातच्चं सुमिणं पासित्तए २। जाइसरणे वा सण्णिणाणे वा से असमुप्पन्नपुव्वे समुप्पज्जेज्जा अहं सरामि अप्पणो पोराणियं जाइं सुमरित्तए ३। देवदंसणे वा से असमुप्पण्णपुव्वे समुप्पज्जेज्जा दिव्वं देविड्ढिं दिव्वं देवजुइं दिव्वं देवाणुभावं पासित्तए ४। ओहिनाणे वा से असमुप्पण्णपुव्वे समुप्पज्जेज्जा ओहिणा लोयं जाणित्तए ५। ओहिदंसणे वा से असमुप्पण्णपुव्वे समुप्पज्जेज्जा ओहिणा लोयं पासित्तए ६। मणपज्जवनाणे वा से असमुप्पण्णपुव्वे समुप्पज्जेज्जा अंतो मणुस्सखेत्तेसु अड्ढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु सण्णीणं पंचिंदियाणं पज्जत्तगाणं मणोगए भावे जाणित्तए ७। केवलनाणे वा से असमुप्पण्णपुव्वे समुप्पज्जेज्जा केवलकप्पं लोयालोयं जाणित्तए ८। केवलदंसणे वा से असमुप्पण्णपुव्वे समुप्पज्जेज्जा केवलकप्पं लोयालोयं पासित्तए ९। केवलमरणे वा से असमुप्पण्णपुव्वे समुप्पज्जेज्जा सव्वदुक्खपहीणाए १०॥सू०१७॥

ओयं चित्तं समादाय, झाणं समणुपस्सति। धम्मे ठिओ अविमणो निव्वाणमभिगच्छति ॥१॥ ण इमं चित्तं समादाय, भुज्जो लोयंसि जायति। अप्पणो उत्तमं ठाणं सण्णीणाणेण जाणति ॥२॥ अहातच्चं तु सुविणं खिप्पं पासति संवुडे। सव्वं वा ओहं तरति दुक्खाता(ओ) य विमुच्चति ॥३॥ पंताइं भयमाणस्स विवित्तं सयणासणं। अप्पाहारस्स दंतस्स देवा दंसेति ताइणो ॥४॥ सव्वकामविरत्तस्स खमतो भयभेरवं। तओ से ओही भवति संजयस्स तवस्सिणो ॥५॥ तवसाऽवहट्टलेसस्स दंसणं परिसुज्झति। उड्ढं अहे य तिरियं च। सव्वं समणुपस्सति ॥६॥ सुसमाहडलेसस्स अवितक्कस्स भिक्खुणो। सव्वओ विप्पमुक्कस्स आया जाणति पज्जवे ॥७॥ जया से णाणावरणं सव्वं होति खयं गयं। तया लोगमलोगं च जिणो जाणति केवली ॥८॥ जया से दंसणावरणं सव्वं होति खयं गयं। तओ लोग-

मलोगं च जिणो पासइ केवली ॥९॥ पडिमाए विसुद्धाए मोहणिज्जे खयं गए। असेसं लोगमलोगं च पासंति सुसमाहिए ॥१०॥ जहा य मत्थयसुई हयाए हम्मते तले। एवं कम्माणि हम्मंति मोह-णिज्जे खयं गए ॥११॥ सेणावतिम्मि णिहते, जहा ~~~~ सेणा पणस्सति। एवं कम्मा पणस्संति मोहणिज्जे खयं गए ॥१२॥ धूमहीणो जहा अग्गी खिज्जते से निरिंधणे। एवं कम्माणि खीयंते मोहणिज्जे खयं गए ॥१३॥ सुक्कमूले जहा रुक्खे सिच्चमाणे ण रोहति। एवं कम्मा ण रोहंति मोहणिज्जे खयं गए ॥१४॥ जहा दड्ढाण बीयाण ण जायंति पुणंकुरा। कम्मबीए तहा दड्ढे (सुदड्ढेसु) न रोहंति (जायंति) भवंकुरा ॥१५॥ चिच्चा ओरालियं बोंदिं नामगोत्तं च केवली। आउयं वेयणिज्जं च छित्ता भवति नीरए ॥१६॥ एवं अभिसमागम्म चित्तमादाय आउसो।। सेणिसोधिमुवागम्म आया सोहीमुवागए ॥१७॥ त्ति बेमि॥ पंचमा दसा समत्ता ॥५॥

अथ श्रमणोपासकप्रतिमाख्यं षष्ठमध्ययनम्।

सुयं मे आउसंतेणं भगवया एवमक्खायं- इह खलु थेरेहिं भगवंतेहिं एक्कारस उवासगपडिमाओ पन्नत्ताओ। कयराओ खलु ताओ थेरेहिं भगवंतेहिं इक्कारस उवासगपडिमाओ पन्नत्ताओ? इमा खलु ताओ थेरेहिं भगवंतेहिं इक्कारस उवासगपडिमाओ पन्नत्ताओ, तं जहा- अकिरियावादी यावि भवति १। नाहियवाई नाहियपण्णे नाहियदिट्ठी नो सम्मावादी नो णितियावादी नो संतिपरलोगवादी २। णत्थि इहलोए णत्थि परलोए णत्थि माया णत्थि पिया णत्थि अरिहंता नत्थि चक्कवट्टी णत्थि बलदेवा णत्थि वासुदेवा णत्थि नरया णत्थि नेरइया णत्थि सुक्कडदुक्कडाणं फलवित्तिविसेसे ३। णो सुचिण्णा कम्मा सुचिण्णफला भवंति, णो दुच्चिण्णा कम्मा दुच्चिण्णफला भवंति, अफले कल्लाणपावए णो पच्चायंति जीवा ४। णत्थि निरया णत्थि सिद्धी ५। से एवंवादी से एवंपण्णे एवंदिट्ठी एवंछंदरागभिणिविट्ठे आवि भवति ६। से य भवति, महिच्छे महा-

रम्भे महापरिग्गहे अहम्मिए अहम्माणुए अहम्मसेवी अहम्मिट्ठे अधम्मक्खाई अधम्मरागी अधम्मपलोई अधम्मजीवी अधम्मपलज्जण अधम्मसीलसमुदायारे अधम्मेणं चेव वित्तिं कप्पेमाणे विहरइ ७। हण छिंद भिंद विकत्तए (अंतके) लोहितपाणी चंडा रुद्दा खुद्दा साहसिया उक्कुंचणवंचण मायाणियडि- कूडकवड(माई)सातिसंपओगबहुला दुस्सीला दुप्परिचया दुचरिया दुरणुणेया दुव्वया दुप्पडियाणंदा निस्सीला निग्गुणा णिम्मेरा निप्पच्चक्खाणपोसहोववासी असाहू ८। सव्वाओ पाणाइवायाओ अप्पडिविरया जावज्जीवाए एवं जाव सव्वाओ कोहाओ सव्वाओ माणाओ सव्वाओ मायाओ सव्वाओ लोभाओ सव्वाओ पेज्जाओ दोसाओ कलहाओ अब्भक्खाणाओ पेसुन्नाओ परपरिवादाओ अरतिरतीओ सव्वाओ मायामोसाओ मिच्छादंसणसल्लाओ अप्पडिविरया जावज्जीवाए ९। सव्वाओ कसाय- दंतकट्ठ-ण्हाणुव्वट्टणअंजण- वण्णयमद्दणविलेवण- सद्द-फरिस- रसरूव- गंधमल्लालंकाराओ अप्पडिविरया जावज्जीवाए १०। सव्वाओ सगड-रह-जाण - जुग्ग- गिल्लिथिल्लि -सीया- संदमाणिय- सयणासण- याणवाहण- भोयण पवित्थरविधीतो अप्पडिविरया जावज्जीवाए ११। असमिक्खियकारी १२। सव्वाओ आस- हत्थि- गोमहिस- गवेलय- दासीदास- कम्मकरपुरिसाओ अप्पडिविरया जावज्जीवाए १३। सव्वाओ कयविक्कय- मासद्धमास- रूवगसंववहाराओ अप्पडिविरया जावज्जीवाए १४। सव्वाओ हिरण्णसुवण्ण- धणधण्ण- मणिमुत्तिय- संखसिलप्पवालाओ अप्पडिविरया जावज्जीवाए १५। सव्वाओ कूडतुलकूडमाणाओ अप्पडिविरया १६। सव्वाओ आरंभसमारंभाओ अप्पडिविरया १७। सव्वाओ पयणपयावणाओ अप्पडिविरया १८। सव्वाओ करणकारावणाओ अप्पडिविरया १९। सव्वाओ कुट्टणपिट्टण- तज्जणताडण- वधबंधपरिकिलेसाओ अप्पडिविरया जावज्जीवाए २०। जे यावण्णे तहप्पगारा सावज्जा अबोहिया कम्मंता कज्जंति परपाण- परियावणकडा कज्जंति ततोवि अप्पडिविरया जावज्जीवाए २१। सेजहा- णामए केइपुरिसे कलममसूर-तिलमुग्ग-मासनिप्फाव- चणकुलत्थ-अलिसं-

दगजव-एवमादिहिं अयते कूरे मिच्छादंडं पउंजइ, एवामेव तहप्पगारे पुरिसजाए तित्तिर-वट्टग-लावग-कपोत-कपिंजल-मिगमहिस-वराह-गाह-गोह-कुम्मसरीसिवाइएहिं अयते कूरे मिच्छादंड पउंजति २२। जाऽविय से बाहिरिया परिसा भवति, तंजहा- दासेति वा पेसेति वा भतएति वा भाइल्लेति वा कम्मकरएति वा भोगपुरिसेति वा तेसिपि यणं अण्णयरगंसि अहालघुसयंसि अवराहंसि सयमेव गरुयं दंडं निवत्तेति, तंजहा- इमं दंडेह इमं मुंडेह इमं तज्जेह इमं तालेह इमं दुबंधणं करेह इमं नियलबंधणं इमं हडिबंधणं इमं चारगबंधणं इमं नियल-जुयल-संकुडियमोडितयं इमं हत्थच्छिन्नयं इमं पादच्छिन्नयं इमं कण्णच्छिन्नयं इमं नक्कच्छिन्नं इमं ओट्ठच्छिण्णं इमं सीसच्छिन्नं इमं मुखच्छिन्नयं इमं वइयच्छीइयं इमं हियउप्पाडियं एवं नयण दसणवयणउप्पाडियं इमं जिब्भुप्पाडियं करेह इमं ओलंबियय इमं घंसियय इमं घोलितयं इमं सूलाइयं इमं सूलाभिण्ण इमं खारवत्तियं इमं दब्भवत्तियं इमं सीहपुच्छियं इमं वसभपुच्छियं इमं कड(दव)ग्गिदड्ढयं इमं काकणिमंसखावितियं इमं भत्तपाणनिरुद्धयं करेह, इमं जावज्जीवबंधणं करेह इमं अन्नतरेणं असुभेणं कुमारेणं मारेह २३। जाऽविय से अब्भिंतरिया परिसा भवति तंजहा- मातातिवा पितातिवा भायाइ वा भइणीति वा भज्जाति वा धूयाति वा सुण्हाति वा तेसिंपिय णं अण्णयरंसि अहालहुसगंसि अवराहंसि सयमेव गरुयं दंडं निव्वत्तेति, तंजहा- सीतोदगवियडंसि कायं बोलित्ता भवति उसिणोदगवियडेण कायं ओसिंचिता भवति, अगणिकाएण कायं उवडहित्ता भवति, जोत्तेण वा वेत्तेण वा नेत्तेण वा कसेण वा छिवाडिए वा लताए वा पासाइं उद्दालेत्ता भवति दंडेण वा अट्ठीण वा मुट्ठीण वा लेलुणा वा कवालेण वा कायं आउट्टित्ता भवति २४। तहप्पगारे पुरिसजाए संवसमाणे दुम्मणे भवति, तहप्पगारे पुरिसजाते विप्पवसमाणे सुमणा भवति, तहप्पगारे पुरिसजाए दंडमासी (दंडी) दंडगुरुए दंडपुरक्खडे अहिए अस्सिं लोयंसि अहिए परंसि लोगंसि ते दुक्खति सोयति एवं जूरति तिप्पति पिट्टति

परितप्पाति, ते दुक्खण-सोयण-जूरण-तिप्पण-पिट्टण-परितप्पण-वधबंधपरिकिलेसाओ अप्पडिविरया भवंति २४। एवमेव ते इत्थिकामभोगेहिं मुच्छिया गिद्धा गढिया अज्झोववण्णा जाव वासाइं चउपंचमाइं छद्दसमाणि वा अप्पतरं वा भुज्जतरं वा कालं भुंजित्ता भोगभोगाइं पसवित्ता वेरायतणाइं संचिणित्ता बहुयाइं पावाइं कम्माइं ओसण्णं संभारकडेण कम्मुणा से जहानामए अयगोलेति वा सेलगोलेति वा उदयंसि पक्खित्ते समाणे उदगतलमइवइत्ता अहेधरणितलपतिट्ठाणे भवति २६। एवामेव तहप्पगारे पुरिसजाए वज्जबहुले धुण्णबहुले पंकबहुले वेरबहुले दंभबहुले नियडिबहुले साधिबहुले आसायणबहुले (अयसायबहुले) अयसबहुले अप्पत्तियबहुले ओसण्णं तसपाणघाती कालमासे कालं किच्चा धरणितलमतिवतित्ता अहेनगरतलपतिट्ठाणे भवति २७। ते णं नरगा अंतो वट्टा बाहिं चउरंसा अहे खुरप्पसंठाणसंठिया निच्चंधगारतमसा ववगय-गह-चंदसूर-नक्खत्तजोइसप्पहा मेद-वसा-मंस-रुहिर-पूयपडल-चिक्खल्ललित्ताणुलेवणतला असुई वीसा परमदुब्भिगंधा काउयअगणिवण्णाभा कक्खडफासा दुरहियासा नरगा असुभा नरगा असुभा नरगेसु वेदणा नो चेव णं नरएसु नेरइया निद्दायंति वा पयलायंति वा सुतिं वा रतिं वा धितिं वा मतिं वा उवलभंति २८। ते णं तत्थ उज्जलं विउलं पगाढं कक्कसं कडुयं रोद्दं दुक्खं चंडं तिव्वं तिक्खं तिव्वं दुरहियासं नरएसु नेरइया नरयवेयणं पच्चणुभवमाणा विहरंति २९। से जहानामए रुक्खे सिया पव्वतग्गे जाए मूलच्छिन्ने अग्गेगरुए जतो निन्नं जतो दुग्गं जतो विसमं ततो पवडति ३०। एवामेव तहप्पगारे पुरिसजाए गब्भाओ गब्भं जम्माओ जम्मं मरणाओ मरणं दुक्खाओ दुक्खं दाहिणगामिए नेरइए कण्हपक्खिए आगमिस्साणं दुल्लभबोधिते यावि भवति ३१। से तं अकिरियावादी ३२॥सू०१८॥

से किं तं किरियावादी? २ भवति, तंजहा- आहियवादी आहियपण्णे आहियदिट्ठी सम्मावाई नियावाई संतिपरलोयवादी १। अत्थि

इहलोए अत्थि परलोए अत्थि पिया अत्थि माता अत्थि अरिहंता अत्थि चक्कवट्टी अत्थि बलदेवा अत्थि वासुदेवा अत्थि सुकडदुक्कडाण कम्माण फलवित्तिविसेसे २। सुचिन्ना कम्मा सुचिन्नफला भवंति दुच्चिन्ना कम्मा दुच्चिण्णफला भवति सफले कल्लाण-पावए पच्चायंति जीवा ३। अत्थि नेरइया अत्थि देवा अत्थि सिद्धी ४। से एववादी एवंपन्ने एवंदिट्ठी एवं छंदरागमति(भि)-निविट्ठे आवि भवति ५। से भवति महिच्छे जाव उत्तरगामिए नेरइए सुक्कपक्खिए आगमेसाण सुलभबोहिए यावि भवति ६। से तं किरियावादी ७॥सू० १९॥ सव्वधम्मरुई यावि भवति १। तस्स णं बहूइं सीलव्वय-गुणवय-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासाइं नो सम्म पट्ठवितपुव्वाइं भवंति २। एवं दंसणसावओ, से णं सामाइयं देसावकासियं नो सम्म अणुपालित्ता भवति ३। पढमा उवासगपडिमा ॥१॥ सू० २०॥ अहावरा दोच्चा उवासग-पडिमा-सव्वधम्मरुई यावि भवति १। तस्स णं बहूइं सीलवय-गुणवय-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासाइं सम्मं पट्ठविताइं भवंति २। से णं सामाइयदेसावगासियं नो सम्मं अणुपालित्ता भवति ३। दोच्चा उवासगपडिमा ॥२॥ सू० २१॥ अहावरा तच्चा उवासगपडिमा- सव्वधम्मरुई यावि भवति १। तस्स णं बहूइं सीलवय-गुणवय-वेरमण-पच्चक्खाण- पोसहोववासाइं सम्मं पट्ठविताइं भवंति २। से णं सामाइयदेसावगासियं सम्मं अणु-पालित्ता भवति ३। से णं चाउद्दस-अट्ठमी-उद्दिट्ठ-पुण्णमासिणीसु पडि-पुण्णं पोसहं नो सम्मं अणुपालेत्ता भवति ४। तच्चा उवासगपडिमा ॥३॥ सू० २२॥ अहावरा चउत्था उवासगपडिमा- सव्वधम्मरुई यावि भवति १। तस्स णं बहूइं सीलवय जाव सम्मं पट्ठविताइं भवंति २। से णं सामाइयदेसावगासियं सम्मं अणुपालेत्ता भवति ३। से णं चाउद्दस-अट्ठमी-उद्दिट्ठ-पुण्णमासिणीसु पडिपुण्णं पोसहं सम्मं अणुपालेत्ता भवति ४। से णं एगराइयं उवासगपडिमं नो सम्मं अणुपालेत्ता भवति ५। चउत्था उवासगपडिमा ॥४॥ सू० २३॥ अहावरा

पंचमा उवासगपडिमा . सव्वधम्मरुई यावि भवति १। तस्स णं बहूइं सीलवय जाव सम्मं पडिलेहियाइं भवंति २। से णं सामाइय तहेव से णं चाउद्दसि तहेव एगराइय सम्मं अणुपालेत्ता भवति ३। से णं असिणाणए वियडभोई मउलियकडे दिया बंभयारी रत्तिं परिमाणकडे ४। से णं एयारूवेणं विहारेणं विहरमाणे जहण्णेणं एगाहं वा दुयाहं वा तियाहं वा उक्कोसेणं पंच मासे विहरिज्जा ५। पंचमा उवासगपडिमा ॥५॥ सू०२४॥ अहावरा छट्ठा उवासगपडिमा. सव्वधम्मरुई यावि भवति जाव से णं एगराइय उवासगपडिमं अणुपालित्ता भवति १। से णं असिणाणए वियडभोई मउलीयकडे दिया वा राओ वा बंभयारी सचित्ताहारे य से परिण्णाए णं भवति २। से णं एयारूवेणं विहारेणं विहरमाणे जहण्णेणं एगाहं वा दुयाहं वा जाव उक्कोसेणं छम्मासा विहरेज्जा ३। छट्ठा उवासगपडिमा ॥६॥ सू० २५॥ अहावरा सत्तमा उवासगपडिमा- सव्वधम्मरुई यावि भवति जाव राओ वा बंभयारी, सचित्ताहारे से परिण्णाए भवति १। आरंभे से अपरिण्णाए भवति २। से णं एयारूवेणं विहारेणं विहरमाणे जहण्णेणं एगाहं वा दुयाहं वा जाव उक्कोसेणं सत्तमासे विहरिज्जा ३। सत्तमा उवासगपडिमा ॥७॥ सू० २६॥ अहावरा अट्ठमा उवासगपडिमा- सव्वधम्मरुई यावि भवति जाव राओ वा बंभयारी १। सचित्ताहारे से परिण्णाए भवति आरंभे से परिण्णाए भवति पेसारंभे य से अपरिण्णाए भवति २। से णं एयारूवेणं विहारेणं विहरमाणे जाव एगाहं वा दुयाहं वा जाव उक्कोसेणं अट्ठ मासा विहरिज्जा ३। से तं अट्ठमा उवासगपडिमा ॥८॥ सू० २७॥ अहावरा नवमा उवासगपडिमा- सव्वधम्मरुयी यावि भवति जाव राओवराय बंभयारी १। सचित्ताहारे से परिण्णाए भवति, आरंभे से परिण्णाए भवति पेसारंभे से परिण्णाए भवति २। उद्दिट्ठभत्ते से अपरिण्णाए भवति ३। से णं एयारूवेणं विहारेणं विहरमाणे जहण्णेणं एगाहं वा दुयाहं वा जाव उक्कोसेणं नव मासा विहरिज्जा ४। से तं नवमा उवासगपडिमा ॥९॥ सू० २८॥ अहावरा दसमा उवासगपडिमा- सव्वधम्मरुई यावि भवति जाव उद्दि

दट्ठभत्ते से परिण्णाए भवति १। से णं खुरमुंडए वा छिहलिधाए वा तस्स णं आभ(इ)ट्ठस्स वा समाभट्ठस्स वा कप्पति दुवे भासाओ भासित्तए, तंजहा- जाणं वा जाणं, अजाणं वा नो जाणं २। से णं एयारूवेण विहारेणं विहरमाणे जहण्णेणं एगाहं वा दुयाहं वा उक्कोसेणं दस मासा विहरिज्जा ३। दसमा उवासगपडिमा ॥१०॥सू० २९॥ अहावरा एक्कारसमा उवासगपडिमा- सव्वधम्मरुई जाव उद्दिट्ठभत्ते से परिण्णाए भवति १। से णं खुरमुंडए वा लुत्तसिरए वा गहियायारभंडगनेवत्थे जारिसे समणाणं निग्गंथाणं धम्मे पन्नत्ते तं सम्मं काएण फासेमाणे पालेमाणे पुरओ जुगमायाए पेहमाणे दट्ठूण तसे पाणे उद्धट्टु पाए रीएज्जा साहट्टु पाए रीएज्जा वितिरिच्छं वा पायं कट्टु रीएज्जा सति परक्कमे संजतामेव परिक्कमेज्जा नो उज्जुयं गच्छेज्जा २। केवलं से नायए पेज्जबंधणे अवोच्छिण्णे भवति ३। एवं से कप्पति नायविहिं एत्तए, तत्थ से पुव्वागमणेणं पुव्वाउत्ते चाउलोदणे पच्छाउत्ते भिलिंगसूवे कप्पति से चाउलोदणे पडिगाहित्तए नो से कप्पइ भिलिंगसूवे पडिगाहित्तए ४। तत्थ णं से पुव्वागमणेणं पुव्वाउत्ते भिलिंगसूवे पच्छाउत्ते चाउलोदणे कप्पति से भिलिंगसूवे पडिगाहित्तए नो से कप्पति चाउलोदणे पडिगाहित्तए ५। तत्थ णं से पुव्वागमणेणं दोवि पुव्वाउत्ताइं कप्पंति से दोवि पडिगाहित्तए ६। तत्थ से पुव्वागमणेणं दोवि पच्छाउत्ताइं नो से कप्पति दोवि पडिगाहित्तए ७। तत्थ जे से पुव्वागमणेणं पुव्वाउत्ते से कप्पति पडिगाहित्तए ८। जे से तत्थ पुव्वागमणेणं पच्छाउत्ते नो से कप्पइ पडिगाहित्तए ९। तत्थ णं गाहावइकुलं पिंडवायपडियाए अणुपविट्ठस्स कप्पइ एवं वइत्तए- समणोवासगस्स पडिमापडिवण्णस्स भिक्खं दलयह १०। एयारूवेणं विहारेणं विहरमाणं केइ पासित्ता वदेज्जा- के आउसो! तुमं वत्तव्वं सिया? समणोवासए पडिमं पडिवज्जिते अहमंसीति वत्तव्वं सिया ११। से णं एयारूवेणं विहारेणं विहरमाणे जहण्णेणं एगाहं वा दुयाहं वा तियाहं वा उक्कोसेणं एक्कारस मासे विहरेज्जा १२। एगारसमा उवासगपडिमा ॥११॥ एताओ खलु ताओ थेरेहिं भगवंतेहिं एगारस उवासग

पडिमाओ पण्णत्ताओत्ति बेमि ॥सु० ३०॥ छट्ठा दसा समत्ता ॥६॥

अथ भिक्षुप्रतिमाख्यं सप्तममध्ययनम्।

सुयं मे आउसंतेण भगवया एवमक्खायं- इह खलु थेरेहिं भगवंतेहिं बारस भिक्खुपडिमाओ पण्णत्ताओ १। कयराओ खलु ताओ जाव पण्णत्ताओ ? इह खलु ताओ थेरेहिं भगवंतेहिं बारस भिक्खुपडिमाओ पण्णत्ताओ, तं जहा- मासिया भिक्खुपडिमा, दोमासिया भिक्खुपडिमा, तिमासिया भिक्खुपडिमा, चउमासिया, पंचमासिया, छम्मासिया, सत्तमासिया, पढमा सत्तराइंदिया ८, दुच्चा सत्तराइंदिया, तच्चा सत्तराइंदिया १०, अहोराइंदिया ११, एगराइंदिया भिक्खुपडिमा १२ ॥सू० ३१॥ मासियं णं भिक्खुपडिमं – पडिवन्नस्स अणगारस्स निच्चं वोसट्ठकाए चियत्तदेहे जे केई उवसग्गा उप्पज्जंति, तं जहा- दिव्वा वा माणुसा वा तिरिक्खजोणिया वा ते उप्पण्णे सम्मं सहति खमति तितिक्खति अहियासेति १। मासियं णं भिक्खुपडिमं पडिवण्णस्स अणगारस्स कप्पइ एगा दत्ती भोयणस्स पडिगाहित्तए एगा पाणगस्स २। अण्णाउंछं सुद्धोवहडं निज्जूहित्ता बहवे दुप्पय- चउप्पय- समण माहण- अतिहि किविण- वणिमगा, कप्पइ से एगस्स भुंजमाणस्स पडिगाहित्तए ३। णो दुण्हं णो तिण्हं णो चउण्हं णो पंचण्हं, णो गुव्विणीए णो बालवच्छाए णो दारगं पेज्जमाणीए, नो अंतो एलुयस्स दोवि पाए साहट्टु दलमाणीए, नो बाहिं एलुयस्स दोवि पाए साहट्टु दलमाणीए ४। एगं पायं अंतो किच्चा एगं पायं बाहिं किच्चा एलुयं विक्खंभइत्ता एवं दलयति एवं से कप्पति पडिगाहित्तए ५। एवं से नो दलयति एवं से नो कप्पइ पडिगाहित्तए ६। मासिय णं भिक्खुपडिम पडिवन्नस्स अणगारस्स तओ गोयरकाला पन्नत्ता, तंजहा- आदिमे मज्झिमे चरिमे, आदि चरेज्जा णो मज्झे चरिज्जा णो चरिमे चरिज्जा, मज्झे चरेज्जा नो आइ चरेज्जा नो चरिमे चरेज्जा, चरिमं चरेज्जा नो आदिमं चरेज्जा नो मज्झे चरेज्जा ७। मासिय ण भिक्खुप-

डिमं पडिवण्णस्स अणगारस्स छव्विहा गोयरचरिया पण्णत्ता, तं जहा- पेला अद्धपेला गोमुत्तिया पयंगवीपिया संबुक्कावट्टा गंतुंपच्चागया ८। मासियं णं भिक्खुपडिमं पडिवण्णस्स अणगारस्स जत्थ णं केइ जाणति कप्पइ से तत्थ एगराइयं वसित्तए, जत्थ णं केइ न जाणइ से कप्पति तत्थ एगरायं वा दुरायं वा वसित्तए, नो कप्पइ एगरायाओ वा दुरायाओ वा परं वत्थए, जं तत्थ एगरायाओ वा दुरायाओ वा परं वसति से संतरा छेदे वा परिहारे वा ९। मासियं ण भिक्खुपडिमं पडिवण्णस्स अणगारस्स कप्पंति चत्तारि भासाओ भासित्तए, तं जहा- जायणी पुच्छणी अणुण्णवणी पुट्ठस्स वागरणी १०। मासियं णं भिक्खुपडिमं पडिवण्णस्स अणगारस्स कप्पंति तओ उवस्सगा पडिलेहित्तए, तं जहा- अहे आरामगिहंसि वा अहे वियडगिहंसि वा अहे रुक्खमूलगेहंसि वा ११। मासियं णं भिक्खुपडिमं पडिवण्णस्स अणगारस्स कप्पंति तओ उवस्सगा अणुण्णवित्तए, तं जहा- अहे आरामगिहं अहे वियडगिहं अहे रुक्खमूलगिहं १२। मासियण्णं भिक्खुपडिमं पडिवण्णस्स अणगारस्स कप्पति तओ उवस्सगा उवायणावित्तए तं चेव १३। मासियं णं भिक्खुपडिमं पडिवण्णस्स अणगारस्स कप्पइ तओ संथारगा पडिलेहित्तए, तं जहा- पुढवीसिलं वा कट्ठसिलं वा अहासंथडमेव १४। मासियं णं भिक्खुपडिमं पडिवण्णस्स अणगारस्स कप्पइ तओ संथारा अणुण्णवेत्तए, तं चेव १५। मासियं ण जाव कप्पंति तओ संथारा ओवायणावेत्तए तं चेव १६। मासियं णं जाव इत्थी उवस्सयं उवागच्छिज्जा से इत्थी एवं पुरिसे णो से कप्पइ तं पडुच्च निक्खमित्तए वा पविसित्तए वा १७। मासियं जाव पडिवण्णस्स केइ उवस्सयं अगणिकाएण झामेज्जा नो से कप्पइ तं पडुच्च निक्खमित्तए वा पविसित्तए वा, तत्थ णं केइ बाहाय असिं गहाय आगच्छेज्जा जाव से नो कप्पइ तं पडुच्च अवलंबित्तए वा पच्चवलंबित्तए वा, कप्पइ से अहारियं रीइत्तए १८। मासियं णं भिक्खुपडिमं जाव पायंसि

थाणू वा कंटए वा हीरए वा सक्करा वा अणुपविसेज्जा नो कप्पइ से नीहरित्तए वा विसोहित्तए वा, कप्पइ से आहारियं रीइत्तए १९। मासियं णं जाव अच्छिंसि वा० पाणाणि वा बीयाणि वा रए वा परियावज्जिज्जा नो से कप्पइ नीहरित्तए वा विसोहित्तए वा, कप्पइ से आहारियं रीइत्तए २०। मासियं णं जाव जत्थेव सूरिए अत्थमेज्ज तत्थेव जलंसि वा थलंसि वा दुग्गंसि वा निण्णंसि वा पव्वयंसि वा विसमंसि वा गड्डाए वा दरीए वा, कप्पइ से तं रयणिं तत्थेव उवायणावित्तए, नो से कप्पइ पदमवि गमित्तए, कप्पइ से कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव जलंते पाईणाभिमुहस्स वा दाहिणाभिमुहस्स वा पडीणाभिमुहस्स वा उत्तराभिमुहस्स वा आहारियं रीइत्तए २१। मासियं णं जाव नो कप्पइ अणंतरहियाए पुढवीए निद्दाइत्तए वा पयलाइत्तए वा, केवली बूया- आयाणमेयं, से तत्थ निद्दायमाणे वा पयलायमाणे वा हत्थेहिं भूमिं परामुसेज्जा अहाविधिमेव ठाणं ठाइत्तए निक्खमित्तए वा, उच्चारपासवणेणं उव्वा(प्पा)हिज्जेज्जा नो से कप्पइ ओगिण्हित्तए, कप्पइ से पुव्वपडिलेहितए थंडिले उच्चारपासवणं परिट्ठवित्तए, तमेव उवस्सयं आगम्म अहाविधिं ठाणं ठाइत्तए २२। मासियं णं जाव नो कप्पइ ससरक्खेहिं पाएहिं (काएहिं) गाहावइकुलं भत्ताए वा पाणाए वा निक्खमित्तए वा पविसित्तए वा, अह पुण एवं जाणेज्जा ससरक्खे सेअत्ताए वा जल्लत्ताए वा मलत्ताए वा पंकत्ताए वा विद्धत्थे, से कप्पइ गाहावइकुलं भत्ताए वा पाणाए वा निक्खमित्तए वा पविसित्तए वा २३। मासियं णं जाव नो कप्पइ सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा हत्थाणि वा पायाणि वा दंताणि वा अच्छीणि वा मुहं वा उच्छोलित्तए वा पधोवित्तए वा णण्णत्थ लेवालेवेण वा २४। मासियं जाव नो कप्पइ आसस्स वा हत्थिस्स वा गोणस्स वा, महिसस्स वा कोलस्स वा साणस्स वा कोलसुणगस्स वा

वा दुट्ठस्स वा वज्झस्स वा आवडमाणस्स पदमवि पच्चोसक्कित्तए, अदुट्ठस्स आवडमाणस्स कप्पति जुगमित्तं पच्चोसक्कित्तए २५। मासियं णं जाव नो कप्पइ छायाओ सीयंति उण्हं इत्तए उण्हाओ उण्हंति नो छायं एत्तए, जं जत्थ जया सिया तं तत्थ अहियासए २६। एवं खलु एसा मासिया भिक्खुपडिमा अहासुत्तं अहाकप्पं अहामग्गं अहातच्चं सम्मं काएणं फासित्ता पालित्ता सोहित्ता तीरित्ता किट्टित्ता आराहित्ता आणाए अणुपालित्ता भवति २७॥सू० ३२॥ दो मासियं णं भिक्खुपडिमं पडिवण्णस्स अणगारस्स निच्चं वोसट्ठकाए तं चेव जाव दो दत्ती १। तिमासियं णं जाव तिण्णि दत्तीओ २। चाउम्मासियं णं जाव चत्तारि दत्तीओ ३। पंचमासियं णं जाव पंच दत्तीओ ४। छमासियं णं जाव छ दत्तीओ ५। सत्तमासियं णं सत्त दत्तीओ ६। जत्थ जत्तिया मासा तत्थ तत्तिया दत्तीओ ७॥सू० ३३॥ पढमं सत्तराइंदियं णं भिक्खुपडिमं पडिवण्णस्स अणगारस्स निच्चं वोसट्ठकाए जाव अहियासेइ १। कप्पइ से चउत्थेणं भत्तेणं अपाणएणं बहिया गामस्स वा जाव रायहाणीए वा उत्ताणगस्स वा पासेल्लगस्स वा नेसज्जियस्स वा ठाणं ठाइत्तए २। तत्थ दिव्वमाणुस्सतिरिक्खजोणिया उवसग्गा समुप्पज्जेज्जा, ते णं उवसग्गा पयलिज्ज वा पवडिज्ज वा नो से कप्पइ पयलित्तए वा पवडित्तए वा, तत्थ से उच्चारपासवणे उव्वाहेज्जा नो से कप्पइ उच्चारपासवणं ओगिण्हित्तए, कप्पइ से पुव्वपडिलेहियंसि थंडिलंसि उच्चारपासवणं परिट्ठवित्तए, अहाविधिमेव ठाणं ठाइत्तए ३। एसा खलु पढमा सत्तराइंदिया भिक्खुपडिमा अहासुत्तं जाव आणाए अणुपालिता भवति ४। एवं दोच्चा सत्तराइंदियावि, नवरं दंडातियस्स वा लगंडसाइस्स वा उक्कुडुयस्स वा ठाणं ठाइत्तए, सेसं तं चेव जाव अणुपालिता भवति ५। एवं तच्चा सत्तराइंदियावि भवति, नवरं गोदुहियाए वा वीरासणियस्स वा अंबखुज्जस्स वा ठाणं ठाइत्तए, एवं चेव जाव अणुपालिता भवति ६॥सू० ३४॥ एवं अहो-

राइंदियावि नवरं छट्ठेणं भत्तेणं अपाणएणं बहिया गामस्स वा जाव रायहाणियस्स वा, ईसिं दोवि पाए साहट्टु वग्घारियपाणिस्स ठाणं ठाइत्तए, सेसं तं चेव जाव अणुपालिता भवति १। एगराइं णं भिक्खुपडिमं पडिवण्णस्स अणगारस्स निच्चं वोसट्ठकाए जाव अहियासेति २। कप्पइ से अट्ठमेणं भत्तेणं अपाणएणं बहिया गामस्स वा जाव रायहाणीए वा ईसिपब्भारगएणं काएणं एगपोग्गलट्ठिताए दिट्ठीए अणिमिसनयणे अहापणिहितेहिं गत्तेहिं सव्विंदिएहिं गुत्ते दोवि पाए साहट्टु वग्घारियपाणिस्स ठाणं ठाइत्तए ३। तत्थ से दिव्व-माणुस-तिरिक्खजोणिया जाव अहाविधिमेव ठाणं ठाइत्तए ४। एगराइं णं भिक्खुपडिमं अणणुपालेमाणस्स अणगारस्स इमे तओ ठाणा अहियाए असुभाए अखमाए अणिस्सेसाए अणाणुगामियत्ताए भवंति, तं जहा- उम्मायं वा लभेज्जा दीहकालियं वा रोगायंकं पाउणेज्जा, केवलीपन्नत्ताओ धम्माओ वा भंसेज्जा ५। एगराइयं णं भिक्खुपडिमं सम्मं अणुपालेमाणस्स अणगारस्स इमे तओ ठाणा हियाए जाव आणुगामियत्ताए भवंति, तं जहा- ओहिणाणे वा से समुप्पज्जेज्जा, मणपज्जवनाणे वा से समुप्पज्जेज्जा केवलनाणे वा से असमुप्पण्णपुव्वे समुप्पज्जेज्जा ६। एवं खलु एसा एगराइया भिक्खुपडिमा अहासुत्तं अहाकप्पं अहामग्गं अहातच्चं सम्मं काएण फासित्ता पालिता सोहिता तीरिता किट्टिता आराहिता आणाए अणुपालित्ता यावि भवति ७। एताओ खलु ताओ थेरेहिं भगवंतेहिं बारस भिक्खुपडिमाओ पण्णत्ताओत्ति बेमि ८। ॥सू० ३५॥ सत्तमी दसा समत्ता ॥७॥

अथ पर्युषणाकल्पाख्यं अष्टममध्ययनम्।

तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे पंचहत्थुत्तरे होत्था, तं जहा- हत्थुत्तराहिं चुए चइत्ता गब्भं वक्कंते, हत्थुत्तराहिं गब्भाओ गब्भं साहरिए, हत्थुत्तराहिं जाए, हत्थुत्तराहिं मुंडे भ-

क्खित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वइए, हत्थुत्तराहिं भणंते अणुत्तरे निव्वाघाए निरावरणे कसिणे पडिपुण्णे केवलवरनाणदंसणे समुप्पन्ने, साइणा परिनिव्वुए भयवं, जाव भुज्जो २ उवदंसेइत्ति बेमि॥ सू० ३६॥ अट्ठमी दसा समत्ता ॥८॥

अथ मोहनीयस्थानाख्यं नवममध्ययनम्।

तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा नामं नगरी होत्था, वण्णओ, पुण्णभद्दे चेइए, कोणिए राया, धारिणी देवी, सामी समोसढे, परिसा निग्गया, धम्मो कहिओ परिसा पडिगया ३। अज्जोत्ति समणे भगवं महावीरे बहवे निग्गंथा य निग्गंथीओ य आमंतेत्ता एवं वयासी-एवं खलु अज्जो! तीसं मोहणीयट्ठाणाइं इमाइं इत्थी वा पुरिसो वा अभिक्खणं २ आयरमाणे वा समायरमाणे वा मोहणिज्जत्ताए कम्मं पकरेति, तं जहा-

जे केवि तसे पाणे, वारिमज्झे विगाहिया। उदएणऽक्कम्म मारेति महामोहं पकुव्वइ ॥१८॥ पाणिणा संपिहित्ताणं, सोयमावरिय पाणिणं। अंतो नदंतं मारेइ महामोहं पकुव्वइ ॥१९॥ जायतेयं समारब्भ, बहु ओरुंभिया जणं। अंतो धूमेण मारेइ, महामोहं पकुव्वइ ॥२०॥ सीसंमि जे पहणंति, उत्तमंगंमि चेयसा। विभज्ज मत्थयं फाले, महामोहं पकुव्वइ ॥२१॥ सीसावेढेण जे केइ, आवेढेइ अभिक्खणं। तिव्वासुभसमायारे महामोहं पकुव्वइ ॥२२॥ पुणो २ पणिधीए हणित्ता बाले उवहसे जणं। फलेण अदुवा दंडेणं महामोहं पकुव्वइ ॥२३॥ गूढायारी निगूहिज्जा, मायं मायाए छायए। असच्चवाई णिण्हाइ महामोहं पकुव्वइ ॥२४॥ धंसेइ जो अभूएणं अकम्मं अत्तकम्मुणा। अदुवा तुममकासित्ति महामोहं पकुव्वइ ॥२५॥ जाणमाणो परिसओ सच्चमोसाइ भासति। अक्खीणझंझे पुरिसे महामोहं पकुव्वइ ॥२६॥ अणायगस्स नयवं दारे तस्सेव धंसिया। विउलं विक्खोभइत्ताणं किच्चाणं पडिबाहिरं ॥२७॥ उवगसंतंपि झंपित्ता पडिलोमाहिं वग्गुहिं। भोगभोगे वियारेति महामोहं पकुव्वइ ॥२८॥ अकुमारभूए जे केइ कुमारभूएत्तिऽहं वए। इत्थीवि-

सयगेहीए महामोहं पकुव्वइ ॥२९॥ अबंभयारी जे केई बंभयारीत्ति-ऽहं वए। गद्दभेव गवं मज्झे विस्सरं नदती नदं ॥३०॥ अप्पणो अहिए बाले मायामोसं बहुं भसे। इत्थीविसयगिद्धिए महामोहं पकुव्वइ ॥३१॥ जंनिस्सिए उव्वहती जससाऽभिगमेण य। तस्स लुब्भइ वित्तंमि महामोहं पकुव्वइ ॥३२॥ ईसरेण अदुवा गामेणं अणीसरे ईसरीकए। तस्स संपग्गहित(यहीण)स्स, सिरी अतुल्लमागया ॥३३॥ ईसादोसेण आइट्ठे कलुसावि(उ)लचेयसे। जे अंतरायं चेएइ महामोहं पकुव्वइ ॥३४॥ सप्पी जहा अंडपुडं भत्तारं जो विहिंसइ। सेणावतिं पसत्थारं महामोहं पकुव्वइ ॥३५॥ जे नायगं च रट्ठस्स नेयारं निगमस्स वा। सेट्ठिं बहुरवं हंता महामोहं पकुव्वइ ॥३६॥ बहुजणस्स नेतारं दीवं ताणं च पाणिणं। एयारिसं नरं हंता महामोहं पकुव्वइ ॥३७॥ उवट्ठियं पडिविरयं संजयं सुसमाहियं। विउक्कम्म धम्माओ भंसेति महामोहं पकुव्वइ ॥३८॥ तहेवाणतनाणीणं जिणाणं वरदंसिणं। तेसिं अवण्णवं बाले महामोहं पकुव्वइ ॥३९॥ णेयाउयस्स मग्गस्स दुट्ठे अवहर(रज्ज)ती बहुं। तं तिप्पयंतो भावेति महामोहं पकुव्वइ ॥४०॥ आयरियउवज्झाया सुयं विणयं च गाहिए। ते चेव खिंसती बाले महामोहं पकुव्वइ ॥४१॥ आयरिउवज्झायाणं सम्मं न पडितप्पई। अपडिपूयए थद्धे महामोहं पकुव्वइ ॥४२॥ अबहुस्सुएवि(य) जे केः सुएणं पविकत्थई। सज्झायवायं वयति महामोहं पकुव्वइ ॥४३॥ अतवस्सी य जे केई तवेणं पविकत्थई। सव्वलोगपरे तेणे महामोहं पकुव्वइ ॥४४॥ साहारणट्ठा जे केई गिलाणंमि उवट्ठिए। पभू न कुव्वई किच्चं मज्झंपि से ण कुव्वति ॥४५॥ सढे नियडिपण्णाणे कलुसाउलचेयसे। अप्पणो य अबोहीए महामोहं पकुव्वइ ॥४६॥ जे कहाअधिकरणाइं संपउंजे पुणो पुणो। सव्वतित्थाण भेयाए महामोहं पकुव्वइ ॥४७॥ जे य आहम्मिए जोए संपउंजे पुणो पुणो। सहाहेउं सहीहेउं महामोहं पकुव्वइ ॥४८॥ जे य माणुस्सए भोए अदुवा पारलोइए। तेऽतिप्पयंतो आसयति महामोहं पकुव्वइ ॥४९॥ इड्ढी जुती जसो वण्णो देवाणं बलवीरियं। तेसिं अवण्णवं बाले महामोहं पकुव्वइ ॥५०॥ अपस्समाणो

पव्वयाणि देवे जक्खे य गुज्झगे । अण्णाणी जिणपूयट्ठी महामोहं पकुव्वइ ॥५१॥ एते मोहगुणा वुत्ता कम्मंता चित्तवद्धणा । जे उ भिक्खू विवज्जेज्जा चरिज्जऽत्तगवेसए ॥५२॥ जंपि जाणे इओ पुव्वं किच्चाकिच्चं बहुं जढं । तं वंता ताणि सेविज्जा जेहिं आयारवं सिया ॥५३॥ आयारगुत्ते सुद्धप्पा धम्मे ठिच्चा अणुत्तरे । ततो वमे सए दोसे विसमासीविसो जहा ॥५४॥ सुज्झोत(सुचत्त)दोसे सुद्धप्पा धम्मट्ठी विदितापरे । इहेव लभते कित्तिं पेच्चा य सुगतिं वरे ॥५५॥ एवं अभिसमागम्म सूरा दढपरक्कमा । सव्वमोहविनिम्मुक्का जातिमरणमतिच्छिय ॥५६॥ त्ति बेमि ॥ इइ नवमा दसा समत्ता ॥९॥

अथ आयतिस्थानाख्यं दशममध्ययनम्।

तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नामं नयरे होत्था वण्णओ, गुणसिलए चेइए रायगिहे नगरे सेणिए नामं राया होत्था रायवण्णओ, एवं जहा ओवाइए जाव चेल्लणाए सद्धिं जाव विहरइ ॥ सू० ३७॥ तए णं से सेणिए राया अण्णया कयाई ण्हाए कयबलिकम्मे कयकोउयमंगलपायच्छित्ते सिरसाण्हाते कंठेमालकडे आविद्धमणिसुवण्णे कप्पियहारद्धहारे तिसरय-पालंबपलंबमाण-कडिसुत्तसुकयसोहे पिणद्धगेविज्जे अंगुलेज्जग जाव कप्परु-क्खए चेव अलंकियविभूसिए नरिंदे सकोरंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं जाव ससिव्व पियदंसणे नरवई जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छइ २त्ता सीहासण-वरंसि पुरत्थाभिमुहे निसीयइ २त्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २त्ता एवं वयासी- गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया । जाइं इमाइं रायगिहस्स नगरस्स बहिया तंजहा- आरामाणि य उज्जाणाणि य आएसणाणि य आयतणाणि य देवकुलाणि य सभाओ य पवाओ य पणियगिहाणि य पणियसालाओ य छुहाकम्मंताणि य वाणियकम्मंताणि य एवं कट्ठकम्मंताणि य इंगालकम्मंताणि य वणकम्मंताणि य दब्भकम्मंताणि य

जे तत्थेव महत्तरगा आणत्ता चिट्ठंति ते एवं वदह-एवं खलु देवा-
णुप्पिया! सेणिए राया भंभसारे आणवेति-जया णं समणे भगवं
महावीरे आइगरे तित्थयरे जाव संपाविउकामे पुव्वाणुपुव्विं
चरमाणे गामाणुगामं दूतिज्जमाणे सुहंसुहेणं विहरमाणे सं-
जमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे इहमागच्छेज्जा तया णं देवाणु-
प्पिया! तुमे भगवओ महावीरस्स अहापडिरूवं उग्गहं अणुजाणे-
ज्जा, सेणियस्स रण्णो भंभसारस्स एयमट्ठं पियं निवेएह १। तए
णं ते कोडुंबियपुरिसा सेणिएणं रण्णा भंभसारेण एवं वुत्ता समा-
णा हट्ठतुट्ठा जाव हियया जाव एवं सामित्ति आणाए विणएणं
वयणं पडिसुणंति त्ता सेणियस्स रण्णो अंतियाओ पडिनिक्खमति
२ त्ता रायगिहस्स नगरस्स मज्झंमज्झेणं निग्गच्छंति २ त्ता जाइं
इमाइं भवंति रायगिहस्स बहिया आरामाणि वा जाव जे तत्थ महत्त-
रगा अण्णत्ता चिट्ठंति ते एवं वदंति जाव सेणियस्स रण्णो एय
मट्ठं पियं निवेदिज्जा भे पियं भवतु २। दोच्चंपि एवं वदंति २त्ता
जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगया ३॥सू०३८॥

तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे आदिगरे जा-
व गामाणुगामं दूइज्जमाणे जाव अप्पाणं भावेमाणे विहरति १।
तते णं रायगिहे नगरे सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर जाव परिसा णि-
गया जाव पज्जुवासति २। तते ण महत्तरगा जेणेव समणे भगवं महा-
वीरे तेणेव उवागच्छंति २त्ता समणं भगवं महावीरं वंदंति नम
संति २त्ता नामगोयं पुच्छंति २ त्ता नामगोत्तं पधारेंति २त्ता ए-
गयओ मिलंति २ त्ता एगंतमवक्कमंति २ त्ता एवं वदासी-जस्स
णं देवाणुप्पिया! सेणिए राया भंभसारे दंसणं कंखइ जस्स णं
देवाणुप्पिया! सेणिए राया दंसणं पीहेति जस्स णं देवाणुप्पिया!
सेणिए राया दंसणं पत्थेति जस्स णं देवाणुप्पिया! सेणिए राया
दंसणं अभिलसति जस्स णं देवाणुप्पिया! सेणिए राया नाम-
गोत्तस्सावि सवणयाए हट्ठतुट्ठ जाव भवति से णं समणे भगवं
महावीरे आदिगरे तित्थगरे जाव सव्वण्णू सव्वदरिसी पुव्वा-

णुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे सुहंसुहेणं विहरमाणे इहमागते इह संपत्ते इह समोसढे जाव अप्पाणं भावेमाणे विहरति ३। तं गच्छामो णं देवाणुप्पिया ! सेणियस्स रण्णो एयमट्ठं पियं निवेदेमो पियं भे भवतुत्तिकट्टु एयमट्ठं अण्णमण्णस्स पडिसुणंति २ त्ता जेणेव रायगिहे नगरे तेणेव उवागच्छंति २ त्ता रायगिहं नगरं मज्झंमज्झेणं जेणेव सेणियस्स रण्णो गिहे जेणेव सेणिए राया तेणेव उवागच्छंति २ त्ता सेणियरायं करतलपरिग्गहियं जाव जएणं विजएणं वद्धावेंति २ त्ता एवं वयासी- जस्स णं सामी ! दंसणं कंखंति जाव से णं समणे भगवं महावीरे गुणसिलए चेइए जाव विहरइ, तं णं देवाणुप्पियाणं पियं निवेदामो पियं भे भवतु ४॥ सू० ३९॥ तते णं से सेणिए राया तेसिं पुरिसाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ जाव हियए सिंहासणाओ अब्भुट्ठेति २ त्ता जहा कोणिओ जाव वंदति नमंसति २ त्ता ते पुरिसे सक्कारेति संमाणेति २ त्ता विउलं जीवियारिहं पीतिदाणं दलयति २ त्ता पडिविसज्जेइ २ त्ता नगरगुत्तिए सद्दावेइ २ एवं वदासी- खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! रायगिहं नगरं सब्भिंतरबाहिरियं आसियसंमज्जिओवलित्तं जाव पच्चप्पिणंति ॥ सू० ४०॥ तए णं से सेणिए राया बलवाउयं सद्दावेति २ त्ता एवं वयासी- खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! हयगयरहजोहकलियं चाउरंगिणिं सेन्नं सन्नाहेह जाव सेऽवि पच्चप्पिणति ३। तते णं से सेणिए राया जाणसालियं सद्दावेति २ त्ता एवं वदासी- खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! धम्मियं जाणपवरं जुत्तामेव उवट्ठवेह २ त्ता मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणाहि २। तते णं से जाणसालिए सेणिएणं रण्णा एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठ जाव हियये जेणेव जाणसाला तेणेव उवागच्छइ २ त्ता जाणसालं अणुपविसइ २ त्ता जाणं पच्चुवेक्खइ २ त्ता पच्चोरुभति २ त्ता जाणगं संपमज्जइ २ त्ता जाणगं णीणेति २ त्ता जाणगं संवट्टइ २ त्ता दूसं पवीणेति २ त्ता जाणाइं समलंकरेइ २ त्ता जाणाइं वरमंडियाइं करेइ २ त्ता दूसं पीहिणेइ २ त्ता जाणपूइं संवेढेइ २ त्ता जेणेव वाहणसाला तेणेव उवागच्छइ २ त्ता वाहणसालं अणुपविसति २ त्ता वाहणाइं पच्चुविक्खति

२त्ता वाहणाइं संपमज्जइ २त्ता वाहणाइं अप्फालइ २त्ता वाहणाइं णीणेति २त्ता दूसे पविणेति २त्ता वाहणाइं अलंकारेति २त्ता वाहणाइं वराभरण(वरभंड)मंडियाइं करेति २त्ता जाणगं जोएति २त्ता वट्टिमी(वट्टमग्गं) गाहेति २त्ता पओगलट्ठिं पओगधरए य समं आरोहेइ २त्ता जेणेव सेणिए राया तेणेव उवागच्छइ २त्ता करयल जाव एवं वदासी- जुत्ते ते सामी ! धम्मिए जाणपवरे, आइट्ठा भद्दंत ! वग्गुगाही ३॥ सू० ४१॥ तए णं सेणिए राया भंभासारे जाणसालियस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ जाव मज्जणघरं अणुपविसइ जाव कप्परुक्खए चेव अलंकियविभूसिए नरिंदे जाव मज्जणघराओ पडिनिक्खमति २त्ता जेणेव चेल्लणा देवी तेणेव उवागच्छइ २त्ता चिल्लणं देवीं एवं वदासी- एवं खलु देवाणुप्पिए ! समणे भगवं महावीरे आदिगरे तित्थगरे जाव पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे जाव संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरति, तं महाफलं खलु देवाणुप्पिए ! तहारूवाणं अरहंताणं जाव तं गच्छामो देवाणुप्पिए ! समणं भगवं महावीरं वंदामो नमंसामो सक्कारेमो संमाणेमो कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासेमो एतं णे इह भवे य परभवे य हियाए सुहाए खमाए निस्सेसाए आणुगामियत्ताए भविस्सति ॥ सू० ४२॥ तते णं सा चिल्लणा देवी सेणियस्स रण्णो अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ जाव पडिसुणेति २त्ता जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ २त्ता ण्हाया कयबलिकम्मा कयकोउयमंगलपायच्छित्ता, किं ते ? वरपायपत्तनेउर- मणिमेहला-हाररइयउवचियकडगखुड्डगएगावलिकंठसुत्तमुरज-तिसरयवरवलय- हेमसुत्तय- कुंडलुज्जोवियाणणा रयणविभूसियंगी चीणंसुयवत्थपवरपरिहिया दुगुल्लसुकुमालकंतरमणिज्जउत्तरिज्जा सव्वोउयसुरभिकुसुम-सुंदररइय-पलंबसोहंतकंतविकसंतचित्तमाला वरचंदणचच्चिया वराभरणभूसियंगी कालागुरुधूवधूविया सिरीसमाणवेसा बहूहिं खुज्जाहिं चिलातियाहिं जाव महत्तरगविंदपरिक्खित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव सेणिए राया तेणेव उवागच्छइ ॥ सू० ४३॥ तए णं से सेणिए राया चिल्लणाए देवीए

सद्धिं धम्मियं जाणप्पवरं दुरूहति सकोरिंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरि-ज्जमाणेणं उववाइयगमेणं जाव पज्जुवासइ १। एवं चेल्लणावि जाव महत्तरगविंदपरिक्खित्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छति २त्ता समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति २त्ता सेणियं रायं पुरओ काउं ठितिया चेव पज्जुवासति २। तते णं समणे भगवं महावीरे सेणियस्स रण्णो भंभासारस्स चिल्लणाए य देवीए तीसे महतिमहालियाए परिसाए जइपरिसाए इसिपरिसाए मुणिपरिसाए देवपरिसाए मणुस्सपरिसाए देवीपरिसाए अणेगसयाए जाव धम्मो कहिओ, परिसा पडिगया, सेणिओ राया पडिगओ ३॥सू० ४४॥ तत्थेगतियाणं निग्गंथाण य निग्गंथीण य सेणियं रायं चिल्लणं देवीं पासित्ताणं इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव संकप्पे समुप्पज्जित्था- अहो णं सेणिए राया महड्ढिए जाव महासोक्खे जे णं ण्हाए कयबलिकम्मे कयकोउयमंगलपायच्छित्ते सव्वालंकारा भूसिते चिल्लणाए देवीए सद्धिं उरालाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरति १। न मे दिट्ठे देवे देवलोगंमि, सक्खं खलु अयं देवे २। जइ इमस्स तवनियमबंभचेरवासस्स फलवित्तिविसेसे अत्थि तया वयमवि आगमेस्साए इमाइं उरालाइं एयारूवाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरामो सेतं साहू ३। अहो णं चिल्लणा देवी महिड्ढिया जाव महासोक्खा जा णं ण्हाया कयबलिकम्मा जाव सव्वालंकारविभूसिया सेणिएणं रण्णा सद्धिं उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी विहरइ ४। ण मे दिट्ठाओ देवीओ देवलोए, सक्खं खलु य देवी ५। जइ इमस्स सुचरियस्स तवनियमबंभचेरवासस्स कल्लाणफलवित्तिविसेसे अत्थि वयमवि आगमिस्साणं इमाइं एयारूवाइं उरालाइं जाव विहरामो, सेतं साहुणी ६॥सू० ४५॥ अज्जोत्ति समणे भगवं महावीरे ते बहवे निग्गंथा य निग्गंथीओ य आमंतित्ता एवं वयासी- सेणियं रायं चिल्लणं देवीं च पासित्ता इमे एयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था- अहो णं

सेणिए राया महिड्ढिए जाव से तं साहू, अहो णं चिल्लणा देवी
महड्ढिया सुंदरा जाव से तं साहुणी, से णूणं अज्जो ! अत्थे समट्ठे ?
हंता अत्थि १। एवं खलु समणाउसो ! मए धम्मे पण्णत्ते इण-
मेव निग्गंथे पावयणे सच्चे अणुत्तरे पडिपुण्णे केवलिए संसुद्धे
णेआउए सल्लगत्तणे सिद्धिमग्गे मुत्तिमग्गे निज्जाणमग्गे नि-
व्वाणमग्गे अवितहमविसंधिं सव्वदुक्खप्पहीणमग्गे इत्थं ठि-
या जीवा सिज्झंति बुज्झंति मुच्चंति परिनिव्वाइंति सव्वदु-
क्खाणमंतं करेंति । जस्स णं धम्मस्स निग्गंथे सिक्खाए
उवट्ठिए विहरमाणे पुरा दिगिंछाए पुरा पिवासाए पुरा वातातवेहिं
पुट्ठेहिं विरूवरूवेहिं परिसहोवसग्गेहिं उदिण्णकामजाए यावि
विहरेज्जा ३। से य परक्कमेज्जा से य परक्कममाणे पासेज्जा जे इमे
उग्गपुत्ता महामाउया भोगपुत्ता महामाउया तेसिं णं अण्णतरस्स
अतिजायमाणस्स वा निज्जायमाणस्स वा पुरओ महं दासी-
दास-किंकरकम्मकर-पुरिसाणं अंते परिक्खित्तं छत्तभिंगारं ग-
हाय निग्गच्छंति तदणंतरं च णं पुरओ महाआसा आसवरा
उभओ तेसिं नागा नागवरा पिट्ठओ रहा रहवरा रहसंगिल्ली
से णं उद्धरियसेयच्छत्ते अब्भुग्गयभिंगारे पग्गहियतालियंटे पवियं-
ण्ण(त्त)सेयचामरवालवीयणीए अभिक्खणं अतिजाति य निज्जाति
य सप्पभा ४। सपुव्वावरं च णं ण्हाए कयबलिकम्मे जाव सव्वालं-
कारविभूसिए महतिमहालियाए कूडागारसालाए महतिमहालयंसि
सिंहासणंसि जाव सव्वरातिणिएणं जोइणा झियायमाणे इत्थि-
गुम्मपरिवुडे महयाहय-नट्टगीय-वाइयतंतीतलताल-तुडिय-घणमुइंग-
मद्दलपडुप्पवाइयरवेणं उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे
विहरइ ५। तस्स णं एगमवि आणवेमाणस्स जाव चत्तारिपंच अवुत्ता
चेव अब्भुट्ठेति-भणह देवाणुप्पिया ! किं करेमो ? किं आहरेमो ? किं उव-
णेमो ? किं आचिट्ठामो ? किं भे हियइच्छियं ? किं ते आसगस्स
सदति ? जं पासित्ता निग्गंथे निदाणं करेति जइ इमस्स तवनियम
बंभचेरवासस्स तं चेव जाव साहू ६। एवं खलु समणाउसो ! निग्गंथे

नियाणं किच्चा तस्स ठाणस्स अणालोइय अप्पडिक्कंते कालमासे कालं किच्चा अण्णतरेसु देवलोगेसु देवत्ताए उववत्तारो भवति महिड्ढिएसु जाव चिरट्ठिइएसु ७। से णं तत्थ देवे भवति महिड्ढिए जाव चिरट्ठिइए ८। ततो देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता जे इमे उग्गपुत्ता महामाउया भोगपुत्ता महामाउया तेसिं णं अण्णतरंसि कुलंसि पुत्तत्ताए पच्चायाति ९। से णं तत्थ दारए भवति सुकुमालपाणिपाए जाव सुरूवे १०। ततेणं से दारए उम्मुक्कबालभावे विण्णायपरिणयमित्ते जोव्वणगमणुपत्ते सयमेव पेइयं दायं पडिवज्जति ११। तस्स णं अइजायमाणस्स वा णिज्जायमाणस्स वा पुरओ महं जाव दासीदास जाव किं ते आसगस्स सदति? तस्स णं तहप्पगारस्स पुरिसजायस्स तहारूवे समणे वा माहणे वा उभयकालं केवलिपण्णत्तं धम्मं आइक्खेज्जा? हंता आइक्खेज्जा १२। से णं पडिसुणेज्जा? णो इणट्ठे समट्ठे १३। अभविए णं से तस्स धम्मस्स सवणयाए, से य भवति महिच्छे महारंभे महापरिग्गहे अहम्मिए जाव आगमेसाणं दुल्लभबोहिए यावि भवति, तं एवं खलु समणाउसो! तस्स निदाणस्स इमेयारूवे पावफलविवागे जं णो संचाएति केवलिपण्णत्तं धम्मं पडिसुणेत्तए १४॥ सू० ४६॥ एवं खलु समणाउसो! मए धम्मे पण्णत्ते, तंजहा- इणमेव निग्गंथे पावयणे सच्चे जाव सव्वदुक्खाणमंतं करेंति १। जस्स णं धम्मस्स निग्गंथी सिक्खाए उवट्ठिया विहरमाणी पुरा दिगिंछाए जाव उदिण्णकामजाया विहरेज्जा २। सा य परक्कमेज्जा, सा य परक्कममाणी पासेज्जा से जा इमा इत्थिया भवति एगा एगजाया एगाभरणपिहाणा तेल्लपेला इव सुसंगोविया चेलपेला इव सुसंपरिग्गहिया रयणकरंडगसमाणा तीसे णं अतिजायमाणीए वा निज्जायमाणीए वा पुरओ महं दासीदास जाव किं ते आसगस्स सदति? जं पासित्ता निग्गंथी निदाणं करेति- जति इमस्स सुचरियस्स तवनियमबंभचेर जाव भुंजमाणी विहरामि, सेत्तं साहुणी ३। एवं खलु

समणाउसो ! निग्गंथी निदाणं किच्चा तस्स ठाणस्स अणालोइय अपडिक्कंता कालमासे कालं किच्चा अण्णतरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवति महड्ढिएसु जाव सा णं तत्थ देवे भवति जाव भुंजमाणे विहरइ ४। सा णं ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं जाव अणंतरं चयं चइत्ता जे इमे भवंति उग्गपुत्ता महामाउया भोगपुत्ता महामाउया एतेसिं णं अण्णतरंसि कुलंसि दारियत्ताए पच्चायाति ५। सा णं तत्थ दारिया भवति सुकुमाल जाव सुरूवा ६। ततो णं तं दारियं अम्मापियरो उम्मुक्कबालभावं विण्णयपरिणयमित्तं जोव्वणगमणुप्पत्तं पडिरूवेणं सुक्केणं पडिरूवस्स भत्तारस्स भारियत्ताए दलंति ७। सा णं तस्स भारिया भवति एगा एगजाया इट्ठे जाव रयणकरंडगसमाणी ८। तीसे जाव अतिजायमाणीए वा निज्जायमाणीए वा पुरओ महं दासीदास जाव किं ते आसगस्स सदति ? तीसे णं तहप्पगाराए इत्थियाए तहारूवे समणे वा माहणे वा उभओकालं केवलिपण्णत्तं धम्मं आइक्खेज्जा ? हंता आइक्खेज्जा ९, सा णं भंते ! पडिसुणेज्जा ? णो इणट्ठे समट्ठे १०। अभविया णं सा तस्स धम्मस्स सवणयाए, सा य भवति महिच्छा महारंभा महापरिग्गहा जाव दाहिणगामिए नेरइए आगमिस्साए दुल्लभबोहियत्ताए भवति, एवं खलु समणाउसो तस्स निदाणस्स इमेयारूवे पावफलविवागे जं णो संचाएति केवलिपण्णत्तं धम्मं पडिसुणित्तए ११ ॥सू०४७॥ एवं खलु समणाउसो ! मए धम्मे पण्णत्ते इणमेव निग्गंथे पावयणे तह चेव जस्स णं धम्मस्स निग्गंथे सिक्खाए उवट्ठिए विहरमाणे पुरा दिगिंछाए जाव से य परक्कममाणे पासेज्जा- इमा इत्थिका भवति एगा एगजाया जाव किं ते आसगस्स सदति ? जं पासित्ता निग्गंथे निदाणं करेति दुक्खं खलु पुमत्तणए १, जे इमे उग्गपुत्ता महामाउया भोगपुत्ता महामाउया एतेसिं णं अण्णतरेसु उच्चावएसु महासमरसंगामेसु उच्चावयाइं सत्थाइं उरसि चेव पडिसंवेदेंति तं दुक्खं खलु पुमत्तणए, इत्थीत्तणं साहु २ जति इमस्स तवनियमबंभचेरवासस्स फलवित्तिविसेसे

भविस्स समाणे आगमेस्साणं जाव इमेरूवाइं उरालाइं इत्थीभोगाइं भुंजमाणो, सेत्तं साहू ३। एवं खलु समणाउसो ! निग्गंथे निदाणं किच्चा तस्स ठाणस्स अणालोइअपडिक्कंते जाव अपडिवज्जित्ता कालमासे कालं किच्चा अण्णतरेसु जाव से णं तत्थ देवे भवति महिड्ढिए जाव विहरति ४। से णं ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं जाव अणंतरं चइत्ता अण्णतरंसि कुलंसि दारियत्ताए पच्चायाति जाव ते णं तं दारियं जाव भारियत्ताए दलयति ५। सा णं तस्स भारिया ~~ भवति एगा एगजाया जाव तहेव सव्वं भाणियव्वं ६। तीसे णं अतिजायमाणी वा जाव किं ते आसगस्स सदति ?, तीसे ण तहप्पगाराए इत्थिकाए तहारूवे समणे वा माहणे वा धम्मं आइक्खेज्जा ? हंता आइक्खेज्जा ७। जाव किं पडिसुणेज्जा णो तिणट्ठे समट्ठे ८। अभविया णं सा तस्स धम्मस्स सवणयाए, सा य भवति महिच्छा जाव दाहिणगामिए णेरइए, आगमिस्साणं दुल्लभबोहिए यावि भवति ९। एवं खलु समणाउसो ! तस्स निदाणस्स इमेयारूवे पावफलविवागे भवति जं णो संचाएति केवलिपण्णत्तं धम्मं पडिसुणेत्तए १०॥ सू० ५२॥

एवं खलु समणाउसो ! मए धम्मे पण्णत्ते इणमेव निग्गंथे पावयणे, सेसं तं चेव जाव अंतं करेति १। जस्स णं धम्मस्स निग्गंथी सिक्खाए उवट्ठिया विहरमाणी पुरादिगिंछाए जाव उदिण्णकामजाया यावि विहरेज्जा २। सा य परक्कममाणी पासेज्जा से जे इमे भवति उग्गपुत्ता महामाउया भोगपुत्ता महामाउया जाव किं ते आसगस्स सदति ? जं पासित्ता णं निग्गंथी निदाणं करेति-दुक्खं खलु इत्थित्तणए, दुस्संचाराइं गामंतराइं जाव सन्निवेसंतराइं ३। से जहानामए अंबपेसियाति वा अंबाडपेसियाति वा मातुलुंगपेसियाति वा मंसपेसियाति वा उच्छुखंडियाति वा ~~~~~~ संबलिफालियाति वा बहुजणस्स आसायणिज्जा पत्थणिज्जा पीहणिज्जा अभिलसणिज्जा एवामेव इत्थिकापि बहुजणस्स आसायणिज्जा जाव अभिलसणिज्जा, तं दुक्खं खलु इत्थित्तणए, पुमत्ताए साहू ४। जइ इमस्स तव

नियम जाव अत्थि अहमवि आगमिस्साणं इमाइं एया-रूवाइं पुरिसभोजभोगाइं भुंजिस्सामि, से तं साहुणी ५। एवं खलु समणाउसो ! निग्गंथी निदाणं किच्चा तस्स ठाणस्स अणालोइय अपडिक्कंता जाव अपडिवज्जित्ता कालमासे कालं किच्चा अण्णतरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति ६। से णं तत्थ देवे भवति महिड्ढिए जाव चइत्ता जे इमे भवंति उग्गपुत्ता तहेव दारए भवति जाव किं ते आसगस्स सदति ? तस्स णं तहप्पगारस्स पुरिसजायस्स जाव अभविए णं से तस्स धम्मस्स सवणयाए ७। से य भवति महिच्छे जाव दाहिणगामिए नेरइए जाव दुल्लह-बोहिए यावि भवति ८। एवं खलु जाव पडिसुणित्तए ९। ॥सू० ४९॥ एवं खलु समणाउसो ! मए धम्मे पण्णत्ते इण-मेव निग्गंथे पावयणे जाव तहेव १। जस्स णं धम्मस्स निग्गंथे वा निग्गंथी वा सिक्खाए उवट्ठिए विहरमाणे पुरा दिगिंछाए जाव उदिण्णकामभोगे विहरिज्जा २। से य परक्कमेज्जा, से य परिक्कममाणे माणुसेहिं कामभोगेहिं निव्वेयं गच्छेज्जा, माणुस्सगा खलु कामभोगा अधुवा अणितिया असासया सडणपडणविद्धंसणधम्मा उच्चार-पासवण-खेलसिंघाण-वंतपित्त-सुक्कसोणियसमुब्भवा दुरू-वउस्सासनिस्सासा दुरूवमुत्तपुरिसपुण्णा वंतासवा पित्तासवा खेलासवा पच्छा पुरं च णं अवस्सं विप्पजहणिज्जा ३। संति उड्ढं देवा देवलोए ते णं तत्थ अण्णेसिं देवाणं देवीओ अभि-जुंजिय २ परियारेंति, अप्पणा चेव अप्पाणं विउव्वित्ता परि-यारेंति, अप्पणिज्जियाओ देवीओ अभिजुंजिय २ परियारेंति ४। जति इमस्स तव नियम जाव तं चेव सव्वं भाणियव्वं जाव वय-मवि आगमेस्साणं इमाइं एयारूवाइं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंज-माणा विहरामो, सेत्तं साहू ५। एवं खलु समणाउसो ! निग्गं-थे वा निग्गंथी वा निदाणं किच्चा तस्स ठाणस्स अणालोइय-

पडिक्कंते कालमासे कालं किच्चा अण्णतरेसु देवेसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति, तं जहा- महिड्ढिएसु जाव पभासमाणा ६। से णं देवे अण्णं देवं अण्णं देवीं तं चेव जाव पवियारेंति ७। से णं ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं तं चेव जाव पुमत्ताए पच्चायाति जाव किं ते आसगस्स सदति ? तस्स णं तहप्पगारस्स पुरिसजायस्स तहारूवे समणे वा माहणे वा जाव पडिसुणेज्जा ? हंता पडिसुणेज्जा ८। से णं सद्दहेज्जा पत्तिएज्जा रोइज्जा ? णो इणट्ठे समट्ठे ९। अभविए णं से तस्स धम्मस्स सद्दहणताए, से भवति महिच्छे जाव दाहिणगामिए नेरइए आगमिस्साए दुल्लभबोहिए यावि भवति १०। एवं खलु समणाउसो ! तस्स णियाणस्स इमेयारूवे पावफलविवागे जं णो संचाएति केवलिपण्णत्तं धम्मं सद्दहेत्तए वा पत्तिइत्तए वा रोइत्तए वा ११॥ सू० ४०॥ एवं खलु समणाउसो ! मए धम्मे पण्णत्ते तं चेव सेय परक्कममाणे माणुस्सएसु कामभोगेसु निव्वेयं गच्छेज्जा १। माणुस्सगा खलु कामभोगा अधुवा अणितिया तहेव जाव संति उड्ढं देवा देवलोगंसि ते णं तत्थ णो अण्णं देवं णो य अण्णाओ देवीओ अभिजुंजिय २ परियारेंति, अप्पणा चेव अप्पाणं विउव्वित्ता परियारेंति, अप्पणच्चियाए देवीए अभिजुंजिय परियारेंति २। जा जइ इमस्स तवनियम तं चेव सव्वं जाव से णं सद्दहेज्जा पत्तिएज्जा रोएज्जा ? णो इणट्ठे समट्ठे, अण्णत्थरुई रुइमायाए से भवति ३। से जे इमे आरण्णिया आवसहिया गामणियंतिया किण्हुरहस्सिया णो बहुसंजया णो बहुपडिविरया सव्वपाणभूयजीवसत्तेसु अप्पणा सच्चामोसाइं एवं विपडिवदेंति, (पउंजंता) अहं ण हंतव्वो अण्णे हंतव्वा, अहं न अज्जावेयव्वो अण्णे अज्जावेयव्वा, अहं न परियावेयव्वो अण्णे परियावेयव्वा, अहं न परिघेतव्वो अण्णे परिघेतव्वा, अहं न उद्दवेयव्वो अण्णे उद्दवेयव्वा ४। एवामेव इत्थिकामेहिं मुच्छिया गढिया गिद्धा अज्झोववण्णा,

जाव कालमासे कालं किच्चा अण्णातराइं आसुराइं किब्बिसियाइं ठाणाइं उववत्तारो भवंति ५। ततो मुच्चमाणा भुज्जो २ एलमूयत्ताए पच्चायंति, तं खलु समणाउसो! तस्स निदाणस्स जाव णो संचाएति केवलिपण्णत्तं धम्मं सद्दहित्तए वा पत्तिइत्तए वा रोइत्तए वा ६॥ सू० ५१॥ एवं खलु समणाउसो! मए धम्मे पण्णत्ते जाव माणुस्सगा खलु कामभोगा अधुवा तहेव संति उड्ढं देवा देवलोयंसि अण्णं देवं अण्णं च देवीं अभिजुंजिय २ परियारेंति, णो अप्पणा चेव अप्पाणं विउव्विय २ परियारेंति, अप्पणच्चियाए देवीए अभिजुंजिय २ परियारेंति १। जति इमस्स तवनियम तं चेव जाव एवं खलु समणाउसो! निग्गंथो वा निग्गंथी वा निदाणं किच्चा तस्स ठाणस्स अणालोइयअप्पडिक्कंते जाव विहरति २। से णं तत्थ अण्णे देवे अण्णाओ देवीओ अभिजुंजिय २ परियारेति, णो अप्पणा चेव अप्पाणं विउव्विय २ परियारेति, अप्पणच्चियाए देवीए अभिजुंजिय २ परियारेति ३। से णं ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं तहेव वत्त०वं णवरं हंता सद्दहिज्जा पत्तिएज्जा रोएज्जा ४। से णं सीलवय-गुणव्वय-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासाइं पडिवज्जेज्जा? नो इणट्ठे समट्ठे ५। से णं दंसणसावए भवति अभिगयजीवाजीवे जाव अट्ठिमिंज-पेमाणुरागरत्ते जाव एस अट्ठे० सेसे अणट्ठे ६। से णं एयारूवेणं विहारेणं विहरमाणे बहूइं वासाइं समणोवासगपरियागं पाउणइ २ त्ता कालमासे कालं किच्चा अण्णतरेसु देवलोगेसु देवत्ताए उववत्तारो भवति ७। तं एवं खलु समणाउसो! तस्स निदाणस्स इमेयारूवे पावफलविवागे जं णो संचाएइ सील०व्वय-गुणव्वय-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासाइं पडिवज्जित्तए॥८॥

॥सू० ५२॥ एवं खलु समणाउसो ! मए धम्मे पण्णत्ते, तं चेव सव्वं जाव से य परक्कममाणे देवमाणुस्सएहिं कामभोगेहिं निव्वेदं गच्छेज्जा १। माणुस्सगा खलु कामभोगा अधुवा जाव विप्पजहणिज्जा २। दिव्वावि खलु कामभोगा अधुवा अणितिया असासया चला चयणधम्मा पुणरागमणिज्जा पच्छा पुव्वं च णं अवस्सविप्पजहणिज्जा ३। जति इमस्स तवनियम जाव आगमिस्साणं जे इमे भवंति उग्गपुत्ता महामाउया जाव पुमत्ताए पच्चायंति ४। तत्थ णं समणोवासए भविस्सामि अभिगतजीवाजीवे उवलद्धपुण्णपावे जाव फासुएसणिज्जेणं असणपाणखाइमसाइमेणं पडिलाभेमाणे विहरिस्सामि, से तं साहू ५। एवं खलु समणाउसो ! निग्गंथो वा निग्गंथी वा निदाणं किच्चा तस्स ठाणस्स अणालोइय जाव देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवति ६। से णं ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं जाव आसगस्स सदति ? तस्स णं तहप्पगारस्स पुरिसजातस्स जाव पडिसुणेज्जा ? हंता पडिसुणेज्जा, से णं जाव सद्दहेज्जा ? हंता सद्दहेज्जा, से णं सीलवय जाव पोसहोववासाइं पडिवज्जेज्जा ? हंता पडिवज्जेज्जा ७। से णं मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वइज्जा ? णो इणट्ठे समट्ठे ८। से णं समणोवासए भवति अभिगयजीवाजीवे जाव पडिलाभेमाणे विहरति ९। से णं एयारूवेणं विहारेणं विहरमाणे बहूणि वासाइं समणोवासगपरियागं पाउणइ २त्ता आबाधंसि उप्पण्णंसि वा अणुप्पन्नंसि वा बहूइं भत्ताइं पच्चक्खाइ २त्ता बहूइं भत्ताइं अणसणाए छेदेति २त्ता आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवति १०। एवं खलु समणाउसो। तस्स निदाणस्स इमेयारूवे पावफलविवागे जं णो संचाएति

सव्वओ मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए ११ ॥ सू० ५३ ॥ एवं खलु समणाउसो ! मए धम्मे पण्णत्ते जाव से य परक्कममाणे दिव्वमाणुस्सएहिं कामभोगेहिं निव्वेयं गच्छेज्जा १। माणुस्सगा खलु कामभोगा अधुवा जाव विप्पजहणिज्जा २। दिव्वावि खलु कामभोगा अधुवा जाव पुणरागमणिज्जा ३। जइ इमस्स तवनियम जाव वयमवि आगमेसाणं जाइं इमाइं कुलाइं भवंति, तं जहा - अंतकुलाणि वा पंतकुलाणि वा तुच्छकुलाणि वा दरिद्दकुलाणि वा किविणकुलाणि वा भिक्खागकुलाणि वा एएसिं णं अण्णतरंसि कुलंसि पुमत्ताए पच्चायंति ४। एस मे आयापरियाए सुणीहडे भविस्सति, सेतं साहू ५। एवं खलु समणाउसो ! निग्गंथे वा निग्गंथी वा नियाणं किच्चा तस्स ठाणस्स अणालोइयअपडिक्कंते सव्वं तं चेव से णं मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वइज्जा ? हंता पव्वइज्जा ६। से णं तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झेज्जा जाव सव्वदुक्खाणमंतं करेज्जा ? णो तिणट्ठे समट्ठे ७। से णं भवति जेमे अणगारा भगवंतो ईरियासमिया जाव बंभयारिए तेणं विहारेणं विहरमाणा बहूइं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणंति २ त्ता आबाहंसि उप्पण्णंसि वा जाव भत्ताइं पच्चक्खाइंति ? हंता पच्चक्खाइंति ८। बहूइं भत्ताइं अणसणाए छेदेंति ? हंता छेदेंति ९। छेदित्ता आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा अण्णतरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति १०। एवं समणाउसो ! तस्स नियाणस्स इमे एयारूवे पावफलविवागे जं णो संचाएति तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झेज्जा जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेज्जा ११ ॥ सू० ५४ ॥ एवं खलु समणाउसो ! मए धम्मे पण्णत्ते इणमेव निग्गंथे पावयणे जाव से परक्कमेज्जा सव्वकामविरत्ते

सव्वराग० सव्वसंगातीते सव्वसिणेहातिक्कंते सव्वचारित्तपरिवुडे १। तस्स णं भगवंतस्स अणुत्तरेणं नाणेणं अणुत्तरेणं दंसणेणं जाव परिनिव्वाणमग्गेणं अप्पाणं भावेमाणस्स अणंते अणुत्तरे निव्वाघाए निरावरणे कसिणे पडिपुण्णे केवलवरनाणदंसणे समुप्पज्जेज्जा २। तते णं से भगवं अरहा भवति जिणे केवली सव्वण्णू सव्वदरिसी सदेवमणुआसुराए जाव बहूइं वासाइं केवलिपरियागं पाउणति २त्ता अप्पणो आउसेसं आभोएति २त्ता भत्तं पच्चक्खाइ २त्ता बहूइं भत्ताइं अणसणाए छेदेइ २त्ता तओ पच्छा चरमेहिं ऊसासनिस्सासेहिं सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणमंतं करेति ३। तं एवं समणाउसो! तस्स अणिदाणस्स इमेयारूवे कल्लाणे फलविवागे जं तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणमंतं करेति ४॥ सू० ५५॥

ततेणं ते बहवे निग्गंथा य निग्गंथीओ य समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति २त्ता तस्स ठाणस्स आलोएंति पडिक्कमंति जाव अहारिहं पायच्छित्तं तवो कम्मं पडिवज्जंति ॥ सू० ५६॥

ते णं काले णं ते णं समए णं समणे भगवं महावीरे रायगिहे नगरे गुणसिलए चेइए बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं बहूणं सावयाणं बहूणं सावियाणं बहूणं देवाणं बहूणं देवीणं सदेवमणुयासुराए परिसाए मज्झगए एवं आइक्खइ एवं भासइ एवं पण्णवेइ एवं परूवेइ आयातिठाणे नामं अज्झयणं सअट्ठं सहेउयं सकारणं ससुत्तं स-

अत्थं सतदुभयं सवागरणं जाव भुज्जो भुज्जो उवदंसेतित्ति बेमि ॥ सू० ५७॥

॥ इति दसमी दसा समत्ता ॥ १०॥

॥ इइ आयारदसाओ ॥

॥ इति दशाश्रुतस्कन्धच्छेदसूत्रम् ॥

लिखितं संशोधितञ्चेदं श्रीदशाश्रुतस्कंधछेद-सूत्रं श्रीतपागच्छगगनाङ्गणदिनमणि-पन्यास-प्रवर श्रीमणिविजयगणिवर-चरणमेघमयूर-गणि-वर्य श्रीबुद्धिविजयमुनिपति-पादाम्बुजभृङ्गायमान-पन्यास श्रीमदाणंदविजयगणिवर-चरणचन्द्र-चकोर-मुनिप्रवर श्री हर्षविजयमुनीन्द्राङ्घ्रिसरसि-रुहमानसराजहंस-तपोमूर्ति-जैनाचार्य श्रीमद्विजयकर्पूर-सूरीश्वर-पट्टधर-शासनप्रतिवादीभकण्ठीरव-हालारदेशो-द्धारक-कविरत्नाचार्यदेव-श्रीमद्विजयामृतसूरीश्वर--चञ्चच्चरणचञ्चरीक-पन्यास-जिनेन्द्रविजय-गणि-वरेण श्रुतभक्तिसद्भावनाभावितेन जामनगरे दि-ग्विजयप्लोट श्रीतपागच्छजैनोपाश्रयमध्ये, वीर संवत् २५०५ विक्रमसंवत् २०३५ फाल्गुन शुक्ल दशम्यां बृह-स्पतिवासरे गुरुदेव श्रीमद्विजयामृतसूरिवर्याणां स्वर्गा-रोहणतिथौ तत्प्रातिष्ठित श्रीविमलनाथस्वामि प्रसादात्, शुभं भवतु श्रीश्रमणसङ्घस्य ॥

उअर्हम्
श्रुतधरश्री जिनभद्रगणिक्षमाश्रमण विरचितं
॥ श्री जीतकल्प सूत्रम् ॥

कयपवयणप्पणामो, वुच्छं पच्छित्त-दाणसंखेवं।
जीयव्ववहारगयं, जीवस्स विसोहणं परमं ॥ १ ॥ संवर-विणि-
ज्जराओ, मोक्खस्स पहो तवो पहो तासिं। तवसो य पहाणंगं,
पच्छित्तं जं च णाणस्स ॥ २ ॥ सारो चरणं तस्स वि, णिव्वाणं
चरणसोहणत्थं च। पच्छित्तं तेण तयं, णेयं मोक्खत्थिणाऽवस्सं
॥ ३ ॥ तं दसविहमालोयण-पडिक्कमणो-भय-विवेग-वोसग्गा। तव
छेद-मूल-अणवठ्ठया य पारंचियं चेव ॥ ४ ॥ करणिज्जा जे जोगा,
तेसुवयुत्तस्स णिरतियारस्स। छउमत्थस्स विसोही, जइणो आलो-
यणा भणिया ॥ ५ ॥ आहाराईगहणे, तह बहियाणिग्गमेसु णेगेसु।
उच्चार-विहारावणि-चेइय-जइवंदणादीसुं ॥ ६ ॥ जं चऽण्णं करणि-
ज्जं, जतिणो हत्थसयबाहिरायरियं। अवियडियम्मि असुद्धो, आलोएं-
तो तयं सुद्धो ॥ ७ ॥ कारणविणिग्गयस्स य, सगणाओ परगणागतस्स
वि य। उवसंपया विहारे, आलोयण निर(मण)इयारस्स ॥ ८ ॥ गुत्ती-समि
तिपमत्तो (माए) गुरुणो आसायणा विणयभंगे। इच्छाईणमकरणे, लहुस मु-
सादिण्णमुच्छासु ॥ ९ ॥ अविहीय कासजंभियखुयवायाऽसंकिलिट्ठकंमे-
सु। कंदप्पहासविकहाकसायविसयाणुसंगेसु ॥ १० ॥ खलियस्स य सव्वत्थ
वि, हिंसमणावज्जओ जयन्तस्स। सहसाऽणाभोगेण व, मिच्छक्कारो पडिक्क
मणं ॥ ११ ॥ आभोगेण वि तणुएसु णेहभयसोगबाउसादीसु। कंदप्प-

सोगविगहादिएसु णेयं पडिक्कमणं ॥ १२ ॥ संभमभयातुरावतिसह-
साणाभोगाऽणप्पवसओ वा। सव्ववयातीयारे, तदुभयमासंकिते चेव
॥ १३॥ दुच्चिंतिय दुब्भासिय, दुच्चेट्ठिय एवमादियं बहुसो। उवउ-
त्तो वि ण याणति, जं देवसियातियाराति ॥ १४॥ सव्वेसु य खिति-
यपए, दंसणणाणचरणावराहेसु। आउत्तस्स तदुभयं, सहसक्काराइ-
णा चेव ॥ १५॥ पिंडोवहिसेज्जादी, गहियं कडजोगिणोवयुत्तेणं।
पच्छा णायमसुद्धं, सुद्धो विहिणा विगिंचंतो ॥ १६॥ कालऽद्धाणा-
ऽतिच्छियमणुग्गयत्थमियगहियमसढो उ। कारणगहिउव्वरिए, भ-
त्तादिविगिंचणे सुद्धो ॥ १७॥ गमणागमणविहारे सुयंमि सावज्जसु-
विणयादिसु य। णावाणदिसंतारे, पायच्छित्तं विउसग्गो ॥ १८॥ भत्ते
पाणे सयणासणे य, अरहंतसमणसेज्जासु। उच्चारे पासवणे, पण-
वीसं होन्ति उस्सासा ॥ १९॥ हत्थसतबाहिराती, गमणागमणाइएसु पणु-
वीसं। पाणिवहादिसुमिणए, सतमट्ठसतं चउत्थम्मि ॥ २०॥ देसिय-राइय-प-
क्खिय-चाउम्मास-वरिसेसु परिमाणं। सतमद्धं तिण्णि सता, पंच सतऽट्ठु-
त्तर सहस्सं ॥ २१॥ उद्देस समुद्देसे, सत्तावीसं तहेवऽणुण्णाए। अट्ठेव य
ऊसासा, पट्ठवण-पडिक्कमणमादी ॥ २२॥ उद्देसय अज्झयणे, सुतखंधंगेसु
कमसो पमादिस्स। कालाइक्कमणादिसु, णाणायाराइयारेसु ॥ २३॥ णिव्वि-
गतिय पुरिमड्ढेगभत्त आयंबिलं चऽणागाढे। पुरिमादी खमणंतं, आगाढे
एवमत्थे वि ॥ २४॥ सामण्णं पुण सुत्ते, सतमायामं चउत्थमत्थम्मि।
अप्पत्तोपत्तोवत्तवायणुद्देसणादीसु ॥ २५॥ कालाऽविसज्जणादिसु, मउ-
लिवसुहापमज्जणादिसु य। णिव्वीतियं अकरणे, अक्खणिसेज्जा अभ-
त्तट्ठो ॥ २६॥ आगाढाऽणागाढम्मि सव्वभंगे य देसभंगे य। जोगे छ-
ट्ठ चउत्थं, चउत्थमायंबिलं कमसो ॥ २७॥ संकादिएसु देसे, खमणं
मिच्छोववूहणादिसु य। पुरिमादी खमणंतं, भिक्खुप्पभितीण य चउण्हं
॥ २८॥ एवं चिय पत्तेयं, उववूहादीण अकरणे जतीणं। आयामंतं
णिव्वीतिआदि पासत्थसड्ढेसु ॥ २९॥ परिवारादिणिमित्तं, ममत्तपरिपा-
लणादि वच्छल्ले। साहम्मिउ त्ति संजमहेउं वा सव्वहिं सुद्धो ॥ ३०॥ एगिं-
दियाण घट्टणमगाढगाढपरितावणोद्दवणे। णिव्वीयं पुरिमड्ढं, आसणमायामं

कमसो ॥ ३१ ॥ पुरिमादी खमणंतं, अणंतविगलिंदियाण पत्तेयं। पंचिंदि
यम्मि एक्कासणादि कल्लाणगमहेगं ॥ ३२ ॥ मोसादिसु मेहुणवज्जिएसु
दव्वादिवत्थुभिण्णेसु। हीणे मज्झुक्कोसे, आसणआयामखमणाइं ॥ ३३ ॥
तेणाइयपरिवासे, अभत्तट्ठो सुक्कसोणिहीए य। इतरा य छट्ठभत्तं, अट्ठमगं
सेस णिव्विभत्ते ॥ ३४ ॥ उद्देसियचरिमतिए, कम्मे पासंडसघरमीसे
य। बादरपाहुडियाए, सपच्चवायाहडे लोभे ॥ ३५ ॥ अतिरं अणंतणि-
क्खित्त-पिहिय-साहरिय-मीसियादीसुं। संजोग सइंगाले, दुविह णिमि-
त्ते य खमणं तु ॥ ३६ ॥ कम्मुद्देसिय-मीसे, धायादि-पगासणादिए-
सु च। पुर-पच्छकम्म-कुच्छिय-संसत्तालित्तकरमत्ते ॥ ३७ ॥ अति-
रं परित्तणिक्खित्त-पिहिय-साहरिय-मीसियादीसु। अइमाण-धूम-कारण-
विवज्जाए विहियमायामं ॥ ३८ ॥ अज्झोयर-कड-पूतिय-माया-
णंते परंपरगए य। मीसाणंतराणंतरगतादिए चेगमासणगं ॥ ३९ ॥
ओह-विभागुद्देसोवकरण-पूतीअ-ठविय-पागडिए। लोउत्तर-परिय-
ट्टिय-पमिच्च-परभावकीए य ॥ ४० ॥ सग्गामाहड-दद्दर-जहण्ण-
मालोहडोझरे पढमे। सुहुमतिगिच्छा-संथवतिग-मक्खिय-दायगोवहए
॥ ४१ ॥ पत्तेयपरंपरठविय-पिहिय-मीसे अणंतरादीसु। पुरिमड्ढं संकाए,
जं संकइ तं समावज्जे ॥ ४२ ॥ इत्तरठविए सुहुमे, ससणिद्ध ससरक्ख-
मक्खिए चेव। मीसपरंपरठवियादिएसु बितिएसु वाऽविगती ॥ ४३ ॥
सहसाऽणाभोगेण व, जेसु पडिक्कमणमाहियं तेसु। आभोगओ वि बहुसो,
अतिप्पमाणे व णिव्विगती ॥ ४४ ॥ धावण-डेवण-संघरिस-गमण-
किड्डा-कुहावणादीसु। उक्कुट्ठि-गीत-छेलिय-जीवरुयादीसु य चउत्थं
॥ ४५ ॥ तिविहोवहिणो विच्चुयविस्सरियापेहिताणिवेदणए। णिव्वितियं
पुरिमेक्कासणाइ सव्वम्मि चायामं ॥ ४६ ॥ हारियधोतुग्गामियाणिवेदणा-
दिण्णभोगदाणेसु। आसणमायामचउत्थगाइं सव्वम्मि छट्ठं तु ॥ ४७ ॥
मुहणंतय रयहरणे, फिडिए णिव्वितियं चउत्थं तु। नासिय हारविए
वा, जीएण चउत्थछट्ठाइं ॥ ४८ ॥ कालऽद्धाणाईए, णिव्विगती खमण
मेव परिभोगे। अविहिविगिंचणियाए, भत्तादीणं तु पुरिमड्ढं ॥ ४९ ॥
पाणस्सासंवरणे, भूमितिगापेहणे य णिव्विगती। सव्वस्सासंवरणे अग

हणभंगे य पुरिमड्ढं ॥५०॥ एयं चिय सामण्णं, तव-पडिमाऽभिग्ग-
हादियाणं पि। णिव्वितियादी पक्खिय-पुरिमादिविभागतो णेयं ॥५१
॥ फिडिए सतमुस्सारिय भंगे वेगादि वंदणादीसु। णिव्वितिय-पु-
रिमेगासणादि सव्वेसु चायामं ॥५२॥ अकएसु तु पुरिमा-ऽऽसणाया-
यामं सव्वसो चउत्थं तु। पुव्वमपेहितथंडिल, णिसिवोसिरणे दियासु-
वणे ॥५३॥ कोहे बहुदेवसिए, आसव-कक्कोलगादिएसुं च। लसु-
णादी पुरिमड्ढं, तण्णादीबंधमुयणे य ॥५४॥ अझुसिरतणेसु निव्वि-
गतियं तु सेसपणएसु पुरिमड्ढं। अप्पडिलेहियपणए, एगासण तसवहे
जं च ॥५५॥ ठवणमणापुच्छाए, णिव्विसओ विरियगूहणाए य। जीए-
णेक्कासणयं, सेसगमायासु खवणं तु ॥५६॥ दप्पेणं पंचिंदिय-
ओरमणे संकिलिट्ठकम्मे य। दीहद्धाणासेवी य गिलाण-कप्पावसा-
णे य ॥५७॥ सव्वोवहि-कप्पम्मि य, पुरिमत्तापेहणे य चरिमाए;
चाउम्मासे वरिसे, य सोहणं पंचकल्लाणं ॥५८॥ छेदादिस-सद्द-
ही, सिउणो परियाय-गव्वियस्स वि य। छेदातीए वि तवो, जीएण
गणाहिवइणो य ॥५९॥ जं जं ण भणियमिहइं, तस्सावत्तीय दाण-
संखेवे। भिण्णादिया य वोच्छं, छम्मासन्ता य जीएणं ॥६०॥ भिण्णो
अविसिट्ठो च्चिय, मासो चउरो य छच्च लहुगुरुगा। णिव्वितियादी
अट्ठमभत्तन्तं दाणमेतेसिं ॥६१॥ इय सव्वावत्तीओ, तवसो णाउं जह-
क्कमं समए। जीएण दिज्ज णिव्वीतिगाति दाणं जहाभिहितं ॥६२॥
एय पुण सव्व चिय, पायं सामण्णयो विणिद्दिट्ठं। दाणं विभागतो
पुण, दव्वादि-विसेसियं जाण ॥६३॥ दव्वं खेत्तं कालं, भावं पुरि-
स पडिसेवणाओ य। णातुमितं चिय दिज्जा, तम्मत्तं हीणमहितं व
॥६४॥ आहारादी दव्वं, बलियं सुलभं च णाउमहियं पि। देज्जा हि
दुब्बलं दुल्लभं च णाऊण हीणं पि ॥६५॥ लुक्खं सीतलं साहारणं
च खेत्तमहितं पि सीयम्मि। लुक्खम्मि य हीणयरं, एव काले वि ति-
विहम्मि ॥६६॥ गिम्ह-सिसिर-वासासु, देज्जऽट्ठम-दसम-बारसताइं।
णातुं विहिणा णवविह-सुत-ववहारोवदेसेणं ॥६७॥ हट्ठ-गिलाणाभा-
वम्मि देज्ज हट्ठस्स ण तु गिलाणस्स। जावतियं वा विसहति, तं देज्ज सहे-

ज्ज वा कालं ॥६८॥ पुरिसा गीतागीता, सहासहा तह सढासढा केई
। परिणामाऽपरिणामा, अतिपरिणामा अवत्थूणं ॥६९॥ तह धिति-संघ-
यणोभय-संपण्णा तदुभएण हीणा य। आय-परोभय-णोभयतरगा तह
अण्णतरगा य ॥७०॥ कप्पट्ठियादयो वि य, चतुरो जे सेतरा सम-
क्खाता। सावेक्खेतर-भेयादयो य जे ताण पुरिसाण ॥७१॥ जो जह
सत्तो बहुतरगुणो व्व तस्साहियं पि देज्जाहि। हीणतरे हीणयरं, झोसे-
ज्ज व सव्वहीणस्स ॥७२॥ एत्थ पुण बहुतरा भिक्खुणोत्ति अकय-
करणाणभिगयाय। जंतेण जीत-मद्दमभत्तंत-नवि(निव्वि)गति-मादीयं ॥
७३॥ आउट्टिया य दप्पमाय-कप्पीहिं वा णिसेविज्जा। दव्वं खेत्तं कालं,
भावं वाऽऽसेवओ पुरिसो ॥७४॥ जं जीयदाणमुत्तं, एयं पायं पमाय-
सहियस्स। एत्तो च्चिय ठाणंतरमेगं वड्ढेज्ज दप्पवयो ॥७५॥ आ-
उट्टियाए ठाणंतरं, च, सट्ठाणमेव वा दिज्जा। कप्पेण पडिक्कमणं, त-
दुभयमहवा विणिद्दिट्ठं ॥७६॥ आलोयणकालम्मि वि, संकेस विसो-
हि भावतो णातुं। हीणं वा अहियं, वा, तम्मत्तं वा वि देज्जाहि ॥७७॥
इति दव्वादिबहुगुणे, गुरुसेवाए य बहुतर देज्जा। हीणतरे हीणतरं, हीण-
तरे जाव झोसो त्ति ॥७८॥ झोसिज्जति सुबहुं पि हु, जीएणऽण्णं त-
वारिह वहओ। वेयावच्चकरस्स य, दिज्जति साणुग्गहतरं वा ॥७९॥
नवगब्विओ तवस्स य, असमत्थो तवमसद्दहन्तो य। तवसा त जो
ण दमति, अतिपरिणाम-प्पसंगी य ॥८०॥ सुबहुतर-गुणब्भंसी,
छेदावत्तिसु पसज्जमाणो य। पासत्थादी जोऽवि य, जतीण पडितप्पि-
ओ बहुसो ॥८१॥ उक्कोसं तवभूमी, समतीओ सावसेसचरणो य। छेदं
पणगादीतं, पावति जा धरति परियाओ ॥८२॥ (दारगाहाओ तिण्णि)
आउट्टिया य पंचिंदियघाते मेहुणे य दप्पेणं। सेसेसुक्कोसाभिक्ख-सेव-
णादीसु तीसु पि ॥८३॥ तवगब्वियादिएसु य, मूलुत्तर-दोसवति-
यर गएसु। दंसणचरित्तवन्ते, चियत्तकिच्चे य सेहे य ॥८४॥ अच्चं-
तोसण्णेसु य, परलिंगदुवे य मूलकम्मे य। भिक्खुम्मि य विहिततवे,
अणवट्ठ-पारंचियं पत्ते ॥८५॥ छेदेणापरियाएऽणवट्ठ-पारंचिया-
वन्नाणे य। मूलं मूलावत्तिसु, बहुसो य पसज्जणे भणियं ॥८६॥

उक्कोसं बहुसो वा, पउट्ठचित्तो तु तेणियं कुणति। पहरोते जो य सवे
क्खे, णिरवेक्खो घोरपरिणामो ॥८७॥ अभिसेओ सव्वेसु य, बहुसो पा
रंचियावराहेसु। अणवट्ठप्पावत्तिसु, पसज्जमाणो अणेगासु ॥८८॥ कीरति
अणवट्ठप्पो, सो लिंग-क्खेत्त-कालओ तवओ। लिंगेण दव्व भावे भणि
ओ पव्वावणाऽणरिहो ॥८९॥ अप्पडिविरओसण्णो, ण भाव-लिंगारिहो ऽणवट्ट
हुप्पो। जो जेण जत्थ दूसति, पडिसिद्धो तत्थ सो खेत्ते ॥९०॥ जत्तियमेत्तं का
लं, तवसा उ जहण्णएण छम्मासा। संवच्छर-मुक्कोसं, आसाती जो जिण
णीणं ॥९१॥ वासं बारस वासा, पडिसेवी कारणे तु सव्वो वि। थोवं थोव
तरं वा, वहेज्ज मुच्चेज्ज वा सव्वं ॥९२॥ वंदति ण य वंदिज्जति, परिहार
तवं सुदुच्चरं चरति। संवासो से कप्पति, णालवणादीणि सेसाणि ॥९३॥
तित्थगर पवयण सुतं, आयरियं गणहरं महिड्ढीयं। आसाएन्तो बहुसो
अभिणिवेसेण पारंची ॥९४॥ जो य सलिंगे दुट्ठो, कसाय-विसएहिं रा-
यवहओ य। रायग्गमहिसि-पडिसेवओ य बहुसो पगासो य ॥९५॥ थीण
द्धि-महादोसो, अण्णोण्णासेवणा-पसत्तो य। चरिम-ट्ठाणावत्तिसु, बहुसो
य पसज्जए जो उ ॥९६॥ सो कीरति पारंची, लिंगाओ खेत्तकालओ तव
तो। संपागडपडिसेवी, लिंगाओ थीणगिद्धी य ॥९७॥ वसहि-णिवेसण-वा
डग-साहिणि-ओयपुर-देसरज्जाओ। खेत्ताओ पारंची, कुलगण-संघालया
ओ वा ॥९८॥ जत्थुप्पण्णो दोसो, उप्पज्जिस्सति य जत्थ णाऊणं। तत्तो तत्तो
कीरति, खेत्ताओ खेत्तपारंची ॥९९॥ जत्तियमेत्तं कालं, तवसा पारंचियस्स
उ स एव। कालो दुविगप्पस्स वि, अणवट्ठप्पस्स जोऽभिहितो ॥१००॥ एगागी
खेत्तबहिं, कुणति तवं सुविपुलं महासत्तो। अवलोवण-मायरिओ, पतिदिण मे
गो कुणति तस्स ॥१०१॥ अणवट्ठप्पो तवसा, तवपारंची य दो वि वोच्छिण्णा
। चोद्दसपुव्वधरम्मि, धरेंति सेसा तु जा तित्थं ॥१०२॥ इति एस जीतकप्पो, स
मासतो सुविहिताणुकंपाए। कहितो देयोऽयं पुण, पत्तेसु परिच्छिय-गुणेसु ॥१०३॥
॥ इति श्री जीतकल्प सूत्रम् ॥ पू. पन्यास श्री जिनेन्द्रविजयगणि शोधित
लिखितं इदं श्री जीतकल्पसूत्र हालारदेशोद्धारक-आचार्यदेव श्रीवि-
जयामृतसूरीश्वर-विनेय-पू. पन्न्यास प्रवर श्री जिनेन्द्रविजयगणिवरणां
वीते-सा. श्रीमहेन्द्रप्रभाश्री-तच्छिष्या सा. श्री सुरेन्द्रप्रभाश्रीतच्छिष्या सा. स्वयंप्रभाश्रिया
[illegible]नगरे वि. सं. २०३४ श्रावण शुक्ल पञ्चम्याम् ॥ शिवमस्तु सर्व जगतः ॥